



डेमिअान



# डेमिआन

हेर्मन हेसे

अनुवादक  
महेश दत्त



**राधाकृष्ण**



## अनुवादक की ओर से

हमें के उपन्यासों से मेरा परिचय एक संयोग ही था। उनके उपन्यास 'मिडार्थ' ने मुझे पहली बार जर्मन भाषा सीखने को प्रेरित किया था। जर्मन भाषा को सीखने के क्रम में हेसे की विभिन्न कृतियों की पृष्ठभूमि के साथ ही उनके वैचारिक विषय को नजदीक से जानने का अवसर भी मिला। उनकी भाषा-शैली ने मुझे विशेष आकर्षित किया। उनके लेखन में प्रयुक्त ढेरों विशेषण, लम्बे वाक्यों का ऐसा क्रम कि लगे वाक्य छल्लों में पिरोये जा रहे हैं। किंतु इसके बावजूद बिलकुल सीधी-सपाट भाषा पाठक के लिए अक्सर एक सुखद आश्चर्य बन जाती है।

यह उल्लेख यहाँ आवश्यक जान पड़ता है कि हेसे के नाना डॉ. हेर्मन गुंडर्ट (1814-93) एक भाषाविद् थे, जिन्होंने एक मिशनरी के रूप में केरल में कार्य किया था। उनकी रचना अंग्रेजी-मलयालम शब्दकोष अपने प्रकार की पहली कृति थी। इस योगदान के लिए उनका नाम सदा अविस्मरणीय बना रहेगा। भारत के साथ इस पारिवारिक सम्बन्ध ने हेसे को इस उपमहाद्वीप की संस्कृति की ओर आकर्षित किया और बाद में उनकी रचनाओं में इसका काफी प्रभाव देखने में आया। यह प्रभाव उनके उन उपन्यासों में भी उभरता है, जिनके कथानक का भारत से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। भारतीय उपमहाद्वीप के दर्शन सम्बन्धी इस प्रभाव को उनकी कथाकृतियों के अतिरिक्त उनके विभिन्न पत्रों में विशेष रूप से देखा जा सकता है, जिनमें वे विभिन्न सामाजिक-दार्शनिक विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। 1950 में उन्होंने एक पत्र में लिखा—“मृत्यु का

बुलावा तो दान्तव में स्नेह का बुलावा है। यदि इसका जवाब तत्कारात्मक रूप में दिया जाए, यदि हम जीवन और इसके रूपांतर के महान सनातन रूप को स्वीकार कर लें तो यह बेहद मधुर हो सकती है।”

इन सद्गी के दूसरे दशक के अंत में प्रकाशित ‘डेमिजान’ में कई स्थानों पर इसी दर्शन की झलक मिलती है, जहाँ मृत्यु की रचना-प्रक्रिया के पुनः आरम्भ होने का मात्र एक चरण बताया गया है, फिर चाहे वह मृत्यु पक्षी के जन्म के लिए आवश्यक अंडे की टूटन हो या यूरोप की। पुनर्निर्माण का नया युग उसी से आरम्भ होता है।

इसमें दो मत नहीं कि ‘डेमिजान’ के माध्यम से हेन्से तत्कालीन जर्मन युवा पीढ़ी की पीड़ा, शिखा-पद्धति और सामाजिक विचारधारा के बारे में ही अपना दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं करते, बल्कि एक नई राह की ओर भी संकेत करते हैं, जो स्वयं को पूर्णतया नियति के भरोसे छोड़कर कार्य करने का संदेश देती है।

हेन्से कभी भारत आए थे या नहीं, यह एक विवादास्पद मुद्दा है। इस विषय में मेरा मानना है कि वे 1911 में भारत आए थे। इसका स्पष्ट प्रमाण उनके पत्रों के अतिरिक्त उनकी डायरी में भी मिलता है, जहाँ उन्होंने अपनी एशिया व भारत-यात्रा का उल्लेख किया है। हेन्से के देहा-वसान के बाद प्रकाशित एंग्लैंड के पैन्थर प्रकाशन की पुस्तक ‘हिर्मन हेन्से—

‘पिटोरियल बायोग्राफी’ में उनका तथा उनके साथ भारत-यात्रा पर उनकी मित्र-मंडली का एक चित्र ‘प्रिंस आउटेल फ्रीडरिप’ नामक जर्मनी जहाज के डेक पर भी मिलता है। इसके अतिरिक्त उनकी यात्रा में उनके साथ वाए चित्रकार मित्र हंस स्टुल्त्सनेगर की डायरी भी इस यात्रा का उल्लेख करती है।

इन अनुवाद की जो पुस्तक-रूप मिल सका, इसके लिए मैं डॉ. नोटार गुत्ते, श्री विष्णु शर्मा, श्री अशोक भाट्टेग्वरी और जर्मन दूतावास ने सन्मद प्रॉफ़ उर्जुना स्ट्रेवे का आभारी हूँ।

—अनुवादक

## प्रस्तावना

अतीत में गए बिना मैं अपनी कहानी नहीं कह सकता। यदि यह सम्भव होता तो मैं अतीत के भी अतीत में जाता—अपने बचपन के प्रारम्भिक दिनों, और उससे भी पहले के अतीत में।

उपन्यासकार जब एक उपन्यास लिखता है तो रचना के प्रति उसका व्यवहार ईश्वरीय होता है। वह चाहे एक व्यक्ति की कहानी लिखे अथवा पूर्ण सत्य कहे जाने वाले ईश्वर की, उसकी भूमिका समान रूप से एक स्रष्टा की होगी। दूसरे यह कि उसके द्वारा रची गई कहानी अर्थपूर्ण होती है। एक उपन्यासकार के नाते मैं सिर्फ इतना कह सकता हूँ—यद्यपि किसी भी उपन्यासकार के लिए उसकी रचना जितनी महत्त्वपूर्ण होगी उससे कहीं अधिक मेरी रचना मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है—कि यह मेरी कहानी है, एक ऐसे व्यक्ति की कहानी, जिसको गढ़ा नहीं गया है, वह हाड-मांस का एक प्राणी है। हालाँकि एक जीता-जागता मनुष्य किस चीज ने बना है, इसके बारे में आज जो अनिश्चितता है, वह शायद पहले कभी नहीं थी। और मनुष्यजाति—जिसमें से प्रत्येक मनुष्य प्रकृति के मौलिक और मूल्यवान प्रयोग का एक रूप है—उसे ही आज थोक के भाव गोली से उड़ाया जा रहा है। किंतु यदि हम एक मनुष्य से अधिक कुछ नहीं होते, यदि हम में से प्रत्येक को सिर्फ गोली से समाप्त कर दिया जाता, तो कहानी कहने का भी कोई मतलब नहीं रह जाता। परंतु प्रत्येक व्यक्ति स्वयं से अलग कुछ और भी है। वह एक ऐसे अलग, विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण बिंदु का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ से विश्व की विभिन्न घटनाएँ सिर्फ एक ही बार-बार गुजरती हैं। यही कारण है कि हरेक मनुष्य की कहानी महत्त्वपूर्ण है; और



यही कारण है कि जब तक वह जीवित रहते हुए प्रकृति की इच्छा को पूरा करता है, आन्तर्यजनक बना रहता है। उसके जीवन का हर पहलू विचार-प्रीय होता है। प्रत्येक व्यक्ति में आत्मा ने शरीर को धारण किया है, और प्रत्येक व्यक्ति को इस सृष्टि से सामंजस्य विठाना होता है।

बहुत कम लोग जानते हैं कि मनुष्य क्या है। अधिकांश तो इसके विषय में कुछ जाने बिना ही चले जाते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे इस कहानी को पूरा करने के बाद मैं चला जाऊँगा।

मे स्वयं को अधिसंख्य अज्ञानियों—जैसा ही मानता हूँ। मैं हमेशा एक जिज्ञासु व्यक्ति रहा हूँ, और अब भी हूँ। परन्तु मैंने अब ग्रहों-नक्षत्रों और पुस्तकों से पूछना बंद कर दिया है; अब मैं उन बातों को सुनने लगा हूँ, जिन्हें मेरा रक्त-प्रवाह मेरे कानों में कहता है। मेरी कहानी आनन्ददायक नहीं है, न ही इसमें कोई मिठास है, जैसी कि अन्य गढ़ी हुई कहानियों में होती है। इसमें अस्पष्टता, पागलपन और सपनों का स्वाद है—जैसा कि उन सभी लोगों की जिंदगी में होता है, जो स्वयं को धोखा देना बंद कर देते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन उस रास्ते का प्रतिनिधित्व करता है जो स्वयं उगकी ओर जाता है। कोई भी व्यक्ति आज तक पूर्ण नहीं हो पाया है, फिर भी वह पूर्ण होने की आंति पाल लेता है, भले ही अलग-अलग व्यक्तियों में उनका रूप अलग-अलग हो। प्रत्येक मनुष्य अपने जन्मकालीन अवशेषों—श्लेष्मा और शुक्राणु—को जीवन-भर ढोता रहता है। उनमें से कुछ लोग कभी मनुष्य नहीं बनते, कुछ मेंढक बन जाते हैं, कुछ छिपकली और कुछ चींटो बन जाते हैं। कुछ कमर से ऊपर मनुष्य होते हैं और नीचे लपकली। उनमें से प्रत्येक मनुष्य की सृष्टि प्रकृतिजन्य जुए का एक रूप है। सबका उद्गम स्थल एक है—हमारी माँ; हम सब एक ही द्वार पर आते हैं। परन्तु हम लोगों में से प्रत्येक अपने भाग्य से जूझता है। हम एक दूसरे को नमक तो नाते हैं, परन्तु जब इन समझ को वैचारिक रूप से व्यक्त करने की बारी आती है तो हम सिर्फ स्वयं को ही व्यक्त कर सकते हैं।

## दो विश्व

अपनी कहानी का आरम्भ मैं उस समय की घटना से कर रहा हूँ जब मैं दस वर्ष का था और अपने छोटे-से कस्बे के लैटिन स्कूल में पढ़ता था।

उस समय की बहुत-सी चीजें अपनी महक से मुझे एक दर्द भरी झुरझुरी से भर जाती हैं। अंधेरी गलियाँ, उजियाले घर और बुजं, घड़ियालों की आवाजें, लोगों के चेहरे, सुख-आराम से भरे कमरे, रहस्य व भूतों के भय से भरे कमरे, जहाँ महक थी मीठे गर्म सैंकरेपन की, खरगोशों की और नौकरानियों की, घरेलू दवाइयों की और सूखे फलों की। यहाँ दो विश्व एक दूसरे से होकर गुजरते थे। रात और दिन दो ध्रुवों से आते थे।

एक विश्व था पिता का घर। मगर यह काफी छोटा था। इसमें सिर्फ मेरे माता-पिता रहते थे, मैं इस दुनिया से लगभग अच्छी तरह परिचित था। दुनिया का मतलब था, माता-पिता, इसका अर्थ था प्रेम-भरी सुस्ती, आदर्श व स्कूल। सुहानी रोशनी, व्यवस्था, सफाई का वहाँ वास था। यहाँ मधुर बातें थीं, धुले हुए हाथ व उमदा रिवाज थे। यहाँ रोज सुबह कैरल घर्मगीत गाये जाते थे, क्रिसमस मनाया जाता था। यहाँ फर्ज, दोष, मन की बुराई, पाप-स्वीकार, क्षमा और भले इरादों, प्रेम और सम्मान, वाइबिल व ज्ञान की बातें थी। यहाँ व्यक्ति स्वयं को नियंत्रित करता था ताकि जीवन पवित्र, सुंदर व व्यवस्थित हो सके। दूसरा विश्व हमारे घर के बीचो-बीच था किंतु फिर भी पूरी तरह भिन्न था। दूसरे विश्व में थी नौकरानियाँ, नौकर, प्रेतों की कहानियाँ, शर्मनाक अफवाहे, डेरो आकर्षक

भयंकर और रहस्यमयी चीजें, बूचड़खाने और जेल-जैसी बातें, शराबी और गालियाँ देती औरतें, प्रसव-पीड़ित गाएँ, सरपट भागते घोड़े, सँघमारी की कहानियाँ, हत्याएँ व आत्महत्याएँ। ये सभी बातें हर गली में, हर घर में, पुलिम वाले में, पुताई करने वाले में मौजूद थीं। शराबी अपनी पत्नियों को पीटने थे। कितनी ही जवान औरतें शाम को कारखाने से निकलती थीं। बूढ़ी औरतें किसी पर भी टोना कर सकती थीं व दोमार कर सकती थीं। जंगलों में लुटेरे थे। आगजनी करने वालों को घुड़सवार सैनिक पकड़ रहे थे। हर तरफ इस दूसरी दुनिया की बू थी—हर तरफ, हमारे घर के सिवा, जहाँ मेरे माता-पिता रहते थे। यहाँ बस अच्छाई-भर थी। बड़ा ही नुख़्कर था यह अहसास कि हमारे घर में शांति, व्यवस्था और चैन का साम्राज्य था—नुख़्कर था यह अहसास कि एक दुनिया और भी है—कंकंग, अँवेने, हिंसक दुनिया, जिससे माँ की गोद में छिपकर बचा जा सकता था। सबसे अजीब थी इनकी नजदीकी। उदाहरण के लिए हमारी नौकरानी लीना ड्राइंगरूम के दरवाजे के पास बैठकर अपनी साफ आवाज में सबके साथ भजन गाती, अपने साफ हाथ एप्रन पर रखे हुए वह पूरी तरह माता-पिता की, हमारी, रोशनी और धर्म की दुनिया की लगती। मगर कुछ ही देर बाद जब वह रसोई या जंगल में मुझे सरकटे योनें की कहानी सुनाती या कसाई की दुकान पर लड़ती, तो वह बिलकुल दूसरी औरत होती, दूसरे विश्व की हो जाती, रहस्य के पर्दे से ढँक जाती। बेगक ! मैं अपने माँ-बाप के बेटे के तौर पर प्रकाश और धर्म की दुनिया का था, किन्तु जब भी मैंने सुना या नजर उठाई, मैंने कुछ और ही देखा। मैं आधा दूसरी दुनिया में रहता था, हालाँकि यह दुनिया मेरे लिए बिलकुल अनजानी थी और मैं दर व मन के दुखों से पीड़ित था। हाँ, कभी-कभी उस घुरे विश्व का जीवन मुझे बेहतर लगता और प्रकाश के विश्व में मेरी यापनी, जरूरी व उपयुक्त होने के बावजूद मुझे अक्सर उबाऊ और नीगस लगती। मुझे महसूस होता कि मेरी नियति अपने माता-पिता जैसा बनना ही है, शुद्ध, धर्मपरायण, अनुशासित, किन्तु वह सब अभी दूर की बात थी। पहले थी स्कूली पढ़ाई, परीक्षाएँ और चूँकि रास्ता दूसरे विश्व से होकर गुजरता था इसलिए यह नामुकिन न था कि कोई दूसरे विश्व में ही

रह जाए। मैंने बड़ी रुचि से कितने ही प्रतिभाशाली बेटों को कहानियाँ पढ़ी थी, जिनके साथ यही हुआ था। ऐसी घटनाओं में हमेशा होता था पिता के पास वापसी और होता था, धर्म का मार्ग जो इतना सुंदर और मुक्ति-कारक था कि मुझे पूरा यकीन हो चला था कि यही सही, सुन्दर व उपयुक्त है। इसके बावजूद इन कहानियों का वह हिस्सा जहाँ दुराचारी, भटकी आत्मा का जिक्र होता था, मुझे बहुत अधिक आकर्षित करता। यदि कहने और मानने की छूट होती तो मैं मान लेता कि मुझे एक होनहार पुत्र का प्रायश्चित्त करना, उसका अपने परिवार से पुनर्मिलन बड़ा शर्मनाक लगता था—हालाँकि यह अहमाम मेरे मन की गहराई में किसी कल्पना या सम्भावना की भाँति था। शैतान की कल्पना, उसका चित्र अपनी आँखों के आगे खींचना, मुझे कभी कठिन नहीं लगा। मैं उसे सबक पर, नकली या असली रूप में मेल या शराबखाने में देख सकता था। लेकिन घर में—कभी नहीं।

इसी प्रकार मेरी बहनें भी प्रकाश की दुनिया में थी। मुझे लगता कि वे स्वभाव में मेरे माता-पिता के अधिक करीब हैं। उनमें मुझसे कम झुटियाँ हैं और वे सस्कृत हैं। हालाँकि उनकी अपनी ही कुछ कमजोरियाँ व भ्रम थे, किंतु ये मुझे कभी बहुत गम्भीर नहीं लगे। उनकी दशा मुझ जैसी नहीं थी, जिसका पाप से सम्बन्ध करीबी हो रहा था। अंधेरे की दुनिया जिसके इतना करीब थी। मेरी बहनों को मेरे माता-पिता की ही भाँति ठेस नहीं पहुँचाई जा सकती थी। उनका तो बस आदर ही किया जा सकता था और यदि कोई उनसे झगड़ भी ले तो बाद में उसे खुद को ही बुरा लगता; जैसे वह खुद ही झगड़ने का कारण हो और जिसे माफी माँगनी चाहिए। यून भी, बहनों का अनादर करना एक प्रकार से माता-पिता के अपमान-सा ही था। अच्छे दिनों में, जब सब कुछ प्रकाशमय था, और मन साफ था, तब बहनों के साथ खेलना, उनके साथ अच्छा बर्ताव करना और स्वयं को उस कुलीनता की रोशनी में देखना बड़ा ही भला लगता था। यह देवदूत होने का पूर्वाभास-सा था। यह हमारी कल्पना का उच्चतम पड़ाव था। देवदूत होना, मधुर संगीत व त्रिमस की याद दिला देने वाली महक, ऐसे दिन आते ही कितने हैं? अक्सर ही मैं कोई जाना-पहचाना, मगर

तेज-तर्रार गेल गेलता जो मेरी वहनों के लिए बहुत ज्यादा उत्तेजक होता, और जिनके अंत में झगड़ा-अशांति होती। फिर दुःख, पश्चात्ताप की वे बेंबेरी घड़ियाँ और वह क्षण जब मैं माफी मांगता और फिर से प्रकाश की एक किरण कुछ समय के लिए भले दिन तथा सौभाग्य वापस ले आती।

मैं कस्बे के लैटिन स्कूल में पढ़ता था, जहाँ कस्बे के मेयर तथा वन-अधिकारी के बेटे भी पढ़ते थे, कभी-कभी हम लोग मिलते भी थे। असम्य और बे-न्याय होने के बावजूद वे कुलीन समाज का हिस्सा थे। मेरे सम्बन्ध पड़ोसियों व गाँव के ऐसे लड़कों से भी थे, जिन्हें हम आमतौर पर घटिया मानते थे। ऐसे ही एक लड़के से मेरी कहानी आरम्भ होती है :

मैं लगभग दस वर्ष का था। एक दिन आधे दिन की छुट्टी के दौरान पड़ोस के दो लड़कों के साथ गेल रहा था कि एक बड़ा असम्य हट्टा-कट्टा लगभग तेरह वर्ष का लड़का हमारे साथ गेलने लगा। वह गाँव के दर्जी का लड़का था व गाँव के ही स्कूल में पढ़ता था। उसका पिता क्षत्राधी था और वह पूरा खानदान बदनाम था। मैं फ्रांत्स प्रोमर को भली भाँति जानता था और उससे इतना डरता था कि उसे आता देखकर ही बदहवास हो उठता था। उसके तौर-तरीके बड़ों जैसे थे। उसने अपनी चाल-ढाल और हाव-भाव कारखाने के मजदूरों-जैसे बना लिए थे। उसको नेता मानकर हम पुल के पान नदी के किनारे से नीचे उतरकर पुल के नीचे सभी से छिप जाते। पुल के दोनों किनारों के बीच में पतली व धीरे-धीरे बहती नदी में कूड़े, टूटे बर्तन, प्याने, उलझे जंग लगे कंटीले तार, और ऐसे ही फेंके गए गमाम के अनावा कुछ न था। कभी-कभी हमें वहाँ कुछ ऐसा भी मिलता जिनका कुछ इन्नेमान हो सकता था। फ्रांत्स प्रोमर के निर्देश पर हम वह फासला तय करके उसे अपनी गोज के नतीजे दिखाने। वह उन्हें या तो अपने पान रख नेता या फिर ने पानी में फेंक देता। हमें शीशे, पीतल या ताँबे की चीजों का गान ध्यान रखने को कहा गया था। वह उन्हें एक पुताने श्रम ने झकड़ठा करता। उनकी मौजूदगी में मैं हमेशा बेचैन रहता, इसलिए नहीं कि मेरे पिता ऐसे सम्बन्धों के लिए गना करते, बल्कि फ्रांत्स प्रोमर के डर के मारे। किन्तु मैं उन लड़कों के बीच शामिल किए जाने व अपने साथ दूसरों जैसा ही बर्ताव किए जाने के लिए उनका

आभारी था। वह दृक्म देता और हम यूँ मानते जैसे यह कोई पुरानी रिवायत हो, हालाँकि यह सब मैं पहली बार कर रहा था।

आखिर मैं हम जमीन पर बैठ गए। फ्रात्म ने पानी में धूँका और किमी बड़े बुजुर्ग की तरह शकल बना ली। वह अपने दाँतों के बीच की जगह से धूँकता था और जब मन चाहे, सही निशाना लगा सकता था। बातचीत शुरू हुई। लड़के अपनी बहादुरी के किस्से सुनाने लगे। मैं चुप रहा किंतु डर भी रहा था कि कहीं अपनी चुप्पी से क्रोमर को नाराज करके उसके गुस्से का शिकार न हो जाऊँ। मेरे बाकी दोनों साथी उसके विश्वन्त थे और मुझे शुरू से ही मुँह नहीं लगाते थे। मैं उनके बीच एक अजनबी था, मेरी पोशाक, मेरा वर्तन एक चुनौती की तरह थे। फ्रांस क्रोमर का मेरे प्रति दोस्ताना होना असम्भव था और मुझे यकीन था कि यदि मौका पड़ा तो ये लोग भी मुझे छोड़कर भाग खड़े होंगे।

आमिरकार, डर के मारे, मैंने बोलना शुरू किया। मैंने एक लम्बी-चौड़ी कहानी गढ़ी मैं इसका हीरो था। एक रात मैंने कोने वाली चक्की के पास वाले बाग से एक बोरी-भर सेब चुराए थे। सेब भी कुछ मामूली नहीं, बल्कि पिपिन। अपनी किस्म के बेहतरीन पिपिन सेब। अपनी इस कहानी से मैं फौरी खतरों से बचाव कर रहा था। कहानी के जोड़-तोड़ में मुझे कोई दिक्कत नहीं हो रही थी। कहीं कहानी जल्दी न खत्म हो और मैं मुश्किल में न पड़ूँ, इसलिए मैंने अपनी कल्पना-शक्ति वयान में लगा दी। मैंने कहा, हममें से एक नीचे रहकर आसपास निगाह रखता रहा, जबकि दूसरा ऊपर बैठकर सेब नीचे डालता रहा। अंत में बोरी इतनी भारी हो गई कि हमें आधी बोरी सेब वही छोड़ने पड़े, किंतु आधे घंटे बाद हम वापस आए और उन्हें भी ले गए।

कहानी के अंत में मैंने कुछ तालियों की उम्मीद की थी। इस बीच अपनी वाक्पटुता देखकर मेरी हिम्मत भी बढ गई थी। दोनों लड़के चुप थे, इंतजार में। क्रोमर ने अपनी आँखें सिकोड़े मुझे पैंती नजर से देखा—  
“क्या यह कहानी सच है?” उसने कठोर स्वर में पूछा।

“हाँ,” मैंने कहा।

“सच? बिल्कुल सच?”

“हाँ, बिल्कुल सच।” मैंने जोर देकर कहा जबकि अंदर ही अंदर मेरा दम घट रहा था।

“कलम ग्राकर कहते हो?”

मैं डर रहा था फिर भी मैंने बिना हिचकिचाहट के कहा—“हाँ-हाँ, दिन पर हाथ रखकर कहना है।”

“फिर ठीक है।” उसने कहा और चल दिया।

मुझे लगा सब कुछ ठीक-ठाक रहा है। घर की ओर जाते हुए मैं खुश था। जब हम सब पुल पर पहुँचे तो मैंने हिम्मत करके कहा कि अब मुझे घर चटना चाहिए।

“ऐसी भी क्या जल्दी है,” फ्रांस् फ्रोमर हँसा,

“हमें भी तो उसी रास्ते जाना है।”

वह धीरे-धीरे यूँ ही टहलता हुआ चल रहा था और मेरी आगे निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी। मगर वह तो हमारे घर की तरफ ही जा रहा था। जब हम पहुँच गए, और मैंने अपने घर का फाटक, मोटी कुंटी, गिट्टियों पर पड़ती सूरज की रोशनी और माँ के कमरे के पर्दे देखे तो मैंने आराम की साँस ली। वाह! वापस घर में फिर से, शांति और रोगनी की दुनिया में!

जल्दी से दरवाजा गोल भीतर आकर मैं जोर से दरवाजा बंद करने जा ही रहा था, कि फ्रांस् फ्रोमर अंदर घुस आया। वरामदे से आने वाली रोगनी-भर से ही इस मनियारे में रोगनी थी, जहाँ पर मेरे नजदीक खड़ा वह मुझसे पुनःपुनः कह रहा था—“अरे, ऐसी जल्दी मत करो।”

मैंने पदों पर उसकी ओर देखा। मेरे हाथ को उसने किसी शिकंजे की भाँति जकड़ रखा था। मैंने यह अंदाजा लगाने की कोशिश की कि वह क्या सोच रहा है और क्या वह मेरे साथ कोई शैतानी करने जा रहा है।

अगर मैं जोर मचाऊँ तो क्या कोई ऊपर से आकर मुझे बचा सकेगा। मिनट भर मैंने यह गप्पल छोड़ दिया।

“क्या है यह सब?” मैंने पूछा, “क्या चाहिए तुम्हें?”

“कुछ ज्यादा नहीं, मैं तो सिर्फ तुमसे कुछ ऐसा जानना चाहता हूँ जो किसी और को नहीं सुनना चाहिए।”

“बच्छा ? क्या जानना चाहते हो तुम मुझमें ? तुम तो जानते हो कि मुझे ऊपर जाना है ।”

“मेरा खयाल है, तुम्हें मालूम होगा कि कोने वाले बाग का मालिक कौन है ?”

“नहीं नहीं, मुझे नहीं मालूम । मेरे खयाल से चक्की वाला ।”

फ्रांत्स ने अपनी बांह मेरे चारों ओर डालकर मुझे अपने इतना नजदीक खींच लिया, कि मेरे पास उससे नजर मिलाकर बात करने के सिवा कोई चारा न था । उसकी आंखों में तेज चमक थी । वह बहुतभदे ढंग से हँसा । उसका चेहरा मक्कारी से भरा था ।

“पर बच्छू ! मैं बता सकता हूँ कि वह बाग किसका है । मैं जानता हूँ कि कुछ लोग एक अरसे से सेव चुरा रहे हैं, मैं यह भी जानता हूँ कि बाग वाले ने फल चुराने वाले का पता बताने वाले को दो मार्क इनाम में देने की घोषणा कर रखी है ।”

“हे भगवान !” मैं चिल्ला उठा, “मगर तुम उसे बताना मत !”

मुझे लगा, उसे इज्जत की दुहाई देना बेकार ही होगा । वह दूसरी दुनिया का था । जहाँ तक उसकी बात थी, धोखा देना उसके लिए कोई बुराई न थी । यह तो मुझे जाहिर ही था कि ऐसे मामलों में दूसरी दुनिया के लोग हमारे जैसे नहीं होते ।

“कोई चक्कर नहीं चलेगा प्यारे ! तुम्हें क्या लगता है, मेरे पास पैसे का पेड़ है और जब मैं चाहूँ दो मार्क तोड़ सकता हूँ ? मैं गरीब हूँ । मेरा बाप तुम लोगों की तरह अमीर नहीं है और इसलिए अगर मेरे पास दो मार्क कमाने का मौका है तो मुझे उन्हे कमाना ही पड़ता है । क्या मालूम, बाग वाला मुझे कुछ ज्यादा ही दे दे ।”

उसने अचानक ही मुझे छोड़ दिया । हमारे घर के गलियारे में अब शांति व सुरक्षा की महक न थी । मेरे आसपास की दुनिया बिखर रही थी । वह मुझे एक अपराधी के रूप में बदनाम कर देगा, मेरे पिता को खंवर दे दी जाएगी, शायद पुलिस भी आए । सब कुछ गड़बड़ होने का भय मुझे सता रहा था । यह डर बड़ा ही घिनौना और खतरनाक था । मेरे धोरी न करने की बात तो वाद की थी, पर अब तो मैं कसम खा चुका था





"मुझे बताओ तो सही फाँट्स कि मुझे क्या करना है। तुम जो चाहोगे मैं करूँगा।" उसने अपनी आँखें सिकोड़ी और तिरजोर में हँस पड़ा।

"बेवकूफ मत बनो।" उसने व्यंग्य-भरे मजाक में कहा।

"तुम भी जानते हो और मैं भी कि मुझे दो मार्क कमाने हैं और मैं पैसे वाला नहीं हूँ, तुम जानते हो कि मैं उन्हें बरबाद नहीं कर सकता किंतु तुम अमीर हो, तुम्हारे पान घड़ी है। तुम्हें सिर्फ दो मार्क देने हैं और फिर सब ठीक हो जाएगा।"

मुझे उसकी बात का मतलब समझ में आ रहा था मगर दो मार्क। ये मेरे लिए उतनी ही बड़ी व मुश्किल रकम थी जैसे दस, जैसे सौ, जैसे हजार मार्क। मेरे पास पैसे थे ही नहीं। एक छोटी-सी गुल्लक थी, जो माँ के पास रहती थी। जब भी कभी हमारे निश्चिंदारों में से कोई आता था तो उसमें पाँच-दस पेपेनिश के सिक्के डाल जाता था। उसके अलावा मेरे पास कुछ न था। उस उम्र में मुझे कोई जेब-खर्च भी नहीं मिलता था।

"ईमान से, मेरे पास कुछ भी नहीं," मैंने दुखी मन से कहा, "मेरे पास पैसे नहीं हैं किंतु मैं तुम्हें कुछ और दे दूँगा। मेरे पास भारतीयों के बारे में और सैनिकों के बारे में एक किताब है। एक कम्पास है। मैं तुम्हें वह ला दूँगा।"

क्रोमर ने होंठ सिकोड़े और तिरस्कार से जमीन पर धूक दिया।

"अक्ल की बात करो," उसने हुकम-सा दिया, "अपना कूड़ा अपने पास ही रखो। कम्पास! मुझे गुस्सा मत दिलाओ। कुछ सुना? चुपचाप पैसे निकालो।"

"पर मेरे पास नहीं है। मुझे मिलते ही नहीं हैं। मैं भला इसमें क्या कर सकता हूँ।"

"तो फिर कल सुबह मुझे दो मार्क लाकर दो। कल स्कूल की छुट्टी के बाद मैं जीने के नीचे इंतजार करूँगा। याद करके ले आना, नहीं तो तुम्हें पता चल जाएगा कि न साने पर क्या हो सकता है।"

"अच्छा, मगर मैं लाऊँगा कहाँ से, जब मेरे पास हैं ही नहीं?"

"तुम्हारे घर में बहुत पैसा है। यह तुम्हारा काम है। अच्छा, फिर

कल स्कूल की छुट्टी के बाद मिलते हैं। और हाँ, मैं कहे देता हूँ—अगर तुम न लाए...”

उसने मुझे एक घुड़की-भरी नजर से देखा, एक बार फिर घूका और किसी छाया की तरह गायब हो गया।

मुझे लगा जैसे कि मुझमें ऊपर जाने की शक्ति भी नहीं बची। मेरा जीवन अस्त-व्यस्त हो चुका था। मेरे मन में घर से भाग जाने और कभी न लौटने, डूब जाने जैसी काल्पनिक तत्त्वों उभरने लगीं।

मैं अँधेरे में घर की सबसे नीचे वाली सीढ़ी पर सिमटकर बैठ गया और खुद को अपनी बदनसीबी के भरोसे छोड़ दिया। लीना जब टोकरी लेकर वहाँ लकड़ी लेने आई तो उसने मुझे रोता पाया।

मैं उससे ऊपर जाकर कुछ भी न कहने को बोलकर ऊपर चला गया। शीशे के दरवाजे के दाईं ओर खूंटो पर पिता जी का हैट व माँ का घूष का छाता टंगा हुआ था। घर और स्नेह के भाव मेरी ओर लहराकर हर दिशा से बढ़ चले। मैंने बड़े विनयशील व कृतार्थ भाव से उनका स्वागत किया, जैसे कोई खोया बेटा पुराने घर के कोनों को देख रहा हो या उनकी महक ले रहा हो। किंतु यह सब मेरा नहीं था, यह माता-पिता का प्रकाशित विश्व था, जबकि मैं अपराध की अनजान बाढ़ में गहराई तक डूब गया था, रोमांच और पाप में फँसा हुआ था। दुश्मन घुड़क रहा था, शत्रु, व कलंक मेरी राह देव रहे थे। हैट और छाता, सुंदर बजरी वाला, बलमारी के नीचे वाला बड़ा तैलचित्र और ड्राइंगरूम से आती हुई मरी बड़ी बहन की आवाजें—सब कुछ कितना अच्छा था, किसी भी चीज की तुलना में अधिक कोमल व उत्तम। किंतु यह सब अब सिर्फ संतोष और भलाई ही न थी बल्कि एक तीखा आरोप था। यह सब अब मेरा न था। मैं उनकी गुंथी और शांति का भागीदार नहीं था। मेरे पैरों में मिट्टी लग चुकी थी जिसे पायदान पर साफ नहीं किया जा सकता था। मेरे साथ आई थीं परछाइयाँ, जिनके बारे में घर की दुनिया नहीं जानती थी। कितने ही रहस्य पहले से ही मेरे पास थे, कितना भय, किंतु यह सब खिलवाड़ और आनंद था, जिसे आज मैं अपने साथ इस घर तक ले आया था। नियति मेरे पीछे दौड़ रही थी। दो हाथ मेरी तरफ बढ़े हुए थे, जिनसे मेरी माँ भी

मुझे नहीं बचा सकती थी, जिनके बारे में उन्हें पता भी नहीं लगना चाहिए था। अब मेरा अपराध चोरी था या भूठ बोलना था। काश ! मैंने भगवान की भूठी कसम न खाई होती। यह बात बेकार थी, मेरा अपराध चोरी था, मैंने सैतान की ओर हाथ बढ़ाया था। क्यों चला मैं उसकी चाल ? मैंने अपने पिता के वजाय क्रोमर की बात क्यों मानी ? क्यों मैंने वह भूठी कहानी गढ़ी। क्यों अपराध के कंधे से यूँ कंधा मिलाया, जैसे यह भले लोगों का काम हो ? अब सैतान ने हमारा हाथ पकड़ा था, अब दुश्मन मेरे पीछे आ रहा था। काल का डर, ऊपर से यह भयंकर सच्चाई कि मेरा रान्ता सगातार नीचे और अंधेरे की तरफ ही जा रहा है, एक पल के लिए मैं कुछ भी महसूस नहीं कर सका। मैं भली भाँति समझ रहा था कि मेरा कुकर्म मुझे और दूसरे कुकर्म की ओर ले जाएगा, कि मेरा वहनों से मिलना, मेरा माता-पिता को अभिवादन और चुम्बन सब भूठ था, कि मैं एक निपति, एक रहस्य उठाए फिर रहा था, जिसे मैंने उनसे छिपाया था।

जैसे ही मेरी निगाह पिता के हैट पर पड़ी, एक पल के लिए विश्वास व उम्मीद की किरण चमकी। मैं उन्हें सब कुछ बता दूँगा, उनके निर्णय, उनकी सजा मान लूँगा और उन्हें अपना हमराज बनाकर अपना रखवाला मान लूँगा। एक बार पश्चाताप करना होगा जो कि मैं पहले भी कई बार सफलतापूर्वक कर चुका था। एक कठिन, कड़वी घड़ी और माफी के लिए दुखी मन से प्रार्थना की।

कितना सुंदर लगता है वह सब। कितना आकर्षक। मगर इसमें कुछ फर्क नहीं पड़ने वाला था। मैं जानता था कि मैं ऐसा नहीं करूँगा। मैं जानता था कि अब मेरे पास एक रहस्य था, एक अपराध-बोध जिससे मुझे अकेले ही निवृत्तना था। मैं शामद दोराहे पर खड़ा था और आज से हमेशा के लिए मेरा सम्बन्ध पापियों के साथ जुड़ जाएगा। मैं शामद पापियों के रहस्यों का हिस्सेदार बनूँगा, उनकी बात मानूँगा, उन्हीं जैसा बन जाऊँगा। मैं नायक व साधारण इंसान दोनों की भूमिका अकेले ही निभा रहा था।

यह तो अच्छा ही हुआ कि जब मैं कमरे में घुसा तो मेरे पिता का सारा ध्यान मेरे चेहरे पर उठ रही हवाइयों की ओर नहीं गया और मैंने अपने मन की परतों पर एक और लाइन लगा दिया। इसी पल मेरे मन

में आश्चर्यजनक रूप से एक सीखा कटोला विचार कौंधा। मैं अपने पिता से कहीं बढ़कर हूँ। उनका मेरे जूतों के गीला होने के लिए भिड़की देना मुझे घटिया लगा। 'अगर कहीं तुम्हें पता होता....' मैंने सोचा और मैं स्वयं को भी ऐसा मुजरिम-सा लगा जिस पर डबलरोटी चुराने के लिए मुकदमा चलाया जा रहा हो, जबकि वह हत्या का अपराधी हो। यह एक घिनौना विचार था मगर फिर भी इसका एक गहरा सौंदर्य था, जो किसी अन्य विचार के मुकाबले मुझे मेरे रहस्य व अपराधबोध से कहीं तेजी से बांध रहा था। शायद मैंने सोचा, क्रोमर अब तक पुलिस के पास जा चुका हो, और मेरे ऊपर तूफानी बादल बस आ ही रहे हों, जबकि यहाँ मुझे एक बालक के रूप में देखा जा रहा है।

जहाँ तक यह तजुर्वा मुनाया जा चुका है, उसमें यह पल मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण व टिकाऊ था। मेरे पिता की पवित्रता पर यह पहला प्रहार था। उन खम्भों पर, जिन पर मैंने वचन से सहारा लिया था और जिन्हें हर आदमी, आदमी बनने से पहले नष्ट कर चुका होता है, यह पहली खरोच थी।

ऐसे ही अनुभवों से हमारी नियति की अंतरिम व वास्तव रेखा बनती है। ऐसी खरोच और दरार बढ़ती जाती है, उन्हें भर दिया जाता है, मुला द्रिया जाता है, किंतु मन की गहराई में कहीं यह खरोच जिदा रहती है। गून बहता रहता है।

उसी पल मुझे एक और विचार डराने लगा। यह ठीक है कि मुझे पूरी वक़्त अपने पिता के पैरों में गिरकर क्षमा माँगनी चाहिए। किंतु भना कोई बुनियादी बातों के लिए भी क्षमा माँगता है, और यह बात एक बच्चा उतनी ही अच्छी तरह जानता है और महसूस करता है, जैसे कोई बूढ़ा।

मुझे नारंगी मामने पर गम्भीरता से विचार करने की जरूरत महसूस हो गयी थी, कम के लिए कोई रास्ता ढूँढ़ना था, मगर मैं यह सब न कर सका। मागी शाम मैं, अपने घर के ट्राइंगल्म की बदली हुई हवा का अन्वेषण होने की कोशिश करता रहा। दीवार घड़ी और मेज, बाइबिल और आश्ना, किताबों की अनमारी व दीवार पर लगी तस्वीरें, सभी

मुझसे एक साथ विदा लेती हुई महसूस हुई। मैं कांपते हृदय से देख रहा था कि किस प्रकार मेरी दुनिया, मेरा अच्छा-भला, सुसहाल जीवन बीते दिन जैसी बात होकर मुझसे दूर हो रहा था और मैं महसूस कर रहा था कि मैं नई सूखी जड़ों के साथ बाहर अंधेरे व अजनवियों के बीच फँसा जड़ हो रहा हूँ। पहली बार मैंने मौत का स्वाद चखा था, मौत का यह स्वाद कड़वा लगा, क्योंकि यह एक भयानक नवीनता से जन्म ले डर रहा था।

अंत में बिस्तर पर लेटा हुआ मैं खुश था। इससे पहले शाम की प्रार्थना को भी भुगतना पड़ा जो मेरे लिए नकं में भोके जाने जैसा था। हमने वही गीत गाया जो मेरे पसंदीदा गीतों में से था। मैं सबके साथ गा नहीं सका। हर शब्द मुझ पर क्रोधित-सा लग रहा था। मैं प्रार्थना नहीं कर सका और जब मेरे पिता ने कहा, "हे ईश्वर, सदा हमारे साथ रहो!" —इसी पल मेरे अंदर कुछ टूट गया और हमेशा के लिए मुझे इन सब लोगों से अलग कर गया। उन सबके ऊपर ईश्वर की कृपा थी, किंतु मुझ पर नहीं। निराश, थककर मैं वहाँ से चला आया।

कुछ देर बिस्तर पर लेटने के बाद जब आत्मीयता की गर्मी मेरे चारों ओर छा गई तो मेरा मन एक बार फिर दुविधा में फँसा गुजरे वक्त में घूमने लगा। हमेशा की तरह माँ ने मुझे रात को सोने जाने से पहले 'गुड नाइट' कहा। उनके कदमों की आहट अभी तक सुनाई दे रही थी, उनकी मोम-वत्ती की रोशनी दरवाजे की दरारों से अभी तक आ रही थी। इस समय मुझे लगा, माँ अभी वापस आएँगी—उन्हें शक हो गया है, वह मुझे चूमेगी और पूछेगी, प्यार से अपनी आवाज में सात्वना के साथ पूछेगी, फिर मैं रो दूँगा, तब मेरे गले में अटका पत्थर पिघल जाएगा, मैं उनके गले से लिपट जाऊँगा और उन्हें यह सब बता दूँगा और फिर सब ठीक हो जाएगा, बचाव का मार्ग मिल जाएगा! दरवाजे पर अंधेरा हो गया तो मैं कुछ देर तक कान लगाए सुनता रहा। मुझे लग रहा था, ऐसा ही होना चाहिए, होना ही चाहिए।

फिर मैं अपनी दिक्कतों की ओर लौट आया और अपने दुश्मन की आँखों में देखा। मैं उसे साफ-साफ देख रहा था—एक आँख कुछ मिचकी हुई, उसका मुँह शैतानी मुस्कराहट में मुड़ा हुआ और उसकी आँखों में

देखते हुए मुझे उसका यकीन होने लगा जिसे मैं टाल नहीं सकता था। वह बढ़ता ही जा रहा था, बढ़तर रूप में, उसकी आँखों में शैतानी चमक रही थी। मुझे उसका, न ही उस दिन की किसी घटना का ही सपना आया। उसके बजाय मैंने सपना देखा कि मेरे माता-पिता, मेरी बहनें और मैं एक नाव में जा रहे हैं जिसके चारों ओर अपूर्व शांति और छुट्टी की-सी खुशी बिगनी हुई है। आधी रात को मैं इस खुशी के मीठे स्वाद से जागा। मैं अब भी अपनी बहनों के सूरज की रोशनी में चमकते सफेद कपड़े देख पा रहा था—जब मैं स्वर्ग से सच्चाई में दुश्मन के सामने लौटा, आमने-सामने।

मुबह जब माँ जल्दी से आकर मुझसे कह रही थीं कि पहले ही देर हो चुकी है और मैं अभी तक क्यों सो रहा हूँ, मेरी तबीयत तो ठीक है, उसी समय मुझे उल्टी हुई।

इसने मुझे कुछ जीत का-सा भान हुआ। हल्की-सी तबीयत खराब होना, मुबह देर तक महकदार चाय पीकर पड़े रहना, पास्त के कमरे में माँ की नफाई करने की आवाजें, या बाहर लीना का कसाई से बतियाना सुनते रहना। स्कूल से छुट्टी की सुबह परिकयाओं-सी बात थी। सूरज की रोशनी कमरे में फैलती है। यह उस रोशनी से बिलकुल अलग है, जिससे बचाव के लिए स्कूल में हरे पर्दे खींच दिए जाते हैं। मगर इस सुबह में वह बात न थी। इस मुबह में कुछ बेसुरा-सा था।

काग, मैं मर गया होता। मगर मेरी तो मामूली-सी तबीयत खराब थी, जैसे पहले भी हो जाती थी, उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता था। वस्तु, मैं सिर्फ स्कूल जाने से बच गया था, किंतु फ़ोमर से तो कोई बचाव न था जो ग्यारह बजे बाजार में मेरा इंतजार करेगा। माँ के स्नेह में कोई सांत्वना नहीं थी, थोपी गई-सी लगती थी, इसीलिए बुरी लगती थी। मैं सोने का फैसला करके सोचने लगा। किसी बात से कोई फायदा नहीं होगा। ग्यारह बजे मुझे बाजार तो पहुँचना ही है। इसीलिए मैं दस बजे धीरे से उठ खड़ा हुआ और बोला—अब मेरी तबीयत कुछ बेहतर है। ऐसी स्थिति में जाहिर है कि या तो मैं विस्तर में आराम करूँ या फिर दोपहर बाद स्कूल जाऊँ। मैंने कहा कि मैं स्कूल जाऊँगा। मैं योजना बना चुका था।

बिना पैसे लिये क्रोमर के पास मैं जा नहीं सकता था। अपनी छोटी-सी गुल्लक को मुझे पाना ही था। अरसे से उसमें कुछ खास पैसे न थे, परंतु बात यह मैं जानता था कि कुछ भी न ले जाने से कुछ ले जाना बेहतर होगा और क्रोमर को कुछ तो संतोष होगा।

मेरी हिम्मत उस समय टूट रही थी जब मैं जुराबें पहने चुपके से माँ के कमरे में घुसा और उनकी लिखने की मेज की दराज से अपनी गुल्लक निकाली, मगर फिर भी मुझे कल के मुकाबले में आज कम दुख था। मेरा दम घुट रहा था और मेरी दशा तब और भी खराब हो गई जब नीचे जाकर देखने पर मैंने गुल्लक को बद पाया। गुल्लक खोलना आसान ही रहा। एक पतली धातु की पत्ती को काटना-भर था। मगर काटना बड़ा कष्टदायी था, एक तो इसके साथ ही मैं चोर बन रहा था। अब तक तो मैं कभी-कभी चीनी या फल चुराकर खा लेता था। हालाँकि ये पैसे मेरे ही थे, किंतु फिर भी यह चोरी थी। मुझे अहसास था कि मैं फिर से क्रोमर और उसकी दुनिया के और करीब जा रहा हूँ। जितनी खूबसूरती से वह सब दूर होती थी, उनी सुदरता से मेरी नजदीकी भी बढ़ती जाती थी। यदि मुझे शैतान बुला रहा है तो अब वापसी का कोई रास्ता नहीं बचा। डरते-डरते मैंने पैसे गिने। गुल्लक के अंदर वे जितने अधिक लग रहे थे, हाथ में आकर वे उतने ही कम थे। कुल मिलाकर पसंठ प्रयेनिश थे। गुल्लक को मैंने वही नीचे बरामदे में छिपा दिया, मुट्ठी में पैसे लिये और घर से निकला। मेरी चाल हमेशा से अलग थी। मुझे लगा, ऊपर से किसी ने मुझे आवाज दी, मैं जल्दी से वहाँ से नदारद हो गया।

अभी काफी समय बाकी था, मैं इस बदले-मे लग रहे शहर की सड़को, गलियों में भटकता रहा। अनदेखे बादलों की तरफ, धरो के पास से, जो मुझे शक की नजर से देख रहे थे। रास्ते में मुझे ध्यान आया कि एक बार मेरे एक दोस्त की जानवरी के एक बाजार में चाँदी का एक सिक्का पड़ा मिला था। मेरा मन चाहा कि मैं भगवान से प्रार्थना करूँ कि फिर धम-त्कार हो और मुझे भी ऐसा ही कुछ मिल जाए। किंतु अब मुझे प्रार्थना का अधिकार कहाँ था और यँ भी अब गुल्लक जुड़ तो नहीं सकती थी।

फ्रांस क्रोमर ने मुझे दूर से ही देख लिया, हालाँकि वह बहुत धीरे-



धीरे कुछ यूँ मेरी तरफ आया जैसे वह मुझ पर ध्यान ही न दे रहा हो। मेरे नजदीक आकर उसने मुझे आँख के इशारे से कहा कि मैं उसके पीछे जाऊँ और एक बार भी बिना पीछे मुड़े आराम से स्ट्रोगास्से पर पुल पार करके आगे चलता गया और आखिरी घरों के आगे एक नए बने मकान के पास रुका। यहाँ काम नहीं चल रहा था। बिना दरवाजों और खिड़कियों की दीवारें तंगो-सी खड़ी थीं। क्रोमर ने आसपास देखा और अंदर चला गया, मैं भी पीछे-पीछे चला गया। उसने दीवार के पीछे खड़े होकर आँख मार-कर मेरी ओर हाथ फैला दिया।

“लाए हो ?” उसने बड़े ठंडे स्वर में पूछा।

मैंने जेब से मुट्ठी निकालकर उसकी फैली हुयेली पर झाड़ दी। इससे पहले कि आखिरी पाँच पयेनिश का सिक्का उसके हाथ में गिरा, वह सब पैसे गिन चुका था।

“यह तो पैसठ पयेनिश हैं।” कहकर वह मेरी ओर देखने लगा।

“हां,” मैं डरते हुए बोला, “मेरे पास इतने ही पैसे हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि यह कम हैं। मगर बस इतने ही हैं। मेरे पास और हैं ही नहीं।”

“मैं तुम्हें जरा ज्यादा अवलमंद समझता था।” उसने मुझे छेड़ते हुए हल्के व्यंग्य से कहा, “इज्जतदारों में सलीका जरा ज्यादा होता है। मैं तुमसे ऐसा कुछ नहीं कहना चाहता हूँ जो सही न हो, यह तुम भी जानते हो। अपने कामों के ये सिक्के वापस ले लो, एक तरफ दूसरा आदमी है जो मुझसे सौदेबाजी नहीं करता बल्कि रोकड़ा देता है।”

“पर, पर मेरे पास और हैं ही नहीं। यह भी मेरी गुल्लक के पैसे हैं।”

“यह तुम्हारी समस्या है। मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता हूँ। तुम अभी मेरे एक माँ पैंतीस पयेनिश के कर्जदार हो। बताओ, अब क्या दे रहे हो ?”

“तुम्हें पैसे मिल जाएंगे, क्रोमर ! मैं कह नहीं सकता, शायद कल या परसों मुझे कुछ ज्यादा पैसे मिल जाएँ। तुम तो समझते ही हो कि मैं यह सब अपने पिता को नहीं बता सकता।”

“मुझे इससे कोई वास्ता नहीं। मैं ऐसा नहीं हूँ कि तुम्हारा बुरा चाहूँ।

मैं ये पैसे दोपहर से पहले नहीं ले सकूंगा और हाँ, मैं गरीब हूँ। तुम्हारे पास तो अच्छे कपड़े हैं, दोपहर को तुम मुझसे बेहतर खाना खाते हो। मगर मैं कुछ नहीं कह रहा हूँ। मैं कुछ इंतजार कर सकता हूँ। परसों दोपहर बाद मैं तुम्हें सीटी बजाकर इशारा करूँगा, तब तुम पूरे पैसे ले आना। तुम मेरी सीटी तो पहचानते हो?"

उसने फिर सीटी बजाई। मैं यह सीटी कई बार सुन चुका था।

"हाँ," मैंने कहा, "मैं पहचानता हूँ।"

वह यूँ चला गया जैसे मेरा उसका कोई सम्बन्ध न हो। जैसे हमारे बीच एक व्यावसायिक सम्बन्ध था और ज्यादा कुछ नहीं।

अगर कहीं मैं क्रोमर की सीटी को आज भी सुन लूँ तो मेरा खयाल है कि वह मुझे आज भी डरा सकती है। तब से मुझे क्रोमर की सीटी अक्सर ही सुनाई देने लगी। हमेशा उसकी सीटी मेरे कानों में बजती रहती। कोई ऐसी जगह न थी, न कोई खेल, कोई काम, कोई विचार था, जहाँ ये सीटी न पहुँच रही हो, मैं इस सीटी के अधीन हो गया था, यह मेरा नमोवन्दन गई थी। अक्सर मैं अपने पसदीदा फूलों के छोटे-से बगीचे में सर्दियों की हल्की रँगोली दोपहर को जा बैठता और एक अजीब-सी चाह मुझे छू जाती। मैं चाहता कि अपने पहले के बचपन के खेल फिर से लूँ। मैं अपने से कम उम्र के ऐसे बच्चे की तरह रह रहा था, जो अभी बुद्ध, स्वतंत्र, निष्कपट और निश्चित था। मगर बीच में हमेशा से अपेक्षित, दुखदायी क्रोमर की सीटी कहीं से सुनाई पड़ती जो कल्पना के घागे को बीच में ही तोड़ देती। तब मुझे दुख देने वाले इस शरम के पीछे-पीछे बुरे और घृणास्पद रास्तों की तरफ चलना पड़ता। यह सब शायद हफ्तों तक चलता रहा, किंतु मुझे लग रहा था जैसे कि इसको चलते सालों बीत गए हैं, जैसे यह सब हमेशा से चला आ रहा हो। मैं कभी-कभार ही कुछ पैसे बचा पाता था, एक मार्क पाँच पमेनिश, जो मैं खाने की मेज से चुरा लेता था, वह भी तभी हो पाता था जब लीना खरीददारी की टोकरी मेज पर रख जाती थी। हर बार क्रोमर भला-बुरा कहता और उलाहने देता कि मैं उसके जायज हक छीन रहा हूँ, मैं उसको लूट रहा हूँ, मैं बेईमान हो रहा हूँ, मैं ही उसके दुष्टों की बजह हूँ। इससे अधिक मैंने जरूरत को अपने

जीवन में बहुत कम ही महसूस किया है। इससे अधिक नाउम्मीदी और पराधीनता का अनुभव मुझे कम ही हुआ है।

मैंने गुल्लक को नकली सिक्कों से भरकर वापस उसे उसकी जगह पर रख दिया था। किन्ती ने उसके बारे में बात नहीं की। मगर यह बात किन्ती भी दिन खुल सकती थी। क्रोमर की सीटी से कहीं अधिक मैं तब माँ ने डर जाता—जब वे कभी धीरे-से मेरे पास आतीं—कहीं वे मुझसे गुल्लक के ही बारे में तो पूछने नहीं आईं ?

चूँकि मैं अपने इस गैतान के पास बहुत बार बिना पैसे जा चुका था, उसने मुझे एक दूसरे तरीके से परेशान करना और मेरा उपयोग करना शुरू किया। मुझे उसके लिए काम करना पड़ता था। उसे अपने पिता के अवकाश के समय में काम करना था और मुझे उसके। वह मुझे कुछ मुश्किल-सा काम करने को कहता था, जैसे दस मिनट तक एक ट्रांग पर कूदना या फिर किसी जाने वाले के कपड़ों में कागज की पर्ची डालना। कितनी ही रातों के सपनों में मुसीबत के यह पहाड़ मुझ पर टूटते रहे और मैं पत्तीने में डूबा इस दबाव में पड़ा रहा।

एक बरस तक मैं बीमार रहा। मुझे अक्सर उल्टी होती और तर्दी लगती, किन्तु रात को गर्मी और पत्तीने में डूबा पड़ा रहता। मेरी माँ को लगता था कि मेरे साथ कुछ गड़बड़ है, वह मुझसे तरह-तरह की बातें करतीं और मैं परेशान हो उठता, क्योंकि मुझमें उनकी बात को काटने का आत्मविश्वास न था।

एक शाम माँ मेरे लिए चॉकलेट का एक टुकड़ा लाईं। पिछले वर्षों से ऐसा चला आ रहा था कि जब भी मैं कोई अच्छा या बहादुरी का काम करता था तो सोने से पहले मुझे इसी तरह कुछ-न-कुछ दिया जाता था। अब भी वे शामने चॉकलेट का एक टुकड़ा लिये खड़ी थीं। मुझे ऐसा दर्द उठा कि मैं न करने के अभिप्राय से बस सिर हिलाने लगा। वह विस्तर के पास वाली मेज पर चॉकलेट रखकर चली गईं। एक दूसरे दिन जब माँ ने इस विषय में पूछना चाहा तो मैंने यूँ दियाया जैसे मैं इस विषय में कुछ जानता हूँ नहीं। एक दिन उन्होंने डॉक्टर को भी बुलाया, जिन्होंने जाते हुए मुझे कुछ ठंडे पानी से नहाने की हिदायत दी।

उम भमय की मेरी हालत पागलों की-सी थी। अपने घर की अनुशासित शांति में मैं किसी अशुभ छाया की तरह भिन्नकता, कष्ट में डूबा रहता था। जिंदगी की तमाम बातों को मैं घर में औरों के साथ बांट नहीं पाता था, घंटे-भर के लिए भी मैं स्वयं को नहीं भूल पाता था। अक्सर जब भी पिता मुझसे परेशान होकर बात करते तो मैं बिल्कुल अबोध, अनजान बन जाता।

## केन

मेरी तकलीफों का अंत विलकुल अनजान तरीके से हुआ और उसके साथ ही मेरे जीवन में कुछ ऐसा आया जिसका असर आज भी बना हुआ है।

थोड़े ही दिन पहले हमारे लैटिन स्कूल में एक नए लड़के ने प्रवेश लिया। वह एक रईस विधवा का बेटा था, जो हमारे शहर में रहने आई थी। वह हमेशा बाजू पर शोक दर्शाने वाली एक काली पट्टी बांधे रहता था। मुझसे बड़ी क्लास में पढ़ता था और कई साल बड़ा भी था, किंतु औरों के साथ-साथ जल्दी ही उसने मेरा भी ध्यान आकर्षित किया। यह अनोखा छात्र उम्र में जितना बड़ा दिखता था, उससे कहीं अधिक बड़ा लगता था। किसी पर भी उसने एक बच्चे का-सा असर नहीं छोड़ा। हम सब बच्चों के बीच वह किसी पुरुष, बल्कि किसी सम्य पुरुष का-सा वर्तन करता था। नोग उसे ज्यादा पसंद नहीं करते थे। वह खेलों में हिस्सा नहीं लेता था, शरारतों में तो विलकुल भी नहीं, सिर्फ उसका अध्यापकों की तरफ आत्मविश्वास-भरा अंदाज औरों को पसंद आता था। उसका नाम था—मैक्स डेमिआन।

जैसा कि जव-तव होता रहता था, एक दिन हमारी क्लास में, जो कि एक बड़े कमरे में लगती थी, एक दूसरी क्लास को भी बिठाया गया। यह डेमिआन की क्लास थी। हम छोटी क्लास वालों को बाइबिल की कहानी पढ़नी थी, जबकि बड़ी क्लास वालों को प्रस्ताव लिखना था। जिस दौरान हमें केन और आवेल की कहानी सुनाई जा रही थी, मैं बार-बार डेमिआन

की ओर देख रहा था, उसका चेहरा मुझे विचित्र रूप से आकर्षित कर रहा था। इस बुद्धिमान, चमकदार, असामान्य रूप से दृढ़ चेहरे को, जो बड़ी तन्मयता से अपने काम में लगा हुआ था, मैं देखे जा रहा था। वह कोई छात्र नहीं लग रहा था, जो दिया गया काम कर रहा हो, बल्कि कोई शोध-शास्त्री लग रहा था जो अपनी ही समस्याओं का निपटारा कर रहा हो। मेरे लिए यह अनुभव बहुत अच्छा न था। वह मुझे अपने से बहुत श्रेष्ठ व शांत लगता था। मेरे मन में उसके खिलाफ कहीं कुछ था। वह स्वयं में बहुत निश्चित था और उसकी आंखों में किसी बयस्क की-सी चमक थी जिसे बच्चे कभी पसंद नहीं करते। कुछ उदाम किंतु साथ ही शरारत की चमक लिए मैं उसकी ओर देखता ही रहा। अब चाहे वह मुझ पर क्रुश हो या नाराज। किंतु उसने मेरी ओर देखा तक नहीं और मैंने परेशान होकर उस पर से नजरें हटा ली। जब मैं आज सोचता हूँ कि वह स्कूली दिनों में कैसा लगता था, तो मुझे लगता है कि वह हर दृष्टि में सबसे अच्छा लगता था। उस पर अपनी ही छाप थी और इसीलिए वह अलग नजर आता था, किंतु साथ-ही-साथ वह पूरी कोशिश करता था कि वह किसी की नजर में न आए। वह किसी भेष बदले हुए राजकुमार की भांति वर्तव करता था, जो किसानों की बस्ती में आ गया हो और पूरी कोशिश कर रहा हो कि उन-जैसा ही लगे।

स्कूल से घर वापस आने के समय वह मेरे पीछे-पीछे आ रहा था। जब बाकी सभी बच्चे आगे निकल गए, वह मेरे नजदीक आया और "हेलो" कहा। हालाँकि उसने स्कूली बच्चों की तरह बोलने की कोशिश की, किंतु फिर भी उसके बोलने में कुछ बड़ों का सहजा और सम्यता थी।

"हम कुछ दूर तक साथ चलें?" उसने मित्रतापूर्वक पूछा। मुझे अच्छा लगा और मैंने हाँ में सिर हिला दिया। उसके बाद मैंने उसे बताया कि मेरा घर कहाँ है।

"अच्छा! वहाँ?" उसने मुस्कराकर कहा, "उस घर को मैं जानता हूँ। तुम्हारे घर के ऊपर एक आकर्षक चीज बनी है, उसी ने मेरा ध्यान एकदम से आकर्षित किया था।"

एक बार तो मुझे समझ नहीं आया कि वह क्या कहना चाह रहा है,

दूसरी तरफ मैं चकित भी हुआ कि उसने मेरे घर को मुझसे ज्यादा गौर ने देना है। दरअसल वह हमारे घर के मुख्यद्वार पर लगे पत्थर की बात कर रहा था, जो एक भंडे-सा था। समय के साथ वह समतल हो गया था। उस पर कई बार रंग किया जा चुका था। जहाँ तक मैं जानता हूँ, उसका मुझसे या मेरे परिवार ने कोई सम्बन्ध नहीं था।

“मैं तो इस बारे में कुछ भी नहीं जानता,” मैंने धारमाते हुए कहा, “उस पर चिट्ठिया या ऐसा ही कुछ बना है, काफी पुराना भी है। शायद यह घर पहले किसी चर्च की सम्पत्ति रहा होगा।”

“हो सकता है,” उसने हामी भरी, “कभी उसे गौर से देखना। अक्सर ऐसी चीजें काफी रोचक होती हैं। मुझे लगता है कि वह एक बाज का चित्र है।”

हम कुछ दूर चलते रहे। मेरे लिए यह स्थिति बड़ी रोचक थी। तभी हेमिआन होगा, जैसे उसे कोई हँसी की बात याद आ गई हो।

“मैं आज तुम्हारी क्लान में था,” उसने जोशीले स्वर में कहा, “केन की कहानी, उसके माथे का निशान। अच्छी लगती है तुम्हें वह कहानी?” नहीं, जो हमें स्कूल में पढ़ना हो वह मुझे मुश्किल से ही अच्छा लगता था, किन्तु उससे मेरी यह कहने की हिम्मत नहीं हुई। यह तो किसी बुजुर्ग से बात करने जैसा था। मैंने कहा कि कहानी मुझे बहुत अच्छी लगी। हेमिआन ने मेरे कंधे पर धपकी दी।

“तुम्हें मुझसे दिगाया करने की जरूरत नहीं है, प्यारे! मगर यह सच है कि कहानी वाकई रोचक है। मेरा खयाल है यह किसी दूसरी कहानी के मुकाबले कहीं अधिक रोचक है जो हम अपनी क्लान में पढ़ते हैं। हमारे अध्यापक ने इस बारे में कुछ अधिक नहीं बताया, बस ईश्वर और पाप आदि को छोड़कर। मगर मेरा विचार है...” उसने बोलते-बोलते रुककर मुस्तुड़ाकर मुझसे पूछा, “तुम्हें ऐसी बातें अच्छी भी लग रही हैं?”

“हाँ, तो मेरा विश्वास है,” उसने आगे बोलना शुरू किया, “कि केन और आवेन की इन कहानी को पढ़ने का एक दूसरा नजरिया भी हो सकता है। अधिकतर बातें जो हमें सिखाई जाती हैं वे निश्चय ही सच्ची और नहीं होती हैं, किन्तु उन्हें अध्यापकों के सिपाए दृष्टिकोण के अलावा

एक भिन्न दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है। अधिकतर ऐसे में ज्यादा बेहतर अर्थ सामने आने हैं। उदाहरण के लिए इस केन और उसके माये के चिह्न के साथ भी उनकी प्रचलित अवधारणा से ही संतोष करना ठीक न होगा। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता? किसी का लड़ाई में अपने भाई को मार डालना सम्भव है, और यह भी कि मारने के बाद वह डरकर हार मान ले, सम्भव है, किंतु उसकी इस कायरता के लिए उसको एक चिह्न का दिया जाना जो उसके लिए न मिर्फ वचाव का माध्यम है बल्कि औरों के उससे डरने का कारण भी है, बड़ी अजीब बात लगती है।”

“ठीक है,” विषय में रुचि लेते हुए मैंने कहा, “किंतु इस विषय का दूसरा दृष्टिकोण क्या हो सकता है।”

उसने मेरे कंधे पर एक धौल जमाया।

“मोघी-सी बात है। जो मौजूद था और जहाँ से कहानी शुरू हुई, वह था—एक खाम निशान। एक आदमी था, जिसके चेहरे पर कुछ था जिससे दूसरे लोग डरते थे। उसके नजदीक जाने की हिम्मत नहीं करते थे। वह और उसके बच्चे उन्हे बड़ा प्रभावित करने थे। शायद या निश्चय ही यह निशान डाकखाने की मोहर जैसा नहीं रहा होगा, जीवन में इतना भोडापन भी नहीं होता, बल्कि एक अदृश्य निशान, कुछ अधिक बुद्धि व उसकी आँखों में दिखाई देता ऐसा आत्मसंयम जो विरलो में हो होता है। इस व्यक्ति के पास शक्ति थी और सभी उससे डरते थे। उस पर एक ‘निशान’ था, जिसके अर्थ मनचाहे तरीके से समझे जा सकते हैं। लोग उसके बच्ची से डरते थे, उन पर निशान था। इस प्रकार निशान को उसकी वास्तविकता के रूप में न जानकर उसका ठीक उल्टा अर्थ समझा गया। उनका मानना था कि इस निशान वाले बहुत भयंकर है, जो कि वे थे भी। साहस व चरित्र के धनी लोग दूसरे लोगों को अक्सर डरावने ही लगते हैं। इन डरावने व बेखौफ लोगों की एक जाति का मैं हर तरफ घूमना ओरो के लिए चिंता का विषय था और इसीलिए इस जाति विशेष को एक नाम के साथ एक किवंदती दी गई ताकि उससे बदला लिया जा सके, उसके डर के कारण स्वयं को उससे एक सुरक्षित दूरी पर रखना भी एक उद्देश्य था—‘समझे तुम?’”



“हाँ—इसका अर्थ हुआ कि केन का चरित्र बुरा नहीं है और वास्तविक भी सारी-सारी कथा झूठी है।”

“हाँ, और नहीं। ऐसी पुरानी, पुरातन कहानियाँ हमेशा ही सच होती हैं। मगर वे हमेशा धानदार हों, यह जरूरी नहीं और न ही हमेशा यूँ ही चललाई जाती हैं जिसे सही कहा जा सके। संक्षेप में, मेरा मानना है कि यह केन एक आम आदमी था, जिससे मात्र डर के कारण यह कहानी उसके नाम से जोड़ दी गई। यह कहानी एक अफवाह-भर थी जो कि लोग यहाँ-वहाँ फैलाते रहते थे, किंतु वह यहाँ तक जरूर सही थी कि केन और उसके वस्त्रों पर एक ‘निशान’ था और वे दूसरे लोगों से भिन्न थे।”

“और तुम्हारा यकीन है कि हत्या की बात भी सच नहीं है?” मैंने विस्मय से पूछा।

“अरे नहीं। यह तो सच ही है। एक ताकतवर ने कमजोर को मार डाला। मगर यह आदमी उसका भाई ही था, इस बात पर शक किया जा सकता है। यह जरूरी नहीं है। यूँ भी, सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई ही हैं। गो, एक बलवान ने कमजोर को मार गिराया। शायद यह एक योद्धादुरी का काम था, शायद नहीं। ऐसी परिस्थिति में दूसरे कमजोर लोग आतंकित हो गए, वे अक्सर अपना रोना रोते और जब कोई उनसे पूछता, ‘तुम भी उन्हें क्यों नहीं मार डालते?’ तो वे यह नहीं कहते कि ‘हम कायर हैं’, बल्कि कहते : ‘ऐसा हो नहीं सकता, उस पर निशान लगा है, ईश्वर ने उसे चिह्नित कर दिया है।’—कुछ इसी प्रकार से यह अफवाह चल निकली होगी। अरे! शायद मैं तुम्हें डेर करवा रहा हूँ। अच्छा—फिर मिनेगे!”

यह आन्टगाम्से में मुड़ गया और मैं अकेला रह गया, घायल। अभी यह मुश्किल से नजर से ओझल हुआ ही था कि मुझे उसकी कही सभी बातों पर यकीन करना नामुमकिन लगने लगा। केन, एक कुलीन व्यक्ति, आधेस एक कायर! केन का चिह्न एक विशिष्टता! यह सब ईश्वर की निंदा थी, सब बेतुका था, निष्ठाहीन था। कहाँ था ईश्वर? क्या उसने आवेन के बलिदान को स्वीकारा नहीं, क्या उसे आवेन प्रिय न था?—नहीं, कौनो भ्रूणंतापूर्ण विचार है। और मैंने सोचा, जरूर डेमिआन मेरा

मजाक उड़ाने और मेरी टांग खींचने के बख्तर में था। खाना सुराई है और बातें भी क्या खूब बनाता है—अगर यूँ नहीं चलेगा।

अब तक मैंने दाइबिन को या किसी और कहानी के बारे में इतनी लग्नयत्ना में नहीं सोचा था। और फाल्गुन ज़ोनर को भी कभी इतनी देर तक यूँ नहीं भूला था, घंटों तक, दूरी मान। घर पर मैंने इस कहानी को एक बार फिर पढ़ा, जैसी कि वह दाइबिन में है। वह छोटी व साफ थी और यह पागलपन ही था कि उसके बाद कोई उसमें धास, गुप्त अर्थ ढूँढ़े। यूँ तो हर हत्यारा स्वयं को ईश्वर का प्रिय बताएगा। नहीं, यह सब बक-वास थी। हाँ, हेमिआन का इस तरह इस कहानी के खिलाफ विचार सामने रखने का तरीका सुंदर अवगम्य था, किन्तु आसान और खूबसूरत होता सब कुछ, अगर यह सब समझना-जानना बस, इसी तरह आँसे मूँदकर ही सम्भव हो जाता।

कुछ-न-कुछ गडबड़ मेरे साथ भी थी। कुछ बयों, दरअसल अच्छी-सासी गडबड़ थी। मैं अब तक एक प्रकाशित, अच्छे विषय में जिया था। मैं स्वयं एक प्रकार आबेल ही था। किन्तु तब बदल रहा था मैं। गप भिन्न रूप ले रहा था और इसके खिलाफ कुछ भी नहीं कर पा रहा था। कैसे हुआ यह सब? तभी मेरे मस्तिष्क में एक विचार बीया, जिम्मेदार-भय मेरी सानि ही रोक दो। अनजाने में, जब मेरी मोहुरा सचलों को सुराजित हुई थी, मैंने किन्तु प्रकार के किन्तु के खिलाफ विचार मान की कुछ देर के लिए नकार दिया था। हाँ, मैंने ही यह कहा था, मैं जो कैं था, जिस पर निगाह था, घुसा हुआ। यह निगाह अब भी जान न थी, यह तो एक विशिष्टता थी और अपनी बुगई और बदमर्शियों के कारण अपने पिता से ऊँचा बन रहा था, अच्छाई और धार्मिकता में उँचा उठ रहा था।

मेरा उस समय यह सब अनुभव करना विचारों के इस माफ, मानविक रूप में न था बल्कि सब कुछ एक-दूसरे में गुंथा हुआ था, विचित्र मंदनों से आती भावनाओं को एक लपट थी जो मुझे दुखाती थी और साथ ही मुझे सर्व से भर जाती थी।

मैं सोचता हूँ : किम सुंदरता से हेमिआन निहर और कायरो के बारे

में बोला था। किस सुंदरता से उसने केन के माथे पर लगे निगान के अर्थ निकाले थे। किस तरह उसकी आँखें, उसकी बढ़ी-जैसी आँखें चमक रही थीं। मेरे मस्तिष्क में यह विचार कौंथा : क्या खुद यह डेमिजान भी एक तरह का केन ही नहीं है ? अगर वह खुद को उसी के जैसा नहीं महसूस करता तो उसका इस तरह पक्ष क्यों लेता है ? उसकी नजरों में एक शक्ति-नी क्यों है ? उन डरे हुआओं के बारे में जो दरअसल धर्मपरायण हैं और परमपिता को प्रिय हैं, वह इतने तिरस्कार से क्यों बोलता है ?

मैं इन विचारों के साथ किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच रहा था। कुएँ में पत्थर गिर चुका था और यह कुआँ था मेरी युवा आत्मा। एक लम्बे, काफी लम्बे समय तक केन, उसका जानलेवा प्रहार और चिह्न मुझसे जुड़े रहे, जिनके साथ मेरे ज्ञान-बोध के प्रयास, संदेह और आलोचना सभी मुझसे दूर होते गए।

मैंने महसूस किया कि दूसरे छात्र भी डेमिजान से खूब मेलजोल बढ़ा रहे थे। केन से सम्बन्धित इस कहानी के विषय में मैंने किसी को कुछ नहीं बताया था किन्तु फिर भी वह दूसरों को प्रेरित कर रहा था। कम-से-कम इन 'आगंतुक' के विषय में मैंने सुनने में आ रही थीं। अगल मैं उन सबके विषय में जानूँगा कि डेमिजान पर प्रभाव

कुछ पर विश्वास किया जा रहा था, सभी कुछ उत्तेजक था—विश्वकर्मा की  
था। फिर कुछ दिन शांति रही। कुछ ही दिनों बाद फिर से हम छात्रों  
के बीच नई बातें सुनाई पड़ी, कहा गया, “डेमिआन के सम्बन्ध तो  
तड़कियों में हैं और उसे सब कुछ मालूम है।”

इन बीच फ्रांज़ क्रोमर का मेरे साथ चल रहा भ्रम अन्तर्गत ही  
चलता रहा। मैं उससे बच नहीं पा रहा था। अगर वह मुझे एक दिन  
आराम से छोड़ भी दे तो भी मेरा उससे सम्बन्ध जुड़ा रहता। मेरी छाया  
की भांति वह मेरे सपनों में सजीव था और जो कुछ वह मेरे साथ वास्त-  
विकता में नहीं कर पाता था, मेरी कल्पना उससे मेरे सपनों में करवा लेती  
थी। इन सपनों में मैं उसका पूरी तरह से गुलाम हो जाता था। मैं इन  
सपनों में जीता था, सच्चाई से परे—मैं सपने देखने में हमेशा से ही आगे  
था—संश्रुति और शक्ति में इन जितने के कारण खो रहा था। बहुत से  
सपनों में मैं एक था कि क्रोमर मेरे साथ दुर्व्यवहार कर रहा है, मुझ पर  
घृणित है, लात मार रहा है, और उसने भी बदतर था कि वह मुझे और  
भी बुरे अपराधों की ओर ले जा रहा है, वे ही नहीं जा रहा है बल्कि  
अपनी ताकत से मुझे मजबूर कर रहा है। सबसे भयानक सपना जिसको  
देखते हुए मैं बीच में ही डरकर जाग जाया करता था, वह था मेरे पिता  
की हत्या का प्रयास। क्रोमर ने एक चाकू पर धार लगाई और उसे मेरे  
हाथ में दे दिया। पेटों के झुरमुट में हम किसी पर, मुझे मालूम नहीं किस  
पर, घात लगाए बैठे थे और जैसे ही कोई दूसरी ओर से आया, क्रोमर ने  
मेरी याह दबाकर इशारा किया—यही है वह जिसे मुझे छूरा घोंपना है।  
यह तो मेरे पिता हैं! ~ और यही मेरी नींद खुल जाती। इन सब बातों के  
बावजूद मैं अभी भी केन और आवेल के बारे में सोचता था, हालांकि डेमि-  
आन के विषय में उतना नहीं। उससे मेरी अगली माक्षात मेंट हुई भी तो  
आश्चर्यजनक रूप से एक सपने में। हमेशा की भांति एक बार फिर मैं अपने  
साथ दुर्व्यवहार और मार-पीट का सपना देख रहा था किंतु इस बार  
क्रोमर के स्थान पर डेमिआन था। इस बार कुछ नमापन था, जिसने मुझ  
पर गहरा अमर छोड़ा। वह सब, जिसे मैं क्रोमर के नीचे दबा हुआ कष्ट  
और अनिच्छा की भावना से सह रहा था, वही सब डेमिआन के साथ मैंने

सुशी से सह लिया, एक ऐसी भावना के साथ जिसमें सिर्फ कष्ट ही न था बल्कि आनंद भी था। यह स्वप्न मैंने दो बार देखा और उसके बाद डेमि-आन की जगह फिर से क्रोमर ने ले ली।

जो कुछ मैं इन सपनों में भोग रहा था और जो प्रत्यक्ष देखा रहा था, उन्हें ठीक से अलग कर पाना मेरे लिए असम्भव है। फ्रांत्स क्रोमर के साथ मेरा दुःखद प्रसंग उसी भाँति चलता रहा जब तक कि मैंने छोटी-बड़ी चोरियाँ कर उसकी रकम चुका नहीं दी। नहीं, अब वह इन चोरियों के बारे में जानता था। वह हमेशा पूछता था कि यह पैसा कहाँ से आ रहा है और अब मैं पहने से कहाँ अधिक क्रोमर के कपड़े में था। अक्सर ही वह मुझे धमकी देता कि वह मेरे पिता को सब कुछ बता देगा और तब मुझे डर से कहाँ अधिक इस बात का दुःख होता कि मैंने पहने ही उन्हें सब कुछ क्यों नहीं बता दिया। किंतु साथ ही सभी बातों का दुःख मुझे नहीं था, कम-से-कम हमेशा दुःख नहीं होता था और कभी-कभी लगता, जैसे ऐसा होना ही था, मुझ पर एक विनाश की छाया थी जिससे बच निकलने की इच्छा बेमानी थी।

मेरा खयाल है कि मेरे माता-पिता भी मेरी हालत से कुछ कम दुःखी न थे। एक अनजान छाया ने मुझे ग्रस्त रखा था, मैं उनकी संगति में जम नहीं रहा था जो कभी बहुत घनिष्ट थी और जिसे पाने के लिए मुझे अक्सर एक खोए स्वर्ग को पाने जैसी इच्छा घेर लेती। मेरी माँ मुझसे किसी बीमार या पापी के साथ जैसा बर्ताव करती थीं, किंतु मेरी दोनों बहनों के बर्ताव से ही हालात का अंदाजा लगाया जा सकता था। इन बर्ताव में साफ नजर आता था जैसे मैं कोई पागल हूँ और निन्दा में अधिक सिर्फ शिकायत का भागी हूँ और जिसके अंदर शैतान पहने ही अपना घर बना चुका है। मैं समझता था कि घर के लोग अपनी प्रार्थना की व्यर्थता को जानते हुए भी मेरे लिए प्रार्थना करते हैं। राहत की इच्छा, पाप के स्वीकार करने की ज़रूरत मैं अक्सर ही महसूस करता था किंतु मैं न तो माँ से, न ही पिताजी से यह कह सकूँगा। मैं जानता था इसे अभी बड़ी अच्छी तरह सुनेंगे, मेरी भावनाओं का खयाल करेंगे, दुखी भी होंगे, किंतु मुझे ठीक से समझेंगे नहीं और सारी बात को नहीं राह से भटकाव

के रूप में ही देखेंगे, जबकि यह भव दरअसल नसीब का खेल था।

मैं जानता हूँ, कुछ लोग यकीन नहीं करेंगे कि इस मुश्किल में ग्यारह साल का लड़का इस तरह कैसे सोच सकता है। मैं अपनी बात ऐसे लोगों को नहीं बता रहा हूँ, बल्कि उन लोगों को बता रहा हूँ जो मनुष्य को ठीक से समझते हैं। एक वयस्क, जिसने अपनी भावनाओं की विचार का रूप देना सीख लिया है, जब इन विचारों को बच्चे में नहीं पाता तो मान लेता कि उसमें अनुभव की कमी है। मैंने अपने जीवन में बहुत कम बातें इतनी गहराई से महसूस की हैं और उन दिनों की तरह बहुत कम दुखी हुआ हूँ।

एक बार की बात है, बरसात का दिन था। मेरे सभी दुखों के लिए जिम्मेदार क्रोमर ने मुझे वर्गप्लात्म पर बुलाया था। मैं इंतजार कर रहा था और अखरोट के गीले पेड़ों के नीचे खड़ा गिरती पत्तियों पर इधर-उधर पैर चला रहा था। पैसे तो थे नहीं, पर मैं अपने साथ दो केक के टुकड़े ले आया था जो अब भी मेरे पास थे, ताकि क्रोमर को कुछ तो दे सकूँ। मुझे अब तक एक कोने में खड़े होकर उसकी प्रतीक्षा करने की आदत पड़ चुकी थी और मैं खूब समझता था कि पराधीन व्यक्ति के साथ कैसा मुलूक होता है।

आखिरकार क्रोमर आया। आज वह ज्यादा देर नहीं रुका। एक-आध बार मुझे सामने से धक्का देकर उमने केक के टुकड़े ले लिए। फिर एक गीली सिगरेट की भी पेशकश की, जो मैंने नहीं ली। वह हमेशा से ज्यादा खुश था।

“हाँ,” जाते हुए उसने कहा, “कहीं मैं भूल न जाऊँ—अगली बार तुम अपनी बहन को साथ ले आना, बड़ी वाली को। वैसे, क्या नाम है उसका?”

मेरी समझ में कुछ नहीं आया, कोई उत्तर भी नहीं दिया। बस, आहत-सा उसे देखता ही रह गया।

“समझ में नहीं आया क्या? अपनी बहन को साथ लेकर आना।”

“ठीक है क्रोमर, मगर यह सम्भव नहीं है। मुझे इसकी इजाजत नहीं है। यूँ भी वह मेरे साथ नहीं आएगी।”

मेरा खयाल था कि वह भी उसका एक बार फिर तंग करने, परेशान करने का तरीका है। वह ऐसा अक्सर करता था, किन्नी अस्मभव-सी चीज की माँग करता, मुझे बुरी तरह डरा देता, बेइज्जती करना और फिर बात खत्म करने पर आता। अंत में मुझे पैसे या कुछ और देकर अपना पिठ छुड़ाना पड़ता।

इस बार बात कुछ अलग थी। मेरे मना करने पर वह कतई नाराज नहीं हुआ।

"देख नो," उसने कहा, "तुम अच्छी तरह से इस बात पर सोच लो। मैं तुम्हारी बहन से जान-पहचान करना चाहता हूँ। एक दिन तो यह होगा ही। तुम बस उसे एक बार टहलने के लिए ले आना और मैं वहीं आ जाऊँगा। मैं कल तुम्हें फिर सीटी बजाकर बुलाऊँगा। तभी हम इस बारे में एक बार फिर बात करेंगे।"

जब वह चला गया, तभी मुझे उसके मन की दबी उच्छा का अंदाजा हुआ। मैं अभी बच्चा था, मगर मुझे कुछ-कुछ मनक पड़ चुकी थी कि नड़के और लड़कियाँ, जब कुछ बड़े हो जाते हैं तो एक-दूसरे के साथ कुछ बदलील, बुरे काम कर सकते हैं। और अब मैं...ओह, मुझे अचानक ही अहसान हुआ, यह क्या गजब है! मैंने भी निश्चय कर लिया, मैं यह कभी नहीं करूँगा। बाद में क्या होगा? किस प्रकार ओमर मुझसे बदला लेगा, यह सब सोचने की मेरी हिम्मत नहीं हुई। मेरे लिए एक और यंत्रणा का दौर आ गया, जैसे अभी कुछ कसर बाकी थी।

निराश, मैं नूनी सड़क पर चला जा रहा था, जेब में हाथ डाले। नई पीड़ा, नई गुलामी।

तभी मुझे एक नए, भारी स्वर ने पुकारा। मैं डर गया और भागने लगा। कोई मेरे पीछे भागा, एक हाथ ने मुझे धीरे-से पकड़ लिया। वह मैकन डेमिअन था।

मैंने मुँह को डीना छोड़ दिया।

"तो तुम ये!" अनिश्चय की हानस में मैंने पूछा, "तुमने तो मुझे डरा ही दिया था।"

उसने मुझे देखा। उसकी निगाह मुझे अब ने पहने इतनी चयस्कों-सी,

विचारशील और सब कुछ भांप लेने वाली कभी नहीं लगी थी। काफी दिनों से हमने एक दूसरे से बात नहीं की थी।

“मुझे दुःख है,” उसने बड़ी सम्यता और एक खाम अंदाज में कहा, “मगर सुनो, इस तरह डरना भी ठीक नहीं।”

“हाँ, पर कभी-कभी ऐसा ही हो जाता है।”

“ऐसा ही लगता है। मगर देखो, जब तुम किसी से, जिसने तुम्हारे खिलाफ कुछ भी नहीं किया है, इस तरह का चर्चाव करोगे, तो वह शस्त्र सोचने लगता है, आश्चर्य में पड़ जाता है, उसे जिज्ञासा होती है कि तुम बेहद डरपोक हो, और यह भी सोचता है कि जो आदमी डर रहा है वह कुछ ऐसा ही होगा। कायरों को हमेशा डर लगा रहता है, किंतु मुझे लगता है तुम कायर तो नहीं हो। क्यों, ठीक है न? हाँ, यूँ तुम कोई सूरमा भी नहीं हो। कुछ चीजें हैं जिनसे तुम डर रहे हो, कुछ लोग भी हैं जिनसे तुम डरते हो। और यही नहीं होना चाहिए। नहीं, लोगों से कभी नहीं डरना चाहिए। तुम्हें मुझमें तो डर नहीं लगता? ठीक है न?”

“अरे नहीं, कतई नहीं।”

“सही कहा तुमने। पर है न कुछ लोग जिनसे तुम्हें डर लगता है?”

“मुझे नहीं मालूम, मेरी बात छोड़ो। बनावो, तुम्हें मुझसे क्या काम है?”

वह मेरे साथ ही आगे बढ़ा—मैं चले जाने के उद्देश्य से तेजी से चल रहा था। किनारे से उसकी नजरों को मैं महसूस कर रहा था। “मेरी बात समझो,” उसने फिर से बोलना शुरू किया, “मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ। मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारे साथ एक प्रयोग करना चाहता हूँ, जिसके द्वारा तुम कुछ उपयोगी बातें सीख सकते हो। ध्यान से सुनो!—मैं एक कला का अभ्यास करता हूँ, जिसे विचारों को पढ़ने की कला कहते हैं। इसमें कोई जादू-मंत्र नहीं है, किंतु जिसे इस कला का ज्ञान नहीं है उसके लिए यह जरूर बड़ी सौगात है। आदमी इस कला के द्वारा लोगों को आश्चर्य में डाल सकता है।—अच्छा आओ, हम एक बार कोशिश करते हैं। तुम मुझे बहुत प्रिय हो, और मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे मन की क्या हालत है। उस दिशा में पहला कदम मैं ले ही



मेना न्याय था कि यह भी उसका एक बार फिर तंग करने, परेशान करने का तरीका है। वह ऐसा अक्सर करता था, किसी असम्भव-सी चीज की माँग करता, मुझे बुरी तरह डरा देता, बेइज्जती करता और फिर बात खत्म करने पर आता। अंत में मुझे पैसे या कुछ और देकर अपना पिंड छुड़ाना पड़ता।

इस बार बात कुछ अलग थी। मेरे मना करने पर वह कतई नाराज नहीं हुआ।

"देख लो," उसने कहा, "तुम अच्छी तरह से इस बात पर सोच लो। मैं तुम्हारी बहन से जान-पहचान करना चाहता हूँ। एक दिन तो यह होगा ही। तुम बस उसे एक बार टहलने के लिए ले आना और मैं वहीं आ जाऊँगा। मैं कल तुम्हें फिर सीटो बजाकर बुलाऊँगा। तभी हम इस बारे में एक बार फिर बात करेंगे।"

जब वह चला गया, तभी मुझे उसके मन की दबी इच्छा का अंदाजा हुआ। मैं अभी बच्चा था, मगर मुझे कुछ-कुछ भनक पड़ चुकी थी कि नदके और लड़कियाँ, जब कुछ बड़े हो जाते हैं तो एक-दूसरे के साथ कुछ बदलील, बुरे काम कर सकते हैं। और अब मैं... ओह, मुझे अचानक ही अहसान हुआ, यह क्या गजब है! मैंने भी निश्चय कर लिया, मैं यह कभी नहीं करूँगा। बाद में क्या होगा? किस प्रकार झोमर मुझसे बदला लेगा, यह सब सोचने की मेरी हिम्मत नहीं हुई। मेरे लिए एक और यंत्रणा का दौर आ गया, जैसे अभी कुछ कसर बाकी थी।

निराश, मैं सूनी सड़क पर चला जा रहा था, जेब में हाथ डाले। नई पीड़ा, नई गुलामी।

तभी मुझे एक नए, भारी स्वर ने पुकारा। मैं डर गया और भागने लगा। कोई मेरे पीछे भागा, एक हाथ ने मुझे धीरे-से पकड़ लिया। यह मैल डेमिआन था।

मैंने गुद को डीला छोड़ दिया।

"तो तुम थे!" अनिश्चय की हानत में मैंने पूछा, "तुमने तो मुझे डरा ही दिया था।"

उसने मुझे देखा। उसकी निगाह मुझे अब से पहलें इतनी वयस्कों-सी,

विचारशील और सब कुछ भाँप लेने वाली कभी नहीं लगी थी। काफी दिनों से हमने एक दूसरे से बात नहीं की थी।

“मुझे दुख है,” उसने बड़ी सम्मति और एक खास अंदाज में कहा, “मगर सुनो, इस तरह डरना भी ठीक नहीं।”

“हाँ, पर कभी-कभी ऐसा हो ही जाता है।”

“ऐसा ही लगता है। मगर देखो, जब तुम किसी से, जिसने तुम्हारे खिलाफ कुछ भी नहीं किया है, इस तरह का बर्ताव करोगे, तो वह शक्स सोचने लगता है, आश्चर्य में पड़ जाता है, उसे जिज्ञासा होती है कि तुम बेहद डरपोक हो, और यह भी सोचता है कि जो आदमी डर रहा है वह कुछ ऐसा ही होगा। कायरों को हमेशा डर लगा रहता है, किंतु मुझे लगता है तुम कायर तो नहीं हो। क्यों, ठीक है न? हाँ, यूँ तुम कोई सूरमा भी नहीं हो। कुछ चीजें हैं जिनसे तुम डर रहे हो, कुछ लोग भी हैं जिनसे तुम डरते हो। और यही नहीं होना चाहिए। नहीं, लोगों से कभी नहीं डरना चाहिए। तुम्हें मुझसे तो डर नहीं लगता? ठीक है न?”

“अरे नहीं, कतई नहीं।”

“सही कहा तुमने। पर हैं न कुछ लोग जिनसे तुम्हें डर लगता है?”

“मुझे नहीं मालूम, मेरी बात छोड़ो। बनावो, तुम्हें मुझमें क्या काम है?”

वह मेरे साथ ही आगे बढ़ा—मैं चले जाने के उद्देश्य से तेजी से चल रहा था। किनारे से उसकी नजरों को मैं महसूस कर रहा था। “मेरी बात समझो,” उसने फिर से बोलना शुरू किया, “मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ। मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारे साथ एक प्रयोग करना चाहता हूँ, जिसके द्वारा तुम कुछ उपयोगी बातें सीख सकते हो। ध्यान से सुनो!—मैं एक कला का अभ्यास करता हूँ, जिसे विचारों को पढ़ने की कला कहते हैं। इसमें कोई जादू-मंत्र नहीं है, किंतु जिसे इस कला का ज्ञान नहीं है उसके लिए यह जरूर बड़ी सीगात है। आदमी इस कला के द्वारा लोगों को आश्चर्य में डाल सकता है।—अच्छा आओ, हम एक बार कोशिश करते हैं। तुम मुझे बहुत प्रिय हो, और मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे मन की क्या हालत है। उस दिशा में पहला कदम मैं ले ही चुका

हैं। मैंने तुम्हें डरा दिया है। जाहिर है, तुम डरते हो। कुछ चीजें और लोग ऐसे हैं जिनसे तुम्हें डर लगता है। इसका क्या कारण हो सकता है? व्यक्ति को किसी से भी डरने की जरूरत नहीं होती। जब व्यक्ति किसी से डरता है तो दरअसल वह अपने ऊपर किसी व्यक्ति को हावी होने देता है। उदाहरण के लिए किसी ने कुछ गलत काम किया, जिसके बारे में दूसरा व्यक्ति जानता है—बस, ऐसे में उस दूसरे व्यक्ति का आतंक तुम पर छा जाता है। समझे? सीधी-सी बात है, है न?"

मैं असहाय-सा उसके चेहरे की तरफ देखता रह गया। वह हमेशा की तरह गम्भीर, समझदार एवं भला लग रहा था, किंतु उसके बर्ताव में किसी प्रकार की नरमाई न होकर एक प्रकार की सख्ती थी। उसके चेहरे पर न्याय या ऐसा ही कुछ भाव भी था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि मुझे क्या हो रहा है। मेरे सामने वह किसी जादूगर की भांति खड़ा था। "तो कुछ समझे?" उसने फिर पूछा।

मैंने निर हिताया। कुछ बोल नहीं सका।

"मैं तुमसे कह रहा था कि यह विचार पढ़ने वाली बात मजाकिया लगती है, मगर यह बड़ी ही स्वाभाविक है। जैसे कि मैं तुम्हें ठीक-ठीक बता सकता हूँ कि तुमने मेरे बारे में उन दिन क्या सोचा था, जब मैंने तुम्हें केन और आवेल की कहानी सुनाई थी। खैर, उसका आज की बात ने कोई सम्बन्ध नहीं है। मुझे यह भी सम्भव लगता है कि तुमने मुझे सपने में देखा हो। गैर छोड़ो! तुम समझदार लड़के हो, दूसरे लोग तो कितने मूर्ख हैं! मैं जब-तब ऐसे समझदार लड़कों से बातें करता रहता हूँ, जिन पर मुझे विश्वास होता है। तुम्हें कैसा लगता है?"

"हां, हां! बस, मेरी समझ में नहीं आता—"

"अभी हम उस अजीब प्रयोग की ही बात करते हैं। तो हमें मालूम हो चुका है कि अ नाम का लड़का डरता है—उसे किसी से डर लगता है। शायद उसे कोई रहस्य मानूँ है जिससे वह उसे परेशान कर रहा है।—कुछ ऐसी ही बात है न?"

उस सपने की ही भांति मैं उसके प्रभाव, उसकी आवाज से दबा जा रहा था। मैंने सिर्फ निर हिता दिया। क्या यह वही आवाज नहीं है

जो सिर्फ मेरी ही हो सकती थी ? जिसे सब कुछ मालूम था ? जिसे सब कुछ मुझसे भी ज्यादा और ठीक-ठीक मालूम था ?

हेमिब्रान ने मेरे कंधे पर जोर से एक धोल जमाया, 'तो ठीक ही मैंने ठीक ही सोचा । वस, अब एक और सवाल—क्या तुम्हें उस लड़के का नाम मालूम है जो अभी-अभी यहाँ से गया था ?'

मैं बुरी तरह से चौंक गया । उसने मुझे ऐसी जगह पर छू दिया था जिससे गोपनीयता खुल जाने का डर लगा ।

"लड़का ? वहाँ कोई लड़का था ही नहीं, सिर्फ मैं ही था ।"

वह हँस पड़ा, "कह भी दो, क्या नाम है उनका ?"

मैं बुदबुदाया, "क्या तुम्हारा मतलब फात्स क्रोमर से है ?"

उसने मेरी ओर देखकर सतोष से हाँ में सिर हिला दिया ।

"अरे बाह ! तुम तो बड़े अवलमंद निकले, अब हम दोस्त बनेंगे । परतु अब मैं तुम्हें एक बात बता दूँ—वह क्रोमर या जो भी उसका नाम है, एक बुरा लड़का है । उसके चेहरे से ही पता चलता है कि वह कमोना आदमी है ! तुम्हारा क्या विचार है ?"

"हाँ," मैंने लम्बी साँस ली, "वह बुरा है, शैतान है ! मगर उसे कुछ पता नहीं लगना चाहिए । भगवान के लिए, उसे कुछ न बताना ! क्या तुम उसे जानते हो ? क्या वह तुम्हें जानता है ?"

"शांत हो जाओ । वह जा चुका है, और मुझे नहीं जानता है—कम-से-कम अभी तक तो नहीं । मगर अब मैं उसे बड़ी खुशी से मिलना चाहूँगा । वह सरकारी स्कूल में ही पढ़ता है न ?"

"हाँ ।"

"किस क्लास में ?"

"पाँचवीं में मगर...मगर उसे कुछ न कहना ।"

"शांत हो जाओ, तुम्हें कुछ नहीं होगा । लगता है तुम्हारी इस क्रोमर के बारे में ज्यादा कुछ बताने की इच्छा नहीं है ?"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता । छोड़ो भी ।"

वह कुछ देर चुप रहा ।

"कितने दुःख की बात है," उसने आगे कहा, "हम अपने प्रयोग को

जारी रख सकते थे। मगर मैं तुम्हें और परेशान नहीं कहूँगा। क्या तुम यह नहीं जानते हो कि तुम्हारा उससे डरना ठीक नहीं है? ऐसा डर हमें तोड़ देता है। हमें इससे बचना चाहिए। तुम्हें भी खुद को इससे बचाना होगा, अगर तुम्हें भले बादमी के रूप में बड़ा होना है। समझे?"

"निश्चय ही तुम बिलकुल ठीक कह रहे हो—मगर यह ही नहीं सकता। तुम्हें मालूम नहीं है..."

"तुमने खुद देखा कि मैं तुम्हारी उम्मीद से ज्यादा ही जानता हूँ।... क्या तुम्हें मालूम नहीं है..."

"हां, वह भी है, मगर मुझे की बात यह नहीं है। मैं बता नहीं सकता। नहीं बता सकता!"

"इसने तो कुछ फर्क पड़ने से रहा कि मैं तुम्हें वह सारा पैसा दे दूँ जो तुम्हें उसे देना है। मैं वह तुम्हें दे सकता हूँ।"

"नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैं तुम्हें दोबारा कह रहा हूँ—किसी ने इन बारे में कुछ न कहना। एक शब्द भी नहीं। ऐसा करके तुम मुझे तकलीफ ही दोगे।"

"मुझ पर भरोसा रखो, सिनक्लेयर। अपने मन की बातें तुम मुझे बाद में कभी बता देना..."

"नहीं, कभी नहीं!" मैं जोर से चिल्लाया।

"जमी तुम्हारी मर्जी। मेरा मतलब है, शायद तुम बाद में मुझे कुछ और अधिक बताओ। अपनी मर्जी से समझे! वहीं तुम यह तो नहीं सोच रहे कि मैं भी वही करूँगा जो क्रोमर ने किया?"

"नहीं, दरअसल तुम्हें इस बारे में कुछ मालूम नहीं है।"

"बिलकुल नहीं। मैंने बस यूँ ही सोचा। इतना यकीन रखो, मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा जो क्रोमर करता है। और हाँ, तुम्हें मुझे कुछ देना भी नहीं है।"

काफी देर तक हम दोनों चुप रहे। मैं भी धीरे-धीरे शांत हो गया। मगर डेमिजान की जानकारी मेरे लिए रहस्यमयी होती गई।

"मैं अब घर जा रहा हूँ।" कहते हुए डेमिजान ने अपना मोटे ऊनी कपड़े का कोट बदन पर कसा। मैं तुम्हें बस एक बात फिर से कहना चाहता

हैं। चूँकि हम यहाँ तक बात कर ही चुके हैं—तुम्हें इस लड़के से पीछा छुड़ाना है। अगर और कोई रास्ता न मिले तो उसे मार डालो। मुझे वह कहीं ज्यादा असरदार लगेगा, अच्छा लगेगा, अगर कही तुमने यह कर दिया। मैं तुम्हारी इसमें मदद भी कहूँगा।”

एक बार फिर मुझे डर ने घर दबोचा। केन और आवेल की कहानी मुझे एक बार फिर से याद हो आई। यह सब मेरे लिए बड़ा डरावना था और मैं धीरे-से रोने लगा। मेरे चारों तरफ सब कुछ बहुत ही भयावह था।

“ठीक है,” मैक्स डेमिआन मुस्कराया, “अब घर जाओ। हम सब कुछ ठीक कर ही लेंगे, हालाँकि मार डालना सबसे आसान इलाज था। ऐसी बातों में सबसे आसान ही सबसे अच्छा होता है। अपने इस दोस्त क्रोमर के साथ रहकर तुम कुछ बहुत अच्छी संगति में नहीं पड़ रहे हो।”

मैं घर चला आया। मुझे लगा जैसे मैं सालों बाद घर आ रहा हूँ। सब कुछ बदला लग रहा था। मेरे और क्रोमर के बीच एक भविष्य की उम्मीद जैसा कुछ आ गया था। अब मैं अकेला न था। अब मुझे अहसास हुआ कि हफ्तों तक अपने मन के रहस्य के साथ मैं कितना अकेला था। तभी मुझे याद आया, जो मैं पहले भी कई बार सोच चुका था, माता-पिता के सामने पाप स्वीकार कर लेने से भी मन का बोझ जरूर कम हो जाएगा। किंतु मुक्ति फिर भी नहीं मिलेगी। अब, जबकि मैं एक अपरिचित के सामने पाप स्वीकार कर चुका था, मुक्ति की हवा किसी तीखी महक की भाँति मेरी ओर बढ़ रही थी।

मेरा भय अब भी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था। मुझे अपने दुश्मन से अच्छे-खासे भगड़े की उम्मीद थी। परंतु मैं हैरान था कि सब कुछ कितनी शांति, कितने आराम से चल रहा था।

मेरे घर के सामने बजने वाली क्रोमर की सीटी नहीं बजी। एक दिन बीता, दो दिन, तीन दिन, एक हफ्ता हो गया। यकीन करने की भी मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी। मन-ही-मन मैं इस उम्मीद में रहा कि जरूर वह ऐन ऐसे वक्त सामने आ खड़ा होगा जब उसकी उम्मीद नहीं होगी। मगर वह दूर था और दूर ही रहा। अपनी इस नई मिली आजादी पर

चकिन, मैं विद्वान् नहीं कर पा रहा था जब तक कि मैं आगिर एक बार श्रीमर से मिला नहीं। वह जाटनरगास्से ने मेरी तरफ ही आ रहा था। जैसे ही उसने मुझे देखा वह चौंक पड़ा। फिर उसके चेहरे पर एक विनियानी-गी हँसी आ गई और बिना आगे बढ़े वहीं मुड़ गया ताकि मुझसे मिलना न पड़े।

मेरे लिए यह एक अद्भुत दृश्य था। मेरा शत्रु मुझसे उरकर भाग रहा था। मेरा दुश्मन मुझसे डर रहा था। मैं खुशी और विस्मय से फूला नहीं समा रहा था।

कुछ दिनों डेमिआन एक बार फिर मिला। स्कूल के बाहर वह मेरा संतान कर रहा था।

"हेलो," मैंने कहा।

"गुड मॉनिंग ! मैं तुम्हें जानना चाहता हूँ कि अब तुम्हारा क्या हाल है ? श्रीमर तुम्हें परेशान तो नहीं कर रहा है ?"

"अच्छा ! तो यह सब तुम्हारी करामात है ? मगर कैसे किया यह सब ? मेरी तो नमक में नहीं आ रहा है। वह तो बिल्कुल ही उड़न-टू हो गया है।"

"तब तो ठीक ही है। अगर कभी वह दोबारा तुम्हारी तरफ रुक करे तो उसे बस इतना कह देना कि वह डेमिआन की याद कर ले। हालाँकि मेरे गमान ने वह ऐसा करेगा नहीं। मगर फिर भी उस जैसे का कुछ भरोसा भी नहीं।"

"पर इन दो बातों का आपस में क्या सम्बन्ध है ? क्या तुमने उसे मार-पीट कर भगा दिया है ?"

"नहीं, मैं यह सब इतनी जल्दी नहीं करता हूँ। मैंने सिर्फ उससे बात की थी। मैं यह समझाने में सफल रहा कि अगर वह तुम्हें परेशान नहीं करे तो इसमें उसी का भला है।"

"अरे ! पर तुमने कहीं उसे पैसे तो नहीं दिए हैं ?"

"नहीं प्यारे ! यह तरीका तो तुम आजमा ही चुके हो।"

जितना मैं उससे पूछने की कोशिश करता उतना ही वह मुझे टाल देता। मैं उसके प्रति बेचैन होकर रह गया, और यह सब मेरी कृतज्ञता,

शर्म, भय, प्रेम एवं आंतरिक विरोध का मिश्रण था।

मैंने निश्चय किया कि उससे एक बार फिर मिलूंगा और केन की कहानी के साथ-साथ सारे मसले पर दोबारा बात करूंगा। पर ऐसा कभी नहीं हुआ।

कृतज्ञता ऐसा गुण कभी नहीं रहा जिस पर मेरा यकीन रहा हो और इस गुण की बच्चों से उम्मीद करना तो मुझे हमेशा से ही गलत लगा है। इसीलिए डेमिआन के प्रति दिखाई गई अपनी अकृतज्ञता पर मुझे कुछ आश्चर्य नहीं हुआ। आज मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि अगर मुझे उसने उस समय क्रोमर के घंगुल से नहीं छुड़ाया होता तो मैं जीवन-भर के लिए बरबाद हो चुका था। यह स्वतंत्रता मेरी युवावस्था का सबसे बड़ा अनुभव था, ऐसा मेरा मानना है। मगर स्वतंत्रता दिलाने वाले को अपना काम करते ही मैं मुला बँठा; उसे, जिसने यह आश्चर्यजनक कारनामा अंजाम दिया था।

अहमांन-फरामोशी मुझे कुछ बहुत अच्छी नहीं लगती। हाँ, अपनी जिज्ञासा की कमी मैंने जरूर साबित की थी। डेमिआन ने मुझे मुक्ति कैसे दिलाई, इसका रहस्य जाने बिना एक दिन भी जीना कैसे सम्भव था? केन के बारे में, क्रोमर के विषय में, विचारों को पढ़ने के विषय में और अधिक सुनने की जिज्ञासा को मैं कैसे दबा सकता था?

यह समझ में न आना ठीक ही था। अचानक ही मैंने स्वयं को उस नाटकीय जाल से मुक्त पाया। एक बार फिर विश्व मेरे लिए खुशी और रोशनी में नहा रहा था। अब भय के दौर नहीं थे। दिल की धड़कन नहीं रुक रही थी। माया-जाल टूट चुका था। अब मैं घृणा का पात्र न होकर एक बार फिर हमेशा-जैसा स्कूली बच्चा था। मेरा मन बड़ी बेताबी से संतुलन एवं शांति की तलाश कर रहा था इसीलिए वह पूरी शक्ति से बहुत-सी घृणास्पद और बुरी चीजों को अपने से दूर धकेल रहा था। 'आश्चर्यजनक तेजी के साथ मेरी याद से मेरे पाप और डर की कहानी बिना कोई निदान या धब्बा छोड़े फिसलकर गायब हो गई। अब मैं यह समझ सकता हूँ कि उस समय अपने मददगार और बचाने वाले को भी उतनी ही तेजी से क्यों भूलने की कोशिश कर रहा था। मैं अपनी धायल



आत्मा की सारी बची-बूची प्रेरणा और शक्ति लगाकर नरक के उन मायाजाल और घोंघर की गुलामी से उस तरफ जाना चाहता था जहाँ मैं शांत और खुश था— उसी खोए स्वर्ग में, जो फिर मेरी तरफ आ रहा था, मेरे माता-पिता की उजली दुनिया में, मेरी बहनों की तरफ, पवित्रता की महक की ओर, आवेल के लिए ईश्वर के प्रेम की तरफ। डेमिआन से उस दिन हुई छोटी-सी मुलाकात के बाद जब मुझे अपनी फिर से मिली आजादी का पूरा विश्वास हो गया और लगा कि मैं अब उसे नहीं खोजूँगा, तो मैंने वह किया जिसे मैंने पहले भी कितनी ही बार करने के लिए सोचा था—मैंने अपना पाप स्वीकार कर लिया। मैं माँ के पास गया और उन्हें टूटी गुल्लक दिखा दी, जिसकी पत्ती टूटी थी और जिसमें पैसों की बजाय नकली सिक्के भरे हुए थे। मैंने उन्हें बताया कि किस प्रकार मैं अपनी ही गलती के कारण लम्बे समय तक एक उत्पीड़क के चंगुल में फँसा रहा। उनकी समझ में यह सब नहीं आया। उन्होंने मेरी बदली निगाहें देखीं, बदली आवाज सुनी, मेरे पुनर्जन्म को महसूस किया। उन्हें लगा कि मैं उन्हें खोकर दोबारा मिल गया हूँ।

और फिर बड़े उत्साह से मैं पुनर्स्वीकृति की खुशी में शामिल हुआ। खोए हुए बेटे की वापसी की खुशी। माँ मुझे पिता के पाम ले गई। कहानी दोहराई गई। आवाजों में खुशियाँ झलकीं। दोनों ने मेरे सिर पर हाथ फेरा और चैन की सांस ली। हर तरफ खुशी थी। यह सब किसी कहानी-सा लग रहा था। सब कुछ गजब के सामंजस्य में घुला-मिला लग रहा था।

एक सामंजस्य से मैं अब अच्छी भावना से जुड़ा था। यह सोचते हुए मेरा मन धकता न था कि मेरी शांति और मेरे माता-पिता का विश्वास मुझे फिर से मिल चुका है। मैं एक आदर्श घरेलू बालक बन गया। किन्ती और के मुकाबले मैं अपनी बहनों के साथ कहीं ज्यादा देर तक गेलता। प्रार्थना के समय वही पुराने गीत, जो मुझे अच्छे लगते थे, सबके साथ पूरी नक़्त-भावना के साथ गाता। यह गाना मन से था। उनमें कहीं कोई झूठ न था।

अभी भी, अब कुछ ठीक न था और यही बात थी जो डेमिआन के

प्रति मेरे भुलक्कड़पन का कारण थी। मुझे उसी के सामने अपना पाप स्वीकार करना चाहिए था। यह स्वीकार कम दिखावटी, कम भावनात्मक और अधिक उपयोगी हो सकता था। निश्चित रूप से, मैं अपनी सभी जड़ों समेत पहने ही उस स्वर्ग की दुनिया से लिपटा हुआ था। मैं घर लौट चुका था। स्वीकार किया जा चुका था। परंतु डेमिआन का इस दुनिया से कुछ लेना देना न था। उसके अनुकूल यह दुनिया थी ही नहीं। मगर वह क्रोमर से बिलकुल अलग था। किंतु वह भी अपनी तरह का एक पयघ्रष्ट करने वाला ही तो था। वह भी तो मुझे एक अन्य सैतानी, बुरे विश्व की ओर ले जा रहा था, जिसके बारे में मैं अब कुछ भी नहीं जानना चाहता था। अब मैं आबेल का परित्याग, केन का गुणगान नहीं करना चाहता था। अब, जबकि मैं खुद आबेल बन चुका था।

यह तो थी बाहरी हालत। पर मन की हालत यह थी मैं क्रोमर के और सैतान के हाथों से मुक्ति पा चुका था। किंतु यह अपनी ही शक्ति या परिश्रम का परिणाम न था। मैं तो दुनिया के रास्तों पर चलना चाहता था, परंतु वे मेरे लिए बहुत फिसलन-भरे थे। अब, जबकि एक दोस्ताना हाथ ने मुझे बचा लिया था, बिना एक भी नजर ड़धर-उधर डाले मैं सीधा माँ की गोद की ओर, स्नेह-भरे बचपन की ओर भाग चला। मैंने स्वयं को अपनी उम्र से अधिक बच्चा, और निर्भर बना लिया था। क्रोमर पर निर्भर होने की जगह अब मुझे किसी और पर निर्भर होना था, क्योंकि मैं अकेला तो रह नहीं सकता था। इसीलिए मैंने अपने माता-पिता, अपने पुराने जाने-सहचारे 'प्रकाशित विश्व' को चुना, जिसके बारे में मैं पहले से जानता था। अगर मैं ऐसा न करता तो मुझे डेमिआन पर निर्भर होना पड़ता। मेरा ऐसा न करना मुझे उसके अजीब खयालों के खिलाफ अविश्वाम व्यक्त करने-सा लगा। वास्तव में वह डर के अलावा और कुछ न था। डेमिआन मुझसे मेरे माता-पिता के मुकाबले कहीं ज्यादा उम्मीद करता। अपनी प्रेरणा और चेतावनियों, तर्क और व्यंग्य के जरिए वह मुझे आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश करता। हाँ, आज मैं जानता हूँ, अपने अंतर्मन की ओर जाने वाले रास्ते पर चलने से मुश्किल दुनिया में आदमी के लिए और कुछ भी नहीं है।

आत्मा की सारी बची-खुची प्रेरणा और शक्ति लगाकर नरक के उस मायाजाल और क्रोमर की गुलामी से उस तरफ जाना चाहता था जहाँ मैं शांति और खुश था— उसी खोए स्वर्ग में, जो फिर मेरी तरफ आ रहा था, मेरे माता-पिता की उजली दुनिया में, मेरी बहनों की तरफ, पवित्रता की महक की ओर, बाबिल के लिए ईश्वर के प्रेम की तरफ। डेमिआन से उस दिन हुई छोटी-सी मुलाकात के बाद जब मुझे अपनी फिर से मिली आजादी का पूरा विश्वास हो गया और लगा कि मैं अब उसे नहीं खोजूँगा, तो मैंने वह किया जिसे मैंने पहले भी कितनी ही बार करने के लिए सोचा था—मैंने अपना पाप स्वीकार कर लिया। मैं माँ के पास गया और उन्हें टूटी गुल्लक दिखा दी, जिसकी पत्ती टूटी थी और जिसमें पैसों की बजाय नकली सिक्के भरे हुए थे। मैंने उन्हें बताया कि किस प्रकार मैं अपनी ही गलती के कारण लम्बे समय तक एक उत्पीड़क के चंगुल में फँसा रहा। उनकी समझ में यह सब नहीं आया। उन्होंने मेरी बदली निगाहें देखीं, बदली आवाज सुनी, मेरे पुनर्जन्म को महसूस किया। उन्हें लगा कि मैं उन्हें खोकर दोबारा मिल गया हूँ।

और फिर बड़े उत्साह से मैं पुनर्स्वीकृति की खुशी में शामिल हुआ। खोए हुए बंटे की वापसी की खुशी। माँ मुझे पिता के पास ले गई। कहानी दोहराई गई। आवाजों में सुशियाँ झलकीं। दोनों ने मेरे मिर पर हाथ फेरा और चैन की साँस ली। हर तरफ खुशी थी। यह सब किन्हीं कहानी-सा लग रहा था। सब कुछ गजब के सामंजस्य में घुना-मिला लग रहा था।

इन सामंजस्य से मैं अब अच्छी भावना से जुड़ा था। यह सोचते हुए मेरा मन धकता न था कि मेरी शांति और मेरे माता-पिता का विश्वास मुझे फिर से मिल चुका है। मैं एक आदर्श घरेलू बालक बन गया। किन्हीं और के मुकाबले मैं अपनी बहनों के साथ कहीं ज्यादा देर तक खेलता। प्रायः के समय वही पुराने गीत, जो मुझे अच्छे लगते थे, नवके साथ पूरी भक्ति-भावना के साथ गाता। यह गाना मन से था। उनमें कहीं कोई झूठ न था।

अभी भी, सब कुछ ठीक न था और यही बात थी जो डेमिआन के

प्रति मेरे मुलककड़पन का कारण थी। मुझे उसी के सामने अपना पाप स्वीकार करना चाहिए था। यह स्वीकार कम दिखावटी, कम भावना-त्मक और अधिक उपयोगी हो सकता था। निश्चित रूप से, मैं अपनी सभी जड़ों समेत पहने ही उस स्वर्ग की दुनिया से लिपटा हुआ था। मैं घर लौट चुका था। स्वीकार किया जा चुका था। परंतु डेमिआन का इस दुनिया से कुछ लेना देना न था। उसके अनुकूल यह दुनिया थी ही नहीं। मगर वह क्रोमर से बिल्कुल अलग था। किंतु वह भी अपनी तरह का एक पयम्रष्ट करने वाला ही तो था। वह भी तो मुझे एक अन्य शैतानी, बुरे विश्व की ओर ले जा रहा था, जिसके बारे में मैं अब कुछ भी नहीं जानना चाहता था। अब मैं आवेल का परित्याग, केन का गुणगान नहीं करना चाहता था। अब, जबकि मैं खुद आवेल बन चुका था।

यह तो थी बाहरी हालत। पर मन की हालत यह थी मैं क्रोमर के और शैतान के हाथों से मुक्ति पा चुका था। किंतु यह अपनी ही शक्ति या परिश्रम का परिणाम न था। मैं तो दुनिया के रास्तों पर चलना चाहता था, परंतु वे मेरे लिए बहुत फिसलन-भरे थे। अब, जबकि एक दोस्ताना हाथ ने मुझे बचा लिया था, बिना एक भी नजर इधर-उधर डाले मैं सीधा माँ की गोद की ओर, स्नेह-भरे बचपन की ओर भाग चला। मैंने स्वयं को अपनी उम्र से अधिक बच्चा, और निर्भर बना लिया था। क्रोमर पर निर्भर होने की जगह अब मुझे किसी और पर निर्भर होना था, क्योंकि मैं अकेला तो रह नहीं सकता था। इसीलिए मैंने अपने माता-पिता, अपने पुराने जाने-सहचारे 'प्रकाशित विश्व' को चुना, जिसके बारे में मैं पहले से जानता था। अगर मैं ऐसा न करता तो मुझे डेमिआन पर निर्भर होना पड़ता। मेरा ऐसा न करना मुझे उसके अजीब खयालों के खिलाफ अविश्वास व्यक्त करने-सा लगा। वास्तव में वह डर के अलावा और कुछ न था। डेमिआन मुझसे मेरे माता-पिता के मुकाबले कहीं ज्यादा उम्मीद करता। अपनी प्रेरणा और चेतावनियों, तर्कों और व्यंग्य के जरिए वह मुझे आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश करता। हाँ, आज मैं जानता हूँ, अपने अंतर्भेन की ओर जाने वाले रास्ते पर चलने से मुश्किल दुनिया में आदमी के लिए और कुछ भी नहीं है।

परंतु इसके बावजूद लगभग छह महीने बाद मैं इस प्रलोभन को रोक नहीं सका और एक दिन पिता के साथ टहलते हुए पूछ ही लिया कि आसिर इस बात का क्या तात्पर्य है कि कुछ लोग केन को आवेल से बेहतर मानते हैं।

वे आश्चर्यचकित रह गए। फिर बताया कि यह बहुत पुराना विचार है। यह जोसस से पूर्व उभरा था और उन सम्प्रदायों में प्रचलित था जिनमें से एक को 'कैनिटन' कहा जाता था। किंतु यह शानदार धारणा शैतान द्वारा हमारे विश्वास को नष्ट करने के अलावा और कुछ नहीं है। क्योंकि यदि केन के सही और आवेल के गलत होने पर विश्वास कर लिया जाए तो इसका अर्थ होगा कि स्वयं ईश्वर ने भी भूल की है, यानी बाइबिल का ईश्वर सर्वोच्च और सही होने के बजाय एक भूल करने वाला है। मगर केन के मानने वालों द्वारा ऐसे प्रचार और ऐसी शिक्षा बहुत समय पहले खत्म हो चुके थे और इसलिए वह हैरान थे कि मेरे साथ के एक स्कूली छात्र को यह सब मालूम था। अंत में उन्होंने मुझे इस प्रकार के विचारों से दूर ही रहने की चेतावनी दी।

## डकंत

अपने बचपन के खुशहाल, भले दिनों की कितनी ही घटनाओं, अपने माता-पिता के साथ की सुरक्षा-भावना से ओत-प्रोत, प्रेम और स्नेह के उन दिनों के बारे में मैं बता सकता हूँ। किंतु मेरी रुचि सिर्फ उन्हीं कदमों में है जो मैंने अपने अंतर्मन की प्राप्ति की दिशा में उठाए। शांति के वे क्षण, खुशी के वे द्वीप, वह स्वर्ग जिनके जगह से मैं हमेशा अनजान ही रहा, मैं दूर छोड़ आया हूँ और उनके पास जाने की अब मेरी कोई इच्छा भी नहीं है।

इसलिए जब तक मैं अपने बचपन की बात कर रहा हूँ मैं सिर्फ उन बातों के बारे में बताऊँगा जो मेरे साथ घटित हुईं या जिन्होंने मुझे छोड़ा।

ये दुख, खीझें, दूसरे विश्व में हमेशा ही आते रहते। हमेशा अपने साथ डर, परेशानी और बुराई लाते। हमेशा ही वे बड़े उत्पाती और उस शांति के लिए नुकसान देने वाले होते, जिसमें मैं रहना चाहता था।

ऐसे दिन भी आए जब मैं कुछ नएपन की तलाश कर रहा था। जो मेरे ही अंतर्मन में मूलभूत प्रेरणा के रूप में जो रहा था। जो मेरी उजली दुनिया में कहीं सरक कर छिप रहा था। किसी और की तरह मुझे भी अपनी धीरे-धीरे नजदीक आती युवावस्था एक दुश्मन, विनाशकारी, बुरी होने के अलावा किसी पाप को साथ लाती लगी। जो कुछ मेरी जिज्ञासा ढूँढ़ रही थी, मेरे सपने, इच्छा और भय जो रच रहे थे, वह युवावस्था की शुरुआत का महान रहस्य मेरे सुरक्षित बाल-मन की शांति के लिए ठीक नहीं था।

सामने आ जाती है। कहां था वह? हाँ, याद आया, वह हमारे घर के सामने वाली गली में था। वहीं एक दिन मैंने उसे खड़े एक काँपी लिए कोई चित्र बनाते हुए देखा। वह हमारे घर के दरवाजे के ऊपर बने झण्डे की चिड़िया का चित्र बना रहा था। मैं एक खिड़की के पास पदों के पीछे छिपा आश्चर्यचकित उसके एकाग्रचित्त, झंडे की ओर मुड़े, एक शोधशास्त्री और कलाकार—जैसे, विचारमग्न और संकल्पशील, चमकदार और शांत चेहरे को देख रहा था।

मैंने उसे एक बार फिर देखा जब कुछ ही दिन बाद, हम सब स्कूल से लौटते हुए, सड़क पर गिरे हुए एक घोड़े को देखने के लिए खड़े हो गए थे। वह एक किसान की गाड़ी से जुता हुआ था और अपने फूले नयुनों ऊपर उठाए जोर-जोर से साँस ले रहा था। उसका घाव दिखाई नहीं दे रहा था और उससे बहने खून से सड़क की मिट्टी लाल हो रही थी। मुझे उबकाई—सी आने लगी। इसीलिए मैं वहाँ से जाने को मुड़ा ही था, कि मुझे डेमिआन का चेहरा नजर आया। वह भीड़ में आगे नहीं आया था। पीछे ही खड़ा था, हमेशा की तरह बेफिक्र, आराम से। वह लगातार घोड़े के सिर की तरफ देख रहा था। उसकी नजर शांत थी, मगर साय-ही-साय उसमें एक दुराग्रह, एक भावना-रहित रोचकता थी। मैं उसे काफी देर तक देखता रहा और इसी समय मुझे अपने मन में कहीं कुछ विचित्र-सा महसूस हुआ। मैंने डेमिआन के चेहरे में एक लड़के के बजाय एक आदमी का चेहरा ही नहीं देखा, बल्कि कुछ और भी देखा। मुझे लगा जैसे उसका हवा किसी पुरुष का भी न होकर कुछ और ही है। लगा, उसके चेहरे में स्त्रियों के चेहरे का भी कुछ अंश है। एक पल के लिए मुझे लगा जैसे उसका चेहरा पुरुष या बच्चे का, जवान या बूढ़े का न होकर हजारों साल पुराना, अनंत, वर्तमान के स्थान पर गुजरे इतिहास से चिह्नित-सा है। जानवर इस प्रकार लग सकते थे, या पेड़, या तारे—मैं ठीक-ठीक नहीं जानता था। आज एक वयस्क के रूप में जो कह रहा हूँ, ठीक वही सब मैं उस समय महसूस नहीं कर सकता था। हाँ, कुछ ऐसा ही लग रहा था। शायद यह सब सुंदर था। शायद यह सब मुझे अच्छा लगा था, शायद यह सब अच्छा नहीं था। मैं कुछ निश्चय नहीं कर सका। मैंने सिर्फ देखा। वह हम सबसे

अलग था। वह किसी पशु की भाँति था, या किसी भूत या शायद तत्त्वों की भाँति। मैं नहीं जानता वह कैसा था। बस वह अलग था, हम सबसे बहुत अलग।

इससे ज्यादा मुझे कुछ याद नहीं पड़ता। शायद यह भी उसके बाद के प्रभाव का असर है।

जब मैं आखिरकार एक बार फिर उसके निकट सम्पर्क में आया तो मैं काफी बड़ा हो चुका था। परम्परा के विपरीत इस उम्र में भी डेमिअन का चर्च में धार्मिक संस्कार नहीं हुआ था और इसको लेकर भी अफवाहें फैल रही थीं। स्कूल में सुनाई पड़ता था कि दरअसल वह यहूदी है या वह भी नहीं बल्कि काफिर है, या फिर वह और उसकी माँ बुरे सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। इस सम्बन्ध में मैं यह भी बता दूँ कि यह भी कहा जा रहा था कि वह अपनी माँ के साथ उसके प्रेमी की तरह रहता है। शायद सच्चाई यह थी कि वह बिना किसी धर्म से जुड़े ही बड़ा हुआ था और इसलिए लोग उसके लिए बुरे भविष्य की बात कर रहे थे। इसके बावजूद उसकी उम्र के दूसरे लड़कों के धार्मिक संस्कार के दो वर्ष बाद ही उसकी माँ ने उसका संस्कार कराने का निश्चय किया। इसीलिए धार्मिक संस्कार की क्लास में उसका एक महीने तक मेरा साथी होना सम्भव हुआ।

कुछ दिन तो मैं उससे दूर-ही-दूर रहा। मैं उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहता था, जिसके बारे में तरह-तरह की बातें, अफवाहें फैली हुई थीं। दूसरी तरफ़ थ्रोमर के मामले को लेकर मन में बसी उसके प्रति कृतज्ञता की भावना अभी भी मुझे परेशान कर रही थी। यँ भी मेरी अपनी अलग ही चिंताएँ थी। मेरा धार्मिक संस्कार एक ऐसे समय आया जब मैं सेक्स की बातों को भी समझने की कोशिश कर रहा था और मेरी पूरी इच्छा के विरुद्ध यह बातें मेरी धर्म के प्रति रुचि को नुकसान पहुँचा रही थीं। पादरी जो कुछ भी बोलता, वह सब मुझसे बहुत दूर अपनी ही खामोश सच्चाई में गुम हो जाता। शायद ये बातें बहुत सुंदर और बेमोल थीं किंतु वे मेरे लिए सच्चाई या उत्सुकता से परे थीं, जबकि दूसरी दुनिया इन चीजों से भरी हुई थी।



गमने आ जाती है। कहाँ या वह? हाँ, याद आया, वह हमारे घर के गमने वाली गली में था। वहीं एक दिन मैंने उसे खड़े एक कॉपी लिए कोई चित्र बनाते हुए देखा। वह हमारे घर के दरवाजे के ऊपर बने झण्डे की चड़िया का चित्र बना रहा था। मैं एक खिड़की के पास पदों के पीछे छिपा आश्चर्यचकित उसके एकाग्रचित्त, झण्डे की ओर मुड़े, एक शोधशास्त्री और कलाकार—जैसे, विचारमग्न और संकल्पशील, चमकदार और शांत चेहरे को देख रहा था।

मैंने उसे एक बार फिर देखा जब कुछ ही दिन बाद, हम सब स्कूल से लौटते हुए, सड़क पर गिरे हुए एक घोड़े को देखने के लिए खड़े हो गए थे। वह एक किसान की गाड़ी से जुता हुआ था और अपने फूले नयुन ऊपर उठाए जोर-जोर से सांस ले रहा था। उसका घाव दिखाई नहीं दे रहा था और उससे बहने खून से सड़क की मिट्टी लाल हो रही थी। मुझे उबकाई-सी आने लगी। इसीलिए मैं वहाँ से जाने को मुड़ा ही था, कि मुझे डेमिआन का चेहरा नजर आया। वह भीड़ में आगे नहीं आया था। पीछे ही खड़ा था, हमेशा की तरह बेफिक्र, आराम से। वह लगातार घोड़े के सिर की तरफ देख रहा था। उसकी नजर शांत थी, मगर साय-ही-साय उसमें एक दुराग्रह, एक भावना-रहित रोचकता थी। मैं उसे काफी देर तक देखता रहा और इसी समय मुझे अपने मन में कहीं कुछ विचित्र-सा महसूस हुआ। मैंने डेमिआन के चेहरे में एक लड़के के बजाय एक आदमी का चेहरा ही नहीं देना, बल्कि कुछ और भी देना। मुझे लगा जैसे उसका चेहरा किसी पुरुष का भी न होकर कुछ और ही है। लगा, उसके चेहरे में स्त्रियों के चेहरे का भी कुछ अंश है। एक पल के लिए मुझे लगा जैसे उसका चेहरा पुरुष या बच्चे का, जवान या बूढ़े का न होकर हजारों साल पुराना, अनंत, वर्तमान के स्थान पर गुजरे इतिहास से चिह्नित-सा है। जानवर इस प्रकार लग सकते थे, या पेड़, या तारे—मैं ठीक-ठीक नहीं जानता था। आज एक वयस्क के रूप में जो कह रहा हूँ, ठीक वही सब मैं उस समय महसूस नहीं कर सकता था। हाँ, कुछ ऐसा ही लग रहा था। शायद यह सब सुंदर था। शायद यह सब मुझे अच्छा लगा था, शायद यह सब अच्छा नहीं था। मैं कुछ निश्चय नहीं कर सका। मैंने सिर्फ देखा। वह हम सबसे

अलग था। वह किसी पशु की भाँति था, या किसी भूत या शायद तस्वीर की भाँति। मैं नहीं जानता वह कैसा था। बस वह अलग था, हम सबसे बहुत अलग।

इससे ज्यादा मुझे कुछ याद नहीं पड़ता। शायद यह भी उसके बाद के प्रभाव का असर है।

जब मैं आखिरकार एक बार फिर उसके निकट सम्पर्क में आया तो मैं काफी बड़ा हो चुका था। परम्परा के विपरीत इस उम्र में भी डेमिआन का धर्म में धार्मिक संस्कार नहीं हुआ था और इसको लेकर भी अफवाहें फैल रही थी। स्कूल में गुनाई पड़ता था कि दरअसल वह यहूदी है या वह भी नहीं बल्कि काफिर है, या फिर वह और उसकी माँ बुरे सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। इस सम्बन्ध में मैं यह भी बता दूँ कि यह भी कहा जा रहा था कि वह अपनी माँ के साथ उसके प्रेमी की तरह रहता है। शायद सच्चाई यह थी कि वह बिना किसी धर्म से जुड़े ही बड़ा हुआ था और इसलिए लोग उसके लिए बुरे भविष्य की बात कर रहे थे। इसके बावजूद उसकी उम्र के दूसरे लड़कों के धार्मिक संस्कार के दो वर्ष बाद ही उसकी माँ ने उसका संस्कार कराने का निश्चय किया। इसीलिए धार्मिक संस्कार की क्लास में उसका एक महीने तक मेरा साथी होना सम्भव हुआ।

कुछ दिन तो मैं उससे दूर-ही-दूर रहा। मैं उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहता था, जिसके बारे में तरह-तरह की बातें, अफवाहें फैली हुई थी। दूसरी तरफ थ्रोमर के मामले को लेकर मन में बसी उसके प्रति कृतज्ञता की भावना अभी भी मुझे परेशान कर रही थी। मैं भी मेरी अपनी अलग ही चिंताएँ थीं। मेरा धार्मिक संस्कार एक ऐसे समय आया जब मैं सेक्स की बातों को भी समझने की कोशिश कर रहा था और मेरी पूरी इच्छा के विरुद्ध यह बातें मेरी धर्म के प्रति रुचि को नुकसान पहुँचा रही थीं। पादरी जो कुछ भी बोलता, वह सब मुझसे बहुत दूर अपनी ही खामोश सच्चाई में गुम हो जाता। शायद ये बातें बहुत सुदूर और बेमोल थीं किंतु वे मेरे लिए सच्चाई या उत्सुकता से परे थीं, जबकि दूसरी दुनिया इन चीजों से भरी हुई थी।

इन रवैए से जहाँ एक तरफ क्लास की पढ़ाई में मेरा मन उचटा रहा था वहीं कुछ ऐसा भी था जो हमें बाँध रहा था। जहाँ तक सम्भव हो, मुझे धागे के सहारे चलना था। जहाँ तक मुझे याद पड़ता है, इस सबकी शुरुआत एक दिन सुबह क्लास में हुई। अभी क्लास में बत्ती जल रही थी। हमारा पादरी अफ्यापक केन और लावेल की कहानी सुनाने जा रहा था। मैं उसकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा था। कुछ नींद-सी आ रही थी और मैं कुछ भी नहीं सुन रहा था। तभी पादरी ने ऊँची आवाज में जोरदार तरीके से केन के निगान के बारे में बोलना शुरू किया। इसी पल मैंने एक प्रकार के स्पर्श या चेतावनी का-सा अनुभव किया। पलक झपकाकर मैंने आगे की बेंच से मुड़कर डेमिजान के चेहरे की ओर देखा, जो मेरी ही ओर देख रहा था, चमकती, बोलती आँखों से, जिनकी मुद्रा में मजाक के साथ-साथ हर सम्भव गम्भीरता भी थी। वस सिर्फ एक पल ही उसने मेरी ओर देखा था कि मैं पादरी के शब्द सुनकर चौंक पड़ा। वह केन और उसके निगान के बारे में बोल रहा था। मेरे मन में एक बात उठी, यह बात ऐसी नहीं है जैसी कि वह पड़ा रहा है, कि कहानी को देखने का एक दूसरा दृष्टिकोण सम्भव है कि इन कहानी की आलोचना भी सम्भव है।

एनी पल के नाथ मेरे और डेमिजान के बीच एक सम्पर्क बन चुका था, विचित्र रूप से। अभी एक-दूसरे के साथ इस आत्मिक नजदीकी की बात मन में आई ही थी कि यह भौतिक नजदीकी में भी बदल गई। मैं नहीं जानता कि उसने खुद ही किसी तरह यह सम्भव किया था या यह भी भाग्य का कोई खेल था। उन दिनों मुझे भाग्य के खेलों पर बड़ा भरोसा था। कुछ ही दिनों बाद घर्म की इन क्लास में डेमिजान के बैठने की जगह बदलकर ठीक मेरे सामने हो गई (मुझे अभी तक याद है कि उस बुरी तरह भरी क्लास में उसके नावुन की हल्की और ताजी गुगबू मुझे कितनी अच्छी लगती थी।) और फिर कुछ ही दिनों बाद उसकी जगह फिर बदली और वह मेरे पान बैठने लगा था और फिर वहीं बैठता रहा पूरी सदी-भर, गान के शुरुआती महीनों में भी।

सुबह की क्लास की पढ़ाई बिलकुल बदल चुकी थी। अब वह उसनी उबाऊ और नींद लाने वाली नहीं रह गई थी। अब पढ़ाई का वह नमय

मुझे अच्छा लगने लगा था। अबसर पदारी को हम बड़ी रुचि से सुनते। मेरे पड़ोसी की बस एक नजर मुझे एक शानदार कहानी या किसी भली बात की तरफ इशारा करने को काफी होती, तो कभी उसकी एक नजर—एक खाम नजर, मुझे एक चेतावनी, एक इशारा दे जाती और मेरे मन में आलोचनात्मक दृष्टिकोण जन्म ले लेता।

बहुत बार हम दोनों बड़े खराब छात्र बन जाते और क्लास में जरा भी ध्यान न देते। डेमिआन अध्यापको और छात्रों के बीच आदर्श छात्र के रूप में देखा जाता था। मैंने उसे कभी उन हरकतों में नहीं पाया जो स्कूली लड़कों में आम होती है। कभी उसे जोर से हँसते या बात करते नहीं देखा गया था। कभी उसे अध्यापको की नाराजगी का सामना नहीं करना पड़ा। धीरे-धीरे, इशारों और निगाहों से बिना कोई शब्द फुसफुसाए उसने मुझे अपने मोच-विचार में हिंसेदारी दी। इनमें से कुछ बड़े ही अजीब थे। उदाहरण के लिए उसने मुझे बताया कि और कौन-कौन से लड़के उसे भले लगते हैं। किस प्रकार वह उन्हें अपने अध्ययन का साधन बनाता है। उनमें से कुछ एक को वह बड़ी अच्छी तरह जानता था। कभी-कभी वह क्लास शुरू होने से पहले मुझसे कहता : “अगर मैं तुम्हें अँगूठे का इशारा करूँगा तो फर्ला-फर्ला लड़का हमें भुड़कर देखेगा या गरदन खुजाएगा या ऐसा ही कुछ करेगा।” क्लास के दौरान जब मैं इस बारे में सब कुछ भूल चुका होता, तब मैं उस अजीब तरह से अपना अँगूठा झटकता ताकि मेरा ध्यान उस पर जाए और मैं जल्दी से उसके बताए लड़के को देखता और हर बार वह बैठा ही कर रहा होता, जैसा कि डेमिआन ने कहा था, जैसे उसकी मर्जी उस पर थोप दी गई हो। मैंने बहुत कहा कि वह यह तरीका किसी अध्यापक पर आजमाए पर उसने मना कर दिया। पर एक दिन, जब मैंने क्लास में आकर उसे बताया कि मैंने उस दिन का काम याद नहीं किया है और क्या यह ही अच्छा हो अगर पादरी मुझमें कुछ न पछे, और ऐसे में उसने मेरी मदद की। पादरी किसी छात्र को ढूँढ़ रहा था जिस पर वह अपने सबालो की झड़ी लगा सके। उसकी धूमती आँखें मेरे अपराध बोध-जडे चेहरे पर आ रकी। धीरे-धीरे वह मेरी तरफ बढ़ा। मेरी तरफ अपनी ऊंगली उठाई। उसके होठों पर मेरा नाम आ ही चुका था, तभी वह कुछ

वेचन हो उठा। गरदन मोड़ी। डेमिआन की ओर बढ़ा और कुछ पूछने को हुला पर फिर हैरान-सा वहाँ से हट गया, कुछ देर खांसता रहा और फिर एक-दूसरे लड़के की ओर चल दिया।

धीरे-धीरे मैंने अहसास किया कि इन शरारतों का आनंद उठाने के साथ-साथ मैं उनका शिकार भी बन रहा था। स्कूल जाते हुए कई बार लगता कि डेमिआन मुझसे बस कुछ ही दूर पीछे है और जब मैंने मुड़कर देखा तो वाकई वहीं होता।

"क्या तुम किसी आदमी को वही सोचने को मजबूर कर सकते हो जो तुम चाहते हो?" मैंने उससे पूछा।

उसने अपने जाने-भूहचाने शांत और बड़ों जैसे अंदाज में उत्तर दिया।

"नहीं!" उसने कहा, "यह सम्भव नहीं। आदमी स्वतंत्र रूप से इच्छाएँ नहीं कर सकता, चाहे वह पादरी ही क्यों न हो। न तो आदमी मर्जी के मुताबिक सोचता है, न ही कोई अपनी मर्जी के मुताबिक दूसरे को सोचने को मजबूर कर सकता है। हाँ, व्यक्ति किसी को ध्यानपूर्वक देखकर किसी हद तक ठीक-ठीक बता सकता है कि वह क्या सोच रहा है या क्या महसूस कर रहा है और उससे यह अंदाजा लगा सकता है कि अगले पल में वह क्या करेगा। यह सब बहुत आसान है। बस, लोग यह कला जानते नहीं हैं। हाँ, अभ्यास की जरूरत तो है ही, जैसे तितलियों में एक खास किस्म है जिसमें नर के मुकाबले मादा बहुत कम होती हैं। तितलियाँ भी बाकी जानवरों की भाँति गर्भ धारण करती हैं। अब अगर इस खास किस्म की मादा तितली तुम्हारे पास हो तो नर तितली रात को उड़कर इसके पास जाएगी—घंटों, जरा सोचो, घंटों लगातार उड़कर। कितने ही किलोमीटरों तक इन नर तितलियों को बस एक वही मादा मिलती है जिसकी उन्हें महक आ जाती है। यह प्रयोग प्रकृति-शास्त्रियों द्वारा कई बार किया जा चुका है। इसकी ध्यास्या की कोशिश की गई है। किंतु यह मुश्किल है। चायद इसमें कोई रास घ्राण शक्ति या ऐसा ही कुछ होता होगा, जैसे कि शिकारी कुत्ते जो जरा-जरा से निशानों को देखकर पीछा कर सकते हैं। तुम समझ रहे हो न? प्रकृति ऐसी चीजों से भरी हुई है और कोई उनकी ध्यास्या नहीं कर सकता, नफाई नहीं दे सकता। मगर मैं कहता हूँ, अगर

कही इन्हीं तितलियों के मादा भी नर तितलियों की संख्या में होती तो उनकी मूंघने की शक्ति ऐसी पैनी न होती, ऐसा है क्योंकि उन्हें इसकी जरूरत है। जब कोई आदमी या जानवर अपनी सारी चेतना, सारी इच्छा-शक्ति एक खास चीज पर लगा देता है, तो वह उसे मिल भी जाती है। यही बात है। ठीक ऐसा ही तुम्हारी बात के साथ है। किसी भी एक आदमी को पूरे ध्यान से देखो, वस तुम उसके बारे में उससे कही ज्यादा जान जाओगे।”

मेरी जवान पर वह शब्द आ चुका था ‘विचार पढ़ने की कला’ और मैं बोलने को ही था और उसे क्रोमर वाली बात याद दिलाने वाला था, जो कितनी पुरानी हो चुकी थी, किंतु यह घटना हमारे बीच अछूत-सी बन चुकी थी। उसने कभी भी इसे उठाने का प्रयास भी नहीं किया कि किस प्रकार बहुत साल पहले इसने मेरे जीवन को जकड़ रखा था। ऐसे लगता था, जैसे हमारे बीच पहले कभी कुछ हुआ ही न हो या जैसे हम दोनों ही एक-दूसरे के बारे में मानकर चल रहे हैं कि उस घटना के बारे में सब कुछ भूल चुके हैं। हालाँकि ऐसा कई बार हुआ कि हम दोनों सड़क पर जा रहे थे और क्रोमर मिल गया, किंतु न हमने एक-दूसरे से नजर मिलाई, न उस बारे में कोई शब्द कहा।

“मगर इच्छाओं का क्या बना?” मैंने पूछा, “तुम कहते हो, व्यक्ति की इच्छाएँ स्वतंत्र नहीं होती। मगर फिर कहने हो कि व्यक्ति को अपनी इच्छा को किसी भी चीज पर पूरी तरह स्थिर करना होता है, फिर वह उसे मिल जाता है। यह तो कोई तुक न हुई? अगर मैं अपनी इच्छाओं का मालिक नहीं हूँ तो अपनी इच्छा से उसे इस या उस चीज पर कैसे टिका सकता हूँ?”

उसने मेरा कंधा थपथपाया। वह ऐसा हमेशा करता था जब वह मुझमें खुश होता था।

“अच्छा है कि तुम सवाल कर रहे हो,” उसने हँसकर कहा, “आदमी को हमेशा सवाल करने चाहिए, हमेशा शक करना चाहिए, मगर यहाँ मामला सीधा-सादा है। अब अगर यही तितली अपनी इच्छा-शक्ति किसी तारे या ऐसी ही किसी चीज पर लगा दे तो उसे उसका मिलना सम्भव

नहीं हो पाता। मगर वह ऐसी कोशिश भी नहीं करती। वह सिर्फ उसी को सोचती है जो उसके लिए ठीक या उपयोगी है, जिसकी उसे जरूरत है, जो उसे बस किसी भी हाल में चाहिए ही और ऐसे में उसे असम्भव भी मिल जाता है। उनमें एक ऐसी चमत्कारी छठी इंद्रिय जाग उठती है, जो उसके अलावा किसी और जानवर में नहीं है। हम मनुष्यों का दामरा बड़ा है। हममें एक जानवर की तुलना में कहीं अधिक ज्ञान और रुचियाँ हैं। मगर एक प्रकार से हम भी एक सीमा में बंधे हैं, जिसके बाहर हम नहीं जा सकते। मैं कुछ भी कल्पना कर सकता हूँ, किसी भी विचार को मन में बिठा सकता हूँ, या ऐसी ही कोई बात, किंतु सही तौर पर कर या सोच मैं तभी सकता हूँ जब वह इच्छा मेरे अंदर ही हो। जब मेरा सारा अस्तित्व उसी से भरा हो। जैसे ही ऐसा होता है, जैसे ही तुम कुछ कोशिश करते हो जो कि तुम्हारे ही मन ने निर्देशित है, तब वह सम्भव भी हो जाएगा, और फिर तुम अपनी मर्जी के मुताबिक उसे पूरा कर सकते हो। अब अगर मैं यहाँ ही सोचने लगूँ कि हमें पढ़ाने वाले पादरी कल से अपना नजर का चरमा पहनना छोड़ दें तो यह सम्भव नहीं है। यह तो बस एक मजाक भर है। मगर जब उन पतझड़ के दिनों में मुझे बहुत तेज इच्छा हुई कि मैं गढ़वाल में अपनी बैठने की जगह छोड़ आगे बढ़ूँ, तो वह बड़ी आसानी से सम्भव हो गया। कोई लड़का था जिसके नाम का शुक्राती अक्षर मेरे नाम ने पहने आता था। यह लड़का अब तक बीमार होने की वजह से नहीं आया था। अब आने पर उनके लिए जगह बनानी थी, जो मैंने उसे जगह दे दी, क्योंकि मेरा मन अक्सर की ही ताक में ही था।

“हाँ,” मैंने कहा, “मेरे लिए भी वह बड़ा विचित्र अनुभव था। जिस पल ने हमारी रजि एक-दूसरे के लिए जानी, तुम बन मेरे नजदीक ही आते गए। जैसे हुआ वह सब ! शुरू में तो तुम मेरे पास नहीं बैठे थे बल्कि मुझसे कुछ आगे थे, है न ? क्या था वह सब ?”

“बात यह थी, मुझे शुरू में ठीक ने पता नहीं था कि मैं कहीं जाना चाह रहा हूँ। मुझे सिर्फ यही मालूम था कि नहीं छोड़ा और पीछे जाना चाहिए। यह मन की इच्छा थी कि मैं तुम्हारे पास बैठूँ, पर यह इच्छा मुझे मालूम नहीं थी। तभी तुम्हारी इच्छा ने भी जुड़कर मेरी मदद की और

तब जब मैं तुम्हारे सामने बैठा तो मुझे समझ आया कि मेरी इच्छा तो अभी अधूरी है। मुझे लगा, मेरी इच्छा और कुछ नहीं तुम्हारे पास बैठने की ही थी।”

“पर उन दिनों तो किसी नए लड़के का दाखिला नहीं हुआ था?”

“नहीं, बल्कि इस बार जो मेरे मन में आया मैंने कर दिया और तुम्हारे पास आकर बैठ गया। जिस लड़के से मैंने जगह बदली, वह बड़ा हैरान हुआ और जो मैं कर रहा था करने दिया। पादरी को एक बार लगा जरूर कि कुछ बदलाव हुआ है किंतु जब भी उसका मुँहसे पाना पड़ता है, उसे कुछ हो-सा जाता है। अब जैसे कि उसे मालूम है कि मेरा नाम डेमिआन है और मेरा पीछे ‘डी’ की जगह ‘एस’ में बैठना जमता नहीं। मगर यह बात उसके मन की गहराई तक नहीं पहुँच पाती क्योंकि मेरी अपनी इच्छा उसके खिलाफ है और मैं उसे हमेशा मन से रोकने का प्रयास करता हूँ। उसे बार-बार लगता है कि वहाँ कुछ गड़बड़ है और वह मुझे गौर से देखते हुए कुछ समझने की कोशिश करता है, बेचारा! और मेरे पान इन सबका सब एक ही इलाज है, मैं ठीक उसकी आँखों में देखता हूँ। यहाँ ज्यादातर लोग सह नहीं पाते। वे बेचैन हो उठते हैं। जब तुम दूसरे आदमी से कुछ पाना चाहते हो तो अकस्मात् सीधा उसकी आँखों में देखो। अगर वह बेचैन नहीं हो उठता तो उम्मीद छोड़ दो। मगर ऐसा कम ही होता है। मैं तो सब एक ही आदमी जानता हूँ जिस पर मेरा कोई अमर नहीं होता।”

“कौन है वह?” मैंने जल्दी से पूछा।

उसने मुझे आँखें सिकोड़कर देखा। सोचते वक्त वह ऐसा ही करता था। फिर उसने नजर हटा ली और मैं पूरी जिज्ञासा के बावजूद अपना सबान दोहरा नहीं सका।

मुझे यकीन है कि वह जरूर अपनी माँ की बात कर रहा था। लगा, उन दोनों के बीच बहुत स्नेह है। मगर उसने मुझसे अपनी माँ के बारे में कभी बात नहीं की, न ही अपने साथ कभी घर ले गया। उसकी माँ देखने में कैसी थी—मैं नहीं जानता था।

कभी-कभी मैं उसी की तरह करने की कोशिश करता और अपनी



इच्छा-शक्ति उस चीज पर केंद्रित करने की कोशिश करता जिनकी मुझे आवश्यकता होती। बहुत-सी इच्छाएँ थीं जो मुझे बहुत आवश्यक लगतीं, मगर ऐसा सम्भव नहीं था, न हो कुछ हुआ। डेमिजान ने इस बारे में कुछ बोल पाने की मेरी हिम्मत नहीं हुई। मैं क्या चाहता था, यह मैं नहीं बता सकता था, न ही उसने कुछ पूछा।

इन बीच धर्म के प्रति मेरे विश्वास में बहुत-सी दरारें पड़ गई थीं। मैं निश्चित रूप से डेमिजान से प्रभावित था और अपने विचारों और दूसरे स्त्री लड़कों के विचारों में अंतर कर रहा था, जो किसी चीज पर विश्वास करते ही नहीं थे। कुछ ऐसे भी थे, जिनका मानना था कि किसी एक ईश्वर पर विश्वास करना आदमी के लिए कितना हास्यास्पद, कितना बेहूदा है। शिवदेव परमेश्वर या यीशु के पवित्र जन्म की कहानियाँ मजाक-भर हैं। इस तरह की बातों की यों ठुगो पीटना एक पाप है। मैं ऐसी बातें कबई नहीं सोच सकता था। अगर कहीं कोई, शक भी होता तो अपने बचपन के अनुभव और पवित्र जीवन को सच्चाई से, जिसका मेरे माता-पिता हमेशा पालन करते थे, मुझे इतना ज्ञान तो था ही कि नमस्कार कि न तो ये सब बातें बेकार थीं न ही भूठी। क्या पहले क्या बाद में, धर्मात्माओं पर मेरी हमेशा ही श्रद्धा रही है। डेमिजान ने मुझे सिर्फ यह वादस्त शक दी थी कि कहानियों, धार्मिक निष्ठाओं को गुने मन से व्यक्तिगत रूप से, उत्साह और कल्पनात्मक तरीके से कैसे देखा जाए, जैसे अर्थ निकाले जाएँ। कम-से-कम मैं उनके बताए बयों को तो हमेशा गुनी, जानंद के साथ स्वीकार करता ही था। कुछ बातें तो मेरी समझ के बाहर होतीं जैसे कि केन की कहानी। एक बार इसी धार्मिक कला के दौरान अपने एक विचार में तो उसने मुझे जग ही दिया था। यह विचार और भी अधिक चौकाने वाला था। अल्पायक गोलगोटा के बारे में बोल रहे थे। बाइबिल की, यीशु के दुःख और मृत्यु की इन कहानी ने मुझे बचपन से ही प्रभावित किया था। फर्मी-फर्मी बचपन में गृह-आइटे के दिन जब मेरे पिता कुर्सी की धार पर पड़ा मुझसे मैं बैठमाने और गोलगोटा की इन दुःख भरी चितु फिर भी सुंदर, भूतिपा दुनिपा में लगभग रहकर आ जाता। और फिर दास या मैम्प या दुःख नामक मंगीत मुनवा, तो दुःख भरी

इस दुनिया की जवदंस्त ताकत मेरे अंदर रहन्यमयी झुरझुरी भर देती । आज भी मैं इस संगीत और 'आक्टुम ट्रागीकुस' में कविता और सभी कलात्मक उद्गारों को मिश्रित पाता हूँ ।

हाँ, तो इस क्लास के बाद डेमिआन ने मुझसे कुछ सोचते हुए कहा, "यह एक ऐसी बात है, सिनक्वेयर, जो मुझे बहुत अच्छी लगती है । एक बार यह कहानी पढ़ो, चलो और देखो क्या जीभ पर कोई गंदा-सा जायका है । जैने कि उन दो डकैतों की कहानी को ही लें । अजीब बात है कि किस तरह तीन क्रॉस एक-दूसरे के साथ पहाड़ी पर खड़े रहते हैं । फिर यह भावुकता में भरी ईमानदार डकैत की कहानी है । पहले वह एक अपराधी था और बुरे काम करता था । ईश्वर क्या नहीं जानता ! और फिर वह पसी-जता है और आसूँ बहाता है, ग्लानि और पश्चाताप करता है । कब से दो कदम दूर रह जाने पर ऐसे पश्चाताप और दुःख का भी कोई तुक है ? मैं तुम्हीं से पूछता हूँ । एक बार फिर यह एक पादरी की कहानी के अलावा कुछ नहीं है, मीठी, भरमाऊ, जिसे भावुकता से चिकनी बनाकर पचाऊँ पृष्ठभूमि में रखा गया है । अगर तुम्हें आज इन दोनों में से एक को मित्र रूप में चुनना हो या तुम्हें चुनना हो कि दोनों में से तुम पहले किस पर यकीन करोगे, तो निश्चय ही इस रोने वाले बदलू को नहीं चुनोगे । नहीं, दूसरा ही चुना जाएगा । वही तो वह शख्स है, जिसका कोई चरित्र है । वह यूँ बदलने की परवाह नहीं करता जो कि उसके हासलात में एक अच्छी बात हो सकती थी । वह अपनी राह अत तक चलता रहता है और उस संतान में दूर भाग जाने की बात सोचता तक नहीं, जिसने उसे वहाँ तक पहुँचाया है । वह चरित्रवान है और चरित्रवान लोग बाइबिल में घटिया बन जाने को महत्त्व नहीं देते । शायद वह भी केन की पीढ़ी का है, तुम्हें नहीं लगता ?"

मैं भीचकरा रह गया । क्रॉस वाली इस कहानी पर मुझे अथाह श्रद्धा थी परंतु अब मैं समझा कि मैंने उसे कितनी कम कल्पना-शक्ति के साथ सुना और पढ़ा था । इसके बावजूद डेमिआन का यह नया विचार बड़ा भयंकर लग रहा था और मेरी सारी समझने की शक्ति में उथल-पुथल करने वाला प्रतीत हो रही थी जिस पर मैं अपना विश्वास बनाए रखना

इच्छा-शक्ति उस चीज पर केंद्रित करने की कोशिश करता जिनकी मुझे आवश्यकता होती। बहुत-सी इच्छाएँ थीं जो मुझे बहुत आवश्यक लगतीं, मगर ऐसा सम्भव नहीं था, न ही कुछ हुआ। डेमियान से इस बारे में कुछ बोल पाने की मेरी हिम्मत नहीं हुई। मैं क्या चाहता था, यह मैं नहीं बता सकता था, न ही उसने कुछ पूछा।

इस बीच धर्म के प्रति मेरे विश्वास में बहुत-सी दरारें पड़ गई थीं। मैं निश्चित रूप से डेमियान से प्रभावित था और अपने विचारों और दूसरे स्कूली लड़कों के विचारों में अंतर कर रहा था, जो किसी चीज पर विश्वास करते ही नहीं थे। कुछ ऐसे भी थे, जिनका मानना था कि किसी एक ईश्वर पर विश्वास करना आदमी के लिए कितना हास्यास्पद, कितना बेहूदा है। त्रिदेव परमेश्वर या यीशु के पवित्र जन्म की कहानियाँ मजाक-भर हैं। इस तरह की बातों की यों डुग्गी पीटना एक पाप है। मैं ऐसी बातें कतई नहीं सोच सकता था। अगर कहीं कोई शक भी होता तो अपने वचन के अनुभव और पवित्र जीवन की सच्चाई से, जिसका मेरे माता-पिता हमेशा पालन करते थे, मुझे इतना ज्ञान तो था ही कि समझ सकूँ कि न तो ये सब बातें बेकार थीं न ही झूठी। क्या पहले क्या वाद में, धर्मात्माओं पर मेरी हमेशा ही श्रद्धा रही है। डेमियान ने मुझे सिर्फ यह आदत डाल दी थी कि कहानियों, धार्मिक सिद्धांतों को खुले मन से व्यक्तिगत रूप से, उत्साह और कल्पनात्मक तरीके से कैसे देखा जाए, कैसे अर्थ निकाले जाएँ। कम-से-कम मैं उसके बताए अर्थों को तो हमेशा खुशी, आनंद के साथ स्वीकार करता ही था। कुछ बातें तो मेरी समझ के बाहर होतीं जैसे कि केन की कहानी। एक बार इसी धार्मिक क्लास के दौरान अपने एक विचार से तो उसने मुझे डरा ही दिया था। यह विचार और भी अधिक चौकाने वाला था। अव्यापक गोलगोटा के बारे में बोल रहे थे। बाइबिल की, यीशु के दुःख और मृत्यु की इस कहानी ने मुझे वचन से ही प्रभावित किया था। कभी-कभी वचन में गुड-फ्राइडे के दिन जब मेरे पिता दुःखों की यह कथा पढ़कर सुनाते मैं गेठजमाने और गोलगोटा की इस दुःख भरी किंतु फिर भी सुंदर, भूतिया दुनिया में लगभग रहकर आ जाता। और फिर बाख का मैथ्यू का दुःख नामक संगीत सुनता, तो दुःख भरी

इस दुनिया को जवर्दस्त ताकत मेरे अंदर रहन्यमयी झुरझुरी भर देती । आज भी मैं इस संगीत और 'आक्टुम ट्रागीकुस' में कविता और सभी कलात्मक उद्गारों को मिश्रित पाता हूँ ।

हाँ, तो इस क्लास के बाद डेमिआन ने मुझसे कुछ सोचते हुए कहा, "यह एक ऐसी बात है, सिनक्लेयर, जो मुझे बहुत अच्छी लगती है । एक बार यह कहानी पढ़ो, चलो और देखो क्या जीभ पर कोई गदा-सा जायका है । जैने कि उन दो डकैतों की कहानी को ही लें । अजीब बात है कि किस तरह तीन फ्रॉस एक-दूसरे के साथ पहाड़ी पर खड़े रहते हैं । फिर यह भावुकता में भरी ईमानदार डकैत की कहानी है । पहले वह एक अपराधी था और बुरे काम करता था । ईश्वर क्या नहीं जानता ! और फिर वह पसी-जता है और आँसू बहाता है, ग्लानि और पश्चाताप करता है । कब्र से दो कदम दूर रह जाने पर ऐसे पश्चाताप और दुःख का भी कोई तुक है ? मैं तुम्हीं से पूछता हूँ । एक बार फिर यह एक पादरी की कहानी के अलावा कुछ नहीं है, मीठी, भरमाऊ, जिसे भावुकता से चिकनी बनाकर पचाऊ पृष्ठभूमि में रचा गया है । अगर तुम्हें आज इन दोनों में से एक को मित्र रूप में चुनना हो या तुम्हें चुनना हो कि दोनों में से तुम पहले किस पर यकीन करोगे, तो निश्चय ही इस रोने वाले बदलू को नहीं चुनोगे । नहीं, दूसरा ही चुना जाएगा । वही तो वह शख्स है, जिसका कोई चरित्र है । वह यूँ बदलने की परवाह नहीं करता जो कि उसके हालात में एक अच्छी बात हो सकती थी । वह अपनी राह अत तक चलता रहता है और उस शैतान से दूर भाग जाने की बात सोचता तक नहीं, जिसने उसे वहाँ तक पहुँचाया है । वह चरित्रवान है और चरित्रवान लोग बाइबिल में घटिया बन जाने को महत्त्व नहीं देते । शायद वह भी केन की पोटी का है, तुम्हें नहीं लगता ?"

मैं भौंकका रह गया । फ्रॉस वाली इस कहानी पर मुझे अयाह श्रद्धा थी परंतु अब मैं समझा कि मैंने उसे कितनी कम कल्पना-शक्ति के साथ सुना और पढ़ा था । इसके बावजूद डेमिआन का यह नया विचार बड़ा भयंकर लग रहा था और मेरी सारी समझने की शक्ति में उथल-पुथल करने वाला प्रतीत हो रही थी जिस पर मैं अपना विश्वास बनाए रखना

चाहता था। नहीं, हर चीज में उलट-फेर कुछ अच्छा नहीं, खासकर इन पवित्रतम बातों में।

इससे पहले कि मैं कुछ कहता वह मेरा विरोध समझ गया, हमेशा की तरह।

“मैं जानता हूँ,” उसने आत्म-समर्पण के स्वर में कहा, “यह पुरानी कथा है। अगर तुम इस बात को गम्भीरता से न लो। मैं तुम्हें कुछ बताना चाहूँगा। यह बहुत-सी बातों में से एक बात है जिसमें व्यक्ति इस धर्म में मौजूद कमियों को बहुत साफ-साफ देख सकता है। बात है ईश्वर की, चाहे वह पुराने टेस्टामेंट का हो या नए का। वह निहायत ही शानदार लगता है। मगर वस वैसे ही नहीं लगता, जैसा वह लगना चाहता है। उसमें सब कुछ है जो अच्छा है। वह भला है, बड़े हृदय वाला है, पिता जैसा है, सुंदर और ऊँचा है, भावुक है—ठीक है, मगर दुनिया तो दूसरी चीजों की भी बनी है। और वह सब शैतान के नाम के साथ जोड़ा जाता है। दुनिया के इस दूसरे हिस्से को लगातार दबाया जाता है, चुप रखा जाता है। इसका जिक्र भी नहीं किया जाता। यह कुछ वैसा ही है जैसे कि वे ईश्वर को विश्व के पिता के रूप में मानते हैं किंतु उस सेक्स से सम्बन्धित जीवन के बारे में, जो सारे जीवन का केंद्र है, चुप है; वल्कि जब कभी सम्भव हो उसे पाप और शैतान का काम भी बताते हैं। मुझे जरा बुरा नहीं लगता कि कुछ लोग याहोवा को ईश्वर के रूप में पूजते हैं। जरा भी बुरा नहीं लगता मुझे। मगर मेरा मानना है कि हमें हर चीज का आदर करना चाहिए, पूज्य मानना चाहिए, सारे विश्व को, न कि सिर्फ इस दिखावटी अधिकारिक रूप से अलग किए गए हिस्से को, अर्थात् हमें ईश्वर-पूजा के साथ-साथ शैतान की पूजा भी करनी चाहिए। मुझे ऐसा करना ठीक लगता है। नहीं तो फिर एक ऐसे ईश्वर का निर्माण किया जाना चाहिए जो शैतान को भी आत्मसात् कर सके। जिसके सामने व्यक्ति को उस समय आँखें न मूंदनी पड़ें जब दुनिया की बेहद प्राकृतिक घटनाएँ घटित हो रही हों।”

यह सब मेरी प्रकृति के विपरीत था, साथ ही वर्दाश्त से बाहर हो रहा था, तभी वह फिर मुस्कराया और उसके बाद उसने और भाषण

मेरे ऊपर नहीं घोषा ।

किन्तु मेरे मन में उसके शब्द मेरे वचन के दिनों की सज्जे बड़ी पहली बन गए । यह पहली हर समय मेरे साथ थी और जिसके बारे में मैंने किसी से कुछ नहीं कहा था । ईश्वर और शैतान, वे बातें जिन्हें हम बोलते हैं और शैतानी दुनिया जिसके बारे में कुछ नहीं बोला जाता । इन नवके बारे में हेमिआन जो कुछ बोल रहा था, वे सब मेरे ही विचार तो थे । मेरी ही कथा थी । विश्व के दो हिस्सों—अंधेरे, उजाले के विषय में मेरे भी विचार तो यही थे । यह नजरिया, कि मेरी समस्या मेरी ही न होकर पूरी मानवता, जीवन और सोच की है सरसराकर मुझ पर मैं किसी छाया के भाँति गुजर गया । अचानक मैंने महसूस किया कि मेरा अपना व्यक्तिगत जीवन किम हृद तक महान विचारों की सनातन धारा में घुना-मिला था । यह विचार बहुत खुशी देने वाला न था, परंतु प्रमाणित था और सतोष देने वाला था । यह दखा था—वेस्वाद था क्योंकि इसमें एक जिम्मेदारी का, आत्मनिर्भरता का रंग था जो कि वचनानी बातों से परे था । इसका अर्थ था आत्मनिर्भर होना ।

जीवन में पहली बार मुझे इस राज का पता चला था और इसी सच से निपटकर मैंने अपने इन दोस्त को अपनी उन दो विश्व की सोच के बारे में बता दिया जिसे मैं वचन से मन में दबाए बैठा था । उसने तुरंत जान लिया कि मैं मन-ही-मन उसने सहमत हूँ । हालाँकि यह उनकी आदत नहीं थी कि वह इन बातों का नाजायज फायदा उठाए । उनसे हमेशा से कहीं अधिक ध्यान से मेरी बात सुनी और मेरी आँखों में तब तक देखता रहा जब तक कि मैंने अपनी आँखें हटा नहीं ली । क्योंकि मुझे उनकी नजर में फिर वही अजीब जानबरो जैसा समयरहित भाव नजर आया जो उम्र के दायरे से परे था ।

“हम इन बारे में फिर कभी बात करेंगे,” उसने एहतिपात से कहा, “मैं देख रहा हूँ, तुम जितना कह सकते हो उसने कहीं अधिक मोचते हो । अगर ऐसा है, तो तुम्हें पता ही होगा कि तुमने वह सब कभी जिया नहीं है जो मोचा है, और यह ठीक नहीं है । जो हम जीते हैं, उसी को मोचने का कोई तुक है । तुम्हें पता था कि तुम्हारा ‘प्रकाशित विश्व’ दुनिया का

आधा हिस्सा ही है, और तुमने दूसरे हिस्से को दवाने की कोशिश की जैसा कि पादरी या अव्यापक करते हैं। इससे तुम्हें कुछ फायदा होने वाला नहीं। एक बार सोचने की प्रक्रिया शुरू हो जाने पर ऐसी कोशिशों से किसी को भी कुछ फायदा नहीं होता।”

मेरे ऊपर इसका बड़ा मनस्पर्शी प्रभाव पड़ा। “मगर,” मैं जोर से चीत्ता, “कुछ चीजें तो वास्तव में बुरी और मना की जाने लायक हैं ही, यह तो तुम नकार नहीं सकते। और जिनका करना मना किया गया है, वे हमें नहीं करनी चाहिए। मैं जानता हूँ, हत्या और तमाम ऐसी ही बुरा-इयाँ क्या सिर्फ इसलिए हैं, मैं उन्हें करने लगूँ और एक अपराधी बन जाऊँ ?”

“आज हम इस बारे में बात नहीं कर पाएँगे।” मैक्स ने शांत करने के अंदाज में कहा, “निश्चय ही तुम्हें हत्या या बलात्कार कर लड़कियों की हत्या नहीं करनी चाहिए, बिल्कुल नहीं। अभी तुम ऐसी स्थिति में नहीं पहुँचे हो जहाँ से व्यक्ति यह जान सके कि किसी कार्य के लिए ‘अनुमति होने’ या ‘अनुमति न होने’ का क्या अर्थ है। तुमने सच्चाई का एक टुकड़ा भर महसूस किया है। बाकी हिस्सा अभी महसूस करना बाकी है। उस पर भरोसा रखो। अब जैसे कि लगभग एक साल से तुम्हारे मन में बाकी चीजों से कहीं अधिक एक इच्छा ने घर कर रखा था, वही जिसकी कि आज्ञा नहीं है—ग्रीक और दूसरी कई जातियों ने इसी इच्छा को ईश्वरीय रूप दे दिया और अपने बड़े धार्मिक त्योहारों में इसे सम्मान दिया। आज अगर कुछ प्रतिबंधित है तो यह प्रतिबंध हमेशा के लिए नहीं है, यह बदलता रहता है। आज भी आदमी एक औरत के साथ सो सकता है। वस्त्र जैसे ही वह उसके साथ पादरी के पास जाता है और स्त्री से विवाह कर लेता है। बाकी जातियों के यहाँ कुछ और होता है। आज भी, इसीलिए हममें से हर एक को अपने लिए यह निश्चित करना होता है कि क्या प्रतिबंधित है और क्या नहीं। कोई आदमी कोई प्रतिबंधित कार्य किए बिना भी कमीना या बेईमान बन सकता है। इसका उल्टा भी सम्भव है। यह तो सिर्फ भुविवा की बात है। जो अपने बारे में खुद सोच सकता है और खुद ही अपना न्याय कर सकता है, वह अपने को आज के इतने प्रति-

बंधों के बीच अपनी राह बना सकता है। उसके लिए यह बड़ा आसान है। मगर दूसरी ओर लोग हैं, जो अपने मन के धमदिशों का खयाल रखते हैं। उनके लिए वह सब प्रतिबंधित है जो हर आदमी अपनी रोज-मर्रा की जिंदगी में हर दिन करता है। मगर दूसरी बातों को करने की आज्ञा है जो सावर्जनिक रूप में तिरस्कृत है। हर आदमी को अकेले ही खड़ा होना होता है।” अचानक ऐसा लगा जैसे डेमिआन अपने इतनी देर तक बोलने पर शर्मिदा है। वह चुप हो गया। किसी हद तक मुझे उसकी प्रतिप्रिया का मन-ही-मन आभास हो गया था। वह अपने विचारों को बड़े अच्छे और खूबमूरत अंदाज में पेश कर सकता था और कभी भी सिर्फ बात कराने के लिए बात नहीं करता था, ऐसा उसने एक बार मुझे बताया था, किंतु उसे इस समय ऐसा लगा जैसे कि मैंने ऐसी तेज-तर्रार बातें सिर्फ खेल-खेल में की थीं, जैसे मैं इस दौरान पूरी तरह गम्भीर न था।

अभी-अभी लिखे इस आखिरी शब्द ‘पूरी तरह गम्भीर’ को पढ़ते हुए एक और दृश्य मेरे दिमाग में उभर रहा है। यह दृश्य शायद मेरा बचपन में मैक्स डेमिआन के साथ जिया गया सबसे आकर्षक दृश्य था।

हमारे धार्मिक संस्कार का दिन नजदीक आ रहा था। पादरी आखिरी अध्याय ‘प्रभु भोज’ की तैयारी में लगा हुआ था। पादरी के लिए यह बड़ा महत्वपूर्ण विषय था और उसने बड़ी सत्त्वीनता और मेहनत से इसे समझाया। इन अध्यायों के दौरान माहौल में एक अजीब हवा थी। मगर ठीक इन्हीं अध्यायों के दौरान मेरे विचार कहीं और थे। अपने मित्र के व्यक्तित्व की ओर। जबकि मैं एक तरफ संस्कार के दिन की प्रतीक्षा कर रहा था, जिस दिन मैं चर्च की मंढली में स्वीकार किया जाऊंगा। दूसरी ओर यह विचार मन में जोर पकड़ रहा था कि पिछले छह महीनों की धार्मिक तैयारी का फायदा यह नहीं है, जो कि हमने इस दौरान सीखा है, बल्कि डेमिआन की नजदीकी और उसका प्रभाव ही असली फायदा है। मैं चर्च में स्वीकृति के लिए नहीं तैयार हो रहा था, बल्कि एक बिलकुल भिन्न विचारों और व्यक्तित्व की मंढली में शामिल होने जा रहा था। यह मंढली घरती पर कही-न-कही तो है वही जिसके प्रतिनिधि या सदेशवाहक के रूप में मैंने अपने मित्र डेमिआन को पाया था।



आधा हिस्सा ही है, और तुमने दूसरे हिस्से को दवाने की कोशिश की जैसा कि पादरी या अध्यापक करते हैं। इससे तुम्हें कुछ फायदा होने वाला नहीं। एक बार सोचने की प्रक्रिया शुरू हो जाने पर ऐसी कोशिशों से किसी को भी कुछ फायदा नहीं होता।”

मेरे ऊपर इसका बड़ा मर्मस्पर्शी प्रभाव पड़ा। “मगर,” मैं जोर से चीखा, “कुछ चीजें तो वास्तव में बुरी और मना की जाने लायक हैं ही, यह तो तुम नकार नहीं सकते। और जिनका करना मना किया गया है, वे हमें नहीं करनी चाहिए। मैं जानता हूँ, हत्या और तमाम ऐसी ही बुरा-इयाँ क्या सिर्फ इसलिए हैं, मैं उन्हें करने लगूँ और एक अपराधी बन जाऊँ?”

“आज हम इस बारे में बात नहीं कर पाएँगे।” मैक्स ने शांत करने के अंदाज में कहा, “निश्चय ही तुम्हें हत्या या बलात्कार कर लड़कियों की हत्या नहीं करनी चाहिए, बिल्कुल नहीं। अभी तुम ऐसी स्थिति में नहीं पहुँचे हो जहाँ से व्यक्ति यह जान सके कि किसी कार्य के लिए ‘अनुमति होने’ या ‘अनुमति न होने’ का क्या अर्थ है। तुमने सच्चाई का एक टुकड़ा भर महसूस किया है। वाकी हिस्सा अभी महसूस करना बाकी है। उस पर भरोसा रखो। अब जैसे कि लगभग एक साल से तुम्हारे मन में बाकी चीजों से कहीं अधिक एक इच्छा ने घर कर रखा था, वही जिसकी कि आज्ञा नहीं है—ग्रीक और दूसरी कई जातियों ने इसी इच्छा को ईश्वरीय रूप दे दिया और अपने बड़े धार्मिक त्योहारों में इसे सम्मान दिया। आज अगर कुछ प्रतिबंधित है तो यह प्रतिबंध हमेशा के लिए नहीं है, यह बदलता रहता है। आज भी आदमी एक औरत के साथ सो सकता है। वस जैसे ही वह उसके साथ पादरी के पास जाता है और स्त्री से विवाह कर लेता है। बाकी जातियों के यहाँ कुछ और होता है। आज भी, इसी-लिए हममें से हर एक को अपने लिए यह निश्चित करना होता है कि क्या प्रतिबंधित है और क्या नहीं। कोई आदमी कोई प्रतिबंधित कार्य किए बिना भी कमीना या वेईमान बन सकता है। इसका उल्टा भी सम्भव है। यह तो सिर्फ सुविधा की बात है। जो अपने बारे में खुद सोच सकता है और खुद ही अपना न्याय कर सकता है, वह अपने को आज के इतने प्रति-

नग रहे थे। उनके हाथ मेज पर थे, निर्जीव, किसी वस्तु की भांति जैसे पत्थर का टुकड़ा या पत्न, पीला, स्थिर परंतु जीवित, वन्कि जैसे किसी छिने मजबूत जीवन के चारों तरफ कोई आवरण हो।

इस दृश्य ने मुझे कंपा दिया। वह मर चुका है, मैंने सोचा, सोचते हुए मैं यही जोर में बोल पड़ा। मगर मैं जानता था कि वह मरा नहीं था। मैं सम्मोहित निगाहों से उसके चेहरे की ओर देख रहा था, उस पीले-पपरीले चेहरे की ओर, और मुझे लगा : यही है डेमिआन ! जो सबसे धोलता-चालता है, वह तो आधा डेमिआन है। जैसे कुछ डेर के लिए कोई भूमिका अदा कर रहा हो, जैसे वस सभी को खुदा करने के लिए उनका साथ दे रहा हो। मगर असली डेमिआन तो ऐसा ही है। जैसा सामने है, पत्थर बना, पुरातन, पशु जैसा, पपरीला, सुंदर, ठंडा, मृत और अपूर्व जीवन से भरपूर और उनके चारों तरफ यह घात खालीपन, यह आकाश, अतरिक्त, यह एकाकी मौत !

अब वह पूरी तरह अपने ही भीतर सिमट गया है। मैं दशकों के बीच था। वह पहले कभी इतना नहीं सिमटा था। मेरा उस पर कुछ जोर न था। वह मेरी पहुँच से दूर था। वह मेरे लिए बहुत दूर था। जैसे कि दुनिया के सबसे दूर वाले द्वीप पर हो।

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब मेरे अनाया कोई और क्यों नहीं देख रहा है। नभी की नजर में आना चाहिए, सभी को देखना चाहिए। मगर किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। वह किसी तन्वीर की भांति या कि जैसा मैंने उस समय समझा, मूर्ति की भांति सीधा बैठ रहा। एक मक्खी उसके माथे पर आ बैठी थी, धीरे-धीरे उसकी नाक और होठों पर आकर चली गई। डेमिआन का कोई अंग नहीं हिना।

यहाँ, कहाँ था वह इस समय ? क्या सोच रहा था ? वह क्या महसूस कर रहा है ? क्या वह स्वर्ग में है या फिर नरक में ?

मेरे लिए उसमें यह सब पूछना सम्भव नहीं था। दलास के बाद जब मैंने उसे फिर से जीते-जागते, साँस लेते देखा, जब हमारी नजरें मिली, वह पहले-सा ही था। वहाँ होकर आया था वह ? कहाँ था वह ? वह थका हुआ लग रहा था। उसके चेहरे पर फिर से रंग था। उसके हाथ फिर

मैं किसी तरह इस विचार को दबाने की कोशिश कर रहा था। किसी भी तरह मैं संस्कार में उसके उपयुक्त सम्मान की भावना से भाग लेना चाहता था जो कि मेरे इस विचार के साथ सम्भव नहीं था। मगर यह विचार मेरे साथ ही था। जैसे-जैसे संस्कार का दिन नजदीक आ रहा था, मैं उसमें दूसरे लोगों से अलग भावना से भाग लेने के लिए तैयार हो रहा था। मेरे लिए यह एक ऐसे विचारों की दुनिया में स्वीकृति का संस्कार था जिसमें मैंने डेमिआन को जाना था।

‘उन्हीं दिनों मेरी उससे एक बार फिर बहस हुई। क्लास से कुछ ही पहले की बात थी। डेमिआन आदतन कम बोलता था, और मेरी बातों में कोई रुचि नहीं लेता था जो जरूर बेखी बघारने वाली और सठियाए बूढ़ों की-सी रही होगी।

“हम लोग बहुत ज्यादा बातें करते हैं।” उसने असाधारण गम्भीरता से कहा, “बातें बघारने का कोई फायदा नहीं होता, कुछ नहीं। बस आदमी अपने से ही दूर होता जाता है। अपने से दूर होना पाप है। आदमी में सिमट जाने की क्षमता होनी चाहिए। ठीक कछुए की तरह।”

इस बीच हम क्लास में आ चुके थे। पढ़ाई शुरू हुई और मैंने ध्यान देने की पूरी कोशिश की। डेमिआन ने भी इसमें कोई विघ्न नहीं डाला। कुछ देर बाद मुझे, जहाँ डेमिआन बैठा था, उस तरफ से कुछ विचित्र-सा महसूस हुआ। एक तीखी ठंड या कुछ खालीपन-सा, ऐसा जैसे कोई जगह अचानक ही खाली हो गई हो। यह अहसास जब कुछ ज्यादा हो गया तो मैंने मुड़कर डेमिआन की ओर देखा।

मैंने अपने दोस्त को सीधे, हमेशा की तरह अच्छी तरह बैठा पाया, मगर वह कुछ यूँ था जिससे मैं अनजान था। मुझे लगा उसकी आँखें बंद हैं। गौर से देखा तो उन्हें खुला पाया। उसकी पलकें झपक नहीं रही थीं। वे स्थिर थीं, शायद अपने ही अंदर या कहीं बहुत दूर देख रही थीं। वह पूरी तरह स्थिर बैठा था। लगा, जैसे वह साँस भी न ले रहा हो। उसके होंठ लकड़ी या पत्थर के बने लग रहे थे। उसका चेहरा पीला था, समान रूप से पीला, जैसे पत्थर, उसके भूरे बाल उसके जीवन की एकमात्र निशानी

लग रहे थे। उनके हाथ मेज पर थे, निजीव, किसी वस्तु की भांति जैसे पत्थर का टुकड़ा या जल, पीना, स्थिर परतु जीवित, वल्कि जैसे किसी छिन्न-झरझ मोहन के नारों तरफ कोई आवरण हो।

इन मूर्त ने मुझे कंसा दिया। वह मर चुका है, मैंने सोचा, मोचते दूर मैं शरीरों को ले डाल रहा। मगर मैं जानता था कि वह मरा नहीं था। मैं मूर्तों को लगाता हूँ मैं उनके चेहरे की ओर देख रहा था, उस पीले-पत्थर के चेहरे की ओर और मुझे लगा यही है डेमिअन ! जो मर्दाने सोलता-जानता है या तो आधा डेमिअन है। जैसे कुछ देर के लिए कोई मुस्किरा कर मर चुका हो, जैसे बस सभी को खुश करने के लिए उनका नाम दे रखा है मगर असली डेमिअन तो ऐसा ही है। जैसा जानने है, पत्थर बना हुआ, पगु जैसा, पयरोला, मुदर, ठंडा, नून और कुर्रब डोजन के मर्दाने उनके चारों तरफ यह शांत खालीपन, यह आवाज, कहरिक, यह मर्दाने मौत।

अब वह दूर दूर दूर ही भीतर मिमटा गया है। मैं दर्शकों के बीच था। वह पहने बनी इतना नहीं मिमटा था। मेरा उन पर कुछ जोर न था। वह मेरी पहुँच के दूर था। वह मेरे लिए बहुत दूर था। जैसे कि दुनिया के सबसे दूर जाने वाला हो।

मेरी मुसलमें नहीं आ गया था कि यह सब मेरे अनावा काँड़े और क्यों नहीं देख रहा है। मर्दाने की नजर में आना चाहिए, मर्दाने को देखना चाहिए। मगर जिन्होंने उन पर ध्यान नहीं दिया। वह किसी तन्वीर की भांति या किर्रन मैंने उन समय समझा, मूर्ति की भांति सोचा बैठा रहा। एक मर्दाने उसके नाथे पर आ बैठी थी, धीरे-धीरे उसकी नाक और हाँठों पर आकर चली गई। डेमिअन का कोई अंग नहीं हिना।

कहाँ, कहाँ या वह इन समय ? क्या भीच रहा था ? वह क्या महसूस कर रहा है ? क्या वह स्वर्ग में है या फिर नरक में ?

मेरे लिए उन्हें यह सब पृथक् सम्भव नहीं था। क्लाय के बाद जब मैंने उसे फिर से जलते-जलते, सांस लेते देखा, जब हमारी नजरें मिलीं, वह पहने-आ ही था। कहाँ होकर आया था वह ? कहाँ या वह ? वह क्या हुआ मर रहा था। उसके चेहरे पर फिर मैं रंग था। उनके हाथ फिर

से चल रहे थे। मगर उसके भूरे वालों में अब चमक नहीं थी, जैसे वे बहुत पुराने हों।

अगले दिनों में मैंने अपने शयन-कक्ष में कई बार एक नया अभ्यास करना शुरू किया। एक स्टूल पर बिलकुल सीधे बैठकर, पलकों बिना झपकाए, खुद को जरा भी हिलाए बिना इंतजार करता रहा कि मैं यह कितनी देर तक कर सकता हूँ और क्या महसूस करता हूँ। मैं थका तो जरूर, साथ ही पलकों में जबरदस्त दर्द होने लगा।

कुछ ही दिन बाद संस्कार था, जिसके बारे में मुझे कोई खास बात याद नहीं है।

अब सब बदल चुका था। मेरा वचन मेरे चारों ओर चूर-चूर होकर गिर पड़ा था। माता-पिता किकर्तव्यविमूढ़ से देखते रह गए। वन्हें बिलकुल अपरिचित-सी हो गईं। एक नशा था जो उतर रहा था, जिससे मेरी भावनाएँ, मेरी खुशियाँ पीली पड़ रही थीं। अब बाग में महक नहीं थी, जंगल आकर्षित नहीं करते थे, दुनिया मेरे चारों ओर यूँ थी जैसे सस्ते दामों पर विकते सामान का ढेर हो, बेस्वाद, फीका किताबें कागज-भर थीं, संगीत शोर-भर था। ठीक जैसे पतझड़ का पेड़, जिसके चारों ओर उसकी पत्तियाँ गिरती रहती हैं और उसे पता भी नहीं चलता, उस पर से बरसात गिरकर बहती रहती है, उस पर धूप और नमी का हमला होता। जीवन धीरे-धीरे अपने ही अंदर सरकता जाता है। किंतु वह मरता नहीं। वह प्रतीक्षा करता है।

यह निश्चित किया गया, कि छुट्टियों के बाद मैं स्कूल बदलूँ और पहली बार घर छोड़ूँ। कभी-कभी माँ मेरे पास एक खास नरमी से आती, विदा लेने के से अंदाज में, समय से पहले ही, मेरे मन को स्नेह द्वारा घर से दूर रहने और यादों को संयत कर रखने में सहयोग देने के लिए। डेमिआन उन दिनों कहीं गया हुआ था। मैं अकेला था।

## वेयाट्रिस

अपने दोस्त को मिले बिना ही छुट्टियों के बाद मैं सेंट स्कूल के लिए रवाना हो गया। मेरे माता-पिता मेरे साथ आए। हर सम्भव एहतियात के साथ मुझे हाई स्कूल के अध्यापक के सरदारन में बोर्डिंग हाउस में सौंप गए। वे भय से सिहर जाते, अगर उन्हें जरा भी खयाल होता वे मुझे किन बातों में परिचय के लिए छोड़े जा रहे थे।

सवाल अभी भी वही था। क्या समय के साथ मैं एक अच्छा पुत्र और उपयोगी नागरिक बन सकूंगा या मेरी नियति मुझे कही भटका देगी। मेरी पिता के घर की छाया और देख-रेख में रहने वाली आखिरी कोशिश लम्बी रही और किसी हद तक सफल भी, किंतु अंत में बुरी तरह असफल रही।

खालीपन और अकेलापन, जो मैंने सस्कार के बाद की छुट्टियों में पहली बार महसूस किया था वह जल्दी ही खत्म न हुआ (इस हल्की हवा—जैसे खालीपन की बाद में मैंने कितना ही और जाना!)। घर की याद ने मुझे बिल्कुल भी परेशान नहीं किया। मुझे इस बात पर शर्म आती थी कि मुझे घर की याद आती ही नहीं। वहाँ बेकार में ही रो रही थी। मैं वह सब नहीं कर सकता था। मैं खुद भी अपने पर आश्चर्यचकित था। मैं हमेशा से ही भावुक था। एक भला लड़का था। परंतु अब मैं बदल चुका था। बाहरी दुनिया में अब मैं बिल्कुल सतुलित बर्ताव करता था, और दिन-भर अपने अंदर की आवाजें सुनता था। प्रवाह सुनता था। प्रतिबधित

और काले प्रवाह जो मेरे अंदर कल-कल करते वह रहे थे। मैं बहुत तेजी से बढ़ा था। खासकर पिछले छह महीनों में और साय ही कमजोरी और अपूर्णता को अपने चारों तरफ बढ़ता देख रहा था। वचन का मोलापन मुझमें अब विलकुल न था। मुझे खुद लग रहा था कि कोई ऐसी हालत में प्यार नहीं कर पाएगा। मैं खुद भी अपने को कहाँ प्यार करता था। मैक्स डेमिआन की याद मुझे अक्सर आती रहती। अक्सर मैं उससे घृणा भी करता और उसे अपने जीवन की इस गरीबी का जिम्मेदार मानता। इस गरीबी को मैं अपनी घृणा योग्य बीमारी मानता था।

अपने होस्टल में शुरू में न तो मुझे पसंद किया गया न ही मुझ पर ध्यान दिया गया। पहले-पहल मुझे छेड़ा भी गया परंतु बाद में सब दूर हो रहे। मुझे दबू और विचित्र समझा गया। ऐसा समझा जाना मुझे अच्छा ही लगा। उसे बढ़ावा दिया और अपने को अकेलेपन में खींचता गया जिसे दूसरे लोगों ने विश्व के लिए घृणा का चिह्न समझा, जबकि मैं अंदर-ही-अंदर दुःख और निराशा के हमलों से दबा रहा था। स्कूल में घर की यादों को कमजोर करने के लिए बहुत कुछ था। मेरी क्लास लग-भग पहले की क्लास जितनी ही थी। मैंने अपनी उम्र के लड़कों से बच्चों की तरह सम्बन्ध बनाने की जगह कुछ हिचक से बनाए।

एक साल ने कुछ ज्यादा दिन तक ऐसे ही चलता रहा, पहली छुट्टियों में भी घर में कुछ खास न हुआ। मैं एक बार फिर खुशी-खुशी खाना हो गया।

नवम्बर के शुरू के दिन थे। मैंने हर मौसम में कुछ देर सोचते हुए टहलने की आदत डाल ली थी। मुझे ऐसा करने में एक खास आनंद मिलता था। एक उदासी के साय, दुनिया से स्वयं से दूर। ऐसे ही एक दिन शाम को मैं नम घुंघलके में शहर में घूम रहा था। रास्ते में बहुत से पत्ते बिखरे पड़े थे। मैं बड़े मजे में पैरों से उनको उलटता आगे बढ़ रहा था। नमी की तीखी महक उठ रही थी। दूर के पेड़ और उनकी छाया अँधेरे में भूतिया अहसास दे रही थी।

भुरमुट के आखिर में मैं अनिश्चय में खड़ा रहा गया। काले पेड़ों की ओर देखता रहा। बड़ी उत्सुकता से पतझड़ और सूखेपन की महक लेने के

लिए जोर मे साँस ली और जैसे मेरे अंदर से किसी ने कहा, आह ! कितना रुखा स्वाद है जीवन का ?

पास की एक गली से कोई ढीला काला वाला कोट पहने आता दिग्राई दिया । मैं आगे को बढ जाना चाहता था कि तभी उसने मुझे आवाज दी—

“हेलो सिनक्लेयर !”

वह पाम आया । अल्फोंस बेक था उसका नाम; हमारे ही होस्टल का सबसे पुराना रहने वाला था । मैंने हमेशा उससे नरमाई से बर्ताव किया था और उसमे मुझे कोई शिकायत भी नहीं थी, सिवाय इसके कि वह हमेशा व्यंग्य मे बोलता था ओर सभी छोटे विद्यार्थियों को किसी बुजुर्ग का-न्ना रोव दिलाता था । उसके बारे मे मसहूर था कि वह बेल-सा ताकतवर है और वह हैड मास्टर को अपने ठेगे पर रखता था । वह स्कूल मे प्रचलित कितनी ही कहानियों का नायक था ।

“तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?” उसने ध्यार से आवाज दी, जैसे हमेशा पुराने छात्र नए छात्रों की होसला-अफजाई के लिए करते हैं, “चलो नगी घर्त, तुम जरूर कविताएँ लिख रहे थे ?”

“यह तो मैंने कभी सोचा भी नहीं ।”

मेरे साथ चलते हुए वह जोर से हँसा और इस तरह से बोला जिसका मैं आदो न था ।

“यह मत समझो सिनक्लेयर, कि मैं यह बातें समझता नहीं हूँ । शाम को इस तरह से टहलते हुए पतझड़ के बीच व्यक्ति के मन मे कविताएँ लिखने की बात आ ही जाती है । यह पतझड़ मे समाप्त हो रही प्रकृति और आदमी की ऐसी अवस्था, जैसी कि तुम्हारी है । हाइनरिच हाइने को ही देख लो ।”

“मैं ऐसा भावुक नहीं हूँ ।” मैंने अपने बचाव मे कहा ।

“चलो, घुरा मत मानो । पर मुझे लगता है कि आदमी कोई एकात ढूँढकर ठीक ही करता है, जहाँ एक गिलास शराब या ऐसी ही कोई चीज मिल जाए । मेरे साथ चलो ! मैं भी इस समय बिलकुल अकेला हूँ । या तुम्हारा मन नहीं है ? मैं तुम्हें बिगाडने वाला नहीं बनना चाहता, अगर



और काले प्रवाह जो मेरे अंदर कल-कल करते वह रहे थे। मैं बहुत तेजी से बढ़ा था। खासकर पिछले छह महीनों में और साथ ही कमजोरी और अपूर्णता को अपने चारों तरफ बढ़ता देख रहा था। वचपन का भोलापन मुझमें अब विलकुल न था। मुझे खुद लग रहा था कि कोई ऐसी हालत में प्यार नहीं कर पाएगा। मैं खुद भी अपने को कहाँ प्यार करता था। मैक्स डेमिआन की याद मुझे अक्सर आती रहती। अक्सर मैं उससे घृणा भी करता और उसे अपने जीवन की इस गरीबी का जिम्मेदार मानता। इस गरीबी को मैं अपनी घृणा योग्य बीमारी मानता था।

अपने होस्टल में शुरू में न तो मुझे पसंद किया गया न ही मुझ पर ध्यान दिया गया। पहले-पहल मुझे छोड़ा भी गया परंतु बाद में सब दूर ही रहे। मुझे दब्डू और विचित्र समझा गया। ऐसा समझा जाना मुझे अच्छा ही लगा। उसे बढ़ावा दिया और अपने को अकेलेपन में खींचता गया जिसे दूसरे लोगों ने विश्व के लिए घृणा का चिह्न समझा, जबकि मैं अंदर-ही-अंदर दुःख और निराशा के हमलों से दबा रहा था। स्कूल में घर की यादों को कमजोर करने के लिए बहुत कुछ था। मेरी क्लास लग-भग पहले की क्लास जितनी ही थी। मैंने अपनी उम्र के लड़कों से वच्चों की तरह सम्बन्ध बनाने की जगह कुछ हिचक से बनाए।

एक साल से कुछ ज्यादा दिन तक ऐसे ही चलता रहा, पहली छुट्टियों में भी घर में कुछ खास न हुआ। मैं एक बार फिर खुशी-खुशी खाना हो गया।

नवम्बर के शुरू के दिन थे। मैंने हर मौसम में कुछ देर सोचते हुए टहलने की आदत डाल ली थी। मुझे ऐसा करने में एक खास आनंद मिलता था। एक उदासी के साथ, दुनिया से स्वयं से दूर। ऐसे ही एक दिन शाम को मैं नम धुंधलके में शहर में घूम रहा था। रास्ते में बहुत से पत्ते बिखरे पड़े थे। मैं बड़े मजे में पैरों से उनको उलटता आगे बढ़ रहा था। नमी की तीखी महक उठ रही थी। दूर के पेड़ और उनकी छाया अँधेरे में भूतिया अहसास दे रही थी।

भुरमुट के आखिर में मैं अनिश्चय में खड़ा रहा गया। काले पेड़ों की ओर देखता रहा। बड़ी उत्सुकता से पतझड़ और सूखेपन की महक लेने के

लिए जोर मे सांस ली और जैसे मेरे अंदर से किसी ने कहा, आह ! कितना  
रूखा स्वाद है जीवन का ?

पास की एक गली से कोई ढीला कासा वाला कोट पहने आता  
दिग्वार्द दिया । मैं आगे को बढ़ जाना चाहता था कि तभी उसने मुझे  
आवाज दी—

“हेलो सिनक्लेयर !”

वह पास आया । अल्फोंस बेक था उसका नाम ; हमारे ही होस्टल  
का सबसे पुराना रहने वाला था । मैंने हमेशा उससे नरमाई से बर्ताव  
किया था और उससे मुझे कोई शिकायत भी नहीं थी, सिवाय इसके कि  
वह हमेशा ध्वंग्य में बोलता था और सभी छोटे विद्यार्थियों को किसी बुजुर्ग  
का-मा रोव दिखता था । उसके बारे में मसहूर था कि वह बैल-सा  
ताकतवर है और वह हैड मास्टर को अपने ठेगे पर रखता था । वह स्कूल  
में प्रचलित कितनी ही कहानियों का नायक था ।

“तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?” उसने प्यार से आवाज दी, जैसे  
हमेशा पुराने छात्र नए छात्रों की होसला-अफजाई के लिए करते हैं, “चलो  
सगो शर्त, तुम जरूर कविताएँ लिख रहे थे ?”

“यह तो मैंने कभी सोचा भी नहीं ।”

मेरे साथ चलते हुए वह जोर से हँसा और इस तरह से बोला  
जिसका मैं आदी न था ।

“यह मत समझो सिनक्लेयर, कि मैं यह बातें समझता नहीं हूँ । शाम  
को इस तरह से टहलते हुए पतझड़ के बीच व्यक्ति के मन में कविताएँ  
लिखने की बात आ ही जाती है । यह पतझड़ में समाप्त हो रही प्रकृति  
और आदमी की ऐसी अवस्था, जैसी कि तुम्हारी है । हाइनरिच हाइने को  
ही देख लो ।”

“मैं ऐसा भावुक नहीं हूँ ।” मैंने अपने बचाव में कहा ।

“चलो, बुरा मत मानो ! पर मुझे लगता है कि आदमी कोई एकात  
ढूँढ़कर टोक ही करता है, जहाँ एक गिलास शराब या ऐसी ही कोई चीज  
मिल जाए । मेरे साथ चलो ! मैं भी इस समय बिल्कुल अकेला हूँ । या  
तुम्हारा मन नहीं है ? मैं तुम्हें बिगाड़ने वाला नहीं बनना चाहता, अगर

कहीं तुम्हें आदर्श व्यक्ति बनना हो तो ।”

कुछ ही देर बाद हम लोग शहर के बाहर वाले एक छोटे रेस्टोरेंट में हिचकिचाते बैठे गिलास टकराते हुए शराब पी रहे थे। शुरू में मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा, पर फिर भी...सब कुछ नया था। फिर जल्दी ही शराब की आदत न होने के कारण मैं वातूनी-सा बातें बनाने लगा। लगा, जैसे मेरे अंदर कोई खिड़की टूट गई है और दुनिया नजर आने लगी है। कितने दिन, कितना अरसा हो गया था मुझे अपने मन की बात किसी से कहे बिना। मैं कल्पनाओं में घूमने लगा और उसी बीच में उसे केन और आवेल वाली सारी कथा सुना बैठा।

वेक बड़ी रुचि से साथ सुनता रहा—आह आखिरकार एक तो मिला जिसे मैं कुछ दे सका। उसने मेरा कंधा थपथपाया और ‘शैतान बच्चे’ का नाम देकर छेड़ा तो खुशी से मेरी छाती फूल गई, खास तौर पर यह सोचकर कि बातचीत और बताने की दबी इच्छा को खुले मन से बहने दिया है और अपने से बड़े लड़के से अपनी समझदारी के लिए मान्यता पाई है। जब उसने मुझे चालाक बदमाश कहा तो उसके शब्द मीठी, नशीली शराब की तरह सीधे मेरी आत्मा में उतर गए। दुनिया नए रंगों में चमक रही थी। मेरे मन से विचार सैकड़ों फव्वारों की तरह फूट पड़ रहे थे। मेरे अंदर उत्साह की आग दहकने लगी। हम अध्यापकों और दूसरे छात्रों की बातें करते रहे और मुझे लगा हम एक-दूसरे को बड़ी अच्छी तरह समझते हैं। हम यूनानियों की बातें करते रहे, धर्म-परिवर्तित लोगों के बारे में बोलते रहे, परंतु वेक मुझे घुमा-फिराकर किसी रोमांचकारी प्रेम-सम्बन्ध को मनवाना चाहता था। पर उस बारे में मैं कुछ बोल ही नहीं पा रहा था। मेरा ऐसा कुछ अनुभव नहीं था, जो मैं उसे बताता। मैंने क्या महसूस किया था, या गढ़ा था, क्या कल्पनाएँ की थीं, वह मेरे मन में ज्वलंत था; शराब भी जिसे पिघलाकर बताए जाने लायक नहीं बना सकी थी। लड़कियों के बारे में वेक मुझसे काफी ज्यादा जानता था। मैं ये कहानियाँ रोमांच से भरा सुनता रहा। बड़ी अजीब बातें थीं। जो कुछ मैं असम्भव समझता था वे रोजमर्रा के जीवन की सच्चाई-सी दिखाई दे रही थीं और आम लग रही थीं। अपनी अठारह साल से कम की उम्र में वेक लड़कियों का

अनुभव ले चुका था। उसने जाना था कि लड़कियाँ आनंद मनाना और पलट कराना चाहती हैं। इसे माना तो जा सकता है, मगर यह सच नहीं है। इन सब बातों के मामले में बड़ी औरतों के साथ सफलता की ज्यादा उम्मीद थी। औरतें ज्यादा चतुर होती हैं। मिसिज जागेल्ट, जिनकी अपनी स्टेशनरी की दुकान थी, उनसे बात बन सकती थी। अब उसकी दुकान के काउंटर के पीछे क्या कुछ चल रहा है, यह कौन जानेगा।

मैं मंत्रमुग्ध बैठा रहा। अब मिसिज जागेल्ट से मैं प्रेम तो करने से रहा, मगर फिर भी यह खबर जोरदार थी। लगता था जैसे वहाँ आनंद के फव्वारे छूट रहे हैं, कम-से-कम बड़े लड़कों के लिए। उस आनंद के फव्वारे, जिनके बारे में मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। फिर भी कुछ था, जो लगता था ठीक नहीं है, बहुत मामूली और बेजायका, बजाय बसा लगने के जैसा मैं प्यार को मानता था।—मगर यह सच्चाई थी, जीवन और रोमांच था। मेरे पास बैठा शस्त्र यह अनुभव कर चुका था, जिसे हर ऐसी बात की समझ थी, ऐसा मुझे लग रहा था।

हमारी बातचीत का सिलसिला टूट रहा था। कुछ कमी थी। अब मैं 'बदमाश बच्चा' नहीं था। मगर फिर भी, पिछले कितने ही महीनों के मुकाबले इसमें अधिक आनंद था। यह स्वर्ग जैसा था। वैसे भी, धीरे-धीरे जब मैंने इस रेस्टोरेंट में अपनी उपस्थिति और बातचीत के निषिद्ध विषय पर गौर किया, जिस पर बात नहीं करनी चाहिए थी, तो कम-से-कम एक विद्रोह की-सी भावना का आभास जरूर हुआ।

मुझे वह रात बड़ी अच्छी तरह याद है जब हम दोनों इस भीगी हुई रात में हल्की रोशनी फैलाती बत्तियों के पास से गुजर रहे थे। ठंडी-भीगी रात जब मैंने पहली बार पी थी। यह सब कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। यह था तो दर्द भरा, परंतु इसमें कुछ था, एक रोमांच, एक मिठास, एक विद्रोह-जैसा, जो कि प्राणवान कर रहा था। बेक ने मुझे सम्भालकर ठीक ही किया, हालांकि उसने मुझे एक घटिया नौसिखुवा कहकर गाली भी दी और मुझे होस्टल पहुँचाया, जहाँ पर वह मुझे एक खुली बिड़की से अंदर पहुँचाने में सफल रहा।

मगर अपनी भौत की-सी गहरी नींद के बाद जब मैं जागा तो

सच्चाई को वेहद दर्द और मानसिक दबाव के साथ अनुभव किया। मैं विस्तर पर बैठ गया, कमीज मैंने अब भी पहन रखी थी। मेरे बाकी कपड़े फर्श पर फैले पड़े थे, तम्बाकू और उल्टी की बदबू आ रही थी। सर-दर्द और मितली के बीच मेरे सामने वह तस्वीर उभरी जिसे मैंने एक अरसे से नहीं देखा था। मैंने देखा अपने माता-पिता का घर, मेरा घर, मेरे माता-पिता, मेरी बहनें, बाग। मैं अपने सोने का कमरा भी देख पा रहा था, स्कूल, बाजार, डेमिआन, धार्मिक क्लास—सब कुछ प्रकाशमय, सब कुछ प्रेमकदार, सब कुछ शानदार, ईश्वरीय और पवित्र, सब कुछ, जो मेरा था—कल तक मेरी बात सुन रहा था, कुछ घंटे पहले तक मेरा इंतजार कर रहा था, इस घड़ी में डूब चुका था, मेरी बात नहीं सुन रहा था, मुझे छोड़ रहा था, मेरी ओर घृणा से देख रहा था ! सब कुछ जो मेरा अपना था, प्यारा था, सब कुछ जो मैंने माता-पिता की स्नेह-छाया जाना था, मेरी माँ का हर एक चुम्बन, हर क्रिसमस, घर की हर खुशहाल रोशन सुबह, छुट्टी का दिन, बागीचे का हर फूल सब कुछ सूख चुका था, सब कुछ मैंने पैरों तले रोंद दिया था ! अगर कहीं कानून के हाथ मुझ तक इसी समय पहुँच सकते और मुझे इस पाप के जुर्म में फाँसी पर चढ़ा देते तो मुझे जरा भी दुःख न होता, खुशी से सह लेता, इसे ठीक और न्यायपूर्ण पाता।

हाँ, तो ऐसी हालत थी मेरे मन की ! मैं जो दुनिया को कोसता घूम रहा था, मैं जिसकी आत्मा में गर्व था, जो डेमिआन के विचारों का भागीदार था। लगता था कि मैं नीच, बदचलन, शराबी, बदनाम, घृणा का पात्र, निहायत साधारण विचारों के लापरवाह जानवर जैसा हूँ। मैं ही था, जो उन बागों से आया था, जहाँ सभी कुछ प्रकाशित और पवित्रता से परिपूर्ण था, मैं ही था, जो बाख के संगीत और श्रेष्ठ कविताओं का दीवाना था। घृणा और गुस्से से भरा मैं अपनी ही हँसी सुनता, नशे में डूबी, अनियंत्रित बेवकूफाना हँसी ! यही था मैं।

इसके बावजूद इस दुख को भेलने में एक आनंद था। अब तक मैं अंधा और निरुत्साहित-सा जैसे घिसटते हुए चलता जा रहा था। अब तक मेरा मन चुप-असहाय एक कोने में बैठा रहा था, बिना यह कहे कि स्वयं को दोषी करार देना, मौजूदा भय और यह घृणास्पद विचार मुझे स्वीकार

है। विचार ही तो थे, जो मुझे लपटों की तरह घेर रहे थे और जिनमें मेरा अपना हृदय सिझुड़-सिमट गया था। लेकिन इस उलझन और तबाही के बीच एक आजादी और बहार भी थी।

इसी बीच मेरी हालत बिगड़ती गई। पहला नशा एक बार की ही बात नहीं थी। हमारे स्कूली दोस्तों में पीने और अठखेलियाँ करने के दौर चलते ही रहते थे। यह सब करने वालों में मैं सबसे कम उम्र का था, मगर जल्दी ही न तो मैं छोटा रह गया, न ही किसी से पीछे, बल्कि एक नेता और हीरो, मसहूर और निडर शराबी बन गया। एक बार मैं फिर अँधेरी दुनिया का हो गया था, फिर से सँतान के हाथ में था और इस दुनिया के शानदार लड़कों में गिना जाने लगा।

दूसरी तरफ मेरी हालत दयनीय हो चली थी। मैं खुद को तबाह करने वाले रास्ते पर चल रहा था। इस दौरान मेरी आत्मा भय और दुःख से तड़प रही थी। मुझे याद है कि एक रविवार की दोपहर शराबखाने में निकलते हुए सड़क पर बच्चों को प्रसन्नचित, ताजे कंधी किए वालों और छुट्टी के कपड़ों में खेलते देखकर मेरी आँखों में आँसू आ गए थे। और जब मैं बीयर पीकर हँसते हुए घटिया होटलों की गद्दी मेजों पर अपने दोस्तों से मसखरी कर रहा था और उन्हें डरा रहा था, उसी समय अपने मन में सबसे अधिक उसी से डर रहा था, जिसकी हँसी उड़ा रहा था। अपने ही अंदर रोता हुआ, घुटनों के बल अपनी ही आत्मा के सामने, अपने ही घोर समय के सामने, माँ के सामने, ईश्वर के सामने गिड़गिड़ा रहा था। यह बड़ा स्वाभाविक था कि मैं अपने साथियों के साथ घुल-मिल नहीं पाता था, उनके बीच में अकेला और दुखी रहता था। मैं शराबखानों का हीरो था, उजड़ों की नजर में मैं अपने विचारों और बातों में—चाहे वे अघ्यापक के बारे में हों या स्कूल के बारे में हों अथवा माता-पिता और घर के बारे में—किसी की भी टाँग खींचने वाला था। मैं अश्लील चुटकुले भी सुनाता था, कभी-कभी उन्हें खुद भी ईजाद कर लेता, मगर मैं इनमें फिर भी शामिल न था। जब मेरे साथी सड़कियों के पास चले जाते, मैं अकेला रह जाता और प्रेम करने की इच्छा से जलने लगता, तीव्र इच्छा से, क्योंकि मेरी गप्पों के मुताबिक मुझे बेहद बेशर्म और भोरी होना चाहिए था।

कोई भी मुझसे अधिक घायल, मुझसे अधिक शर्म में डूबा न रहा होगा। जब मैं शहर की लड़कियों को जाता देखता, कितनी सुंदर, नेक, खुश—वे मुझे किसी सुंदर सपने की तरह लगतीं और अपने लिए हजारों गुना भली। काफी अरसे तक मैं मिसेज जागेल्ट की दुकान पर भी नहीं जा पाया क्योंकि उन्हें देखकर मैं अरफोंस वेक की बातें सोचकर शर्म से लाल हो उठता।

जितना मैं अपनी इस नई संगति में अपने को अकेला और कटा हुआ पाता, उतना ही इससे दूर होना मुश्किल लगता। मैं बिलकुल नहीं जानता कि पीने या उस झूठी प्रशंसा ने मुझे कभी वास्तव में सुख दिया या नहीं, और पीने की मुझे कभी ऐसी आदत भी नहीं पड़ी कि आने वाले घुरे दिनों का अहसास न रहा हो। जैसे मैं सब कुछ करने को बाध्य था। जो सुरू पड़ रहा था, मैं किए जा रहा था। आगा-पीछा मुझे कुछ मालूम नहीं था कि क्या करना चाहिए। लम्बे समय तक अकेला रहने से मुझे डर लगा रहा था। डर लगता था अपने ही मन की तमाम स्निग्ध इच्छाओं से, जिनकी ओर मैं खुद को आकर्षित पाता था, डरता था मुक्त प्रेमालाप के विचारों से, जो अक्सर ही मेरे मन में उठते थे।

एक चीज की कमी मुझे खल रही थी—एक दोस्त की। दो-तीन साथ के ऐसे छात्र थे जो मुझे अच्छे लगते थे, मगर उनकी गिनती शरीफों में होती थी जबकि मेरी घुरी आदतों के चर्चे गली-गली थे। वे मुझसे दूर-दूर रहते। मैं उन लोगों की नजर में ऐसा लोफर था जो नीचता की दलदल में नाउम्मीदी की हद तक डूब चुका था। अव्यापकों को भी मेरे बारे में काफी कुछ मालूम था, मुझे कितनी ही बार सजा दी जा चुकी थी। वस, मेरे स्कूल से निकाले जाने की ही कसर बाकी थी, जिसकी कि लोग उम्मीद कर रहे थे। मैं खुद भी जानता था कि एक जमाने से मैं कोई भला छात्र नहीं रह गया हूँ। फिर भी अपने को पूरी कोशिश से दबाता, यह सोचकर कि नहीं, यह सब हमेशा नहीं चल सकता।

ऐसे बहुत-से रास्ते हैं जिनसे ईश्वर हमें अकेला कर हमारे अंतर्मन की ओर ले जा सकता है। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता भी था, जैसे ईश्वर मेरे साथ है। जैसे यह कोई घुरा सपना ही। मैं कोई सम्मोहित सपने देखने

वाला हूँ जो गंदगी, काँचड़, टूटी बीयर की बोतलों और घटिया मजाकों से भरी रातों में परेशान और दुखी एक गंदे और घटिया रास्ते को घिसट-कर पार कर रहा हूँ। ऐसे भी सपने होते हैं जिनमें राजकुमारी तक पहुँचने के लिए व्यक्ति ऐसी ऊबड़-खाबड़ बंदबूदार गलियों में फँस जाता है। ऐसा ही मेरे साथ हुआ था। इस बुरी तरह से मेरे और मेरे बचपन के बीच यह अकेलापन मुझ पर घोसा गया था जिसमें स्वर्ग का द्वार बंद था, उसके निर्दयी पहरेदार खड़े थे। यह एक दुःखात थी, अपने अतर्भन की ओर जाने की इच्छा का उठाव था।

मैं डर के मारे काँप गया था जब होस्टल अधिकारी के पत्रों से परेशान मेरे पिता पहली बार सेंट स्कूल आए और अप्रत्याशित रूप से अचानक मेरे सामने आ खड़े हुए। उन सत्रियों के अंत में, जब वे दूसरी बार आए, तब तक मुझमें हिम्मत आ चुकी थी और मैं लापरवाह हो गया था। उन्हें भला-बुरा, खरी-खोटी सुनाते देखता रहा, उन्होंने मुझे मेरी माँ की याद दिलाई। अंत में उन्हें गुस्सा आ गया और बोले—अगर मैं नहीं सुधरा तो वे मुझे स्कूल से निकालकर किसी सुधारघर में डाल देंगे। डालना ही है तो डाल दो! उस बार उनके जाने के बाद मुझे उनके लिए दुःख हुआ। उनके आने का उन्हें कुछ फायदा नहीं हुआ था। अब उनके लिए मुझ तक पहुँचने का कोई मार्ग नहीं बचा था और उस समय मुझे लगा, उनके साथ ठीक ही हुआ।

अब मेरा क्या होगा, इस बात से मुझे अब कुछ सास फेकें नहीं पड़ता था। मैं अपने ही रास और घटिया तरीकों, शराबखाने और लोफरबाजी को लेकर दुनिया के साथ एक लड़ाई कर रहा था। विरोध जाहिर करने का यह मेरा अपना तरीका था। मैं अपने को तबाह कर रहा था और सारी बात को यूँ देखता था। अगर दुनिया को मेरी जरूरत नहीं है, उसके अपने पास मेरे लिए कोई बेहतर जगह, कोई ऊँचा काम नहीं है, तो मुझ जैसे लोगों को तबाह होना ही है। इसमें दुनिया का ही नुकसान है।

उस साल की क्रिसमस की छुट्टियों में कोई खुशी न थी। मेरी माँ मुझे देखकर बहुत ही दुखी हुई। मैं कुछ और बड़ा हो गया था और मेरा कम-जोर पीला चेहरा, आँखों के नीचे पड़ गए गहवों के साथ और भी जर्जर लग



रहा था, मेरी नई उगती मूँछें और तिस पर नया लगा चश्मा मुझे माँ के लिए और भी बजनदी बना रहा था। मेरी बहनें झेंपकर हँसती रहीं। यह सब मेरे लिए कुछ अच्छा न था।

पिता के साथ उनके पढ़ने के कमरे में हुई बातचीत भी कुछ अच्छी न थी, रिस्तेदारों से मिलना और क्लिप्त हो कहाँ बारामदेह था। जब से मैं इस घर में रहता था, क्लिप्त हमेशा से खुरी, हृत्तमता और प्रेम का दिन होता था। मेरे व माता-पिता के बीच सम्बन्धों को नई शुरुआत देने का दिन होता था। परंतु इस बार यह सब दिमाग पर जोर-ला था, त्योहार में एक सुखद भावना की जगह एक उपहास था। हमेशा की तरह मेरे पिता ने गड़रियों की कहानी का वह किस्सा पढ़कर सुनाया कि गड़रिये अपने 'जानवरों की निगरानी कर रहे थे।' हमेशा की तरह मेरी बहनें सलीके से उपहारों की मेज के पास खड़ी थीं। नगर पिता की आवाज में कहीं दुख था। उनके चेहरे पर बुढ़ापा और तनाव नजर आ रहा था। माँ दुखी थीं और मेरे लिए भी सब कुछ उतना ही दुख भरा था, चाहे वह उपहार हों, क्लिप्त की बधाइयाँ, पूजा-प्रार्थना का पढ़ना या क्लिप्त की वक्तियाँ जलाना। केक की महक मीठी थी, और इसके साथ जुड़ी कितनी ही यादें और भी मीठी थीं। क्लिप्त-ट्री की महक एक ऐसी दुनिया की याद दिला रही थी जो अब अस्तित्व में नहीं थी। मैं उस शाम के और छुट्टियों के खत्म होने की प्रतीक्षा कर रहा था।

सारी सदियों-भर यही चलता रहा। अभी कुछ ही दिन पहले अन्ध-पकों की ओर से मुझे स्कूल से निकाले जाने की चेतावनी दी जा चुकी थी। अब सब कुछ ज्यादा देर नहीं चलेगा। खैर, मेरी बला से।

मैक्स डेमिजान से मुझे एक खास शिकायत थी। एक लम्बे अरसे से मैं उससे नहीं मिला था। सेंट स्कूल में जाने के शुरुआती दिनों में मैंने उसे दो बार पत्र लिखा था, मगर कोई जवाब नहीं आया था, इसीलिए मैं छुट्टियों के दौरान उससे मिलने भी नहीं गया।

वसंत के शुरू में जब कटोती झाड़ियों में फूल आने को थे, उसी पार्क में जहाँ पहली बार मैं जल्फोंस बेक को मिला था, मेरी नजर एक लड़की पर पड़ी। मैं यूँ ही टहलने निकला था। दिमाग में तन्मा जल-जलूल

खयाल और चिन्ताओं की वजह से मेरी सैहत खराब हो गई थी, और ऊपर से पैसों की तंगी भी थी, दोस्तों को खास कर्जें अदा करने थे। इसी-लिए मुझे रोज नए खर्चों की आड़ लेकर घर में पैसे मँगवाने के लिए लिखना पड़ता। कुछ दुकानों का तिगार और ऐसी ही चीजों को लेकर खासा कर्जा हो गया था। ऐसा नहीं था कि मुझे इन सब बातों की बहुत ज्यादा फिक्र थी। यदि अल्दो ही मेरा जीवन खत्म होना है, चाहे पानी में डूबकर हो या मुझे किसी सुधारगृह में डाला जाए, तो फिर कुछ और कर्जों से कोई फर्क पढ़ने वाला नहीं था। किंतु फिर भी मुझे इन सन्वाइयों का सामना करते हुए जीना था। यही मेरी मुश्किल थी।

बसंत के उस दिन मैं पार्क में एक युवा स्त्री से मिला। वह लम्बी, दुयानी थी, अच्छे कपड़े पहने हुए थे और अक्लमंदी से भरा उसका चेहरा कुछ-कुछ लड़कों जैसा था। पहली ही नजर में वह मुझे भा गई। मही तो थी मेरी पसंद, जो मुझे अच्छी लगती थी और मेरी कल्पना-शक्ति तुरंत ध्वस्त हो गई। उम्र में वह मुझसे खास बड़ी न थी, मगर थी बहुत समझदार, सुंदर, भरी-भूरी, मगर इन सबसे अधिक उसके चेहरे पर साहज और लड़कों जैसी जो छाप थी, वही बात मुझे सबसे अधिक पसंद थी।

ऐसा कभी नहीं हुआ था कि मैं उस लड़की के पास जा सकूँ जिसे मैं प्यार करता था, न ही इस लड़की के साथ ऐसा हुआ। लेकिन इसका असर मेरे जीवन में इससे पहले आई लड़कियों की अपेक्षा कहीं बहुत अधिक गहरा पड़ा। इस प्रेम ने मेरे जीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया।

एक बार फिर मेरे सामने एक तस्वीर आ गई थी, एक बड़ी और आदर योग्य तस्वीर। किसी की पूजा करने, आदर करने की इच्छा से बढकर मेरे लिए कुछ न था। मैंने उसे बेयाट्रिस का नाम दिया क्योंकि मैं उसके बारे में जानता था। दाते को पढ़े बिना ही, एक अंग्रेजी नकल के जरिए, जो मेरे पास थी। इसमें और लड़की का चित्र था, लम्बी, दुबली, छोटा-सम्बा सिर, सुंदर हाथ और तीव्र नाक-नक्का। यह सुंदर युवा लड़की बिलगुल उस जैसी तो न थी, हालांकि वह भी ऐसी ही दुबली और लड़को-

जैसी नाक-नक्श वाली थी। ये नाक-नक्श मुझे बहुत भाते थे। इनमें एक अजब-सा रूहानी असर था।

मैंने वेयाट्रिस से एक शब्द भी नहीं कहा था, फिर भी मुझ पर उसका जवर्दस्त असर पड़ा। उसकी तसवीर मेरे सामने थी—किसी पवित्र मूर्ति की तरह, उसने मुझे किसी मंदिर के पुजारी-जैसा बना दिया था। एक के बाद एक—कितने ही दिन मैं शराबखानों और रात-रात की आवरागर्दी से बचा रहा। मैं फिर से अकेला रह सकता था। मजे से पढ़ सकता था। एक बार फिर खुशी-खुशी टहलने जा सकता था।

मेरा यूँ बदलना उपहास का विषय भी बना, किंतु अब मेरे पास चाहने के लिए कुछ था—जिसकी तरफ मैं देख सकता था। मेरे पास एक आदर्श था। मेरा जीवन, उम्मीद और रंग-विरंगी रहस्यमयी सुबह से भर गया था। यही मुझे इतना मगन कर रहा था। एक बार फिर मैं अपने नियंत्रण में था—एक सेवक, एक पूज्य प्रतिमा के दास स्वरूप ही सही।

उस समय के बारे में मैं भावनाओं में बहे बिना नहीं सोच पाता हूँ। एक बार अपनी पूरी शक्ति से मैं अपने जीवन के टूटे-फूटे खंडहर को एक प्रकाशित विश्व का रूप देने की कोशिश कर रहा था। एक बार फिर अपने मन से बुराई और अँधेरे को दूर कर देना चाहता था, प्रकाश में रहना चाहता था, घुटनों के बल, ईश्वर के सामने। मगर यह 'प्रकाशित विश्व' मेरी अपनी रचना थी, यह माँ की गोद में वापस जाने और जिम्मेदारियों से दूर मस्ती की ओर पलायन न था, यह कुछ नया था, जो मेरी अपनी ईजाद, अपनी जरूरतों, जिम्मेदारी और अपनी इच्छाओं के दमन के साथ। सदास सम्बन्धी मेरी बातें, जिनसे मैं परेशान था और जिनसे लगातार भाग रहा था, यहाँ मेरी आत्मा और चिंतन को पवित्रता का प्रकाश दे रही थीं। अब घृणा या अँधेरे के लिए कोई स्थान न था। दुख, परेशानी-भरी रातों और सम्भोग-सम्बन्धी सपनों के कारण बढ़ती हुई दिल की घड़कनें नहीं थीं, प्रतिबंधित दरवाजों से कान लगाना नहीं था, कामुकता नहीं थी। इन सबकी जगह मैंने वेयाट्रिस की तसवीर के साथ पूजा की वेदी को ऊँचा उठाया, मैंने स्वयं को वेयाट्रिस को समर्पित कर दिया था, इस समर्पण के साथ ही मैं अध्यात्म को, ईश्वर को समर्पित हो गया था।

पवित्रता मेरा ध्येय बन चुकी थी। खुशी का स्थान सौंदर्य और अध्यात्म ने ले लिया था।

बेयाट्रिस की उपासना ने मेरे जीवन को पूरी तरह नया रूप दे दिया था। मैं, कल का पापी, आज संत बनने का ध्येय लेकर मंदिर का पुजारी बन बैठा था। मैंने अपने जीवन में सिर्फ़ उन बुराईयों को ही न निकाला, जिनकी मुझे आदत पड़ गई थी, बल्कि सब कुछ बदलने का प्रयास किया। मैं पवित्रता की तलाश कर रहा था, हर चीज में श्रेष्ठता, सम्मान लाने का प्रयास कर रहा था। अब तक मैं सिर्फ़ खाने-पीने, भाषा और कपड़ों के बारे में सोचता था। मेरी सुबह ठंडे पानी से स्नान के साथ शुरू होती, जिनकी आदत डालने में पहले-पहले मुझे खासो दिक्कत हुई। मैं बहुत गम्भीर, संयत रहता, धीरे-धीरे और सभ्य तरीके से चलता। देखने वाले को चाहे यह बड़ा हास्यास्पद लगता हो, किंतु मेरे लिए यह एक प्रकार की पूजा थी।

स्वयं को अभिव्यक्त करने के जो तरीके मैंने अपनाए, उनमें से एक बहुत महत्वपूर्ण था। मैंने पेंटिंग करना आरम्भ किया। इस सबके आरम्भ के पीछे एक ही विचार था, बेयाट्रिस की तसवीर जो मेरे पास थी, इस सड़की से पूरी तरह नहीं मिलती थी। मैं स्वयं उसकी पेंटिंग बनाना चाहता था। एक दिन खुशी और उम्मीद से मैं अपने कमरे में सुंदर कागज, रंगों और ब्रश लाया, कुछ समय पहले मुझे एक कमरा मिल गया था। रंगों की पेट्री, शीशा, चीनी-मिट्टी के बर्तन, पेंसिलें—मन सँभाले रखे। छोटी-छोटी द्यूबों में रंग, जो मैंने खरीदे थे, मुझे रोमांचित कर रहे थे। उन्हीं में से एक रंग, प्रोमियम के लवणों से मिला तीखा हरा रंग, जिसे मैं आज भी बैनयस पर चमकता हुआ देख सकता हूँ।

मैंने बड़े ध्यान से काम शुरू किया। एक चेहरे को रचा। यह मुश्किल लगा। मैंने आभूषण, फूल और छोटे-छोटे कल्पित प्राकृतिक दृश्य बनाए, छोटे-से चर्च के पास एक पेड़, वृक्षों के साथ रोमन पुल, कभी-कभी मैं इस खेल में बिलकुल खो जाता, ऐसा लगता जैसे कोई बच्चा रंग का डिब्बा मिल जाने से खुश हो रहा हो। आखिर में मैंने बेयाट्रिस की पेंटिंग बनानी शुरू की।

कुछ कागज बहुत खराब हुए और फेंक दिए गए। जितना मैं उस लड़की की शकल की कल्पना करता, जिसे मैं जब-तब सड़क पर मिल जाता था, उतना ही उसकी पेंटिंग बनानी मुश्किल हो रही थी। अंत में मैंने यह कोशिश छोड़ दी और एक चेहरा बनाना शुरू किया, जो मेरी कल्पना से प्रेरित था, और जो आरम्भ से ही जैसे ब्रश और रंग से अपने आप बनने लगा। यह कल्पित चेहरा जब बना तो मैं उससे संतुष्ट नहीं हुआ। हालाँकि मैंने कोशिश जारी रखी और यह हर नए कागज पर लगातार स्पष्ट होता गया, इच्छित रूप के नजदीक आता गया, सच्चाई से भले ही दूर था।

मुझे ब्रश से और भी अधिक सपनीली रेखाएँ खींचने और उस भाग को रंगने की आदत डालनी थी, जिसके लिए मेरे दिमाग में कोई मूल रूप न था, जो मेरे अंतर्मन के स्पर्शों का परिणाम था। आखिर एक दिन मैंने वेसुघ अवस्था में एक शकल बनाई, जिसने मुझे पहले की तसवीरों के मुकाबले कहीं अधिक प्रभावित किया। यह उस लड़की की शकल न थी, और एक लम्बे अरसे से इसे उस जैसा होना भी नहीं चाहिए था। यह कुछ और था, कुछ अवास्तविक, हालाँकि यह भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं था। यह किसी लड़की के चेहरे की जगह किसी लड़के का चेहरा अधिक लग रहा था, बाल उतने सुनहरे न थे जितने सुंदर-सी लड़की के थे, बल्कि भूरे थे, हल्की-सी लाली लिये हुए, मजबूत ठोड़ी, सुर्ख चेहरा, सब कुछ सख्त छत्रवेशी-जैसा, किंतु प्रभावकारी और रहस्यमयी जीवन से भरा हुआ।

जब मैं तैयार पेंटिंग के सामने बैठा तो उसने मुझे बड़ा प्रभावित किया। वह मुझे देवताओं का कोई चित्र या पवित्र मुखौटा-सा लगा, आधा पुरुष, आधा स्त्री, आयुरहित, जितना मजबूत, उतना ही स्वप्निल, जितना निश्चल उतना ही रहस्यमय जीवन से भरा। वह चेहरा मुझसे कुछ कहना चाहता था। वह किसी से मिलता-जुलता था, किससे? मैं नहीं जानता था।

कुछ समय तक वह तसवीर मेरे विचारों के साथ रही, मेरे जीवन का हिस्सा बनी रही। मैंने उसे एक दराज में छिपाकर रख दिया, यह किसी के हाथ मेरा मजाक उड़ाने के लिए नहीं लगनी चाहिए। किंतु जैसे ही मैं

अपने छोटे से कमरे में अकेला होता, उस तस्वीर निकाल लेता और उसी के साथ उठता-बैठता। शाम को मैं इसे अपने बिस्तर के सामने वाली दीवार पर टांग देता, सोने तक देखता रहता और सुबह उठने पर पहली नजर उसी पर पड़ती।

बस इन्हीं दिनों मैंने एक बार फिर बहुत अधिक सपने देखने शुरू किए, जो कि मैं बचपन में खूब देखा करता था। मुझे लगा, जैसे मैंने बपों से कोई सपना नहीं देखा हो। अब एक बार फिर वे आ रहे थे, एक बिलकुल नई तरह की तस्वीरें, और उनमें वह मेरी बनाई तस्वीर बार-बार उभर आती, जिंदा, बोलती, मिलनसार, शत्रुतापूर्ण, कभी किसी चंचल लड़की की भाँति बिगड़ती तो कभी बेहद सुंदर, संतुलित और बुलीन और एक दिन सुबह, जब मैं ऐसे ही सपनों से जागा, तो अचानक ही मैं समझ गया। उस तस्वीर ने मुझे यूँ देखा जैसे मुझे बहुत अच्छी तरह जानती हो, लगा जैसे मेरा नाम पुकार रही हो। जैसे मुझे जानती हो, एक माँ की भाँति लगा। जैसे समय के आरम्भ से मुझे ही देख रही हो। काँपते हृदय से मैंने उस चित्र को देखा—भूरे, घने बाल, स्त्री-जैसा मुँह, गजब का चमकदार माथा (यह खुद ही इतना सूख गया था), मैं उसकी पहचान के पास पहुँचता जा रहा था, समझता जा रहा था।

मैं उछलकर बिस्तर से उठ बैठा, उस चेहरे के सामने जा खड़ा हुआ और नजदीक से उन बड़ी-बड़ी, खुली, हरी, स्थिर आँखों में देखा, जिनमें दाईं आँख बाईं से कुछ ऊपर थी। अचानक दाईं आँख थोड़ी-सी दबी, धीरे-से मामूली-सी, मगर साफ साफ, और इसी के साथ मैं उस तस्वीर की पहचान गया...

यह जानने में मुझे इतनी देर क्यों लग गई! यह डेमिआन का चेहरा था!

बाद में मैंने तस्वीर को डेमिआन के उन नाक-नक्शा में मिलाया, जो कि मेरे जहन में थे। वे ठीक वैसे ही न थे, हालाँकि मिलते-जुलते थे। हाँ, यह डेमिआन ही तो था।

गर्मियों के शुरू में एक दिन शाम को पश्चिम में चमकते लाल सूरज की रोशनी तिरछी होकर खिड़की से कमरे में आ रही थी। कमरे में

घुंघलका हो रहा था। तभी मेरे मन में आया कि वेयाट्रिस या डेमिआन की तस्वीर को कील से खिड़की पर टाँगकर देखा जाए कि सूरज की रोशनी में यह कैसी लगती है। उसका चेहरा घुंघला हो गया, बाह्य रेखाएँ गायब हो गईं। किंतु लाल-लाल आँखें, माथे की चमक और चेहरे की गहरी लाली, मादकता से भरी हुई थी।

काफी देर तक मैं उसके सामने बैठा रहा, तब भी, जब रोशनी ढल चुकी थी। फिर धीरे-धीरे मुझे लगा वह वेयाट्रिस नहीं, डेमिआन नहीं, बल्कि मैं स्वयं हूँ। तस्वीर मुझसे नहीं मिलती थी। मिलनी भी नहीं चाहिए थी, किंतु यही थी, जो मेरे जीवन को प्रभावित कर रही थी। यही था मेरा अंतर्मान, मेरी नियति, या मेरी प्रेरक अंतरात्मा। ऐसा ही होगा मेरा मित्र, अगर कभी कोई मिला। ऐसी ही होगी मेरी प्रेमिका, अगर कोई मिली। ऐसा ही होगा मेरा जीवन, मेरी मौत, यही थी मेरी नियति की आवाज और उसकी धुन।

उन्हीं हफ्तों में मैंने कुछ पढ़ना शुरू किया, जिसने मुझे उस सब में सबसे अधिक प्रभावित किया, जो मैंने तब तक पढ़ा था। बाद में भी मैंने थोड़ी ही किताबें इस तरह महसूस की हैं, शायद नीत्से की सूक्तियों और पत्रों की कोई एक पुस्तक थी, जिनमें से अधिकतर को मैं समझ नहीं पाया था किंतु जिन्होंने मुझे बेहद आकर्षित किया था। उन सूक्तियों में से एक मुझे याद आ रही है। मैंने पेन से पेंटिंग के नीचे लिखा, “भाग्य और भाव-दशा एक अवधारणा के नाम हैं।” यह मैं अब समझ सका था।

उस लड़की से, जिसे मैं वेयाट्रिस कहता था, अब भी अक्सर सामना हो जाता था। इससे अब मुझे किसी उद्वेग का अहसास न होता था किंतु लगातार एक मधुर सामंजस्य, एक भावनापूर्ण अहसास की अनुभूति होती थी—तुम मुझसे जुड़ी हुई हो, किंतु तुम नहीं सिर्फ तुम्हारी तस्वीर, तुम मेरे भाग्य का हिस्सा हो।

मैक्स डेमिआन के प्रति मेरी व्यग्रता फिर से बढ़ रही थी। मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता था, सालों से कुछ भी नहीं। बस एक बार उससे छुट्टियों में मिला था। मैं अब समझ रहा हूँ कि मैंने अपने लेखन में कहीं उस छोटी-सी मुलाकात का जिक्र नहीं किया है और महसूस कर रहा हूँ

कि ऐसा मैंने संकोच और झूठे अभिमान के कारण किया है। यह कमी मुझे पूरी करनी चाहिए।

एक दिन छुट्टियों में जब मैं अपने दाराबताने में गुजारे समय की वदो-तत पीने पड़े, हमेशा वैसे-से लगते चेहरे को लिए अपने पिता के शहर में छड़ी घुमाता, वही पुराने घटिया लोगो के चेहरे देखता जा रहा था कि सामने मेरा पुराना मित्र आता दिखा। उस पर नजर पड़ते ही मैं बुरी तरह चौंक उठा, और बिजली की-सी तेजी से मुझे फ्रांस् फोमर का ध्यान हो गया। क्या डेमिआन वह कहानी भूल चुका होगा। उसके प्रति कृतज्ञता की भावना कितनी असह्य थी। यूँ तो यह मूर्खता भरी बचकानी कहानी ही है किंतु उसका अहसान तो है ही—

लगा, जैसे वह इंतजार कर रहा है कि मैं उसे अभिवादन भी करूँगा या नहीं और जब मैंने यह यथासम्भव अनौपचारिक होकर किया, तो पूरे धैर्य के साथ उसने अपना हाथ मिलाने के लिए मेरी ओर बढ़ा दिया। उसके हाथ का दबाव वही था। उतना ही कड़ा, गमं और फिर भी ठंडा, मर्दाना।

उसने गौर से मेरे चेहरे को देखा और कहा : "तुम बड़े हो गए हो, सितकनेयर!" वह खुद बिलकुल नहीं बदला था, उतना ही बड़ा, उतना ही जवान, हमेशा की तरह।

वह मुझमें गले मिला। हम टहलते हुए बेमतलब की बातें करते रहे। गुजरे वक्त के बारे में एक शब्द भी नहीं। मुझे याद आया कि मैंने उसे कई बार लिखा था, बिना कोई उत्तर पाए। अरे, क्या वह उन्हें भी भूल गया होगा, वे भूलसंतोषपूर्ण पत्र। उनके बारे में उसने कुछ भी नहीं कहा।

उस समय तक न तो बेयाट्रिस थी, न ही पेंटिंग और मैं अपने लोफर जीवन के बीच में था। शहर के बाहरी हिस्से में पहुँचकर मैंने उसे दाराब-खाने चलने की दावत दी। वह गया। बड़ी दान से मैंने एक बोतल दाराब खाने का आदेश दिया। एक गिलास में दाराब उँडेल उसके लिए बढ़ाकर, उसके गिलास से अपना गिलास टकराकर विद्यार्थियों के बीच प्रचलित शिष्टाचारों के प्रति अपनी जागरूकता का प्रदर्शन किया और एक ही साँस में पूरा गिलास खाली कर दिया।



“क्या तुम अक्सर शराबखाने में जाते हो ?” उसने मुझसे पूछा ।

“हाँ,” मैंने लापरवाही से कहा, “और कोई करे भी क्या ? आखिर-कार यही तो सबसे ज्यादा आनन्द देता है ।”

“ऐसा मानते हो तुम ? हो सकता है । इसमें कुछ तो अच्छा है ही — नशा, बदहवासी ! मगर मुझे लगता है, शराबखाने में अक्सर बैठने वाले लोग यही सब नहीं पाते हैं । शराबखाने की यह दौड़ बड़ी संकीर्ण-सी लगती है । हाँ, नशे और मस्ती के लिए सारी रात मशालें जलाना, एक के बाद एक गिलास चढ़ाए जाने का कार्यक्रम सही तो नहीं है ? क्या तुम शराबखाने की मेज पर दिन-पर-दिन बैठते हुए फाउस्ट की कल्पना कर सकते हो ?”

शराब का घूंट भरकर मैंने उसे कड़ी नजर से देखा ।

“ठीक है, मगर हर शख्स फाउस्ट तो नहीं होता ।” मैंने टिप्पणी की ।

वह मुझे शंकित दृष्टि से देखने लगा । फिर अपनी वही पुरानी ताजी और गर्वीली हँसी हँसने लगा ।

“चलो ठीक है, इस पर हम क्यों झगड़ें ? यूँ भी एक शराबी या आवारा इंसान की जिंदगी किसी आम-भले नागरिक की जिंदगी से शायद कहीं अधिक रंगीन होगी, और फिर मैंने एक बार कहीं पढ़ा था—आवारा आदमी की जिंदगी के जीवन की ओर जाने की बेहतरीन तैयारी है । ऐसे ही आउगुस्टाठन-जैसे युगपुरुष बनते हैं । वे पहले भोगी ही थे ।”

मैं उससे परेशान था और किसी भी हालत में उसे अपने पर हावी नहीं होने देना चाहता था । सो मैंने लापरवाही से कहा, “जिसका जैसे मन माने ! मुझे तो इतना मालूम है कि मेरा द्रष्टा या ऐसा कुछ बनने का कोई इरादा नहीं है ।”

डेमियान ने मुझे अवखुली आँखों से देखा, जैसे सब समझ गया हो ।

“प्यारे सिनक्लेयर !” उसने धीरे-धीरे कहा, “मेरा इरादा यह नहीं था कि मैं तुम्हें कुछ कहूँ । यूँ भी तुम इस समय यहाँ शराब क्यों पी रहे हो, यह हम दोनों ही नहीं जानते । लेकिन वह, जो तुम्हारे भीतर है, जो तुम्हारे जीवन को ऐसा बनाता है, बखूबी जानता है । कितना अच्छा लगता है यह जानना कि हममें कोई है जो सब कुछ जानता है, सब कुछ चाहता है, सब

कुछ हमने बेहतर करता है। मगर माफ करना, मुझे घर जाना है।"

उमने जल्दबाजी में विदा ली। मैं बड़े खिन्न मन से बैठा रहा। बोतल खत्म की और जाते समय पाया, कि डेमिआन दाम चुकाकर गया था। मुझे और भी गुस्सा आया। इस घटना के साथ ही मेरे विचार फिर घूम गए। उनमें डेमिआन-ही-डेमिआन था। शहर के बाहर के उस होटल में डेमिआन के कहे वे शब्द मेरे दिमाग में फिर से उतने ही ताजे और अक्षुण्ण उभर आए, "कितना सुंदर है यह जानना कि हममें कोई है, जो सब कुछ जानता है!"

मैंने उस चित्र को फिर से देखा, जो दीवार पर टंगा था और पूरी तरह गिराव हो गया था। मगर मैंने देखा कि उसकी आँखें अभी तक चमक रही हैं। यह डेमिआन की निगाह थी। या यह वही था, जो मन के अंदर था, वह, जो सब जानता है।

कितनी तड़प थी मुझमें डेमिआन के लिए। मुझे उसके बारे में कुछ पता नहीं था, मैं उस तक नहीं पहुँच सकता था। मैं सिर्फ इतना जानता था कि वह शायद कहीं पढ़ रहा था और यह कि शुद्धांशी स्कूली शिक्षा के बाद उनकी माँ ने हमारा शहर छोड़ दिया था।

क्रोमर के साथ वाले अपने किस्से तक मैंने डेमिआन से सम्बन्धित सभी बातों को याद कर रखा था। उसकी कही कितनी ही बातें फिर से याद हो आईं, जो आज के संदर्भ में भी सही थी और मुझसे सम्बन्धित थी। हमारे आखिरी मुलाकात, जो बहुत अच्छी नहीं रही थी, उसमें भी उसने आबारा और मंतों के बारे में जो कहा था, वह सब मेरी आत्मा के सामने आ खड़ा हुआ। क्या मेरे साथ ठीक वैसा ही नहीं हुआ था? क्या मैं नशे और गदगी में व्यर्थ, निष्फलता में ही नहीं जिया था, जब तक कि एक जीवन-प्रेरणा से मेरे अंदर एक भिन्न चरित्र, स्वच्छता की सावसा, पुण्य की उत्कांठा का जन्म नहीं हो गया था?

इसी तरह मैं लगातार अपनी यादों के पीछे चलता रहा। रात काफी देर पहले ही हो चुकी थी, और बाहर बरसात हो रही थी। अपनी यादों में भी मुझे बरसात सुनाई दे रही थी, चेस्टनट के पेड़ों के नीचे जब उसने मुझमें फाल्स क्रोमर के विषम से पूछा था और मेरे रहस्यों का अंदाजा

लगा लिया था। एक के बाद एक स्कूल की राह पर की गई बातें, धार्मिक संस्कार वाली क्लास की बातें याद आईं, डेमिआन से मेरी पहली मुलाकात और किस मसले पर बात हुई तब ? एक बार भी मुझे याद नहीं आया। मैंने कुछ समय लिया, उसी सोच में डूब गया, और फिर वह याद आ गया वह भी। उसके साथ मैं अपने घर के सामने खड़ा था तब वह मुझे केन के विषय में अपना विचार बता चुका था। तभी उसने हमारे घर के मुख्य द्वार पर बड़े पुराने, अधमिटे कुलचिन्ह के बारे में बात की थी जो द्वार के ऊपर की ओर चौड़ा होते हुए पत्थर पर बना था। उसने कहा था, यह उसे रोचक लगता है, और लोगों को ऐसी चीजों पर ध्यान देना चाहिए।

रात सपने में मैंने डेमिआन और कुलचिन्ह को देखा। यह लगातार बदल रहा था। डेमिआन ने उसे हाथों में पकड़ रखा था। अक्सर यह छोटा और बदरंग हो जाता, अक्सर मजबूत और बड़ा, और रंगविरंगा, मगर वह मुझे बताता कि यह हमेशा एक और वही है। अंत में उसने मुझे कुलचिन्ह को खाने के लिए मजबूर किया। जब मैं उसे गटक गया, तो असाधारण भय के साथ मैंने यह महसूस किया कि गटके गए कुलचिन्ह का वह पक्षी मेरे अंदर अपना आकार बढ़ा रहा है, अंदर-ही-अंदर मुझे कमजोर कर रहा है। डर के मारे मैं बुरी तरह चौंककर उठ बैठा।

मैं पूरी तरह जाग चुका था। आधी रात का समय था और कमरे में वर्षा की आवाज आ रही थी। मैं खिड़की बंद करने उठा और तभी मेरा पैर फर्श पर पड़ी किसी चमकती चीज पर पड़ा। सुबह होने पर मैंने देखा कि यह मेरा बनाया हुआ चित्र था। यह फर्श पर गीला पड़ा था और कागज फूल चुका था। सुखाने के लिए मैंने इसे दो सोख्तों के बीच में लगा कर एक मोटी किताब में रख दिया। अगले दिन जब मैंने उसे देखा तो वह सूख चुका था। किंतु बदल भी चुका था। मुंह की लाली हल्की पड़ चुकी थी और वह कुछ सिकुड़ गया था। अब यह पूरी तरह डेमिआन का चेहरा था।

अब एक नया चित्र बनाना था, कुलचिन्ह की चिड़िया का। वह कैसी दिखती है, यह मुझे ठीक से याद न था और जहाँ तक मुझे पता है, नजदीक से देखने पर भी उसमें कई चीजें दिखाई नहीं पड़ सकती थीं, क्योंकि

पुरानी होने के साथ उस पर कई बार रंग किया जा चुका था। चिड़िया किसी चीज पर सड़ी या बंठी थी, शायद एक फूल पर या एक टोकरी या घोंसले पर या पेड़ की डाल पर। मैंने बगैर इन सबको चिन्ता किए, जो मेरी कल्पना में था, उसी को बनाना शुरू किया। मेरे चित्र में चिड़िया का सिर मुनहरा पीला था। मन मुताबिक बनाते-बनाते मैंने उस चित्र को कुछ ही दिनों में पूरा कर लिया।

अब यह एक शिकारी पक्षी था। तीसरे बाज के सिर वाला, जिसका आधा शरीर उस अँधेरे ग्लोब में से निकला हुआ था, जैसे किसी बड़े अँधे में से निकलने की कोशिश कर रहा हो और यह सब था आसमानी रंग की पृष्ठभूमि में। उसे लगातार देखने पर मुझे वह और भी अधिक रंगविरंगा कुलचिह्न-सा लगा, जिसे मैंने सपने में देखा था।

डेमिआन को पत्र लिखना मेरे लिए संभव न हो पाता, चाहे मुझे उसका पता भालूम भी क्यों न होता। किंतु मैंने उसी स्वप्निल दशा में, जिनमें मैं वह सब कर रहा था, उस बाज की तस्वीर को डेमिआन के पास भेजने का निश्चय किया। चाहे वह उस तक पहुँचे या न पहुँचे। मैंने उस पर कुछ लिखा नहीं, अपना नाम भी नहीं, कंची से किनारे काटे, एक बड़ा लिफाफा खरीदा, और अपने मित्र का पुराना पता लिख दिया। उसके बाद मैंने उसे रवाना कर दिया।

परीक्षा नजदीक आ रही थी और मुझे स्कूल में आम दिनों की अपेक्षा अधिक काम करना पड़ रहा था। अध्यापक एक बार फिर मुझे चाहने लगे थे, खासकर जब से मैं अपनी जिदगी के बुरे रवैए को बदल लिया था। अच्छा विद्यार्थी तो मैं अब भी न था, मगर अब न तो मैं, न कोई और ही यह सोचता था कि लगभग छह महीने पहले ही मेरा स्कूल से निकाला जाना एक संभावना थी।

मेरे पिता के पत्रों का लहजा फिर पहले-सा हो रहा था, उनमें अब न लाछन होते थे, न घमकियाँ। उन्हें या किसी और को अपने बदलाव की सफाई देने की मेरी कोई इच्छा न थी। यह संयोग की ही बात थी कि मेरा बदलाव मेरे माता-पिता और अध्यापकों की इच्छाओं से मेल खाता था। यह परिघटन मुझे दूसरे लोगों के बीच नहीं लाया, न मुझे उनके

नर्जदीक ले गया। सिर्फ मुझे और अकेला बना गया। यह परिवर्तन निर्देशित था, डेमिआन की ओर, एक सुदूर नियति की ओर। मैं खुद नहीं जानता था कि मैं इस सबके बीच खड़ा था। इसकी शुरुआत वेयाट्रिस से हुई थी, मगर कुछ समय से मैं अपने बनाए चित्रों और डेमिआन से जुड़े अपने विचारों के साथ एक ऐसी अवास्तविक दुनिया में रह रहा था कि उसे भी निगाहों से उतार और विचारों से मुला चला था। अपने सपनों, अपनी आकांक्षाओं और अपने आंतरिक परिवर्तन के बारे में मैं किसी से एक शब्द भी नहीं कह सकता था, अगर चाहता तो भी नहीं।

किंतु मैं यह चाहता भी कैसे ?

## पक्षी का संघर्ष

मेरा बनाया, मपने में देखी पक्षी का चित्र अपने मार्ग पर था और मेरे मित्र को तलाश रहा था। बड़े आश्चर्यजनक तरीके से मुझे जवाब मिला।

स्कूल में अपनी क्लास में बैठने की जगह पर एक दिन अवकाश के समय अपनी किताब के दो अध्यायों के बीच एक पर्चा लगा मिला। यह ठीक उसी तरह मुड़ा हुआ था, जैसा हमारे बीच अक्सर किया जाता था, जब क्लास के विद्यार्थी पढ़ाई के दौरान एक-दूसरे को चोरी-छिपे पर्चे देते थे। मुझे सिर्फ यही आश्चर्य हो रहा था कि मुझे कौन इस तरह पर्चा दे सकता था, जबकि क्लास के किसी भी विद्यार्थी से मेरे ऐसे सम्बन्ध न थे। मैंने सोचा, यह जरूर विद्यार्थियों की मौज-मस्ती के किसी कार्यक्रम का निमंत्रण होगा, जिसमें मैं निश्चित रूप से भाग नहीं लूंगा, और मैंने उस पर्चे को बिना पढ़े ही किताब के सामने रख दिया। पढ़ाई के दौरान ही संयोगवश वह फिर मेरे हाथ पड़ा।

मैं उस कागज में यूँ ही खेलता रहा, बिना कारण उसे मोड़ता रहा और उसमें कुछ शब्द लिखे पाए। मैंने उस पर एक निगाह डाली, एक शब्द पर रुक गया, चौंका और पढ़ा, जबकि इस दौरान मेरा दिल नियति के सामने भय से निकुड़ रहा था—“पक्षी अंडे से बाहर निकलने को संघर्ष कर रहा है। अंडा विश्व है। जो जन्म लेना चाहता है, उसे एक विश्व का नाज करना ही होगा। पक्षी ईश्वर की ओर उड़ता है। ईश्वर का नाम है अन्न किस्स।”

कई बार इन पंक्तियों को पढ़ने के बाद मैं गहन विचारों में डूब गया । कोई शक नहीं था कि यह डेमिआन का जवाब था । पक्षी के विषय में कोई नहीं जानता था, मेरे और उसके अलावा । उसे मेरा बनाया चित्र मिल गया था । वह समझ गया था और समझने में मेरी मदद कर रहा था । किंतु इन सबका आपस में क्या सम्बन्ध था ? और यही मुझे सबसे ज्यादा कचोट रहा था—क्या अर्थ था अब्राक्सस का ? यह शब्द मैंने न कभी सुना था न पढ़ा । “ईश्वर का नाम है—अब्राक्सस ।”

जो पढ़ाया गया उसे मेरे बिना सुने ही क्लास समाप्त हो गई । अगली पढ़ाई का समय फिर शुरू हुआ । यह दोपहर से पहले की आखिरी कक्षा थी । इसमें एक युवा सहायक अध्यापक पढ़ाता था, जो हाल ही में विश्व-विद्यालय से आया था और इसीलिए अच्छा लगता था, क्योंकि वह युवक था और हमारे और अपने बीच झूठा अहंकार नहीं लाता था ।

डाक्टर फॉर्लेस के निर्देशन में हम हेरोडोटस पढ़ रहे थे । स्कूली पढ़ाई में वह मेरे पसंदीदा विषयों में से था । मगर आज मैं जैसे मौजूद नहीं था । मशीनी तौर पर मैंने किताब खोल रखी थी किंतु अनुवाद की ओर ध्यान न देकर अपने खयालों में डूबा हुआ था । साथ ही मैं अब तक डेमिआन की पहले की धर्म की क्लास में कही बात की सच्चाई को परख चुका था कि व्यक्ति यदि कुछ दृढ़ता से चाहे तो पाता भी है । क्लास के दौरान जब मैं पूरी तरह अपने ही विचारों में खोया होता तो मुझे इसका पूरा यकीन होता कि अध्यापक मेरी शांति में विघ्न नहीं डालेगा । हाँ, यदि ध्यान बँटा होता या ऊब रहा तो अचानक ही उसे अपने पास पाता—यह मेरे साथ हो चुका था । किंतु जब व्यक्ति एकाग्रचित्त हो, विचारमग्न हो तो पूरी तरह सुरक्षित होता है । सीधे लगातार आँखों में देखने की तरकीब को भी मैंने आजमाया था और पाया था कि यह भी काम करती है । डेमिआन के साथ के समय मैं यह नहीं जान सका था किंतु अब महसूस कर रहा था कि दृष्टि और विचारों से व्यक्ति बहुत कुछ कर सकता है ।

अब भी मैं इसी तरह हेरोडोटस और स्कूल से बहुत दूर बैठा था । किंतु तभी अध्यापक की आवाज ने मेरे दिमाग पर विजली की भाँति ऐसी चोट की कि मैं भयभीत हो उठा । मैं उसकी आवाज सुन रहा था । उसने मेरा

नाम पुकारा था, किंतु वह मेरी ओर नहीं देख रहा था। मैंने धैन की साँस ली।

एक बार फिर मुझे उसकी आवाज सुनाई पड़ी। जोर से उसने वह शब्द बोला था—“अब्राहमस।”

एक टिप्पणी में, जिसका आरम्भ किया जा चुका था, डाक्टर फॉर्लेस आगे बता रहे थे—“हमें पुरातन समुदायों और रहस्यमय समाजों के विचारों को उतना माधारण मान टाल नहीं देना चाहिए जितना कि वे हमें तर्कपूर्वक देखने पर लगते हैं। विज्ञान को पुराकाल के लोग हमारे दृष्टिकोण में बिल्कुल नहीं जानते थे। उसके स्थान पर थे दार्शनिक-रहस्यवादी तथ्य, जो बहुत विकसित थे। किमी हद तक जादू और खेल-खिलवाड़ का जन्म इसी से हुआ, जो अकमर घोंघेबाजी और अपराध-कार्यों में प्रयोग किए जाते; किंतु जादू के पीछे भी उत्तम स्रोत और गहन विचार थे। अब आती है अब्राहमस की शिक्षा जिसका मैंने पहले उदाहरण दिया। इस नाम को यूनानी रहस्यवादी अवधारणाओं में जोड़ा जाता है और यह किसी दानव का एक नाम माना जाता है जैसा कि आज भी कुछ कबीले मानते हैं। किंतु, ऐसा लगता है कि दरअसल अब्राहमस का महत्त्व कहीं अधिक है। इस नाम को हम कुछ ऐसा मान सकते हैं जो ईश्वरीयता और दानवता दोनों के मिले-जुले रूप का प्रतिनिधित्व करता था।”

छोटे-मे कद का वह विद्वान बड़े बुद्धिकौशल और उत्साह से बोल रहा था। ‘दैवी और शैतानी मेल’ गूँज रहा था। यहाँ मैं जुड़ सकता था। हेमिआन में दोस्ती के शुरुआती दिनों से यह विचार मेरी जानकारी में था। उन दिनों हेमिआन ने कहा था, हमारा ईश्वर, जिसकी हम पूजा करते हैं, विश्व के आधे मृत्यु को ही प्रस्तुत करता है (यही अधिकारिक, आलोकित विश्व था) किंतु व्यक्ति को सम्पूर्ण विश्व की पूजा करने की हालत में होना चाहिए, इसका तात्पर्य हुआ, व्यक्ति को ईश्वर के साथ-साथ शैतान की भी पूजा करनी होगी।—तो अब्राहमस था वह ईश्वर, जो ईश्वर होने के साथ शैतान भी था।

कुछ समय तक मैं इस विषय पर बड़े उत्साह से विचार करता रहा किंतु कुछ सफलता नहीं मिली। यहाँ तक कि पुस्तकालय में अब्राहमस का



कई बार इन पंक्तियों को पढ़ने के बाद मैं गहन विचारों में डूब गया। कोई शक नहीं था कि यह डेमिआन का जवाब था। पक्षी के विषय में कोई नहीं जानता था, मेरे और उसके अलावा। उसे मेरा बनाया चित्र मिल गया था। वह समझ गया था और समझने में मेरी मदद कर रहा था। किंतु इन सबका आपस में क्या सम्बन्ध था? और यही मुझे सबसे ज्यादा कचोट रहा था—क्या अर्थ था अब्राक्सस का? यह शब्द मैंने न कभी सुना था न पढ़ा। “ईश्वर का नाम है—अब्राक्सस।”

जो पढ़ाया गया उसे मेरे बिना सुने ही क्लास समाप्त हो गई। अगली पढ़ाई का समय फिर शुरू हुआ। यह दोपहर से पहले की आखिरी कक्षा थी। इसमें एक युवा सहायक अध्यापक पढ़ाता था, जो हाल ही में विश्व-विद्यालय से आया था और इसीलिए अच्छा लगता था, क्योंकि वह युवक था और हमारे और अपने बीच झूठा अहंकार नहीं लाता था।

डाक्टर फॉर्लेस के निर्देशन में हम हेरोडोटस पढ़ रहे थे। स्कूली पढ़ाई में वह मेरे पसंदीदा विषयों में से था। मगर आज मैं जैसे मौजूद नहीं था। मशीनी तौर पर मैंने किताब खोल रखी थी किंतु अनुवाद की ओर ध्यान न देकर अपने खयालों में डूबा हुआ था। साथ ही मैं अब तक डेमिआन की पहले की धर्म की क्लास में कही बात की सच्चाई को परख चुका था कि व्यक्ति यदि कुछ दृढ़ता से चाहे तो पाता भी है। क्लास के दौरान जब मैं पूरी तरह अपने ही विचारों में खोया होता तो मुझे इसका पूरा यकीन होता कि अध्यापक मेरी शांति में विघ्न नहीं डालेगा। हाँ, यदि ध्यान बँटा होता या ऊब रहा तो अचानक ही उसे अपने पास पाता—यह मेरे साथ हो चुका था। किंतु जब व्यक्ति एकाग्रचित्त हो, विचारमग्न हो तो पूरी तरह सुरक्षित होता है। सीधे लगातार आँखों में देखने की तरकीब को भी मैंने आजमाया था और पाया था कि यह भी काम करती है। डेमिआन के साथ के समय मैं यह नहीं जान सका था किंतु अब महसूस कर रहा था कि दृष्टि और विचारों से व्यक्ति बहुत कुछ कर सकता है।

अब भी मैं इसी तरह हेरोडोटस और स्कूल से बहुत दूर बैठा था। किंतु तभी अध्यापक की आवाज ने मेरे दिमाग पर बिजली की भाँति ऐसी चोट की कि मैं भयभीत हो उठा। मैं उसकी आवाज सुन रहा था। उसने मेरा

नाम पुकारा था, किन्तु वह मेरी ओर नहीं देख रहा था। मैंने धन की सामंती।

एक बार फिर मुझे उसकी आवाज सुनाई पड़ी। जोर से उसने वह शब्द बोला था—“अब्राहमस।”

एक टिप्पणी में, जिसका आरम्भ किया जा चुका था, डाक्टर कॉलेंस आगे बता रहे थे—“हमें पुरातन समुदायों और रहस्यमय ममाजों के विचारों को उतना माधारण मान टाल नहीं देना चाहिए जितना कि वे हमें तकपूर्वक देखने पर लगते हैं। विज्ञान को पुराकाल के लोग हमारे दृष्टिकोण से बिल्कुल नहीं जानते थे। उसके स्थान पर थे दार्शनिक-रहस्यवादी तथ्य, जो बहुत विकसित थे। किमी हद तक जादू और खेल-खिलवाड का जन्म इसी से हुआ, जो अकमर घोड़ेवाजी और अपराध-कायों में प्रयोग किए जाते; किन्तु जादू के पीछे भी उत्तम स्रोत और गहन विचार थे। अब आती है अब्राहमस की शिक्षा जिसका मैंने पहले उदाहरण दिया। इस नाम को यूनानी रहस्यवादी अवधारणाओं में जोड़ा जाता है और यह किसी दानव का एक नाम माना जाता है जैसा कि आज भी कुछ कबीले मानते हैं। किन्तु, ऐसा लगता है कि दरअसल अब्राहमस का महत्व कहीं अधिक है। इस नाम को हम कुछ ऐसा मान सकते हैं जो ईश्वरीयता और दानवता दोनों के मिले-जुले रूप का प्रतिनिधित्व करता था।”

छोटे-से कद का वह विद्वान बड़े बुद्धिकौशल और उत्साह से बोल रहा था। ‘देवी और शैतानी मेल’ गूँज रहा था। यहाँ मैं जुड़ सकता था। हेमिआन में दोम्ती के शुरुआती दिनों से यह विचार मेरी जानकारी में था। उन दिनों हेमिआन ने कहा था, हमारा ईश्वर, जिसकी हम पूजा करते हैं, विश्व के आधे सत्य को ही प्रस्तुत करता है (यही अधिकारिक, आलोकित विश्व था) किन्तु व्यक्ति को सम्पूर्ण विश्व की पूजा करने की हालत में होना चाहिए, इसका तात्पर्य हुआ, व्यक्ति को ईश्वर के साथ-साथ शैतान की भी पूजा करनी होगी।— तो अब्राहमस था वह ईश्वर, जो ईश्वर होने के साथ शैतान भी था।

कुछ समय तक मैं इस विषय पर बड़े उत्साह से विचार करता रहा किन्तु कुछ सफलता नहीं मिली। यहाँ तक कि पुस्तकालय में अब्राहमस का

संदर्भ ढूँढ़ता रहा। किंतु मुझे इस तरह की सीधी खोज, जहाँ व्यक्ति को आरम्भ में मात्र ऐसे तथ्य हाथ लगते हैं, किसी वोल से अधिक कुछ नहीं लगते।

वेयाट्रिस की जिस प्रतिमा को मैंने खुद को एक निश्चित समय तक पूरी तरह समर्पित कर रखा था, धीरे-धीरे उसकी तीव्रता कम होने लगी या फिर धीरे-धीरे मुझसे दूर होने लगी। क्षितिज से उसकी दूरी कम हो रही थी, मेरी आत्मा की उत्कंठा को शांति के लिए अब वह काफी नहीं रही थी।

बड़ी अजीब तरह से मेरे इस खुद बनाए, अपने में सीमित अस्तित्व में, जिसे मैं किसी नींद में चलने वाले की तरह जी रहा था, एक नई चेतना ने जन्म लिया। मुझमें जीने की चाह बढ़ने लगी, प्रेम की चाह और भी अधिक, सेक्स की इच्छा, जिसे मैंने कुछ समय के लिए वेयाट्रिस की पूजा में डुबो दिया था, अब नई तसवीरों और उद्देश्यों की मांग करने लगी। किंतु पूर्ति का कोई रास्ता मेरी तरफ नहीं आ रहा था, और इच्छाओं को छलावा देना, जिन लड़कियों से मेरे साथी अपनी किस्मत आजमा रहे थे उनसे कुछ उम्मीद करना, मेरे लिए पहले से कहीं ज्यादा नामुमकिन हो गया।

मैं खूब सपने देखता, वह भी रात की तुलना में दिन में अधिक। कल्पनाएँ, चित्र और इच्छाएँ मुझसे बढ़ रही थीं और मुझे बाहरी दुनिया से इस तरह काट रही थीं कि जैसे मेरा अपनी इन तसवीरों, इन सपनों या छायाओं के साथ वास्तविक, दैवी सम्बन्ध हो और मैं ठीक उसी तरह जी रहा था जैसे अपनी वास्तविक परिस्थितियों को।

एक खास सपना या कल्पना का खेल, जिसे मैं अक्सर अनुभव कर रहा था, मेरे लिए अर्थपूर्ण हो रहा था।

मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और प्रतिकूल सपना कुछ इस प्रकार था—मैं अपने पिता के घर वापस आ रहा था—घर के दरवाजे पर हमारा कुलचिन्ह, नीली पृष्ठभूमि में पीला पक्षी, चमक रहा था—किंतु जैसे ही मैं घुसा और उन लोगों को आलिगन में लेना चाहा, तो पाया कि वह मैं नहीं थी, बल्कि एक अनदेखा चेहरा, बड़ा और शक्तिशाली, डेमिआन और

मेरी बनाई तसवीर से मिलता-जुलता, फिर भी भिन्न, अपनी शक्ति के बावजूद यह पूरी तरह स्त्री ही थी। इस चेहरे ने मुझे अपनी ओर खींचकर एक गहरे आमोदपूर्ण आलिंगन में भर लिया। आनंद और भयमिश्रित यह आलिंगन पूजा और अपराध का एक ही समय पर बोध दे रहा था। यह चेहरा जिमके सामीप्य में मैं आ चुका था, मेरी माँ और मेरे दोस्त दोनों की कितनी ही यादों से भरा था। उसका आलिंगन हर आदर के भाव से दूर था किंतु आनंदपूर्ण था। कभी इस सपने से मैं एक अपूर्व आनंद की भावना में जागता तो कभी जबरदस्त भय और आतंकित, अंतरात्मा के साथ, जैसे कोई भयंकर पाप कर ढाना हो।

धीरे-धीरे और अनजाने ही इस अतर्भूत की यह तसवीर उस संकेत में मिल गई जो मुझे एक ईश्वर की तलाश की ओर ले जा रहा था। यह संकेत मुझे बाहर से मिला था। यह संकेत नजदीकी और व्यक्तिगत होता गया और मुझे लगने लगा कि इस खयाली सपने में मैं अब्राक्सस को पुकार रहा हूँ। आनंद और भय, नर-नारी, धार्मिक और आतंक एक दूसरे में घुले-मिले थे, गहरे अपराध की भावना अत्यंत कोमल निर्दोषित रूप में चमक रही थी—ऐसी थी मेरी प्रेम की स्वप्निल तसवीर और ऐसा था अब्राक्सस। प्रेम अब वहशी, गहरी इच्छा भर न थी, जैसा मैंने डर के मारे शुरू में महसूस किया था, न ही वह कोई धार्मिक, आत्मिक पूजा-भर ही थी, जैसा कि मैंने बेयादिस की तसवीर के साथ किया। वह दोनों ही थी, बल्कि और भी अधिक, यह देवदूत की तसवीर के साथ ही दानव भी थी, नर-नारी एकाकार, मनुष्य और पशु, सर्वोच्च भलाई और सबसे घटिया बुराई। इन सबका अस्तित्व मुझे निश्चित लगा। अपनी नियति के साथ मुझे इसकी आवश्यकता और उसे पाने की इच्छा भी थी। मुझे उससे भय भी था। वह सदा उपस्थित थी। हमेशा मेरे साथ थी।

अगले साल के शुरू में मुझे स्कूल की पढ़ाई खत्म कर पढ़ाई के लिए आगे जाना था, मैं नहीं जानता था कहाँ और क्या पढ़ने। मेरे होठों पर पतली-सी मुँछ उग आई थी। मैं पूरी तरह विकसित युवक बन चुका था, फिर भी पूरी तरह बेसहारा और बिना किसी उद्देश्य के था। सिर्फ एक बात निश्चित थी! मेरे भीतर की आवाज, स्वप्निल तसवीर। मुझे इस

आवाज का पूरी तरह पालन करना अपना कर्तव्य लगा, फिर चाहे वह कहीं भी ले जाए। मगर यह मुश्किल था और मैं हर रोज इसके विरोध में नया विद्रोह कर देता। शायद मैं पागल था, ऐसा मुझे कभी-कभी लगा, शायद मैं औरों सा नहीं था? किंतु मैं वह सब कर सकता था जो दूसरे कर सकते थे; कुछ कोशिश और मेहनत से मैं प्लेटो को पढ़ सकता था, त्रिकोणमितीय सवाल हल कर सकता था या रासायनिक विश्लेषण समझ सकता था। सिर्फ एक ही चीज थी जो मैं नहीं कर सकता था—अपने में छिपे अंधेरे उद्देश्य को निकाल अपने सामने कहीं रख उसे एक रूप दे डालूँ, जैसा कि दूसरे करते थे जो कि ठीक-ठीक जानते थे कि वे प्रोफेसर या न्यायाधीश, डाक्टर या कलाकार बनना चाहते थे। कितने दिन इसमें लगेंगे, क्या उसके फायदे होंगे, मैं यह सब नहीं कर सकता। शायद कभी मैं भी ऐसा ही करूँ, मगर इसका आभास मुझे भला कैसे हो सकता था। शायद मुझे खोज पर खोज करते रहना पड़े, सालों, और कुछ फायदा न हो। मैं किसी उद्देश्य पर न पहुँचूँ। शायद मुझे कोई उद्देश्य मिल भी जाए, मगर वह बुरा, खतरनाक और भयावह हो।

अपने हृदय से आने वाली धुन के साथ जीने के अलावा मैं कुछ और नहीं चाहता था। यह इतना मुश्किल क्यों था?

अक्सर मैं कोशिश करता, उस शक्तिशाली वत्सल चेहरे का चित्र बनाने की, जो मेरे सपनों में था। किंतु सफलता कभी न मिली। अगर मैं सफल हो जाता तो जरूर उस तसवीर को डेमिआन को भेज देता। कहाँ था वह? मुझे नहीं मालूम था। मैं सिर्फ यही जानता था कि वह मेरे साथ जुड़ा था। कब मिलूँगा मैं उसे दोबारा?

बेयाट्रिस वाले दिनों के हफ्तों और महीनों की शांति एक अरसा पहले जा चुकी थी। उन दिनों मुझे लग रहा था कि मैं एक द्वीप पर जा पहुँचा हूँ और मुझे शांति मिल गई है।

मगर हमेशा की तरह ही इससे पहले कि मेरी हालत मुझे भाए, मेरा सपना राहत पहुँचाए, वह निर्जीव, बेकार हो गया। इस नुकसान पर अफसोस करना बेकार था। अब मैं एक अधूरी इच्छा और गहरी उम्मीद की आग में जी रहा था, जो मुझे अक्सर उन्मत्त और दीवाना बना देती।

सपने की वह सुंदर तस्वीर मुझे और भी स्पष्ट दिखाई देने लगी, अपने हाथ से भी कही अधिक स्पष्ट। मैं उससे बातें करता, उसके सामने रोता, उसे भना-बुरा कहता। मैं उसे माँ कहता और आँखों में आँसू लिये उसके सामने घुटनों के बल बैठ जाता और उसके परिवर्ध, मस्ती-भरे चुम्बन को महसूस करता। उसे मैं भीतान, रंडी, और हत्यारिन की सजा देता। यह मुझे बहुत ममता-भरे सपनों और अभद्र बेशर्मियों की ओर आकर्षित करती। उसके लिए कुछ भी बहुत अच्छा और आनंददायी न था, न ही कुछ बुरा और घटिया।

वे पूरी सदियाँ मैंने इस भीतरी तूफान को इस तरह झेलते हुए गुजारी जिसे वह पाना मुश्किल है। अकेलेपन की मुझे बहुत समय से आदत पड़ चुकी थी, उसमें मुझे परेगानी नहीं होती थी। मैं डेमिआन के साथ, बाज के साथ, अपने सपने में आने वाले चेहरे के साथ ही जीता था, जो कि मेरा प्राण्य और मेरी प्रियतमा था। इनमें रहना मेरे लिए अच्छा था। जहाँ हर चीज अनंत विस्तार और अव्यक्तता की ओर इशारा कर रही थी। परंतु मेरा कोई भी विचार मेरे नियंत्रण में न था। वे मेरी मर्जी के मुताबिक मेरे दिमाग में नहीं आने थे। उन्हें मैं अपनी मर्जी के मुताबिक रग नहीं दे सकता था। वे आते और मुझे ले जाते। मैं उनके नियंत्रण में था और उन्हीं के द्वारा जिया जा रहा था। बाहरी दुनिया के लिए मैं पूरी तरह तैयार था। मुझे लोगों में कुछ भय न था, यह बात साथ के दूसरे छात्रों ने जान ली थी और इस बात के लिए मन ही मन मेरी इज्जत करने थे, जिस पर मुझे अवमर हँसी आती थी। मैं जब चाहता, उनके मन की बात जान सकता था और उन्हें हैरानी में डाल देता था। मगर ऐसा मैं नहीं के बराबर ही करता था। मैं हमेशा अपने में ही खोया रहता, बस अपने में ही। मैं बस एक टुकड़ा-भर जीवन चाहता था, एक रिश्ता और उमी के साथ संपर्क। कभी-कभी जब मैं शाम को यूँ ही सड़को पर घूमता रहता और अपनी बेचनी के कारण आधी रात तक वापस घर नहीं आ पाता तो मुझे यूँ भी लगता जैसे बस अभी मेरी प्रियतमा से मेरी भेंट हो जाएगी। सड़क के अगले मोड़ पर आते हुए या फिर आगे पड़ने वाली छिड़की से आवाज देते हुए। कभी-कभी यह सब मुझे यातनापूर्ण लगता और मैं आरमहत्या तक

आवाज का पूरी तरह पालन करना अपना कर्तव्य लगा, फिर चाहे वह कहीं भी ले जाए। मगर यह मुश्किल था और मैं हर रोज इसके विरोध में नया विद्रोह कर देता। शायद मैं पागल था, ऐसा मुझे कभी-कभी लगा, शायद मैं औरों सा नहीं था? किंतु मैं वह सब कर सकता था जो दूसरे कर सकते थे; कुछ कोशिश और मेहनत से मैं प्लेटों को पढ़ सकता था, त्रिकोणमितीय सवाल हल कर सकता था या रासायनिक विश्लेषण समझ सकता था। सिर्फ एक ही चीज थी जो मैं नहीं कर सकता था—अपने में छिपे अंधेरे उद्देश्य को निकाल अपने सामने कहीं रख उसे एक रूप दे डालूँ, जैसा कि दूसरे करते थे जो कि ठीक-ठीक जानते थे कि वे प्रोफेसर या न्यायाधीश, डाक्टर या कलाकार बनना चाहते थे। कितने दिन इसमें लगेंगे, क्या उसके फायदे होंगे, मैं यह सब नहीं कर सकता। शायद कभी मैं भी ऐसा ही कहूँ, मगर इसका आभास मुझे भला कैसे हो सकता था। शायद मुझे खोज पर खोज करते रहना पड़े, सालों, और कुछ फायदा न हो। मैं किसी उद्देश्य पर न पहुँचूँ। शायद मुझे कोई उद्देश्य मिल भी जाए, मगर वह बुरा, खतरनाक और भयावह हो।

अपने हृदय से आने वाली धुन के साथ जीने के अलावा मैं कुछ और नहीं चाहता था। यह इतना मुश्किल क्यों था?

अक्सर मैं कोशिश करता, उस शक्तिशाली वत्सल चेहरे का चित्र बनाने की, जो मेरे सपनों में था। किंतु सफलता कभी न मिली। अगर मैं सफल हो जाता तो जरूर उस तसवीर को डेमिआन को भेज देता। कहाँ था वह? मुझे नहीं मालूम था। मैं सिर्फ यही जानता था कि वह मेरे साथ जुड़ा था। कब मिलूँगा मैं उसे दोबारा?

वेयाट्रिस वाले दिनों के हफ्तों और महीनों की शांति एक अरसा पहले जा चुकी थी। उन दिनों मुझे लग रहा था कि मैं एक द्वीप पर जा पहुँचा हूँ और मुझे शांति मिल गई है।

मगर हमेशा की तरह ही इससे पहले कि मेरी हालत मुझे भाए, मेरा सपना राहत पहुँचाए, वह निर्जीव, बेकार हो गया। इस नुकसान पर अफसोस करना बेकार था। अब मैं एक अधूरी इच्छा और गहरी उम्मीद की आग में जी रहा था, जो मुझे अक्सर उन्मत्त और दीवाना बना देती।

सपने को वह मुंदर तसवीर मुझे और भी स्पष्ट दिखाई देने लगी, अपने हाथ से भी कहीं अधिक स्पष्ट। मैं उससे बातें करता, उसके सामने रोता, उसे भला-बुरा कहता। मैं उसे माँ कहता और आँखों में आँसू लिये उसके सामने घुटनों के बल बैठ जाता और उसके परिवक्त्र, मस्ती-भरे चुम्बन को महसूस करता। उसे मैं शंतान, रंडी, और हत्यारिन की संज्ञा देता। यह मुझे बहुत ममता-भरे सपनों और अमर्द बेशमियों की ओर आकर्षित करती। उसके लिए कुछ भी बहुत अच्छा और आनंददायी न था, न ही कुछ बुरा और घटिया।

वे पूरी सदियाँ मैंने इस भीतरी तूफान को इस तरह झेलते हुए गुजारी जिमे वह पाना मुश्किल है। अकेलेपन की मुझे बहुत समय से आदत पड़ चुकी थी, उसमे मुझे परेशानी नहीं होती थी। मैं डेमिआन के साथ, बाज के साथ, अपने सपने में आने वाले चेहरे के साथ ही जीता था, जो कि मेरा प्रारब्ध और मेरी प्रियतमा था। इनमें रहना मेरे लिए अच्छा था। जहाँ हर चीज अनंत विस्तार और अव्यावस्य की ओर इशारा कर रही थी। परन्तु मेरा कोई भी विचार मेरे नियंत्रण में न था। वे मेरी मर्जी के मुताबिक मेरे दिमाग में नहीं आते थे। उन्हें मैं अपनी मर्जी के मुताबिक रंग नहीं दे सकता था। वे आते और मुझे ले जाते। मैं उनके नियंत्रण में था और उन्हीं के द्वारा जिया जा रहा था। बाहरी दुनिया के लिए मैं पूरी तरह तैयार था। मुझे लोगों में कुछ भय न था, यह बात साथ के दूसरे छात्रों ने जान ली थी और इस बात के लिए मन ही मन मेरी इज्जत करते थे, जिस पर मुझे अवमर हँसी आती थी। मैं जब चाहता, उनके मन की बात जान सकता था और उन्हें हैरानी में डाल देता था। मगर ऐसा मैं नहीं के बराबर ही करता था। मैं हमेशा अपने में ही खोया रहता, बस अपने में ही। मैं बन एक टुकड़ा-भर जीवन चाहता था, एक रिश्ता और उसी के साथ संघर्ष। कभी-कभी जब मैं शाम को यून ही सड़को पर धूमता रहता और अपनी बँचनी के कारण आधी रात तक वापस घर नहीं आ पाता तो मुझे यून भी लगता जैसे बस अभी मेरी प्रियतमा से मेरी भेंट हो जाएगी। सड़क के अगले मोड़ पर आते हुए या फिर आगे पड़ने वाली छिड़की से आवाज देने हुए। कभी-कभी यह सब मुझे यातनापूर्ण लगता और मैं आत्महत्या तक



के लिए तैयार हो जाता ।

संयोगवश उन्हीं दिनों मुझे एक अजब वचाव का मार्ग मिला । मगर यूँ संयोग होता नहीं है । जब किसी व्यक्ति को किसी वस्तु की आवश्यकता होती है, तो यह संयोग न हुआ, व्यक्ति की आवश्यकता और बाध्यता उसे उसकी ओर ले जाती है ।

अपने घूमने के दौरान दो-तीन बार शहर के किनारे एक छोटे से चर्च से मैंने ऑर्गन का संगीत सुना था । मैं सुनने को रुका न था । अगली बार वहाँ से गुजरते हुए मैंने फिर से वही संगीत सुना और पहचाना कि बाख का संगीत बजाया जा रहा था । दरवाजे तक गया तो उसे बंद पाया । सड़क सुनसान पड़ी थी, मैं चर्च के पास ही रुकावट बनाने के उद्देश्य से रखे गए एक पत्थर पर बैठ गया । अपने ओवरकोट के कॉलर ऊपर किए और ध्यान से संगीत सुनने लगा । यह कोई बड़ा ऑर्गन न था किंतु उसके स्वर अच्छे थे और उसे बड़ी खूबसूरती से, गजब के सकल्प और विश्वास से बजाया जा रहा था । मुझे लगा कि यह ऑर्गन बजाने वाला संगीत में छिपी अथाह संपत्ति को भली भाँति जानता है, और इस संपत्ति के लिए यूँ परिश्रम कर रहा है मानो जीवन का संघर्ष कर रहा हो । तकनीकी रूप से मैं संगीत के विषय में बहुत कुछ नहीं जानता हूँ किंतु आत्मा की इस अभिव्यक्ति को मैं वचन से ही नैसर्गिक रूप से समझता था और संगीत को स्वयं में स्वाभाविक रूप से महसूस करता था ।

ऑर्गन-वादक ने कुछ आधुनिक संगीत भी बजाया, शायद यह रेगर का संगीत था । चर्च में लगभग पूरी तरह अँधेरा था, सिर्फ अगली खिड़की में से हल्की-सी रोशनी आ रही थी । संगीत की समाप्ति तक मैं वहीं इंतजार करता रहा, वहीं चहलकदमी करता रहा, जब तब कि मैंने ऑर्गन-वादक को बाहर आते नहीं देखा । वह एक युवक था, हालाँकि उम्र में मुझसे बड़ा था, हट्टा-कट्टा, चेहरा कुछ छोटा । वह मजबूत किंतु शिक्षकते कदमों से तेजी से चल रहा था ।

तब से मैं कभी-कभी शाम को चर्च के सामने जा बैठता या चहलकदमी करता रहता । एक शाम मैंने दरवाजा खुला पाया । और आधे घंटे तक सड़ियों से ठिठुरता एक-दूसरे से जुड़ी कुर्सियों में खुश होता बैठा रहा, जबकि

वादक ऊपर मंच पर गैस की हल्की रोगनी में ऑर्गन बजाता रहा। उसके संगीत में मैं उसके व्यक्तित्व को ही नहीं देख रहा था, बल्कि उसका हर भाग एक-दूसरे से जुड़ा लग रहा था, उनमें एक अनजाना सम्बन्ध था। उसका संगीत श्रद्धा, समर्पण और भक्ति से भरपूर था, मगर यह भक्ति ऐसी न थी जैसे रोज घबं जाने वालों या पादरियों की होती है, बल्कि यह भक्ति थी मध्यकालीन सीधें-यात्रियों और भिखारियों जैसी, यह भक्ति थी 'बमुघ्व कुटुम्बकम्' की भावना को वेशर्त समर्पण की, जो सभी धर्म-सिद्धांतों से आगे बढ़ जाती है। बास्र से पहले के संगीतकारों का संगीत और पुराना इटाली संगीत भी उसने बजाया। और सारा संगीत वही कह रहा था, जो संगीतकार की आत्मा में था : उत्कठा, विश्व की अंतरंग पकड़ और उससे बच निकलने की जीतोड़ कोशिश, अपनी अँधेरी आत्मा को सुनने का प्रयास, समर्पण का नशा, और चमत्कार की जिज्ञासा।

एक दिन मैंने इस ऑर्गन-वादक का घबं से लौटते हुए पीछा किया और उसे शहर के बाहर एक छोटे-से रेस्तराँ में जाते देखा। मैं खुद को उसके पीछे-पीछे वहाँ जाने से रोक नहीं पाया। पहली बार मैंने उसे नजदीक से देखा। उस छोटे से हॉल में वह दूर कोने वाली मेज पर बैठा था; सिर पर काला टोप लगाए, पाँच-भर वाइन का गिलास सामने रखा। उसका चेहरा वैसा ही था, जैसा मैंने सोचा था, भद्दा, उजड़, रोचक, जिद्दी, सनकी, और दुढ़, किंतु फिर भी चेहरे पर बच्चों-सी कोमलता थी। उसका सारा का सारा पौरुष और शक्ति उसकी आँखों और माथे पर थे जबकि चेहरे का निचला हिस्सा बड़ा संवेदनशील और बच्चों-जैसा था, अनियंत्रित और कोमलता लिये। उसके चेहरे के निचले हिस्से में नजर आने वाले लटकों-जैसे अनिश्चय की अभिव्यक्ति उसके माथे और आँखों की अभिव्यक्ति का विरोध-सी करती लगती थी—उसकी आँखें मुझे अच्छी लग रही थी—गहरी भूरी आँखें, गर्व और आक्रामक भाव से भरीं।

मैं बिना बोले उसके सामने बैठ गया। इस रेस्तराँ में इस समय बस हम दोनो हो थे। उसने मेरी तरफ मुँ देखा जैसे मुझे तुरंत भगा देना चाहता हो, परंतु मैं उस से मस नहीं हुआ और बिना पलक झपकाए उसकी ओर उसके मरी-सी आवाज में बड़बड़ाने तक देखता रहा—“आगिर व मो १२”

रहे हो?"

"नहीं, मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए," मैंने कहा, "आपने मुझे पहले ही बहुत कुछ दे दिया है।"

उसकी भींहीं में सलवटें पड़ गईं।

"अच्छा तो क्या आप संगीत के दीवाने हैं?"

मैंने खुद को झेंपने नहीं दिया।

"दरअसल मैंने अक्सर आपका संगीत सुना है, वहाँ चर्च में," मैंने कहा।

"मेरा उद्देश्य आपको किसी प्रकार परेशान करना नहीं है। मैंने सोचा; शायद मैं आपके पास कुछ पा सकूँ, कुछ खास, मगर क्या—यह मैं भी ठीक से नहीं जानता। फिर भी, आप मेरी ओर जरा भी ध्यान न दीजिए। मैं आपका संगीत चर्च में तो सुन ही सकता हूँ।"

"मगर मैं तो हमेशा दरवाजा बंद कर लेता हूँ।"

"कुछ रोज पहले आप भूल गए थे और मैं अंदर बैठ गया था। वैसे मैं बाहर खड़ा रहता हूँ या फिर बाहर वाले पत्थर पर बैठ जाता हूँ।"

"तो यह बात है!" अगली बार से आप अंदर आ सकते हैं, वहाँ सर्दो कम लगेगी। आपको बस दरवाजे पर दस्तक देनी होगी। मगर जोर से और तब नहीं जब मैं बजा रहा होऊँ। अब बोलिए, क्या कहना चाहते थे आप? आप नवयुवक हैं, शायद कोई छात्र। क्या आप संगीतकार हैं?"

"नहीं-नहीं। मुझे बस संगीत सुनने का शौक है, मगर सिर्फ वैसा, जैसा कि आप बजाते हैं, एक खास संगीत, जिसमें ऐसा लगता है कोई जमीन-आसमान हिलाए दे रहा है। ऐसा संगीत मुझे बहुत प्रिय है, शायद इसलिए क्योंकि यह बहुत कम आदर्शवादी है। वाकी सब आदर्शवादी है, और मैं कुछ ऐसा तलाश करता हूँ जो आदर्शवादी न हो। इन आदर्शों के कारण मैं हमेशा दुख ही पाता हूँ। मैं अपने विचार आपको ठीक से बता नहीं पा रहा हूँ।—आप जानते हैं कि एक ऐसा ईश्वर होना चाहिए, जिसमें ईश्वर व शैतान दोनों का समावेश हो? ऐसा एक ईश्वर रहा है, मैंने उसके बारे में सुना है।"

वादक ने अपने चौड़े हैट को कुछ पीछे किया और अपने गहरे रंग के बालों को अपने चौड़े माथे से हटाया। ऐसा करते हुए उमकी निगाहें मेरी

और लगी हुई थीं, मेज पर अपना चेहरा मेरी ओर झुकाया।

हल्की और उत्तेजित आवाज में उसने पूछा, “क्या नाम है उस ईश्वर का, जिसका आप जिक्र कर रहे हैं?”

“मैं दुर्भाग्यवश इस बारे में लगभग कुछ नहीं जानता हूँ, नाम के सिवा। उसका नाम है अब्राहमसस।”

पादक ने आसपास पूँ आशंका-भरी दृष्टि से देखा जैसे कोई हमारी बात सुन न ले। मेरे और नजदीक आकर वह फुसफुसाकर बोला, “मैंने यही सोचा था, कौन है आप?”

“मैं तो हाई स्कूल का छात्र हूँ।”

“आप अब्राहमसस के विषय में कैसे जानते हैं।”

“संयोगवश।”

उसने मेज पर इतने जोर से हाथ मारा कि उसके गिलास की कुछ शराब निकलकर गिर पड़ी।

“संयोगवश! बकवास नहीं करो! अब्राहमसस के विषय में कोई संयोग-वश नहीं जानता, यह समझ लीजिए। मैं आपको उसके विषय में और बताऊँगा, थोड़ा-बहुत जानता हूँ मैं इस विषय में।”

उसने शांत होकर अपनी कुर्सी पीछे की। मैं बड़ी उम्मीद से उसकी ओर देख रहा था, तभी वह मुस्करा दिया।

“यहाँ नहीं! फिर कभी।—यह लो।”

यह कहते हुए उसने अपने कोट की जेब में से कुछ भुने अखरोट निकालकर मेरी ओर बढ़ा दिए।

मैं बिना कुछ बहे, उन्हें लेकर खाने लगा और संतोष का अनुभव किया।

“अच्छा।” कुछ पल बाद वह फुसफुसाया।

“कैसे जानते हैं आप—उसके बारे में?”

मुझे उसे सब बताने में जरा भी हिचकिचाहट न हुई।

“मैं अकेला और परेशान था,” मैं उसे बताने लगा, “तभी मुझे अपने बचपन के पुराने दोस्त का ध्यान आया, जिसके बारे में मुझे लगता है कि वह बहुत कुछ जानता है। मैंने एक चित्र बनाया था, एक पक्षी का जो पृथ्वी

रूपी गोले से निकल रहा था। वह चित्र मैंने उसे भेजा था। कुछ दिनों बाद, जब मैं लगभग यह भूल चुका था, मेरे हाथ में एक कागज का टुकड़ा आया जिस पर लिखा था : पक्षी अंडे से निकलने के लिए संघर्ष कर रहा है। अंडा विश्व है। जिसे जन्म लेना है, उसे एक विश्व को नष्ट करना होगा। पक्षी ईश्वर के पास जा रहा है। ईश्वर का नाम है अब्राक्सस।”

वह कुछ भी नहीं बोला। हम अखरोट छील-छीलकर खाते हुए शराब पी रहे थे।

“एक-एक और हो जाय।” उसने पूछा।

“नहीं-नहीं, शुक्रिया। मैं ज्यादा नहीं पीता।”

वह उखड़े मन से हँसने लगा।

“जैसा आप चाहें। मेरी बात और है। मैं यहाँ कुछ देर और रुकूँगा, आप अगर चाहें तो जा सकते हैं।”

अगली बार उसके संगीत-वादन के बाद जब हम साथ-साथ चले तो वह बहुत कम बात कर रहा था। वह मुझे एक पुरानी गली में से एक पुराने मगर शानदार घर के काफी बड़े, अँधेरे और गंदे से कमरे में ले गया। वहाँ रखे एक पियानो के अलावा किसी दूसरी चीज से उसके संगीत-कार होने का भान नहीं हो रहा था, किंतु हाँ, एक बड़ी किताबों की अलमारी और एक लिखने की मेज कमरे को बुद्धिजीवियों-सा रूप दे रही थी।

“आपके पास कितनी किताबें हैं।” मैंने विस्मय से कहा।

“इसमें से कुछ मेरे पिता के पुस्तकालय की हैं, जिनके घर में मैं रहता हूँ। हाँ, मेरे नवयुवक दोस्त, मैं अपने माता-पिता के साथ रहता हूँ, किंतु तुम्हें उनसे मिलना न सकूँगा। मेरे जानकारों पर यहाँ बहुत ध्यान नहीं दिया जाता। मैं उनका विगड़ा हुआ बेटा हूँ, समझे तुम ! मेरे पिता यहाँ शहर के बहुत रईस व सम्मानित आदमी हैं, इस शहर के महत्त्वपूर्ण पादरी व उपदेशक। तुम्हें सारी बात थोड़े शब्दों में बताऊँ तो मैं उनका प्रतिभा-शाली सुपुत्र हूँ जिससे बहुत-सी उम्मीदें थीं, किंतु जो राह भटक गया है और किसी हद तक पागल हो चुका है। मैं धर्मशास्त्र का छात्र था किंतु परीक्षा से कुछ ही दिन पहले मैंने यह विख्यात विभाग छोड़ दिया। हालाँकि

व्यक्तिगत रूप में मैं अभी भी इस विषय में जुड़ा हुआ हूँ। उन सनसली मोर्चों में किस प्रकार के देवताओं की कल्पना की थी, यह जानना मेरे लिए आज भी अत्यधिक महत्वपूर्ण व रोचक विषय है। यूँ मैं संगीतकार हूँ और उन्मोद है जल्दी ही आंगन-बादक की कोई छोटी-सी शौकरी मिन जाएगी। उसके साथ ही मैं फिर से चर्च में जुड़ जाऊँगा।"

छोटी-सी मेज पर की गई हल्की रोगनी में जहाँ तक मैं देख सका, मुझे यूनानी, लैटिन, हिब्रू किताबें नजर आईं। इस बीच मेरा यह प्रति-विन दीवार के सहारे अँधेरे में जमीन पर सेट गया था और किसी चीज में डूबा था।

"आओ," कुछ देर बाद उसने आवाज दी, "अब हम थोड़ा-बहुत दर्शनशास्त्र का अभ्यास करें, यानी कि मुँह बंद रखो, पेट के बन सेटों और एकाग्र होकर चिंतन करो।

उसने मार्बल की एक तीली जलाई और जहाँ वह सेटा था, उसके सामने बने आतिशदान में कागज व लकड़ी के टुकड़े डाले। सन्टे चूने सगी, वह उन्हें बड़े ध्यान में हिलाता और लकड़ियाँ डालता रहा। मैं उसके पास ही पुराने धिमे कालीन पर सेटा रहा। वह आग की तरफ देख रहा था, जो मुझे भी आकर्षित कर रही थी। हम लगभग एक घंटे तक पेट के बन लकड़ी की लपनपाती लपटों के सामने उन्हें भड़कता, प्रप्रकता, हन्ना होता, दोहरा होता, फड़कता और अंत में हल्के छोटे अंगारों के रूप में जमीन पर ठंडी होता देखते सेट रहे।

"अग्नि-भूत्रा ईजाद किया गया कोई मूर्खतापूर्ण विचार न था।" उसने धुंध में ही बढ़बढ़ाते हुए कहा था। इसके अलावा हममें से किसी ने एक भी शब्द नहीं बोना। मैं एकटक लपटों में देखते हुए सन्टे और स्थिरता में डूब रहा था, धुएँ में चेहरे और राख में तसवीरें पहचान रहा था। एक-बारगी मैं चौक उठा। मेरे साथी ने एक छोटा-सा रात का टुकड़ा सगटों में डाला था, आतिशदान में से हल्की लपट उठी, और इसी सगट के अंदर मुझे पीने बाख के सिर वाली बिड़िया दिखाई दी, कम होजी आग की सगटों में साथ मुनहरी चमकते घागे, जालों, अशरों, तसवीरों के रूप में उभर रहे थे, कुछ चेहरों की, पशुओं, पौधों, कीड़ों और सीने की। —

रूपी गोले से निकल रहा था। वह चित्र मैंने उसे भेजा था। कुछ दिनों बाद, जब मैं लगभग यह भूल चुका था, मेरे हाथ में एक कागज का टुकड़ा आया जिस पर लिखा था : पक्षी अंडे से निकलने के लिए संघर्ष कर रहा है। अंडा विश्व है। जिसे जन्म लेना है, उसे एक विश्व को नष्ट करना होगा। पक्षी ईश्वर के पास जा रहा है। ईश्वर का नाम है अब्राक्सस।”

वह कुछ भी नहीं बोला। हम अखरोट छील-छीलकर खाते हुए शराब पी रहे थे।

“एक-एक और हो जाय।” उसने पूछा।

“नहीं-नहीं, शुक्रिया। मैं ज्यादा नहीं पीता।”

वह उखड़े मन से हँसने लगा।

“जैसा आप चाहें। मेरी बात और है। मैं यहाँ कुछ देर और रुकूँगा, आप अगर चाहें तो जा सकते हैं।”

अगली बार उसके संगीत-वादन के बाद जब हम साथ-साथ चले तो वह बहुत कम बात कर रहा था। वह मुझे एक पुरानी गली में से एक पुराने मगर शानदार घर के काफी बड़े, अँधेरे और गंदे से कमरे में ले गया। वहाँ रखे एक पियानो के अलावा किसी दूसरी चीज से उसके संगीत-कार होने का भान नहीं हो रहा था, किंतु हाँ, एक बड़ी किताबों की अलमारी और एक लिखने की मेज कमरे को बुद्धिजीवियों-सा रूप दे रही थी।

“आपके पास कितनी किताबें हैं।” मैंने विस्मय से कहा।

“इसमें से कुछ मेरे पिता के पुस्तकालय की हैं, जिनके घर में मैं रहता हूँ। हाँ, मेरे नवयुवक दोस्त, मैं अपने माता-पिता के साथ रहता हूँ, किंतु तुम्हें उनसे मिलवा न सकूँगा। मेरे जानकारों पर यहाँ बहुत ध्यान नहीं दिया जाता। मैं उनका विगड़ा हुआ वेटा हूँ, समझे तुम ! मेरे पिता यहाँ शहर के बहुत रईस व सम्मानित आदमी हैं, इस शहर के महत्त्वपूर्ण पादरी व उपदेशक। तुम्हें सारी बात थोड़े शब्दों में बताऊँ तो मैं उनका प्रतिभा-शाली सुपुत्र हूँ जिससे बहुत-सी उम्मीदें थीं, किंतु जो राह भटक गया है और किसी हद तक पागल हो चुका है। मैं धर्मशास्त्र का छात्र था किंतु परीक्षा से कुछ ही दिन पहले मैंने यह विख्यात विभाग छोड़ दिया। हालाँकि

बढ़ करते ही सामने तैरने लगते थे । पिश्टोरिउस के घर जाने की घटना के बाद ये सब मुझे फिर से याद आने लगा । मुझे अहसास हो रहा था कि यह शक्ति, शुशी, जागरूकता मे वृद्धि के पीछे उस दिन का देर तक आग में देखना ही था । ऐसा करना सुखद होने क साथ ही समृद्धिकारी भी था ।

अपने जीवन-तथ्य की राह पर जो धोहे में अनुभव मुझे हुए थे, उनमें मैंने इसे भी जोड़ दिया : इन रूपों को गौर से देखना, प्रकृति के बेटुके, अजीब उलझे रूपों का समर्पण हमारे मन में एक आंतरिक लय को उस धारक के साथ जन्म देता है, जो इन रूपों का कारण है । जल्दी ही हमें यह सब अपने मन का भ्रम, मन की उपज लगने लगता है—प्रकृति और अपने बीच की सीमा रेखा काँपकर गायब होती दिखती है और हम खुद को मन की ऐसी हालत में पाते हैं जहाँ यह निश्चय करना मुश्किल हो जाता है कि आँख जो देख रही है वह वास्तव में हों रहा है या मन में ही घटित हों रहा है । इस प्रक्रिया के अतिरिक्त कभी और इस तथ्य का अनुभव इससे अधिक नहीं हो सकता कि हम कितने सृजनशील हैं, हमारी आत्मा विश्व के नियमित सृजन में कितनी भागीदार है ! यह वही अविभाज्य ईश्वरत्व है जो हममें और प्रकृति में सक्रिय है, और यदि कभी विश्व का पतन हुआ, तो हममें से एक उसके पुनर्निर्माण के योग्य होगा, क्योंकि पर्वत और नदियाँ, वृक्ष और पत्ते, जड़ और फूल—प्रकृति का हर रूप हमारे मन में पूर्वनिमित्त है, आत्मा से ही जन्म लेता है, जिसका अस्तित्व सनातन है, जिसके अस्तित्व को हम नहीं जानते, मगर जो हमें प्रेम व सृजन की शक्ति से अपने अस्तित्व का भान दे देता है ।

बहुत वर्षों बाद मैंने लेओनार्दो दा विंची की एक पुस्तक में अपने इन विचारों की पुष्टि पाई । एक स्थान पर वह कहते हैं कि उन्हें एक ऐसी दीवार को देखना, जिस पर बहुत-से लोगो ने घूका है, कितना रोचक लगता है और कितना गहरा असर डालता है । दीवार पर पड़े इन धब्बों से उन्हें कुछ घंसा ही महसूस हुआ होगा, जैसे मुझे और पिश्टोरिउस को आग के सामने महसूस हुआ था ।

अगसी मुसाकात पर ऑर्गन-बादक ने मुझे एक बात बताई :



रूप ले रहे थे। इस स्थिति से जागकर जब मैंने अपने साथी की ओर देखा तो उसे हथेलियों पर ठोड़ी रखे तन्मयता और समर्पित भाव से राख की ओर घूरता पाया।

“अब मुझे जाना चाहिए।” मैंने धीरे से कहा।

“ठीक है, तो फिर चलो। फिर मिलेंगे।”

वह उठा नहीं।

चूँकि दीया बुझ चुका था, मुझे बड़ी मुश्किल में अँधेरे कमरों और अँधेरे घर के रास्तों और सीढ़ियों से इस भूतिया घर के बाहर का रास्ता टटोलना पड़ा। सड़क पर पहुँचने के बाद मैंने रुककर इस मकान की ओर अच्छी तरह देखा। कहीं किसी खिड़की में रोशनी नहीं थी। दरवाजे पर लगी पीतल की बनी नाम-पट्टी स्ट्रीट लाइट से चमक रही थी।

“पिष्टोरिउस—मुख्य पादरी,” मैंने पढ़ा।

घर पर खाना खाने के बाद अकेले अपने छोटे-से कमरे में लेटे हुए मुझे याद आया कि मुझ अब्राक्सस या पिष्टोरिउस के बारे में तो कुछ भी पता नहीं लगा है, और तो और हमने इस विषय में दो शब्द भी नहीं बोले थे। किंतु फिर भी मैं उसके घर जाने की घटना से पूरी तरह संतुष्ट था। अगली बार के लिए उसने मुझसे पुराने बेहतरीन ऑर्गन-संगीत ब्रुक्सटेहूडे के पासाकाग्लिया का वादा किया था।

बिना मेरे अहसास किए ही ऑर्गन-वादक पिष्टोरिउस ने मुझे पहला पाठ उस समय पढ़ा दिया था, जब मैं उसके गंदे कमरे के आतिशदान के सामने लेटा था। आग में देखने की प्रक्रिया ने मेरे रुझान को, जो मुझमें शुरू से ही थे और जिन्हें मैंने कभी सँवारा नहीं था, सिद्ध व मजबूत किया था। धीरे-धीरे मैं उनके बारे में समझ रहा था।

अपने वचन के दिनों में भी मैं जब-तब प्रकृति के अजीबो-गरीब रूप देखता रहता था, निरीक्षण के उद्देश्य से नहीं वरन उसके अपने जादू, उसकी अव्यवस्थित और गूढ़ भाषा को समर्पण के कारण। पेड़ की सूखी जड़ें, चट्टानों में रंगीन नसें, पानी पर तैरते तेल के घब्वे, शीशे की चटकन और ऐसी सभी चीजें मुझे आकर्षित करती रहतीं, खासतौर पर पानी और आग, धुआँ, बादल, धूल, मगर सबसे अधिक वे रंग-विरंगे घब्वे जो आँखें

बद करते ही सामने तैरने लगते थे। पिस्टोरिउस के घर जाने की घटना के बाद ये सब मुझे फिर से याद आने लगा। मुझे अहसास हो रहा था कि यह शक्ति, धृष्टी, जागरूकता में वृद्धि के पीछे उस दिन का देर तक आम में देखना ही था। ऐसा करना सुखद होने के साथ ही समृद्धिकारी भी था।

अपने जीवन-तथ्य की राह पर जो धोहे से अनुभव मुझे हुए थे, उनमें मैंने इसे भी जोड़ दिया : इन रूपों को गौर से देखना, प्रकृति के बेटुके, अजीब उलझे रूपों का समर्पण हमारे मन में एक आंतरिक लय को उस पारक के साथ जन्म देता है, जो इन रूपों का कारण है। जल्दी ही हमें यह सब अपने मन का भ्रम, मन की उपज लगने लगता है—प्रकृति और अपने बीच की सीमा रेखा काँपकर गायब होती दिखती है और हम खुद को मन की ऐसी हालत में पाते हैं जहाँ यह निश्चय करना मुश्किल हो जाता है कि आँख जो देख रही है वह वास्तव में हो रहा है या मन में ही घटित हो रहा है। इस प्रक्रिया के अतिरिक्त कच्ची और इस तथ्य का अनुभव इससे अधिक नहीं हो सकता कि हम कितने सृजनशील हैं, हमारी आत्मा विश्व के नियमित सृजन में कितनी भागीदार है। यह वही अविभाज्य ईश्वरत्व है जो हममें और प्रकृति में सक्रिय है, और यदि कभी विश्व का पतन हुआ, तो हममें से एक उसके पुनर्निर्माण के योग्य होगा, क्योंकि पर्वत और नदियाँ, वृक्ष और पत्ते, जड़ और फूल—प्रकृति का हर रूप हमारे मन में पूर्वनिर्मित है, आत्मा से ही जन्म लेता है, जिसका अस्तित्व मनातन है, जिसके अस्तित्व को हम नहीं जानते, मगर जो हमें प्रेम व सृजन की शक्ति से अपने अस्तित्व का भान दे देता है।

बहुत वर्षों बाद मैंने लेओनार्दो दा विंची की एक पुस्तक में अपने इन विचारों की पुष्टि पाई। एक स्थान पर वह कहते हैं कि उन्हें एक ऐसी दीवार को देखना, जिस पर बहुत-से लोगो ने थूका है, कितना रोचक लगता है और कितना गहरा असर डालता है। दीवार पर पड़े इन धब्बों से उन्हें कुछ वैसा ही महसूस हुआ होगा, जैसे मुझे और पिस्टोरिउस का आग के सामने महसूस हुआ था।

अगली मुलाकात पर, ऑर्गन-वादक ने मुझे एक बात बताई :

“हम अपने व्यक्तित्व की सीमाओं को बहुत कम खींचते हैं ! हम नाब उल्लेखी अपने व्यक्तित्व का हिस्सा मानते हैं, जिसे हम वैयक्तिक रूप में दूसरों से भिन्न देखते हैं, भिन्न मानते हैं । मगर हमारा जन्म विश्व की सम्पूर्णता से हुआ है । हर एक में हमारे शरीर की ही भाँति, यहाँ तक कि मछली और उससे भी पहले की वंशावलिyaँ मौजूद हैं, और इस प्रकार जाहिर है कि हमारी आत्मा में वह सब है जो मनुष्य की आत्मा में कभी जीवित था । देवत्व और राक्षसत्व चाहे वे पूतानियों में रहा हो, चीनियों में या जूलू लोगों में, सभी हम में हैं, यही हैं, सम्भावनाओं के रूप में, इच्छाओं और बचाव मार्गों के रूप में । यदि मानवता का धरती पर नाश हो जाए तो एक मौसम बर्फ का बच्चा भी, जिसने कभी स्कूल का मुँह भी नहीं देखा हो, हर वस्तु का विकास-मार्ग ढूँढ़ लेगा; ईश्वर, राक्षस, स्वर्ग, नियम और प्रतिबंध, पुराने और नए टेस्टामेंट, सब कुछ वह दोबारा पा लेगा ।”

“बलो, ठीक है,” मैंने कहा, “किंतु फिर इसमें व्यक्ति का क्या महत्त्व है ? हम क्यों फिर भी प्रयास करते रहते हैं, जबकि सब कुछ हमारे भीतर ही सम्पूर्ण है !”

“बकी !” फिटोरिउस जोर से बोला, “इस बात से बहुत अंतर पड़ता है कि बाप अपने भीतर एक विश्व लिये हैं या इस बात को जानते भी हैं ! एक पागल भी ऐसे विचार सानने रख सकता है जिन्हें मुनकर प्लेटो की पाद ला जाए, और किसी धार्मिक संस्था का छोटा-सा छात्र भी उन धार्मिक विचारों को रचनात्मक रूप में सोच सकता है जो नॉस्टिक लोगों या पारसियों में मिलते हैं । मगर उसे इस बात का अहसास ही नहीं होता ! वह कोई पेड़ या पत्थर या लकड़ी के लकड़ी कोई पशु है, जब तक कि वह यह जान नहीं लेता । किंतु जैसे ही उसके मन में जान की पहली किरण जन्म लेती है, वह मनुष्य बन जाता है । तुम सड़क पर हर बोझ को मनुष्य तो नहीं मानोगे, सिर्फ इसलिए कि वह सीधा चलता है और नौ नहीने संतान को पेट में रखता है । तुम तो देखते ही हो कि उनमें से कितने मछली या भेड़ हैं, कीड़े या जोंक हैं, कितने चींटियाँ हैं, कितने मधुमक्खियाँ ! अगर साथ ही उन सबमें इन्सान बनने की क्षमता है, अगर उन्हें इस बात का



जाएगा, जैसा कि पागल करते हैं। उनकी प्रेरणा आम लोगों की तुलना में कहीं अधिक होती है, किंतु उनमें इसी नियंत्रण-तंत्र का अभाव होता है और इसीलिए वे उड़ते अनंत में चले जाते हैं। किंतु सिनक्लेयर, आप सही राह पर चले रहे हैं। कैसे? यह तो शायद आप स्वयं भी नहीं जानते। आप ऐसा एक नए तंत्र के साथ कर रहे हैं, जो आपकी सांस को नियंत्रित करता है। और अब आप जानेंगे कि आपकी आत्मा की गहराइयों में कितनी कम वैयक्तिकता है, क्योंकि यह तंत्र उसने नहीं खोजा है! यह नया नहीं है!

“आपने इससे उधार लिया है : यह तो हजारों सालों से मौजूद है। यह वही तंत्र है जिससे मछली अपना संतुलन बनाती है—वायुतंत्र। दरअसल मछलियों में भी अभी ऐसे कई प्रकार हैं, जिनमें वायुतंत्र फेफड़े का काम करता है और सांस लेने का काम करता है। ठीक उसी प्रकार, जैसे आप उसे अपने सपने में उड़ान-तंत्र की भाँति इस्तेमाल करते हैं।”

उसने मुझे जीव-शास्त्र की एक पुस्तक निकालकर इन मछलियों के प्रकार व चित्र भी दिखाए। और एक खास झुरझुरी के साथ मैंने महसूस किया कि समूचे विकास का कोई अंग मुझमें अब भी शेष है।

## याकोव का संघर्ष

इस विचित्र संगीतकार पिस्टोरिउस में मैंने अब्राहमस के विषय में जो कुछ जाना, उसे मैं मशौफ में नहीं बता सकता। जो सबसे अधिक जरूरी बात मैंने उसमें मीची, वह थी मेरा अपने मन की दिशा में कदम बढ़ाना। अपनी सगमग अठारह वर्ष की उम्र में मैं बड़ा अजीबो-गरीब युवक था, कितनी ही बातों में उम्र से पहले ही जानता था, तो दूसरी सौ बातों में फिसड्डी था, बेसहारा था। अक्सर जब मैं अपनी औरो से तुलना करता, तो अपने पर गर्व में फूला नहीं समाता, मगर अक्सर ही स्वयं को दुखी और हतोत्साहित भी पाता। कभी छुट को बुद्धिजीवी समझता, तो कभी आधा पागल। अपनी उम्र के दूसरे लोगों जैसे जीवन को अपना सकने में सफल नहीं हुआ, अक्सर अपनी ही तारणा और दुखों का शिकार बना रहा। नाउम्मीदी की हद तक मुझे अपनी उम्र के लोगों से अलग कर दिया गया था, जैसे मुझे जीवन से ही प्रतिवधित कर दिया गया हो।

पिस्टोरिउस, जो खुद अच्छा-खासा सनकी था, मुझे बड़ी हिम्मत और सावधानी से मेरे आत्मसम्मान की रक्षा की शिक्षा दे रहा था। इस प्रक्रिया में वह मेरे शब्दों, मेरे सपनों, मेरी कल्पनाओं और मेरे विचारों को हमेशा महत्वपूर्ण मानता, उन्हें हमेशा गम्भीरता से लेता, और उन पर बात करता। वह मेरे लिए आदर्श बन गया था।

“आपने मुझे बताया था,” उसने कहा, “कि आप संगीत इसलिए पसंद करते हैं क्योंकि वह नैतिक नहीं होता। वह सब तो ठीक है। मगर आपको

स्वयं भी नैतिक नहीं बनना है। आपको औरों से अपनी तुलना करने की कोई जरूरत नहीं है, जब प्रकृति ने आपको चमगादड़ का रूप दिया है, तो आपको अपने शुतुरमुर्ग बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। आप स्वयं को कभी-कभी अजीब लगते हैं, और दूसरों की राह न चलने के लिए स्वयं को दोषी मानते हैं। आपको यह भूल जाना चाहिए। आग में देखो, वादलों को देखो और जैसे ही विचार आने लगें, तो खुद को उनके हवाले कर दो और कतई मत सोचो कि यह अध्यापक, पिता या किसी ईश्वर को अच्छा लगेगा या नहीं, पसंद आएगा या नहीं! ऐसा कर तुम स्वयं को तबाह करोगे। इसमें तुम आम राह पर आ जाओगे और एक फॉसिल-भर बनकर रह जाओगे प्यारे सिनक्लेयर! हमारे ईश्वर का नाम है अब्राक्सस, जो ईश्वर है, जो श्रुतान है, जिसमें विश्व के प्रकाशित और अंधेरे दोनों ही भाग हैं। अब्राक्सस आपके विचारों, आपके सपनों का विरोध नहीं करता, यह कभी नहीं भूलना। मगर जैसे ही आप वेदांग और आम हो जाते हैं, वह आपको छोड़ देता है। तब वह आपको छोड़ अपने विचारों को पकाने के लिए एक नया पात्र ढूंढ़ता है।”

मेरे सभी सपनों में वह प्रेम का गाढ़ा सपना सबसे विश्वसनीय था। कितनी ही बार मैं यह सपना देखता, अपने पिता के घर में बने कुलचिह्न पक्षी के नीचे से गुजरकर घर प्रवेश करता, माँ को अपने गले से लगा लेना चाहता मगर अपनी बाँहों में पाता एक विशाल काया, जिसका आधा शरीर पुरुष का था और आधा स्त्री का, जिससे मुझे भय लग रहा था, किंतु उसी के लिए मेरे मन में प्रबल इच्छा भी थी। इस सपने को मैं अपने मित्र को कभी नहीं बता सका। उसे बाकी सभी बातें बताने के बाद भी मैंने इसे अपने मन में ही रखा। यह मेरा क्षेत्र था, मेरा रहस्य, मेरी शरण।

जब मैं दुखी होता तो पिश्टोरिउस से बुक्सटेहूडे का पासाकालिया संगीत बजाने को कहता। फिर मैं शाम के धुंधलके से भरी चर्च में, पूरी तरह से आत्मीय संगीत में खो जाता, यह संगीत जो स्वयं को सुनता प्रतीत होता था, जो मुझे हर बार अच्छा लगता, मुझे अपनी आत्मा की आवाजों को स्वीकार करने के लिए तैयार करता। कभी-कभी हम संगीत समाप्त होने

के बाद भी बैठे रहते, और ऊँची गोथिक ढंग की गिरिडकियों में रोशनी को कम होकर ग़रम होने देग़ते रहते। "मजाक-मा लगता है", पिस्टोरिउस बोला, "कि मैं कभी धर्मशास्त्र का विद्यार्थी था और लगभग पादरी बन ही गया था। किंतु यह एक तरह की गलती थी, जो मैंने उस समय की थी। आज भी मेरा काम और उद्देश्य पादरी बनना ही है। किंतु मैं बहुत धीघ्र ही गंतुष्ट हो गया था और स्वयं को अब्राहमसन को जाने बिना ही पाहोवा को समर्पित कर बैठा था। हाँ, यूँ तो हर धर्म सुंदर है, धर्म तो आत्मा है, चाहे व्यक्ति ईसाइयों के सांध्य-भोज में डिम्बा ले या मक्का की ज़ियारत करे।"

"मगर फिर तो," मैंने टोका, "आप पादरी बन सकने थे।"

"नहीं सिनक्लेयर, नहीं। फिर मुझे झूठ बोलना पड़ता। हमारे धर्म का पालन कुछ यूँ किया जाता है, जैसे वह धर्म हो ही नहीं। ऐसा लगता है जैसे धर्म बुद्धि के आधार पर किया जाने वाला कार्य हो। आपत्काल में एक बार कैथोलिक पादरी तो बन भी जाऊँ, मगर प्रोटेस्टेंट पादरी—नहीं! कुछ सच्चे भवन—जिनमें से कुछ को मैं जानता भी हूँ—उदारवादो व्याख्या को मानते हैं। उदाहरण के लिए, मैं उन्हें यह नहीं कह पाऊँगा कि जीसस मेरे लिए एक इंसान नहीं बल्कि नायक है, मिथक है, एक ज्ञानदार छाया-चित्र, जिसमें मानवता स्वयं को शाश्वतत्व की दीवार पर अंकित देखती है। और दूसरे, जो चर्च में कुछ विलक्षण शब्द सुनने, एक कर्तव्य की पूर्ति हेतु, कुछ छूट न जाए, ऐसे उद्देश्यों में आते हैं, ऐसे लोगों को मैं क्या कह सकता हूँ? तुम्हें लगता है कि मुझे उनका धर्म परिवर्तन करना चाहिए? मगर मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं है। एक पादरी की इच्छा किसी का धर्म-परिवर्तन नहीं होती। यह तो मात्र भक्तों के बीच रहना चाहता है, अपने ही जैसे भक्तों के बीच। यह उस भावना का, जिससे हम अपने ईश्वरों को रचना करने हैं, धारक व उसकी अभिव्यक्ति बनना चाहता था।"

वह बोलते-बोलते रुक गया। फिर आगे बोला, "हमारा नया धर्म, प्यारे दोस्त, जिसके लिए हमने अब्राहमस नाम चुना है, बहुत ही सुंदर है। सर्वोत्तम है। किन्तु अभी यह शिशु है। अभी इसके पंख नहीं उगे हैं। हाँ, अकेला धर्म भी कुछ ठीक नहीं। एक समुदाय होना चाहिए, पूजा-पद्धति होनी चाहिए, उत्साह, उत्सव और रहस्य होने चाहिए..."



स्वयं भी नैतिक नहीं बनना है। आपको औरों से अपनी तुलना करने की कोई जरूरत नहीं है, जब प्रकृति ने आपको चमगादड़ का रूप दिया है, तो आपको अपने शुतुरमुर्ग बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। आप स्वयं को कभी-कभी अजीब लगते हैं, और दूसरों की राह न चलने के लिए स्वयं को दोषी मानते हैं। आपको यह भूल जाना चाहिए। आग में देखो, बादलों को देखो और जैसे ही विचार आने लगें, तो खुद को उनके हवाले कर दो और कतई मत सोचो कि यह अध्यापक, पिता या किसी ईश्वर को अच्छा लगेगा या नहीं, पसंद आएगा या नहीं! ऐसा कर तुम स्वयं को तबाह करोगे। इसमें तुम आम राह पर आ जाओगे और एक फॉसिल-भर बनकर रह जाओगे प्यारे सिनक्लेयर! हमारे ईश्वर का नाम है अब्राक्सस, जो ईश्वर है, जो शैतान है, जिसमें विश्व के प्रकाशित और अंधेरे दोनों ही भाग हैं। अब्राक्सस आपके विचारों, आपके सपनों का विरोध नहीं करता, यह कभी नहीं भूलना। मगर जैसे ही आप वेदांग और आम हो जाते हैं, वह आपको छोड़ देता है। तब वह आपको छोड़ अपने विचारों को पकाने के लिए एक नया पात्र ढूंढ़ता है।”

मेरे सभी सपनों में वह प्रेम का गाढ़ा सपना सबसे विश्वसनीय था। कितनी ही बार मैं यह सपना देखता, अपने पिता के घर में बने कुलचिह्न पक्षी के नीचे से गुजरकर घर प्रवेश करता, माँ को अपने गले से लगा लेना चाहता मगर अपनी बाँहों में पाता एक विशाल काया, जिसका आधा शरीर पुरुष का था और आधा स्त्री का, जिससे मुझे भय लग रहा था, किंतु उसी के लिए मेरे मन में प्रबल इच्छा भी थी। इस सपने को मैं अपने मित्र को कभी नहीं बता सका। उसे बाकी सभी बातें बताने के बाद भी मैंने इसे अपने मन में ही रखा। यह मेरा क्षेत्र था, मेरा रहस्य, मेरी शरण।

जब मैं दुखी होता तो पिष्टोरिउस से बुक्सटेहूडे का पासाकालिया संगीत बजाने को कहता। फिर मैं शाम के धुंधलके से भरी चर्च में, पूरी तरह से आत्मीय संगीत में खो जाता, यह संगीत जो स्वयं को सुनता प्रतीत होता था, जो मुझे हर बार अच्छा लगता, मुझे अपनी आत्मा की आवाजों को स्वीकार करने के लिए तैयार करता। कभी-कभी हम संगीत समाप्त होने

के बाद भी बैठे रहते, और ऊँची गोथिक ढंग की छिड़कियों में रोशनी को कम होकर घटम होते देखते रहते। “मजाक-मा लगता है”, पिस्टोरिटम बोला, “कि मैं कभी धर्मशास्त्र का विद्यार्थी था और लगभग पादरी बन ही गया था। किंतु यह एक तरह की गलती थी, जो मैंने उस समय की थी। आज भी मेरा काम और उद्देश्य पादरी बनना ही है। किंतु मैं बहुत शीघ्र ही संतुष्ट हो गया था और स्वयं को अन्नाक्मन को जाने बिना ही याहोवा को समर्पित कर बैठा था। हाँ, यूँ तो हर धर्म सुंदर है, धर्म तो आत्मा है, चाहे व्यक्ति ईसाइयो के माध्य-भोज में हिस्सा ले या मक्का की ज़ियारत करे।”

“मगर फिर तो,” मैंने टोका, “आप पादरी बन सकते थे।”

“नहीं सिनक्लेयर, नहीं। फिर मुझे झूठ बोलना पड़ता। हमारे धर्म का पालन कुछ यूँ किया जाता है, जैसे वह धर्म हो ही नहीं। ऐसा लगता है जैसे धर्म बुद्धि के आधार पर किया जाने वाला कार्य हो। आपत्काल में एक बार कैथोलिक पादरी तो बन भी जाऊँ, मगर प्रोटेस्टेंट पादरी—नहीं! कुछ सच्चे भक्त—जिनमें से कुछ को मैं जानता भी हूँ—उदारवादी व्याख्या को मानते हैं। उदाहरण के लिए, मैं उन्हें यह नहीं कह पाऊँगा कि जोसस मेरे लिए एक इंसान नहीं बल्कि नायक है, मिथक है, एक शानदार छाया-चित्र, जिसमें मानवता स्वयं को शाश्वत की दीवार पर अंकित देखती है। और दूसरे, जो चर्च में कुछ विलक्षण शब्द सुनने, एक बर्तव्य की पूर्ति हेतु, कुछ छूट न जाए, ऐसे उद्देश्यों में आते हैं, ऐसे लोगों को मैं क्या कह सकता हूँ? तुम्हें लगता है कि मुझे उनका धर्म परिवर्तन करना चाहिए? मगर मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं है। एक पादरी की इच्छा किसी का धर्म-परिवर्तन नहीं होती। वह तो मात्र भक्तों के बीच रहना चाहता है, अपने ही जैसे भक्तों के बीच। वह उस भावना का, जिससे हम अपने ईश्वरों की रचना करते हैं, धारक व उसकी अभिव्यक्ति बनना चाहता था।”

वह बोलते-बोलते खूब गया। फिर आगे बोला, “हमारा नया धर्म, प्यारे दोस्त, जिसके लिए हमने अन्नाक्मन नाम चुना है, बहुत ही सुंदर है। सर्वोत्तम है। किन्तु अभी यह शिशु है! अभी इसके पख नहीं उगे हैं। हाँ, अकेला धर्म भी कुछ ठीक नहीं। एक समुदाय होना चाहिए, पूजा-पद्धति होनी चाहिए, उल्लाम, उत्सव और रहस्य होने चाहिए...”

वह ध्यानमग्न हो अपने में डूब गया ।

“क्या कोई रहस्यों को अकेला या थोड़े-से लोगों के बीच नहीं मान सकता ?” मैंने हिचकिचाते हुए पूछा ।

“हाँ, मान तो सकता है,” उसने हामी भरी, “मैं तो काफी समय से मान रहा हूँ । मेरी तो ऐसी-ऐसी पूजा-भक्तियाँ हैं कि यदि किसी को उनके बारे में मालूम हो जाए तो मुझे सालों के लिए जेल में डाल दिया जाएगा । किंतु मैं जानता हूँ कि यह भी ठीक नहीं है ।”

अचानक उसने मेरे कंधे पर ऐसा घील जमाया कि मैं चौंक पड़ा । “बच्चे”, उसने निश्चित भाव से कहा “तुम्हारी भी अपनी ही पूजा-भक्तियाँ हैं । मैं जानता हूँ कि तुम्हारे कुछ सपने हैं, जो तुम मुझे नहीं बताते । मैं उन्हें नहीं जानना चाहता, मगर मैं तुम्हें इतना बताए देता हूँ : उन्हें जियो, इन सपनों को, उनके साथ खेलो, उनके लिए वेदी बनाओ । यह अपने में आदर्श तो नहीं किंतु यह एक राह है । मैं, तुम और कुछ और लोग एक दिन विश्व का पुनरुत्थान कर पाएँगे या नहीं, यह देखा जाएगा । किंतु हमारे अपने मन में हमें इसका हर रोज पुनरुत्थान करना है, अन्यथा हमारी गंभीरता व्यर्थ है । जरा सोचो ! आप अठारह वर्ष के हैं, आपको प्रेम के सपने बानि ही चाहिए, प्रेम की इच्छाएँ होनी ही चाहिए । शायद आपकी प्रकृति ऐसी है कि आपको स्वयं से ही भय लगता है । डरिए मत ! जो आपके पास है उसमें यही तो सर्वोत्तम है । मेरा यकीन करें ! आपकी उम्र में इन प्रेम के सपनों की उपेक्षा कर मैंने बहुत कुछ खोया है । ऐसा नहीं करना चाहिए । जब कोई अब्राक्सस के विषय में जानता है, तब तो बिल्कुल भी नहीं । व्यक्ति को किसी चीज से नहीं डरना चाहिए, न ही किसी चीज को प्रतिबंधित मानना चाहिए जिसकी हमारी आत्मा इच्छा करती है ।”

भयभीत हो मैंने आपत्ति की, “किंतु वह सब तो नहीं कर सकता जो उसके मन में आए । कोई किसी व्यक्ति को सिर्फ इसलिए मार तो नहीं सकता, क्योंकि वह उसे अच्छा नहीं लगता ।”

वह मेरे नजदीक आ गया ।

“कुछ परिस्थितियों में ऐसा भी कर सकता है । हालाँकि अधिकतर यह एक गलती ही होती है । मेरा तात्पर्य यह भी नहीं है कि आप वह सब

कर डालिए जो आपके दिमाग में आए। नहीं, किंतु आपको इन विचारों को, जो विवेकपूर्ण हैं, दिमाग से निश्चलकर नुकसान नहीं पहुँचाना है, न ही उनके ऊपर नैतिकता का बोझ डालना है। खुद को या किसी और को सर्वांग पर चढ़ाने के बाद व्यक्ति खुशी के विचारों के साथ प्याले से मदिरा-पान करते हुए बलिदान के भय के विषय में सोच सकता है। इन प्रियताओं से परे रहकर भी व्यक्ति अपनी प्रवृत्तियों और तथाकथित प्रलोभनों को आदर और प्रेम से देख सकता है। तभी वे अपना अर्थ प्रकट करते हैं, और उन सभी के अर्थ होते हैं।—जब अगली बार कोई फिर आपके मन में सत्त्वा उन्मत्त या पाप का विचार आए; सिनक्वेयर, यदि आप किसी को मार डालना या बौर्ज अश्लील हरकत करना चाहें तो एक पल के लिए सोचें कि यह तो अश्राव्य है जो आपके मन में यह चल्पना कर रहा है। वह व्यक्ति, जिसे आप मार डालना चाहते हैं, वह श्री अमुक तो है ही नहीं, वह जल्द छद्मवेश में है। जब आप किसी व्यक्ति में घृणा करते हैं तो दरअसल आप उसमें किसी ऐसी चीज से घृणा कर रहे होते हैं जो आपके अपने ही अंदर है। जो हमारा हिम्मा नहीं होता उसमें हमें कुछ पक नहीं पड़ता।” इससे पहले पिस्टोरिउस ने ऐसा कुछ नहीं कहा था जिसने मुझे इस गहराई तक छुआ हो। मैं कोई जवाब न दे सका। मगर जिस चीज ने मुझे सबसे ज्यादा और विचित्र तरह से प्रभावित किया था, वह था इन बातों की डेमिआन के शब्दों में समानता, जो कितने मालो से मैं अपने में लिये हुए था।

ये दोनों एक-दूसरे को नहीं जानते थे किंतु एक ही बात बोल रहे थे।

“वे चीजें, जो हम देखते हैं,” पिस्टोरिउस धीरे-धीरे बोल रहा था, “वे वही चीजें हैं जो हमारे अंदर हैं। जो हमारे मन में है, उसका अतिरिक्त कोई धार्मिकता नहीं है। अधिकतर लोग इसीलिए अवास्तविक रूप से जीते हैं क्योंकि वे बाहरी तत्त्वों को सच मान लेते हैं और अपने विषय को सामने नहीं आने देते। व्यक्ति इस प्रकार से गुप्त हो सकता है। किंतु जब व्यक्ति दूसरी राह जान लेता है तो उसके लिए अधिकतर लोगों द्वारा चले जाने वाली राह पर चलने का सवाल ही नहीं उठता। सिनक्वेयर, भीड़ का रास्ता सुगम है, हमारा मुश्किल।—हमें चलते रहना है।”

दो बार के मेरे निरर्थक इंतजार के कुछ दिनों बाद मैं उगे देर रात सड़क

पर मिला जब वह अकेला रात की सर्द हवा में एक कोने से झूमता, लड़-खड़ाता नशे में वेसुध आ रहा था। मेरी उसे आवाज देने की इच्छा न हुई, वह मेरे सामने से चला गया, बिना मुझे देखे, बिल्कुल सीधा देखता, परेशान आँखों से, जैसे किसी अनजान जगह से आती किसी आवाज का पीछा करता जा रहा हो। एक सड़क तक मैं उसके पीछे गया। वह यूँ चल रहा था जैसे किसी अदृश्य घागे से बँधा खिंचा जा रहा हो, उन्मादी किंतु ढीली-ढाली चाल में, जैसे कोई भूत। उदास होकर मैं अपने घर की ओर चल दिया, अधूरे सपनों की ओर। 'तो इस तरह करता है यह अपने अंदर के विश्व का पुनरुत्थान !' मैंने सोचा, और उसी पल मुझे लगा जैसे यह मेरा बहुत घटिया और नैतिक विचार है। उसके सपनों के बारे में मैं जानता ही क्या था ? शायद वह अपने नशे में मेरे सपनों की तुलना में कहीं अधिक निश्चित दिशा में जा रहा हो।

स्कूल में पढ़ाई के समय के बीच मिलने वाले खाली समय में हमारी कक्षा का एक विद्यार्थी मेरे नजदीक आने की कोशिश कर रहा था, यह मैं महसूस कर रहा था। मैंने इस पर पहले कभी गौर नहीं किया था। यह छोटे कद का, कमजोर-सा लगने वाला लड़का था जिसके बाल सुनहरे व कुछ ललछाँहे थे। उसकी आँखों का भाव और वर्तार औरों से कुछ अलग था। एक दिन जब मैं वापस घर आ रहा था तो उसे गली में इंतजार करता पाया, उसने मुझे आगे निकलने दिया, फिर पीछे दीड़ा और हमारे घर के सामने खड़ा हो गया।

"क्या तुम्हें मुझसे कुछ चाहिए ?" मैंने पूछा।

"मैं सिर्फ एक बार तुमसे बात करना चाहता हूँ," उसने शरमाते हुए कहा, "मुझे अच्छा लगेगा अगर तुम कुछ दूर मेरे साथ चलो।"

मैं उसके पीछे चल दिया। मुझे लग रहा था कि वह बहुत उत्तेजित और आशाएँ लिये हुए था। उसके हाथ काँप रहे थे।

"क्या तुम प्रेतात्मावादी हो ?" उसने अप्रत्याशित रूप से पूछा।

"नहीं कनाउअर," मैंने हँसते हुए कहा, "उसकी परछाईं भी नहीं। ऐसा कैसे सोचा तुमने ?"

"तो फिर ब्रह्मवादी हो ?"

“वह भी नहीं।”

“छोड़ो, इतना घुंने मत बनो ! मैं महसूस कर सकती हूँ कि तुमने मुझे ग्याम बात है। तुम्हारी आँखों में कुछ है। मुझे पुरा मशीन है कि तुम्हारा प्रेतात्माओं से सम्बन्ध है—मिनकनेयर, मैं गिरफ्तारी के कारण नहीं मूल रहा, बिल्कुल नहीं। मैं खुद साधक हूँ, तुम जानते नहीं कितना धन है मैं।”

“बोलते रहो,” मैंने उसे उत्साहित किया, “मैं मैं प्रेतात्माओं के बारे में कुछ नहीं जानता, मैं तो अपने सपनों में रहता हूँ, और वहीं तुमने महसूस किया है। हमारे लोग भी सपनों में रहते हैं, मगर अपने नहीं। यही बात है।”

“हो, शायद यही बात है,” वह पुनः पुनः कहा, “मैं भी इस बात पर निर्भर करता है कि सपने कि तरह के हैं, जिनमें व्यक्ति रहता है—तुमने कभी मन्दिर जादू के बारे में सुना है ?”

मुझे इन्कार करना पड़ा।

“यह होता है व्यक्ति का अन्तर्मनोव्यवस्था संग्रह। व्यक्ति अक्सर इस अवस्था है, लोगों पर जादू भी कर सकता है। क्या तुमने ऐसे अध्ययन कभी नहीं किए ?”

उब मैंने इन ‘अध्यासों’ के विषय में और जानकारी देने की कोशिश की तो वह छिन्नोत्तर देता, मगर अब मैं उनके के लिए मुझ से उसके मुँह से कुछ बचा दिया।

बहुत अधिक उत्तेजित और व्यग्र-सा लग रहा था। मैंने उसके लिए बोलना आसान बनाने की कोशिश की, और जल्दी ही वह असली बात पर आया।

“क्या तुम ब्रह्मचर्य व्रत से रहते हो?” उसने संकोच से पूछा।

“क्या मतलब है तुम्हारा? क्या तुम्हारा तात्पर्य लैंगिक रूप से है?”

“हाँ, हाँ! मैं पिछले दो वर्षों से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर रहा हूँ, जब मैंने इन अभ्यासों के बारे में जाना। उससे पहले तो मैं व्यसनी था, तुम तो जानते ही हो।—क्या तुम कभी किसी स्त्री के साथ नहीं रहे?”

“नहीं,” मैंने कहा, “मुझे कभी सही स्त्री मिली ही नहीं।”

“पर अगर तुम्हें कोई ऐसी स्त्री मिल जाए, जो तुम्हें सही लगे, तो क्या तुम उसके साथ सो सकोगे?”

“हाँ, बिल्कुल।—अगर वह इसके खिलाफ नहीं है।” मैंने छूटते ही कहा।

“ओह, फिर तो तुम गलत रास्ते पर हो। व्यक्ति आंतरिक शक्तियों को तभी नियंत्रित कर सकता है, यदि वह ब्रह्मचर्य का पालन करे। मैं दो साल से ऐसा कर रहा हूँ। दो साल और एक महीने से कुछ ज्यादा। बहुत मुश्किल है यह! यों कभी-कभी मुझसे भी रहा नहीं जाता।”

“सुनो कनाउअर, मुझे नहीं लगता कि ब्रह्मचर्य व्रत इतना जरूरी है।”

“मैं जानता हूँ,” उसने विरोध किया, “सब यही कहते हैं। मगर मुझे उससे यह उम्मीद नहीं थी। जिसे ऊँची आध्यात्मिक राह पर जाना है उसे शुद्ध रहना ही होगा, निश्चित रूप से।”

“ठीक है, तो शुद्ध बने रहो! मगर मैं नहीं जानता कि कोई व्यक्ति किसी और से किस तरह अधिक शुद्ध है, अगर वह अपनी यौनेच्छाएं दबाता रहता है, या फिर क्या तुम यौन को अपने सभी विचारों और सपनों से अलग कर सकते हो?”

उसने मुझे संशय से देखा।

“नहीं, बिल्कुल नहीं। हे भगवान, मगर ऐसा होना चाहिए। मुझे रात को ऐसे-ऐसे सपने आते हैं जिन्हें मैं खुद को भी नहीं सुना सकता। भयानक सपने, हे ईश्वर!”

मुझे पिष्टोरिउस का कहा याद आ रहा था। उसके विचारों से सहमत

होते हुए भी मैं उन्हें किसी और को नहीं बता सकता था। मैं कोई ऐसी सलाह नहीं दे सकता था जिसे मैंने स्वयं अनुभव न किया हो। मैं चुप रह गया। यह सोचकर मैं दुखी हो रहा था कि मैं उन व्यक्ति को कोई सलाह देने में असमर्थ हूँ जिन्होंने मुझसे सलाह माँगी है।

"मैंने हर कोशिश कर देखी है," बनावर मेरे पास खड़ा दुखी हो रहा था, "जो कुछ व्यक्ति कर सकता है, मैंने किया है, ठंडा पानी, बर्फ, व्यायाम और दौड़, मगर कोई फर्क नहीं पड़ता। हर रात मैं ऐसे-ऐसे सपनों से जागता हूँ, जिन्हें मुझे सोचना भी नहीं चाहिए। सबसे बुरी बात तो यह है कि इस सबके कारण जो कुछ भी आध्यात्मिक मैंने सीखा है, मैं धीरे-धीरे भूलता जा रहा हूँ। मैं खुद को बिल्कुल भी एकाग्र नहीं कर पा रहा हूँ, सो नहीं पा रहा हूँ, अबमर सारी रात बिस्तर पर जागते हुए लेटा रहता हूँ।

"यह सब मुझसे और बर्दाश्त नहीं होता। अगर मैं यह संघर्ष जारी न रख सका और हिम्मत हारकर खुद को अपवित्र कर बैठा, तो मैं उन सबके भी बुरा हो जाऊँगा, जिन्होंने यह संघर्ष कभी किया ही नहीं है। तुम प्रसन्न रहे हो न?"

मैंने हामी में सिर हिलाया, पर कुछ बोल नहीं सका। अब वह मुझे बोर कर रहा था। यह देखकर मैं स्वयं से भी डर गया कि उसकी इतनी जाहिर भुशुकल और दुःख मुझ पर कोई अमर नहीं डाल रहे थे। मुझे गिरफ्तारी लगी : मैं उसकी मदद नहीं कर सकता।

"तो तुम कुछ नहीं जानते," अंत में उसने थककर दुखी हो कहा, "कुछ भी नहीं? कोई तो राह होगी! तुम कैसे करते हो?"

"मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकता, बनावर ! ऐसे मामलों में कोई किसी की मदद नहीं कर सकता। मेरी भी किसी ने मदद नहीं की। तुम खुद को संतुलित करो और उसके बाद वही करो जो तुम्हारा मन बहे। और कोई रास्ता नहीं है। यदि तुम खुद को न पा सके तो तुम्हें कोई प्रेतात्मा भी नहीं मिलने वाली, ऐसा मेरा विचार है।"

निराश और उदाम होकर षोड़ी देर तक वह घामोज देखा रहा। अचानक उसकी आँखें पृष्ठा से धमक उठीं और वह गुस्से से बिस्मावर



बोला, “ओह, तुम तो सच्चे बड़े साधू हो ! तुम्हें भी लतें लगी हैं, मैं जानता हूँ ! तुम बड़े जानी होने का ढोंग करते हो, मगर दरअसल तुम भी उसी गंदगी में सने हो जिसमें मैं और हम सब ! तुम सुअर हो ! सुअर, जैसे मैं खुद । हम सब सुअर हैं ।”

मैं उसे खड़ा छोड़ आगे बढ़ गया । वह दो-तीन कदम पीछे आया, फिर रुक गया, मुड़ा और वहाँ से भाग गया । सहानुभूति और घृणा की भावना से मुझे उबकाई-सी आने लगी । मुझे तब तक इससे मुक्ति न मिली जब तक मैंने घर पहुँचकर अपने आसपास कुछ तसवीरें लगा स्वयं को अपने सपनों की निकटता के हवाले न कर दिया । तुरंत ही फिर से मेरा सपना वापस आ गया—घर के दरवाजे का, कुलचिह्न का, माँ और उस अपरिचित स्त्री का और इस बार मैंने उस स्त्री को इतना साफ देखा कि उसी शाम उसकी तसवीर बनानी शुरू कर दी ।

पाने घंटे की वेसुधी में खींची गई रेखाओं से जब कुछ दिनों बाद वह पेंटिंग बनकर तैयार हो गई, तो शाम को मैंने उसे दीवार पर लटकाकर उसके सामने टेबल लैम्प को झुकाकर लगा दिया और उसके सामने यूँ खड़ा हो गया जैसे यह कोई प्रेतात्मा हो जिससे मुझे निर्णय होने तक लड़ते रहना है । यह चेहरा पहले वाले चेहरे जैसा ही था, कुछ मेरे दोस्त डेमिआन से मिलता-जुलता, कुछ मुझसे मिलता-जुलता । एक आँख दूसरी से कुछ ऊपर थी, उसकी दृष्टि नियति ने भरी हुई, मेरे ऊपर से होती हुई गहन कठोरता में जा रही थी ।

उसके सामने खड़ा मैं अपने अंदर के तनावों से ठंडा पड़ने लगा । इस तसवीर से मैं सवाल पूछता, इसे कोसता, इससे प्रेम करता, इससे प्रार्थना करता, मैं इसे माँ मानता, मैं इसे प्रेमिका मानता, रंडी और वेश्या मानता, अब्राक्सस मानता । इसी बीच मुझे पिस्टोरिउस के या फिर डेमिआन के शब्दों का ध्यान आया; मैं याद नहीं कर सका कि वे शब्द कब कहे गए थे, किंतु मैं उन्हें फिर से सुनना चाहता था । ये शब्द याकोव के ईश्वर के देवदूत से संघर्ष के विषय में थे, “जब तक तुम मुझे आशीर्वाद न दोगे, मैं तुम्हें जाने न दूँगा ।”

हर आह्वान के साथ टेबल लैम्प की रोशनी में चमकता वह चेहरा बदल

जाना, वह हन्ता और स्पष्ट हो जाता, अंधेरे में डक जाता—पत्रमुर्दा आँखों की निस्तेज पलकें बंद करना, फिर घोचना, अपनी जनती नखरें खानना। यह एक स्त्री थी, पुष्प था, लटकी थी, एक निगु था, एक पगु था, यह छोटें-मे रंगीन हिम्मे में गुम हो जाता, विशाल रूप में फिर से उभर आता। अंत में अपने अंतर्भूत की आवाज को मानते हुए मैंने आँखें बंद कर लीं और तमबीर को अपने ही अंदर, पहले में वही अधिक पुष्ट और शक्ति-शाली रूप में देखता रहा। मैं उस तमबीर के सामने घुटने टेकना चाहता था, किन्तु वह दृग हृद तक मेरे अंतर्भूत का हिस्सा बन चुकी थी कि मैं उसे अपने में जग नही कर सकता, या मानो उसने मेरे 'अहं' का रूप ले लिया हो।

तभी मैंने वसंत ऋतु के तूफान जैसी भारी गर्जना सुनी, उसके साथ ही मुझे भय और अनुभव की एक ऐसी भावना ने घेर लिया जिसे बताया जाना अमम्भव है। मेरे सामने सितारे चमकते और बुझ जाते, मेरे पुराने भूते बचपन तक की यादें। हाँ, मेरे इस अस्तित्व में पुरानी और विषम के बिम्बी पहने चरण की यादें मुझमें उमड़कर आगे बही जा रही थी। किन्तु ये यादें, जो मेरे सभी रट्म्यों को दोहरा रही थी, सिर्फ भूत और वर्तमान वान पर ही नहीं रकी। वे इसमें भी आगे निकल गईं, भविष्य को दर्शाती हुए मुझे वर्तमान में खींचकर ऐसे जीवन-रूपों की ओर ले जा रही थी, जिनकी तस्वीरों की चमक मुझे चौंधिया रही थी, किन्तु जिनके बारे में मैं बाद में याद न कर सका।

गल में मैं अचानक गहरी नींद में जाग गया, विस्तर पर मैं पूरी तरह कपड़े पहने टेढ़ा सो रहा था। कमरे को रोशन करने पर मुझे लगा कि मुझे कोई जरूरी बात याद करनी थी, किन्तु मुझे पहले का कुछ भी याद ही नहीं आ रहा था। धीरे-धीरे मुझे याद आने लगा। मैं वह तमबीर तलाशने लगा। यह अब दीवार पर न थी, मेज पर भी न थी। तभी मुझे कुछ आभास हुआ कि शायद मैंने उसे जला डाला होगा। या फिर वह मेरा सपना था, जिसमें मैं उसे अपनी हथेली पर जलाकर उसकी राख को निगल गया था?

मैं बेचैन हो उठा। टोप लगाकर घर में और फिर गली में बाहर पहुँचता गया जैसे ऐसा करने के लिए मजबूर था। कितनी ही सड़कों और



“नहीं। मैं तो जिन्हा चना आया। क्या तुमने मुझे आवाज दी थी? तुमने ज़रूर मुझे आवाज दी होगी। वैसे तुम यहाँ क्या कर रहे हो? अभी तो रात है।”

अपने पतले हाथों में वह मुझसे लिपट गया।

“हाँ, रात है। कुछ ही देर में सवेरा होना है। चूँकि तुम मुझे भूले नहीं हो, सिनक्लेयर, क्या तुम मुझे माफ़ कर सकोगे?”

“किस बात के लिए।”

“उफ़, उम्र दिन मेरा बर्ताव कितना बुरा था !”

अब मुझे अपने बीच हुई बातचीत याद आई। शायद चार-पाँच साल पहले की बात थी? मुझे लगा जैसे इस बीच एक जीवन बीत गया हो। मगर अब अचानक मुझ सब याद आ गया। सिर्फ़ यही नहीं कि हमारे बीच क्या हुआ था, बल्कि यह भी कि मैं यहाँ क्यों आया था और कनाडअर यहाँ क्या करना चाहता था।

“तो तुम आत्महत्या करना चाहते थे, कनाडअर?”

वह मर्दों और भय में काँप उठा।

“हाँ, मैं चाहता था। मैं नहीं जानता कि मैं सफल होता या नहीं। मैं सुबह होने तक प्रतीक्षा करना चाहता था।”

मैं उसे खुले स्थान पर ले आया। सुबह के प्रकाश की समानांतर किरणें ठंडे और उदाम स्लेटी बातावरण पर चमकने लगी थी।

हम सड़के को बाँह में पकड़कर मैं कुछ देर चलता रहा। मैंने स्वयं को कहने सुना—‘अब तुम घर जाओगे और किसी से कुछ भी नहीं कहोगे! तुम गलत राह पर चल रहे थे! हम सब गुजर भी नहीं हैं, जैसा कि तुम मानते हो। हम सब मनुष्य हैं। हम ईश्वरों का निर्माण करते हैं और उन्हीं में मंथन करने हैं, और वे हमें आशीर्ष देते हैं।’

हम बिना बोलें आगे चलते रहे और अलग होकर अपनी-अपनी राह चले गए। स्क्वैर में धीरे-धीरे समय में मुझे जो सबसे सुंदर चीज़ मिली वह थी—पिट्टोरिउस और उनके ऑर्गन के साथ या उसके साथ आग के सामने बैठकर गुज़ारा गया समय। हम अब्राहमस के बारे में कोई यूनानी गद्य पढ़ने और वह मुझे वेदों के अनुवाद सुनाता, पवित्र “ॐ” का उच्चारण

सिखाता। फिर भी ये तांत्रिक क्रियाएँ मेरे आंतरिक विकास का कारण नहीं, बल्कि बात इसके ठीक विपरीत थीं। जिस बात से मुझे लाभ पहुँचा, वह थी मेरी स्वयं की खोज में हुई प्रगति, मेरा अपने सपनों, विचारों में बढ़ता विश्वास और शक्ति, वह बढ़ता ज्ञान जो मैं खुद में समेटे हुए था।

पिष्टोरिउस और मैं एक दूसरे को लगभग हर संभव तरीके से जानते थे। मुझे उसका खयाल-भर करना पड़ता और मुझे भरोसा हो जाता कि वह या फिर उसका संदेश आ जाएगा। मैं उससे कोई भी प्रश्न पूछ सकता था, जैसे मैं डेमिआन से पूछता था, इसके लिए उसे मौजूद होने की जरूरत नहीं थी। मुझे पिष्टोरिउस पर ध्यान लगाकर अपना प्रश्न गहन विचार के रूप में केन्द्रित-भर करना पड़ता था। उसके बाद प्रश्न में लगाई गई मेरी सारी आत्मिक शक्ति उत्तर के रूप में वापस आ जाती। किंतु उसका ध्यान करने के लिए मैं जिस चित्र की कल्पना करता, न वह पिष्टोरिउस का था, न ही डेमिआन का, बल्कि वह चित्र था मैंने जो सपने में देखा था, जिसका चित्र बनाया था, आधा पुरुष, आधा नारी, मेरी कल्पना का दैत्य। यह अब मेरे सपनों-भर में न था, न ही मात्र कागज पर चित्रित था, बल्कि मेरे अंदर रहता था, एक आदर्श के रूप में, मेरे व्यक्तित्व के विकास के रूप में।

आत्महत्या का असफल प्रयास करने वाला कनाउअर जिस प्रकार का सम्बन्ध मेरे साथ बना रहा था, वह मुझे अजीब और कभी-कभी मजाकिया लगता। जब से मैं उस रात उसके पास भेजा गया था, वह मुझसे यूँ चिपका रहता जैसे आज्ञाकारी सेवक या कुत्ता, अपना जीवन मुझसे जोड़ना चाहता और पूरी तरह मेरी बात मानता। वह मेरे पास चौंका देने वाले विचार और इच्छाएँ लेकर आता, वह प्रेतात्माएँ देखना चाहता था, कबाला सीखना चाहता था और जब मैं उसे यकीन दिलाता कि मैं इन बातों के बारे में स्वयं कुछ नहीं जानता हूँ, तो मेरा यकीन नहीं करता। उसे लगता, मेरी शक्ति से परे कुछ भी नहीं है। किंतु बड़ी अजीब बात थी कि वह ठीक तभी मेरे पास अपने आश्चर्यजनक और सूखतापूर्ण प्रश्न लेकर आता जबकि स्वयं अपनी ही किसी पहेली को सुलझाने में लगा होता और अक्सर उसकी काल्पनिक अवधारणाएँ और इच्छाएँ मुझे ऐसा शब्द दे जाती, जो मेरी

पहेली मुलझाने में लगा होना । और अकसर वह बोर करता और मैं उसे बेरग्री में घापम भेज देता, किंतु साथ ही मैं जानता था कि वह भी मेरे पास भेजा गया था, कि जो भी मैं उसे देता हूँ वह उसमें भी दोगुना होकर मेरे पास आता है, कि वह भी मेरे लिए एक पय-प्रदत्तक या फिर वह एक राप्ता है ही । उन तान्त्रिक पुस्तकों, कृतियों ने, जो वह मेरे पास लाया, जिनमें वह अपना इनाज बूँद रहा था, मुझे मेरी ममत्त में कहीं अधिक गिराया ।

बाद में बनावडर मेरी राह में बच चला गया, मुझे पता ही नहीं चलता । उसके साथ किसी बात पर वैचारिक मर्पण होने की नौबत ही नहीं आई । किंतु पिण्डीरिउम का बान और थो । अपने इस मित्र के साथ सेंट स्कूल के आधुरी दिनों में कुछ और विचित्र अनुभव हुआ ।

अत्यधिक निरापद लोग भी अपने जीवनकाल में कभी-कभी कर्तव्य और कृतज्ञता की पवित्रता के साथ मर्पण से बच नहीं पाते । हर एक को एक बार ऐसा बदम उठाना पड़ता है जो उसे उसके माना-पिता, उसके अध्यापकों से अलग कर देता है, हर एक को एकाकीपन की कठोरता को अनुभव करना पड़ता है । यह अलग बात है कि इसे बिरने ही सह पाते हैं और अधिकतर जल्दी ही घुटने टेक देते हैं ।—अपने माता-पिता और उनकी दुनिया, अपने बचपन के 'प्रकाशित विश्व' में मैं कड़े मर्पण से अलग नहीं हुआ था, बल्कि धीरे-धीरे, लगभग अनजाने में उनसे दूर होकर उनके लिए अजनबी बन गया था । मुझे दुख होता, पिता के घर—अपनी जन्मभूमि जाने पर बड़ा ही कड़वा वस्तु भुगतना पड़ता, मगर यह सब मेरे मन तक न जाता था, यह सब महा जा सकता था ।

किंतु जब हम प्रेम और आदर आदत में न देकर अपनी इच्छा में देते हैं, जब हम अपने हृदय में गिप्य और मित्र बने रहने हैं, तो यह बड़ा ही दुखदायी पल होता है जब हमें अपना ही ज्ञान होना है कि हमारे अन्दर बहती लहरें हमें हमारे प्रियजनों से दूर से जाना चाहती हैं । तब हर विचार जो मित्र को, गुरु को दूर करता है, हमारे दिल में जहरीले काँटे की तरह धुमता है, बचाव में किया गया हर प्रहार पलटकर अपने ही चेहरे पर लगता है । उसे, जो स्वयं में नैतिकता को प्रतिष्ठित मानता

था, 'वेईमानी' और 'अकृतज्ञता' जैसे शब्द ताने और वदनामी के कारण लगते हैं, और भयभीत मन डर के मारे वचन की प्यारी पवित्र घाटियों में वापस दुबक जाता है और विश्वास नहीं करता कि यह भंगुरता भी आवश्यक है, कि यह बंधन भी तोड़ना ही होगा।

समय के साथ मेरे अन्दर एक ऐसी भावना जन्म ले चुकी थी जो मेरे मित्र पिश्टोरिउस को निश्चित रूप से अपना नायक मानने को तैयार न थी। उसकी मित्रता, उसकी सलाह, सुकून, उसकी नजदीकी मेरी किशोरा-वस्था के महत्वपूर्ण दिनों के अनुभव थे। उसके रूप में मुझे ईश्वर ने बातें की थीं। उसके मुँह ने मेरे सपने अपनी परिभाषा और व्याख्या लेकर लौटे थे। उसने मुझे स्वयं पर भरोसा करना सिखाया था।—आह, और अब मैं धीरे-धीरे अपने अन्दर उसके प्रति जन्म लेता विरोध महसूस कर रहा था। उसके शब्दों में मुझे कुछ ज्यादा ही शिक्षा की महक आने लगी। मुझे लगा, शायद वह मेरे एक ही पहलू को ठीक से समझता है।

हमारे बीच न कोई झगड़ा हुआ, न कहा-सुनी और न ही कोई हिसाब। मैंने सिर्फ एक शब्द—वास्तव में एक शब्द-भर कहा था, जिससे हमारे बीच की माया का रंग उतर गया।

ऐसी किसी घटना का पूर्वाभास मेरे मन में कुछ समय से था जो एक रविवार की सुबह उसके अध्ययन-कक्ष में एक भावना में बदल गया। हम आग के सामने फर्श पर लेटे थे और वह धर्म-रूपों के रहस्यों की चर्चा कर रहा था। यह सब मुझे बड़ा ही भौंडा और व्यर्थ लगा, किसी भी तरह से महत्वपूर्ण न लगा, यह सब सिर्फ शिक्षा से भरा हुआ था। मुझे लगा, जैसे यह खोई दुनियाओं के खंडहर में वेतुकी खोज है। उस एक ही पल में धर्म-शास्त्रों के इन रूपों और चले आ रहे विश्वासों के मिश्रण के इस खेल से मुझे तीखी घृणा हो गई।

“पिश्टोरिउस,” मैं अचानक ही इतने गुस्से से बोला जिसने मुझे हैरान करने के साथ-साथ डरा भी दिया, “आपको एक बार कभी एक सपना सुनाना चाहिए, जिसे आपने रात में देखा हो। यह जो आव बोल रहे हैं, यह सब—यह सब बहुत ही घिसा-पिटा और पुराना है !”

उसने मुझे कभी इस तरह बात करते नहीं सुना था और स्वयं मैंने भी

उसी क्षण शर्म और भय के साथ यह महमूस किया कि वह तीर, जिसे मैंने चलाया था और जो उसके ठीक सीने पर लगा था, वह उसी के तरकश में निकाला गया था। जो आरोप वह स्वयं पर अद्वैतव्यंग्यात्मक रूप में लगाया करता था, उसे ही उसकी ओर मैं गुस्से में नुफीला बनाकर फेंक रहा था।

कुछ देर तक बिलकुल चुप रहकर वह इन्ने महमूस करता रहा। मन में डरते हुए मैं उसे पीला पड़ता देखता रहा।

कुछ देर की सन्धी और कड़ी चुप्पी के बाद उसने आग में लकड़ी डाली और स्थिर स्थिर में बोला, "आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं, सिनक्नेयर, आप काफी चतुर हैं। अब मैं आपको अपनी इन धिमी-पिटी बातों से नहीं लार्डूंगा।"

यह बड़ी शांति में बोला रहा था, किंतु मैं उसकी टोस को मुन रहा था। यह क्या कर डाला था मैंने ?

मेरे आँसू बस आने ही वाले थे। मैं उसे उत्साहित करना चाहता था, उससे माफ़ी माँगना चाहता था, उसे अपने प्रेम और कृतज्ञता का विश्वास दिलाना चाहता था। मन को छू लेने वाले शब्द मुझे याद आ रहे थे, मगर मैं उन्हें वह नहीं सका। मैं लेटा रहा, आग को देखता रहा, चुपचाप। यह भी चुप रहा और दोनों यूँ ही सेटे रहे। आग जलती रही, हल्की पड़ती रही; हर घुमती लपट के साथ मुझे कुछ मुदर और आत्मीय जलता और घर्म होता प्रतीत हुआ, जो कभी सौट नहीं सकता था।

"मुझे डर है कि आप मुझे गलत समझ रहे हैं।" मैंने बहुत धीरे से सूधी और घरघराती आवाज में कहा। मूर्खतापूर्ण ये शब्द बड़े यांत्रिक ढंग से मेरे तोंठों पर आए, जैसे मैं किसी अचवार में अपने उपन्यास की शृंगला के एक अंश को पढ़ रहा होऊँ।

"मैं आपको बिलकुल ठीक समझ रहा हूँ," पिस्टोरिउस ने धीरे से कहा, "आप सही हैं।" यह कहा। फिर धीरे-धीरे बोला, "जिन्ना एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के खिलाफ सही हो सकता है।"

नहीं, नहीं, मैं गलत हूँ ! मेरे अदर से आवाज आई, किंतु मैं वह नहीं सका। मैं समझ रहा था कि मैंने अपने शब्दों से उसकी मुख्य कमजोरी, उसकी मुश्किल, उसके घाव पर अपनी उँगली रख दी थी। मैंने उसे वहीं



छू दिया था जहाँ उसे खुद पर भरोसा न था। उसका आदर्श 'पुरातन' ही था। वह गुजरे हुए की ही खोज में था। वह कल्पनाप्रधान था। तभी मुझे अहसास हुआ—जो कुछ पिष्टोरिउस मेरे लिए था, जो कुछ उसने मुझे दिया था, ठीक वही वह स्वयं नहीं बन सकता था। न ही स्वयं को वह सब दे सकता था। वह मुझे एक ऐसे रास्ते पर ले गया था, जो उसी को, स्वयं नेता को, पीछे छोड़ जाता था।

भगवान जाने कैसे इस तरह के शब्द मुंह से निकलते हैं ! मेरा मतलब इतना गलत कतई न था, न ही मैंने ऐसे तूफान की कल्पना की थी। मैंने कुछ कहा था, जिसे कहते हुए मैं भी पूरी तरह जानता नहीं था। मैंने एक हल्के-से, लगभग मजाकिया, बुरे विचार के सामने अपने घुटने टेक दिए थे और उसी के माध्यम से नियति ने अपना रूप ले लिया था। मैंने एक छोटी-सी असावधानी से बर्बरता-भरा काम कर डाला था, जो मेरे लिए निर्णायक तो बन गया था।

उफ, कितना चाहा था मैंने कि वह मुझ पर क्रोधित हो, अपनी बात के बचाव में सफाई दे, मुझ पर चिल्लाए ! पर उसने ऐसा कुछ नहीं किया। सभी कुछ मुझे अपने ही अंदर करना पड़ा। वह मुस्कराता, अगर वह ऐसा कर सकता। पर वह ऐसा नहीं कर सका, इसी से मुझे पता लग रहा था कि मैंने उसे कितना दुख पहुँचाया है।

मुझ जैसे घृष्ट और अकृतज्ञ विद्यार्थी के प्रहार को इतनी शांति से सहकर, मुझे सही बताकर, मेरे शब्दों को नियति के रूप में मान्यता देकर पिष्टोरिउस ने मेरे अंदर आत्मधिकार का भाव पैदा कर दिया था, मेरी विवेकहीनता को हजार गुना बढ़ा दिया था। प्रहार करते हुए मुझे लग रहा था कि मेरा मुकाबला एक शक्तिशाली, सशस्त्र व्यक्ति से होगा—किंतु वह तो शांत, सहनशील, निहत्था व्यक्ति निकला, जिसने चुपचाप हथियार डालकर आत्मसमर्पण कर दिया था।

बहुत देर तक हम बुझती आग के सामने लेटे रहे, जिसमें हर चमकती आकृति, हर बुझता अंगारा, मुझे मेरी कर्तव्यविमुखता की ओर ठेल रहा था। अंत में मैं और सहन न कर सका, खड़ा हुआ और चल दिया। बहुत देर तक उसके दरवाजे के सामने खड़ा रहा, बहुत देर तक उसकी अँधेरी

मीढ़ियो पर, और बहुत देर तक उमके पर के सामने इंतजार करता रहा कि शायद वह आएगा और मेरे पीछे-पीछे चले देगा। फिर मैं आगे बढ़ गया और महर में, महर के बाहर, पार्क और जंगल में शाम तक घूमता रहा। और उस समय पहली बार मैंने अपने भाषे पर केन का निशान महसूस किया।

धीरे-धीरे मैं ठीक में मोड़ने की हालत में आया। मेरे सभी विचारों का उद्देश्य मेरी निदा और पिग्टोरिउस का समयन था। और सभी का अंत ठीक विपरीत हुआ। मैं अपने अपशब्दों पर मेद व्यक्त करने और उन्हें वापस लेने को हजार बार तैयार था—किंतु यह सत्य तो था ही। मैं अब पिग्टोरिउस को ममन रहा था, उमके सम्पूर्ण स्वप्न को अपने सामने देख रहा था। यह स्वप्न था पादरी बनने और नए धर्म की घोषणा करने का, ऊँचा नटने के नए रूपों, प्रेम, पूजा को सामने लाने का, नए इंगितों का निर्माण करने का। किंतु यह उमकी ताकत न थी, यह उमका कार्य न था। यह अकसर भूतकाल में घूमता रहता, गुजरे समय को वह भली भाँति जानता था, वह मिछ और भारत, मिछा और अब्रावमस के बारे में बहुत कुछ जानता था। उमका प्रेम उन दृश्यों में जुड़ा था, जिन्हें धरती पहले ही देख चुकी थी और माय ही वह मन-ही-मन भली भाँति जानता था कि नया वास्तव में नया और भिन्न होगा और इसका स्रोत तारी जमीन में निकलेगा, मघहानयो और पुस्तकालया में नहीं। शायद उमका काम लोगों को लोगों तक पहुँचाना था, जँमे कि उमने मुझे पहुँचाया था। कुछ अनुमान-अनजाना था नए देवता देना उमका काम नहीं था।

इसी समय एक बात मुझे तेज सपट की तरह जलाने लगी—हरेक के लिए एक 'कार्य' निर्धारित है, किंतु न तो वह खुद उसे चुन सकता है, न मनमर्त्री ध्यावरा कर सकती है, न ही अपने अनुसार उसे शुरू कर सकता है। नए देवताओं की इच्छा करना गलत था, विश्व को कुछ देने की इच्छा करना बिलकुल अमंगल! एक मिट्ट ध्याकिन का खुद की योजना करने, स्यादित्व प्राप्त करने, अपनी राह पर आगे बढ़ने के सिवा कोई और बर्तव्य है ही नहीं। चाहे यह राह कही भी ले जाए।

इस विचार ने मुझे अंदर तक कंपा दिया। यही इस अनुभव का फल

था। अक्सर ही मैं भविष्य की तसवीरों से खेलता था, उन पात्रों के सपने देखता था जो मुझे खुद निभाने पड़ सकते थे, शायद एक कवि या देवपुरुष, या चित्रकार या ऐसा ही कुछ। यह सब कुछ भी न था। मेरा अस्तित्व कविताएँ लिखने के लिए, शिक्षा देने या चित्रकारी करने के लिए नहीं था। न मैं, न ही कोई और। यह सब तो वस साथ में था। वास्तविक कार्य तो हरेक के लिए वस एक ही था—अपने अंतर्मन की राह ढूँढ़ना। वह कवि या पागल, देवपुरुष या अपराधी, कुछ भी बन सकता था—यह मामला उसका न था। इससे कुछ फर्क भी नहीं पड़ता था। उसका काम अपनी नियति को तलाशना था, मनचाही नियति नहीं, और उसे स्वयं में पूर्ण रूप से, पूरे मन से जीना था। बाकी सब अधूरा था, बचाव की एक कोशिश थी, भीड़ के आदर्शों की ओर उड़ान थी, सुविधा और अपनी ही अंतर्ऋत्मा से भय का प्रतीक था। यह नई पवित्र दृष्टि मेरे सामने उठती चली गई, सैकड़ों बार कल्पित, शायद पहले देखी भी हो, किंतु आज पहली बार उसे अनुभव कर रहा था। यह प्रकृति का एक प्रयोग था, अज्ञात के बीच एक जुआ, शायद एक नए उद्देश्य के लिए, शायद किसी उद्देश्य, और इस प्रयोग को अपनी गहराइयों में जारी रखना, उसकी इच्छा को अपने में महसूस करना और पूरी तरह अपना लेना, यही मेरा कार्य था। सिर्फ यही !

मैं पहले ही बहुत अधिक अकेलापन सह चुका था। मैं अब समझा कि अकेलापन तो और भी गहरा हो सकता है, जिससे बचाव की कोई राह नहीं है। मैंने पिष्टोरिउस से दोबारा समझाते का प्रयास नहीं किया। हम मित्र बने रहे किंतु सम्बन्ध बदल गया। फिर भी, हमने इस बारे में एक बार बात की, दरअसल पिष्टोरिउस ने ही बात शुरू की थी। उसने कहा, “तुम तो जानते ही हो, मेरी पादरी बनने की इच्छा है। विशेष तौर पर मैं उस धर्म का पादरी बनना चाहता हूँ जिसके विषय में मैं यह जानता हूँ कि मैं वह कभी नहीं बन सकूँगा—मैं यह जानता हूँ, जानता था, हालाँकि मैंने इसे कभी स्वीकारा नहीं, यह मैंने कुछ समय पहले ही जाना। इसके बदले मैं कुछ अन्य पादरियों वाले कार्य करूँगा, शायद ऑर्गन के साथ, या किसी और तरह। किंतु मुझे अपने चारों तरफ ऐसी चीजें चाहिए जिन्हें मैं सुंदर और पवित्र मानूँ, ऑर्गन का संगीत और रहस्य, संकेत और किंवदंतियाँ।

मुझे इनकी आवश्यकता है और मैं इन्हें छोड़ नहीं सकता। यह मेरी कमजोरी है। कभी-कभी, गिनवनेयर, मैं महसूस करता हूँ कि मुझे ऐसी इच्छाएँ नहीं करनी चाहिए, कि वे एक कमजोरी और संभव की निशानी हैं। यही कही अधिक बेहतर और सही होगा, यदि मैं खुद को चुपचाप नियति के हथाले कर दूँ, बिना किसी दावे के। किंतु मैं ऐसा नहीं कर सकता, मुझमें इसकी सामर्थ्य नहीं है। शायद आप ऐसा कर सकते हैं। यह कठिन है। यही सबसे अधिक कठिन कार्य है, नौजवान। मैंने अक्सर इसका सपना देखा है, मगर मैं ऐसा नहीं कर पाता हूँ, ऐसा सोचकर काँप जाता हूँ। मैं इतना अकेला और नगा नहीं खड़ा हो सकता। मैं भी एक साधारण, कमजोर कुत्ता हूँ, जिसे कुछ ऊष्मा और भोजन चाहिए और कभी-कभी अपने ही जैमे की नज़दीकी। जो अपनी नियति के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहता, उसे अपने जैमे नहीं मिलते, वह अपने चारों ओर ठंडा अंतरिक्ष लेकर अकेला खड़ा रह जाता है। जानते हो, यही तो है गेटजेमन के बाग में खड़ा जीमस। ऐमे भी शहीद हुए हैं, जिन्होंने स्वयं को सलीब पर लटकाए जाने दिया, किंतु वे भी कोई नायक न थे, मोक्ष की प्राप्ति न हुए, क्योंकि वे भी वही चाहते थे जो उन्हें अच्छा लगता था, जिसकी उन्हें आदत थी। उनके भी आदर्श थे, उनके भी आदर्श व्यक्ति थे। जो व्यक्ति मात्र नियति चाहता है उसके न तो आदर्श व्यक्ति होते हैं, न ही आदर्श होते हैं, कुछ भी प्यारा, कुछ भी धर्म देने वाला नहीं होता ! और यही है वह राह जो व्यक्ति को चलनी चाहिए। मेरे-नुम्हारे जैमे सोग वास्तव में अकेले हैं। किंतु हम एक-दूसरे के तो हैं, हमारे मन में एक गुप्त गंतोष तो है कि हम औरों से अलग हैं, कि हम लोक में हटकर कुछ कर रहे हैं, कुछ भिन्न की इच्छा कर रहे हैं। किंतु यदि सही राह पर अंत तक चलना है तो हमें यह भी छोड़ना होगा। व्यक्ति को प्रातिकारी, बेमिसान, शहीद बनने की इच्छा भी छोड़नी होगी। यह सोचा भी नहीं जा सकता—”

नहीं, यह सोचा भी नहीं जा सकता। किंतु इसका सपना देखा जा सकता था, पूर्वाभास किया जा सकता था, समझा जा सकता था। जब कभी मुझे नितांत अचेष्टापन मिलता, तो मुझे ऐसा कुछ महसूस होता। तब मैं अपने अंदर शक्ति और स्वयं को अपनी नियति की छवि के सामने पाता।

था। अक्सर ही मैं भविष्य की तसवीरों से खेलता था, उन पात्रों के सपने देखता था जो मुझे खुद निभाने पड़ सकते थे, शायद एक कवि या देवपुरुष, या चित्रकार या ऐसा ही कुछ। यह सब कुछ भी न था। मेरा अस्तित्व कविताएँ लिखने के लिए, शिक्षा देने या चित्रकारी करने के लिए नहीं था। न मैं, न ही कोई और। यह सब तो बस साथ में था। वास्तविक कार्य तो हरेक के लिए बस एक ही था—अपने अंतर्मन की राह ढूँढ़ना। वह कवि या पागल, देवपुरुष या अपराधी, कुछ भी बन सकता था—यह मामला उसका न था। इससे कुछ फर्क भी नहीं पड़ता था। उसका काम अपनी नियति को तलाशना था, मनचाही नियति नहीं, और उसे स्वयं में पूर्ण रूप से, पूरे मन से जीना था। बाकी सब अधूरा था, बचाव की एक कोशिश थी, भीड़ के आदर्शों की ओर उड़ान थी, सुविधा और अपनी ही अंतरात्मा से भय का प्रतीक था। यह नई पवित्र दृष्टि मेरे सामने उठती चली गई, सैकड़ों बार कल्पित, शायद पहले देखी भी हो, किंतु आज पहली बार उसे अनुभव कर रहा था। यह प्रकृति का एक प्रयोग था, अज्ञात के बीच एक जुआ, शायद एक नए उद्देश्य के लिए, शायद किसी उद्देश्य, और इस प्रयोग को अपनी गहराइयों में जारी रखना, उसकी इच्छा को अपने में महसूस करना और पूरी तरह अपना लेना, यही मेरा कार्य था। सिर्फ यही !

मैं पहले ही बहुत अधिक अकेलापन सह चुका था। मैं अब समझा कि अकेलापन तो और भी गहरा हो सकता है, जिससे बचाव की कोई राह नहीं है। मैंने पिश्टोरिउस से दोबारा समझौते का प्रयास नहीं किया। हम मित्र बने रहे किंतु सम्बन्ध बदल गया। फिर भी, हमने इस बारे में एक बार बात की, दरअसल पिश्टोरिउस ने ही बात शुरू की थी। उसने कहा, “तुम तो जानते ही हो, मेरी पादरी बनने की इच्छा है। विशेष तौर पर मैं उस धर्म का पादरी बनना चाहता हूँ जिसके विषय में मैं यह जानता हूँ कि मैं वह कभी नहीं बन सकूंगा—मैं यह जानता हूँ, जानता था, हालाँकि मैंने इसे कभी स्वीकारा नहीं, यह मैंने कुछ समय पहले ही जाना। इसके बदले मैं कुछ अन्य पादरियों वाले कार्य करूँगा, शायद ऑर्गन के साथ, या किसी और तरह। किंतु मुझे अपने चारों तरफ ऐसी चीजें चाहिए जिन्हें मैं सुंदर और पवित्र मानूँ, ऑर्गन का संगीत और रहस्य, संकेत और किंवदंतियाँ।

मुझे इनकी आवश्यकता है और मैं इन्हें छोड़ नहीं सकता। यह मेरी कमजोरी है। पभी-कभी, गिनबनेयर, मैं महसूस करता हूँ कि मुझे ऐसी इच्छाएँ नहीं करनी चाहिए, कि वे एक कमजोरी और वैभव की निशानी हैं। यही बही अधिक बेहतर और सही होगा, यदि मैं छुद को चुपचाप नियति के हवाले कर दूँ, बिना किसी दावे के। किंतु मैं ऐसा नहीं कर सकता, मुझमें इसकी सामर्थ्य नहीं है। शायद आप ऐसा कर सकते हैं। यह कठिन है। यही समय अधिक कठिन कार्य है, नौजवान। मैंने अक्सर इसका सपना देखा है, मगर मैं ऐसा नहीं कर पाता हूँ, ऐसा मोचकर काँप जाता हूँ। मैं इतना अकेला और नंगा नहीं खड़ा हो सकता। मैं भी एक साधारण, कमजोर कुत्ता हूँ, जिसे कुछ ऊँचा और भोजन चाहिए और कभी-कभार अपने ही जैमे की नजदीकी। जो अपनी नियति के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहता, उसे अपने जैमे नहीं मिनते, वह अपने चारों ओर ठंडा अंतरिक्ष लेकर अकेला खड़ा रह जाना है। जानते हो, यही तो है गेठजेमन के बाग में खड़ा जीसस। ऐसे भी शहीद हुए हैं, जिन्होंने स्वयं को मनीष पर लटकाए जाने दिया, किंतु ये भी कोई नायक न थे, मोक्ष को प्राप्त न हुए, क्योंकि वे भी यही चाहते थे जो उन्हें अच्छा लगता था, जिसकी उन्हें आदत थी। उनके भी आदर्श थे, उनके भी आदर्श व्यक्ति थे। जो व्यक्ति मात्र नियति चाहता है उसके न तो आदर्श व्यक्ति होने हैं, न ही आदर्श होने हैं, कुछ भी प्यारा, कुछ भी धैर्य देने वाला नहीं होता ! और यही है वह राह जो व्यक्ति को चलनी चाहिए। मेरे-नुम्हारे जैमे सोग वास्तव में अकेले हैं। किंतु हम एक-दूसरे के तो हैं, हमारे मन में एक गुप्त गतीय तो है कि हम औरों से अलग हैं, कि हम सीक में हटकर कुछ कर रहे हैं, कुछ भिन्न की इच्छा कर रहे हैं। किंतु यदि सही राह पर अंत तक चलना है तो हमें यह भी छोड़ना होगा। व्यक्ति को प्रातिकारी, बेमिमान, शहीद बनने की इच्छा भी छोड़नी होगी। यह सोचा भी नहीं जा सकता—"

नहीं, यह सोचा भी नहीं जा सकता। किंतु इसका सपना देखा जा सकता था, पूर्वाभास किया जा सकता था, समझा जा सकता था। जब कभी मुझे नितात अकेलापन मिलता, तो मुझे ऐसा कुछ महसूस होता। तब मैं अपने अंदर शांति और स्वयं की अपनी नियति की छवि के सामने पाता।

उसकी आँखें ज्ञान से भरी होतीं, पागलपन से भरी होतीं, उनमें प्रेम की चमक होती, गहरी घृणा की चमक भरी होती, यह सब विलकुल अनूठा था। उसमें से व्यक्ति अपने लिए कुछ चुन नहीं सकता था, किसी चीज की इच्छा नहीं कर सकता था। यहाँ तक पिश्टोरिजस मुझे ले आया था।

उन दिनों मैं यूँ घूमता रहता था जैसे कोई अंधा। मेरे अंदर तूफान उमड़ रहा था। हर कदम पर खतरा था। मेरे चारो तरफ विचलित कर देने वाला अँधेरा छाया हुआ था, जिसमें मेरी अब तक चली हुई राह डूबकर खो गई थी। अपने ही अंदर मैं अपने नायक की छवि देख रहा था, जो डेमिआन से मिलती थी और जिसकी आँखों में मैं अपनी नियति को देख देख रहा था।

मैंने एक कागज पर लिखा—“एक नायक मुझे छोड़ गया है। मैं पूरी तरह अँधेरे में खड़ा हूँ। मैं एक भी कदम अकेले नहीं उठा सकता। मेरी मदद करो !”

मैं इसे डेमिआन को भेजना चाहता था, किंतु नहीं भेज सका। जब भी मैं ऐसा करना चाहता वह मुझे बड़ा बेहूदा और बचकाना लगता। किंतु मुझे अपनी छोटी-सी प्रार्थना अच्छी तरह याद थी और मैं उसे अक्सर ही गाता था। हर समय यह मेरे साथ रहती। मैं अब इसे समझने लगा था।

मेरे स्कूल के दिन समाप्त हुए। मैं छुट्टियों में घूमने जा रहा था, जो कि मेरे पिता की योजना थी और उसके बाद मुझे विश्वविद्यालय में पढ़ाई जारी करनी थी। भगर मैं किस विषय में पढ़ाई करूँगा, यह मैं नहीं जानता था। मुझे दर्शनशास्त्र के छात्राधी अध्ययन की इजाजत मिली। कोई और विषय भी होता, तो कोई फर्क नहीं पड़ता।

## एवा

छुट्टियों में एक बार मैं उन घर गया जहाँ सालों पहले डेमिआन अपनी माँ के साथ रहा करता था। बगीचे में एक बूढ़ी औरत टहल रही थी। मैंने उसने बात की तो पता चला कि अब वही इस घर की मालकिन थी। मैंने डेमिआन के परिवार के बारे में पूछा। उसे वे लोग बहुत अच्छी तरह याद थे किन्तु उसे यह मानूँ नहीं था कि वे अब कहाँ रहते थे। मेरी रुचि देख-कर वह मुझे घर के अंदर ले गई, एक अलबम निकाला और मुझे डेमिआन की माँ की एक तस्वीर दिखाई। मुझे उसकी जरा भी याद न थी। किन्तु जैसा ही मैंने वह छोटी-सी तस्वीर देखी, मेरे दिल की धड़कन रुक गई। —यही तो था मेरे सपने का चित्र ! यही तो थी, वह दीर्घकाय, कुछ पुराने जैसी नारी आकृति, अपने बेटे से मिलती-जुलती, दुनार के कठोरता के, कितने ही भावों के अंश लिये, सुंदर और आकर्षक, मुंदर और पहुँच में दूर, माँ और वह जैसी, नियति और प्रियतमा ! यही थी वह !

यह गन्वाई कि मेरे सपने की तस्वीर घरती पर रहती है मेरे लिए जबरदस्त आश्चर्य था। एक ऐसी स्त्री थी जो ठीक वैसी ही थी जैसी रैता मेरी नियति की थी ! कहाँ थी वह ? कहाँ ? — और वह डेमिआन की माँ थी।

कुछ ही दिनों के बाद मैं अपनी यात्रा पर चल दिया। कौनो विचित्र यात्रा थी। बिना आराम किए मैं एक जगह से दूसरी जगह घूमता रहा,



हर खयाल के पीछे भागता, हर समय इस स्त्री की तलाश में । ऐसे भी दिन आए जब मुझे मिलने वाला हर एक चेहरा उसकी याद दिलाता, उसी की छवियाँ पैदा करता, जो मुझे अनजान शहरों की गलियों में, रेलवे स्टेशनों में, रेलों में किसी उलझे हुए सपनों की भाँति आकर्षित करता । ऐसे दिन भी आए, जब मुझे लगता कि मेरी खोज कितनी निरर्थक है, तब मैं बेकार कहीं एक पार्क में, होटल के बगीचे में, किसी प्रतीक्षालय में बैठ जाता और अपने अंदर देखता और उस तसवीर को अपने अंदर जीवित करने की कोशिश करता । किंतु अब यह तसवीर शर्मिली और अस्थिर हो गई थी । मैं विलकुल भी नहीं सो पाता था । वस, अनजान स्थानों से रेलों में गुजरते हुए मैं आधा-पौना घंटा झपकी ले लेता था । एक बार त्सूरिख में एक सुंदर, बेहया-सी स्त्री मेरे पास आई थी । मैं उसकी ओर ध्यान दिए बिना ही आगे बढ़ गया था जैसे वह स्त्री न होकर हवा हो । किसी और स्त्री की ओर ध्यान देने के बजाय मैं उसी पल मरना पसंद करता, चाहे उसके साथ मात्र सिर्फ घड़ी-भर का ही समय क्यों न बिताना हो ।

मुझे लग रहा था कि मेरी नियति मुझे अपनी ओर खींच रही थी । मुझे लग रहा था कि मेरी तुष्टि नजदीक ही थी और मैं उसे न पाने की वजह से अधीर हो रहा था । एक दिन एक स्टेशन पर, मेरा खयाल है यह इन्सब्रुक की बात है, मैंने चलती रेल में एक चेहरा देखा जिसने मुझे उसकी याद दिला दी, और मैं कई दिन तक उदास रहा । फिर एक दिन वह आकृति दोबारा मेरे सपने में दिखाई पड़ी । अपनी इस निरर्थक भाग-दौड़ पर शर्मिदा हो मैं वापस अपने घर की यात्रा पर चल पड़ा ।

कुछ सप्ताह बाद मैंने 'हा' विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया । हर चीज मुझे मायूस कर रही थी । दर्शनशास्त्र के इतिहास की कक्षाएँ उतनी ही उबाऊ थीं जितना कि विद्यार्थियों का वर्तव । सभी कुछ पुराने ढर्रे पर चलता लग रहा था । हर कोई एक-दूसरे की देखा-देखी कर रहा था, बचकाने चेहरों पर चमकती खुशी विलकुल खोखली और दिखावटी लगती । मैं आजाद था । मेरा सारा दिन मेरे लिए था । शहर की बाहरी दीवार के पास एक घर में शांति और आराम से रह रहा था और अपनी मेज पर

नीयों की कुछ पुस्तकें रखी हुई थी। मैं उसी के साथ रहता था, उसकी आत्मा के अकेलेपन को महसूस करता, उस नियति को समझता जो उसे सगानार प्रेरित करती रहती थी, मैं उसके साथ उदास होता और यह सोचकर मृग होता कि कोई व्यक्ति ऐसा भी था जो इतनी मजबूती से अपनी राह पर चला था।

एक दिन गाम की दर में मैं शहर से गुजर रहा था। सर्दी की हवा चल रही थी, ढावों ने छात्रों के गाने की आवाजें आ रही थी। खुली गिट्टियों में तम्बाकू था। धुआँ बादल की तरह निकल रहा था। गाने की धून और उँची आवाज रखी, जड़ और नीरस थी।

महक के मोड़ पर गडा मैं शराबखानों से आती विद्यार्थियों की मर्मीनी सुनी थी अभिव्यक्तियों और से मुनता रहा। हर तरफ सामुदायिकता, हर तरफ भटक कर घटने की भावना, हर तरफ नियति को परे रखना और भीड़ की गर्म नजदीकी में पलायन।

मेरे पीछे से दो लोग बातें करते हुए आगे निकल गए। मुझे उनकी बातचीत का कुछ हिस्सा सुनाई पड़ा।

“क्या यह हमेशा किसी अफ्रीकी गाँव के युवाओं के घर जैसा ही नहीं लगता?” एक ने कहा, “बिल्कुल सही है, यहाँ तक कि शरीर पर गुदना गोदवाना भी प्रचलन में है। देखने हो, यही आज का चाक-चौबंद युवा यूरोप है।”

आवाज बहुत जानी-पहचानी लग रही थी। अँधेरी गली में मैं उनके पीछे चलता रहा। उनमें से एक जापानी था, नाटा, सम्म, एक जगह महक की नोशनी में मैंने उसके पीले मुस्कराते चेहरे को चमकते देखा।

दूसरा फिर बोला, “आपके यहाँ जापान में भी अब हालात अच्छे नहीं हैं। झुड़ के पीछे न भागने वाले लोग हर तरफ कम ही हैं। यहाँ भी कुछ हो रहा है।”

हर शब्द मुझे सुनी से कंपा रहा था। मैं बोलने वाले को जानता था। वह डेमिआन था।

तेज हवा वाली, इस रात में मैं उसका और जापानी का अँधेरी गलियों में पीछा करता रहा, उनकी बातें सुनता रहा और डेमिआन के स्वर का आनंद लेता रहा। इसमें वही पुराना स्वर था, इसमें वही पुराना संकल्प

और शांति थी, जो हमेशा से ही मुझ पर गहरा असर डालती थी। अब सब कुछ ठीक था। मैंने उसे पा लिया था।

शहर के बाहरी हिस्से में जापानी ने उससे विदा ली और एक घर का दरवाजा खोलकर चला गया। डेमिआन उसी राह लौट पड़ा। मैं रुक गया था और सड़क के बीचोंबीच उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। धड़कते दिल से मैं उसे सीधे तेज कदमों से, भूरे रंग की बरसाती में अपनी ओर आते देख रहा था। अपनी चाल बदले बिना ही वह मेरे बिल्कुल मेरे नजदीक आकर रुका, अपना हैट उतारा। अब मैं उसका चमकता, संकल्प से भरा चेहरा, चौड़ा माथा देख सकता था।

“डेमिआन,” मैं पुकार उठा।

उसने मेरी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

“लो तुम आ ही पहुँचे, मिनिक्लेयर! मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था।”

“क्या तुम जानते थे कि मैं यहाँ हूँ?”

“नहीं, मैं जानता तो नहीं था, हाँ, इसकी उम्मीद जरूर कर रहा था। देखा तो मैंने तुम्हें आज शाम को ही है, तुम पूरे समय हमारा पीछा कर रहे थे।”

“तो तुम मुझे तुरंत पहचान गए थे।”

“और क्या। हालाँकि तुम बदल गए हो। किंतु तुम पर वह निशान जो है।”

“निशान? कैसा निशान?”

“हम पहले इसे केन का निशान कहते थे, अगर तुम्हें याद हो। यह हमारा निशान है। यह निशान तुम पर शुरू से ही था, इसीलिए तो मैंने तुमसे दोस्ती की थी। अब यह निशान बिल्कुल साफ नजर आता है।”

“मैं यह यहीं जानता था। या शायद जानता था। डेमिआन मैंने एक बार तुम्हारा चित्र बनाया था और हैरान था कि यह मुझसे भी मिलता था। क्या यह इस निशान की वजह से ही था?”

“चलो, अच्छा हुआ कि तुम यहाँ हो, मेरी माँ भी खुश होंगी।”  
मैं चौंक उठा।

“तुम्हारी माँ? क्या वह यहीं है? वह तो मुझे बिल्कुल नहीं

जानती।”

“अरे, वह तुम्हारे बारे में जानती है। वह तुम्हें पहचान जाएगी, बिना मेरे बताए ही कि तुम कौन हो—तुमने लम्बे अरसे से अपनी कुछ सोच-गहर ही नहीं दी।”

“मैं अक्सर लिपना चाहता था, मगर नहीं लिख पाया। कुछ समय से मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं तुमसे जल्दी हो मिलूँगा। मैं हर रोज़ इसी की प्रतीक्षा कर रहा था।”

वह मेरे हाथ में हाथ डालकर आगे चलने लगा। उसके चारों ओर की शांति ने मुझे भी अपनी नपेट में ले लिया। जल्दी ही हम पहले की तरह बातें करने लगे। हम स्कूल के समय की, धार्मिक कक्षाओं और पिछली छुट्टियों की उस दुर्भाग्यपूर्ण मुलाकात की बातें करते रहे—किंतु हमारे सबसे पुराने और नजदीकी सम्बन्ध की बात अब भी नहीं हुई—मान्स जोमर वाली घटना की बात।

अचानक ही हमने पाया कि हम लोग बड़ी गंभीर बातचीत कर रहे हैं। डेमिआन और उस जापानी के बीच पहले से चल रही बातचीत को आगे बढ़ाने हुए हमने अधिकतर विद्यार्थियों द्वारा बिताई जाने वाली जिद्दी पर बातचीत की, फिर किसी और विषय पर, कुछ ऐसा जो कहीं बहुत दूर जा सकता था किंतु जिसका डेमिआन के शब्दों से गहरा सम्बन्ध था।

उमने यूरोप की आत्मा और समय में मकेंतों की बात की। उसका मानना था कि हर तरफ़ समूहबद्ध होने, भीड़ बनाने की बात है लेकिन वहीं भी स्वतंत्रता और प्रेम की बात नहीं है। विद्यार्थी संगठनों और गायन मंडलियों से लेकर राज्यों तक यह सारी की सारी सामुदायिकता दबाव में होने वाला विकासमात्र है। यह भय, आशंका और विकृत-व्य-विमूढ़ता से जन्मी सामुदायिकता है जो अंदर से पुरानी और नाबालग है, अपने अंत के निवृत्त है।

“सच्चा सामुदायिकता” डेमिआन ने कहा, “एक मुद्रा चीज है। किंतु जो हमारे चारों तरफ़ फैल रही है वह ऐसी बुरई नहीं है। इसका पुनर्निर्माण व्यक्तियों के एक दूसरे को जानने से होगा और वह एक बार

विश्व का रूप बदल देगी। आज की सामुदायिकता का अर्थ मात्र भीड़ भावना से है। लोग एक दूसरे की ओर दौड़ रहे हैं, क्योंकि एक दूसरे से डरते हैं—मालिक अपने लिए, मजदूर अपने लिए, दुष्टिजीवी अपने लिए ! और क्यों डरते हैं ये सब ? व्यक्ति तभी डरता है जब अपने साथ एक नहीं हो पाता। वे इसलिए डरते हैं क्योंकि उन्होंने स्वयं को कभी जाना ही नहीं। सारा समुदाय ही ऐसे लोगों का है, जो अपने अंदर के इस अज्ञात से डरते हैं ! उन्हें लगता है कि जीवन मूल्य समाप्त हो गए हैं, कि वे पुरातन पद्धति पर जी रहे हैं उनके धर्म, उनकी रीतियाँ उनकी जरूरतों को पूरा नहीं करती। सैकड़ों सालों तक यूरोप सिर्फ अध्ययन करता रहा, कारखाने बनाता रहा ! वे बखूबी जानते हैं कि एक व्यक्ति को मारने के लिए कितने ग्राम पाउडर चाहिए, किंतु वे नहीं जानते कि ईश्वर पूजा कैसे होती है। वे यह भी नहीं जानते कि घंटे भर शांति से कैसे खुश रहा जा सकता है। कभी विचारियों के शराबखाने देखो ! या फिर किसी खुशी पाने की जगह को देखो, जहाँ बनीर लोग जाते हैं ! हद है !—भाई सिनक्लेयर, इस सबसे कुछ भला नहीं होने वाला। ये लोग जो डरकर एक जुट हो रहे हैं, वे डर और बुराई से भरे हुए हैं, कोई किसी पर भरोसा नहीं करता। ये उन बादलों से चिपके हैं जो दरबसल बादल हैं ही नहीं, और जो कोई कुछ नई बात कहता है वे उसे पत्थर मारते हैं। मुझे संघर्ष नजदीक आता लग रहा है। वह लाएगा, यकीन करो, जल्दी ही लाएगा ! जाहिर है वह दुनिया का 'सुधार' नहीं करेगा। चाहे मजदूर मालिक को मार डालें या जर्मनी रूस पर हमला करे, सिर्फ मालिक ही बदलेंगे। मगर यह सब बेकार नहीं जाएगा। यह आज के बादलों के खोखलेपन को दिखाएगा, पुरातन काल से चले आ रहे देवताओं को हटा दिया जाएगा। आज की दुनिया बरखादी चाहती है—और ऐसा ही होगा।”

“और ऐसे में हमारा क्या होगा ?”

“हमारा ? शायद हम भी इसी में समाप्त हो जाएँ। हम जैसों को भी मारा जा सकता है। मगर हम इतनी आसानी से खत्म नहीं होंगे। हमारे आसपास जो बचेगा या हममें से जो बचेगा, उन्हीं पर भविष्य की इच्छा केंद्रित होगी। मानवता की जिस भावना को हमारे यूरोप ने तकनीक और

विज्ञान के शोर में दबा दिया है, वह फिर उभरकर सामने आएगी। और अभी यह स्पष्ट हो जाएगा कि आज के समाजों, राज्यों और लोगों, कनवों और चर्चों के साथ मानवीय भावना कभी भी एक न हुई है—न हुई थी। वह प्रकृति जो चाहती है वह लोगों में, तुममें, मुझमें लिखा है। यह जीवत में लिखा था, नीलो में भी लिखा था। इन्हीं जरूरी प्रवृत्तियों के लिए, जो निश्चय ही हर रोज रूप बदल सकती हैं, भविष्य में म्यान होगा, आज के समाज के टूटने के बाद ये हर तरफ नजर आएंगी।”

जब हम नदी के किनारे एक घाग के सामने रुके तो काफी देर हो चुकी थी।

“हम यहाँ रहने हैं,” डेमिआन ने कहा, “जल्दी ही आना हमारे यहाँ! हम लोग तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।”

रात की मर्दी में मैं खुन होता अपने घर की ओर आगे बढ़ गया। शहर में जहाँ-तहाँ पर लौटते रहे छात्र शोर मचा रहे थे। उनकी इस बेहूश किस्म की सुसी और अपने एकाकी अस्तित्व के बीच विरोधाभास को मैंने कई बार महसूस किया था, अक्सर घूणा के साथ, अक्सर जहर के अहमास के साथ। किंतु आज से पहले मैंने कभी इतनी शक्ति और अनजानी शक्ति से यह महसूस नहीं किया था कि यह सब मेरे लिए कितना बेमानी था। मेरे लिए यह दुनिया कितनी दूर, कितनी बेजान थी। मुझे अपने पिता के शहर के सरकारी अधिकारी, बड़े, अदृश्य योग याद आए, जो अपनी पड़ाई के दौरान शराबखाने के दिनों की यादों से यूँ चिपके रहने जैसे किन्नी पावन स्वर्ग में चिपके हों और अपने बीते विचारों दिनों की ‘स्वतंत्रता’ को यूँ पूजा का रूप देने जैसे कोई कवि या स्वप्नद्रष्टा अपने वचन को ऐसा रूप दे रहा हो। हर तरफ वही! हर तरफ वे ‘स्वतंत्रता’ और ‘गुनी’ को अपने बीते समय में ही ढूँढ़ते हैं, वह भी मात्र अपनी आज की जिम्मेदारी की याद और अपनी राह पर चलावनी मिलने के भय में। कुछ वर्षों तक गूँघ पीकर ही-हल्का मचाएंगे और उसके बाद चुपचाप भले आदमी बनकर सरकारी नौकरी में लग जाएंगे। हाँ हमारा समाज ही गराब है और छात्रों के ये फूहड़, घुरे काम इनने फूहड़ न थे कितनी दूरी की बातें।

विश्व का रूप बदल देगी। आज की सामुदायिकता का अर्थ मात्र भीड़ भावना से है। लोग एक दूसरे की ओर दौड़ रहे हैं, क्योंकि एक दूसरे से डरते हैं—मालिक अपने लिए, मजदूर अपने लिए, बुद्धिजीवी अपने लिए ! और क्यों डरते हैं ये सब ? व्यक्ति तभी डरता है जब अपने साथ एक नहीं हो पाता। वे इसलिए डरते हैं क्योंकि उन्होंने स्वयं को कभी जाना ही नहीं। सारा समुदाय ही ऐसे लोगों का है, जो अपने अंदर के इस अज्ञात से डरते हैं ! उन्हें लगता है कि जीवन मूल्य समाप्त हो गए हैं, कि वे पुरातन पद्धति पर जी रहे हैं उनके धर्म, उनकी रीतियाँ उनकी जरूरतों को पूरा नहीं करती। सैकड़ों सालों तक यूरोप सिर्फ अध्ययन करता रहा, कारखाने बनाता रहा ! वे बखूबी जानते हैं कि एक व्यक्ति को मारने के लिए कितने ग्राम पाउडर चाहिए, किंतु वे नहीं जानते कि ईश्वर पूजा कैसे होती है। वे यह भी नहीं जानते कि घंटे भर शांति से कैसे खुश रहा जा सकता है। कभी विद्यार्थियों के शराबखाने देखो ! या फिर किसी खुशी पाने की जगह को देखो, जहाँ अमीर लोग जाते हैं ! हद है ! —भाई सिनक्लेयर, इस सबसे कुछ भला नहीं होने वाला। ये लोग जो डरकर एक जुट हो रहे हैं, वे डर और बुराई से भरे हुए हैं, कोई किसी पर भरोसा नहीं करता। ये उन आदर्शों से चिपके हैं जो दरअसल आदर्श है ही नहीं, और जो कोई कुछ नई बात कहता है वे उसे पत्थर मारते हैं। मुझे संघर्ष नजदीक आता लग रहा है। वह आएगा, यकीन करो, जल्दी ही आएगा ! जाहिर है वह दुनिया का 'सुधार' नहीं करेगा। चाहे मजदूर मालिक को मार डालें या जर्मनी रूस पर हमला करे, सिर्फ मालिक ही बदलेंगे। मगर यह सब बेकार नहीं जाएगा। यह आज के आदर्शों के खोखलेपन को दिखाएगा, पुरातन काल से चले आ रहे देवताओं को हटा दिया जाएगा। आज की दुनिया बरवादी चाहती है—और ऐसा ही होगा।”

“और ऐसे में हमारा क्या होगा ?”

“हमारा ? शायद हम भी इसी में समाप्त हो जाएँ। हम जैसों को भी मारा जा सकता है। मगर हम इतनी आसानी से खत्म नहीं होंगे। हमारे आसपास जो बचेगा या हममें से जो बचेंगे, उन्हीं पर भविष्य की इच्छा केंद्रित होगी। मानवता की जिस भावना को हमारे यूरोप ने तकनीक और

विज्ञान के शोर में दबा दिया है, वह फिर उभरकर सामने आएगी। और तभी यह स्पष्ट हो जाएगा कि आज के समाजों, राज्यों और लोगों, क्लबों और चर्चों के साथ मानवीय भावना कभी भी एक न हुई है—न हुई थी। बल्कि प्रवृत्ति जो चाहती है वह लोगों में, तुममें, मुझमें लिखा है। यह जोतस में लिखा था, नींदों में भी लिखा था। इन्हीं जरूरी प्रवृत्तियों के लिए, जो निश्चय ही हर रोज रूप बदल सकती हैं, भविष्य में स्थान होगा, आज के समाज के टूटने के बाद ये हर तरफ नजर आएंगी।”

जब हम नदी के किनारे एक बाग के सामने रहे तो काफी देर हो चुकी थी।

“हम यहीं रहने हैं,” डेमिआन ने कहा, “जल्दी ही आना हमारे यहाँ! हम लोग तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।”

रात की गर्मी में मैं खुश होता अपने घर की ओर आगे बढ़ गया। शहर में जहाँ-तहाँ घर लौटते रहे छात्र शोर मचा रहे थे। उनकी इस बेहूश किम्म की खुशी और अपने एकाकी अस्तित्व के बीच विरोधाभास को मैंने कई बार महसूस किया था, अक्सर घूणा के साथ, अक्सर जस्सरत के अहमास के साथ। किंतु आज से पहले मैंने कभी इतनी शक्ति और अनजानी शक्ति से यह महसूस नहीं किया था कि यह सब मेरे लिए कितना बेमानी था। मेरे लिए यह दुनिया कितनी दूर, कितनी बेजान थी। मुझे अपने पिता के शहर के सरकारी अधिकारी, बूढ़े, अदृश्य लोग याद आए, जो अपनी पढ़ाई के दौरान शराबखाने के दिनों की यादों में यूँ चिपके रहते जैसे किसी पावन स्वर्ग में चिपके हों और अपने बीते विद्यार्थी दिनों की ‘स्वतंत्रता’ को यूँ पूजा का रूप देते जैसे कोई कवि या स्वप्नद्रष्टा अपने वचन को ऐसा रूप दे रहा हो। हर तरफ वही! हर तरफ वे ‘स्वतंत्रता’ और ‘गुशी’ को अपने बीने समय में ही ढूँढ़ते हैं, वह भी मात्र अपनी आज की जिम्मेदारी की याद और अपनी राह पर चेतावनी मिलने के भय से। कुछ वर्षों तक गूँघ पीकर हो-हन्ता मचाएँगे और उनके बाद चुपचाप भले आदमी बनकर सरकारी नौकरी में लग जाएँगे। हाँ हमारा समाज ही गराब है और छात्रों के ये फूहड़, बुरे काम इतने फूहड़ न थे जितनी दूसरी गो बातें।



गृह से दूर बने अपने घर पहुँचकर अपना विस्तार लगाने तक ये सभी विचार उड़ चुके थे। मेरा सारा ध्यान मात्र उस वादे पर था जो बाज के इन दिन ने मुझसे किया था। जल्दी ही, कल ही मुझे डेनिजान की माँ से मिलना था। मेरी तरफ से सारे विद्यार्थी शराबखाने में बैठे रहें, अपनी शक्लों पर गोदना गुदवाते सारी दुनिया मुस्त होकर अपनी समाप्ति का इंतजार करती रहे—मुझे क्या! मैं तो सिर्फ इसी बात का इंतजार कर रहा था कि अब मेरी नियति मुझे एक नई तस्वीर की ओर ले जाएगी।

कुछ देर तक मैं गहरी नींद में सोता रहा। नया दिन मेरे लिए त्योहार का-ना दिन था, कुछ वैसा, जैसा मैंने वचन के क्रिसमस के बाद से कभी नहीं महसूस किया था। मैं शांत न था, पर बिना किसी भय के। मुझे लगा मेरे लिए एक महत्वपूर्ण दिन का उदय हो चुका है। मुझे अपने चारों तरफ की दुनिया बदली-बदली-सी लगी। इंतजार करना एक मायने में मुझे अच्छा ही लगा। यहाँ तक कि सर्दियों की हल्की बरसात भी सुंदर, शांत लगी। त्योहार-नी खुशी लिये इस दिन संगीत था मैं। पहली बार बाहर की दुनिया मेरे अंदर की दुनिया से तालमेल खाती लगी—ऐसे में ही तो आत्मा प्रसन्न होता है, जीने का नज़ा आता है। कोई घर, किसी दुकान की मुमाइश, सड़क का कोई चेहरा, इनसे मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। सब कुछ वैसा ही था जैसा होना चाहिए था। वक्त हर रोज वाला ग़ालीबन न था, बल्कि इंतजार करती प्रकृति थी, नियति सन्म रूप से सामने खड़ी थी। अपने वचन में मैंने दुनिया को त्योहारों की मुद्रा में देखा था, क्रिसमस के दिन या ईस्टर के दिन। मैं नहीं जानता था कि दुनिया और भी सुंदर हो सकती थी। मैंने अपने ही अंदर जीने की आदत डाल ली थी और इसी से संतोष कर लिया था कि मेरे चकमके रंगों का मुझसे खोने का कारण मेरे वचन का गुजर जाना है, कि व्यक्ति को किसी हद तक स्वतंत्रता और आत्मा की परिपक्वता के लिए इस पवित्र चमक का त्याग करना ही पड़ता है। किंतु अब मैंने खुशी के साथ यह अनुभव किया कि यह चमक मात्र दब गई थी या लेंघेरे में चली गई थी, कि एक स्वतंत्र व्यक्ति और वच्चों-सी खुशी को त्यागने वालों के लिए भी दुनिया को

घन होने देवता सम्भव है, कुछ देवद्वार बच्चों के-मे उल्लास का नीटा आनंद लेना सम्भव है।

वह पल आया, जब मैंने खुद को गहर के बाहर बाने बाग के छानने खड़ा पाया, जहाँ बन मैंने हेमिआन से विदा ली थी। लम्बे, भीरे पेड़ों के पीछे एक छोटा-सा घर था, चमकता, सुंदर। एक बड़ी, गीरे की दीवार के पीछे ऊँचे फूलों के पीछे लगे थे, चमकती खिड़कियों के पीछे दीवार पर तस्वीरें और किताबें नज़र आ रही थीं। घर का दरवाजा एक हॉल में खुलता था। एक चुन बूझी नौरुआनी कारें बरहे और मटेद एग्न पहने; मुझे अंदर ले गई और मेरा कोट मेज़ पर टांग दिया।

मुझे हॉल में अकेला छोड़कर वह चली गई। मैंने अपने चारों ओर देखा, घुरं हो अपने मन में पहुँच गया। गाढ़े रंग की लकड़ी के चाम से सजा दीवार में एक दरवाजे के ऊपर मेरा जाना-पहचाना चित्र लगा था, मेरा पक्षी मुनहरे पीले रंग वाला आज, घरती रूपी अंडे से निकलता हुआ। मैं ठगा-सा खड़ा रह गया—मेरा मन खुशी और दर्द से भरा हुआ था, जैसे इसी पल मेरे द्वारा किया गया हर काम, मेरा हर अनुभव उत्तर और पूर्ति घन नीट आया हो। विजनी की भाँति मैंने अपनी आत्मा में कितनी ही तनवीरों की गुजरते देखा, अपने दरवाजे पर कुलचिह्न लिए पिता का घर, बचपन का हेमिआन, जो उस कुलचिह्न का रेखाचित्र बना रहा था, अपने बचपन का अपने दुश्मन प्रोमर के आतंक में दुग्धी चित्र, स्वयं को गुवा रूप में स्कूल के मेज पर अपनी उत्कटा के पक्षी का चित्र बनाते हुए, अपने ही तारों के जाल में फँसी दुग्धी आत्मा, और इस पल तक का सब कुछ मुझ में गुजर गया, मन में ही मुझे स्वीकृति मिल रही थी, उत्तर मिल रहा था, शांति मिल रही थी।

गोली आँखों में मैंने अपने चित्र को देखा और खुद में ही पढ़ने लगा। तभी मेरी नज़र नीची हो गई। पक्षी के चित्र के नीचे गूने दरवाजे में गहरे रंग के कपड़ों में एक लम्बी स्त्री खड़ी थी। यह थी वह।

मैं एक भी शब्द न बोल सका। अपने घेरे में भिजने-नुसने चेहरे वाली, समय से परे, उम्र से परे, अंदरूनी शक्ति में भरी वह गृध्रगुप्त स्त्री गीरी-पूर्ण ढंग में मुँकरा दी। उसकी दृष्टि में परिपूर्णता थी। उसके कोनों में, घर।

में वापसी की खुशबू थी। चुपचाप मैंने उसकी ओर अपने हाथ बढ़ा दिए। उसने उन्हें अपने मजबूत गर्म हाथों में ले लिया।

“आप सिनक्लेयर हैं। मैं आपको देखते ही पहचान गई थी। आपका स्वागत है !”

उसकी आवाज गहरी और गर्मजोश थी। मैं उसे मीठी शराब की भांति पी गया। अब मैंने नजर उठाकर उसके शांत चेहरे की ओर देखा, उसकी आंखों की ओर देखा जिन्हें समझना मुश्किल था। उसके ताजगी से भरे परिपक्व मुँह की ओर देखा, उसके साफ-चौड़े माथे की ओर देखा। जहाँ निशान था।

“कितना खुश हूँ मैं !” मैंने कहा और उसके हाथ चूमे, “मुझे लगता है कि मैं सारा जीवन एक यात्रा पर रहा हूँ—और अब घर आ गया हूँ।”

वह मातृत्व भाव से मुस्करा दी।

“व्यक्ति कभी घर नहीं पहुँचता।” उसने प्रेम से कहा, “जहाँ भी जाने-पहचाने रास्ते एक-दूसरे से मिलते हैं, कुछ देर के लिए सारी दुनिया ही अपना घर नजर आने लगती है।”

वह उसी भाव को अभिव्यक्ति दे रही थी जो उसके पास आते हुए मेरे मन में था। उसकी आवाज, उसके शब्द उसके बेटे से मिलते थे फिर भी अलग थे। हर बात अधिक परिपक्व, अधिक ऊष्मा लिये और विलकुल साफ थी। किंतु जिस प्रकार मैक्स कभी लड़का नहीं लगा उसी तरह उसकी माँ ऐसी स्त्री नहीं लगी जिसका बेटा जवान हो चुका हो। उसका चेहरा और बाल कितनी ताजगी लिये थे। कितनी कसी और साफ थी उसकी त्वचा ! कितना साफ था उसका चेहरा ! मेरे सपनों से भी साफ। और वह मेरे सामने खड़ी थी। उसकी समीपता प्रेम की खुशी थी। उसकी दृष्टि में तृप्ति थी।

तो यह था वह रूप जिसमें मेरी नियति खुद को दर्शा रही थी। अब वह कठोर न थी, न ही मुझे कष्ट दे रही थी, बल्कि ताजा और खुश ! मैंने कोई निर्णय न लिये, कोई शपथ न ली—मैं एक लक्ष्य पर आ चुका था, जहाँ से आगे का रास्ता दूर-दूर तक साफ दिखाई दे रहा था, इच्छित देशों

की ओर ले जाता हुआ, आह्लाद के पेशे के सनों की छाया में बसा, मूर्खों के  
 धर्मीयों में जीताने। अब चारों ओर हो, मैं हर्षान्तरिक में मग्न था कि यह मूर्खों  
 विश्व में है, कि मैं उनका स्वर जी गजता हूँ, कि मैं उसी दुर्लभता की  
 शान्ति में गजता हूँ। कुछ अन्तर नहीं पड़ता, यदि यह मैं बने, प्रेमिका बने  
 या देखी — मर्क यह यही रहे। और मेरी राह उसके करीब।

उसने चित्र की ओर इशारा किया।

“आपने इस चित्र में अधिक खुशी हमारे मैमम को कभी नहीं दी  
 होगी।” उसने सोचने हुए कहा, “और मुझे भी। हम आरती प्रतिष्ठा कर  
 रहे थे, और जब यह चित्र आया तब हम समझ गए कि आप हमारी ओर  
 आने वाली राह पर ही हैं। जब आप बच्चे थे, सितबनेवर, उन दिनों एक  
 दिन मेरा बेटा स्कूल में आया और बोला स्कूल में एक लड़का है, उसके  
 माथे पर निशान है, उसे मेरा मित्र बनना होगा। आप ही थे वह। आरती  
 राह आसान नहीं थी। परन्तु हमें आप पर भरोसा था। जब आप छुट्टियों में  
 आए थे, तो मैमम ने मिते थे, गायक आप लगभग गोपह रूप के थे। मैमम  
 ने मुझे यह सब बताया था—”

मैंने टोका, “अरे! उमन बर भी आपको बता दिया। यह मेरा स्वयं  
 बुरा समय था।”

“हाँ, मैमम ने मुझे बताया था अब सितबनेवर के माथे पर छिद्र  
 आ रही है। वह छिद्र की ओर आप गयावन का प्रयास कर रहा है,  
 यह शरावधाने भी जाने लगा है, किन्तु यह सफल न होगा। उसका ईश्वर  
 छिद्रा है किन्तु उसे कुछ कर न सफलता रहता है।—क्या ऐसा ही नहीं  
 था?”

“हाँ, टीक लो ही था। फिर मुझे बेगारिया मिली और वह ने मुझे  
 एक पय प्रदर्शन किया। उसका नाम पिश्टी/उम था। मुझे मुझे दया था  
 कि मेरे बचपन का समय, मैंने ऐसा न क्या किया, बल्कि मैंने उसे  
 बच पाया। मैंने उसे, जिस दिन उसका अन्तर्गत सोचा कि कागज का  
 लू। बचा मुझे कागज कागज ही मुक्तिवत् होता है।”

उसने मेरे हाथों पर ठण्ठ हाथ फेरा, मुस्काने हुआ की ओर

“उमन केग इन्फेक्ट मुक्तिवत् ही होता है। आप जानते हैं कि—”

में वापसी की खुशबू थी। चुपचाप मैंने उसकी ओर अपने हाथ बढ़ा दिए। उसने उन्हें अपने मजबूत गर्म हाथों में ले लिया।

“आप सिनक्लेयर हैं। मैं आपको देखते ही पहचान गई थी। आपका स्वागत है!”

उसकी आवाज़ गहरी और गर्मजोश थी। मैं उसे मीठी शराब की भाँति पी गया। अब मैंने नजर उठाकर उसके शांत चेहरे की ओर देखा, उसकी आँखों की ओर देखा जिन्हें समझना मुश्किल था। उसके ताजगी से भरे परिपक्व मुँह की ओर देखा, उसके साफ-चौड़े माथे की ओर देखा। जहाँ निशान था।

“कितना खुश हूँ मैं!” मैंने कहा और उसके हाथ चूमे, “मुझे लगता है कि मैं सारा जीवन एक यात्रा पर रहा हूँ—और अब घर आ गया हूँ।”

वह मातृत्व भाव से मुस्करा दी।

“व्यक्ति कभी घर नहीं पहुँचता।” उसने प्रेम से कहा, “जहाँ भी जाने-पहचाने रास्ते एक-दूसरे से मिलते हैं, कुछ देर के लिए सारी दुनिया ही अपना घर नजर आने लगती है।”

वह उसी भाव को अभिव्यक्ति दे रही थी जो उसके पास आते हुए मेरे मन में था। उसकी आवाज़, उसके शब्द उसके वेटे से मिलते थे फिर भी अलग थे। हर बात अधिक परिपक्व, अधिक ऊष्मा लिये और बिल्कुल साफ थी। किंतु जिस प्रकार मैक्स कभी लड़का नहीं लगा उसी तरह उसकी माँ ऐसी स्त्री नहीं लगी जिसका वेटा जवान हो चुका हो। उसका चेहरा और बाल कितनी ताजगी लिये थे। कितनी कसी और साफ थी उसकी त्वचा! कितना साफ था उसका चेहरा! मेरे सपनों से भी साफ। और वह मेरे सामने खड़ी थी। उसकी समीपता प्रेम की खुशी थी। उसकी दृष्टि में तृप्ति थी।

तो यह था वह रूप जिसमें मेरी नियति खुद को दर्शा रही थी। अब वह कठोर नहीं थी, न ही मुझे कष्ट दे रही थी, बल्कि ताजा और खुश! मैंने कोई निर्णय नहीं लिये, कोई शपथ नहीं ली—मैं एक लक्ष्य पर आ चुका था, जहाँ से आगे का रास्ता दूर-दूर तक साफ दिखाई दे रहा था, इच्छित देशों

की ओर से जाता हुआ, आह्लाद के पंखों के तनों की छाया से ढाला, घुनी के बगोचों में भीतल। अब चाहे जो हो, मैं हर्षातिरेक में मग्न था कि यह स्त्री विश्व में है, कि मैं उसका स्वर जी सकता हूँ, कि मैं उसी उपस्थिति की सामें ले सकता हूँ। कुछ अन्तर नहीं पड़ता, यदि वह माँ बने, प्रेमिका बने या देवी — सिर्फ यह यही रहे ! और मेरी राह उसके करीब।

उसने चित्र की ओर इशारा किया।

“आपने इस चित्र से अधिक घुनी हमारे मैक्स को कभी नहीं दी होगी।” उसने सोचते हुए कहा, “और मुझे भी। हम आरम्भी प्रतिज्ञा कर रहे थे, और जब यह चित्र आया तब हम समझ गए कि आप हमारी ओर आने वाली राह पर ही हैं। जब आप बच्चे थे, सितबलेयर, उन दिनों एक दिन मेरा बेटा स्कूल में आया और बोला : स्कूल में एक लड़का है, उसके माँ पर निगान है, उसे मेरा मित्र बनना होगा। आप ही थे वह। आरम्भी राह आसान नहीं थी। परंतु हमें आप पर भरोसा था। जब आप छुट्टियों में आए थे, तो मैक्स ने मिले थे, शायद आप लगभग सोलह वर्ष के थे। मैक्स ने मुझे यह सब बताया था—”

मैंने टोका, “अरे ! उसने वह भी आपको बता दिया। वह मेरा सबसे बुरा समय था !”

“हां, मैक्स ने मुझे बताया था : अब सितबलेयर के सामने मुश्किलें आ रही हैं। वह फिर भीड़ की ओर पलायन का प्रयास कर रहा है, वह घराबघाने भी जाने लगा है, वित्तु यह सफल न होगा। उसका निशान छिपा है वित्तु उसे गुप्त रूप में जलाता रहता है।—क्या ऐसा ही नहीं था ?”

“हां, ठीक ऐसा ही था। फिर मुझे बेयादिस मिली और अंत में मुझे एक पथ प्रदर्शक मिला। उसका नाम पिस्टोरिउस था। तभी मुझे पता लगा कि मेरे बचपन का सारा समय मैक्स से क्यों जुड़ा रहा, क्यों मैं उससे नहीं बच पाया। फाड़... माँ, मैंने उन दिनों अवसर सोचा कि आत्महत्या कर लूँ। क्या सभी का रास्ता इतना ही मुश्किल होता है ?”

उसने मेरे बानों पर अपना हाथ फेरा, हल्के-से हवा की भाँति।

“अगम तेना हमेशा मुश्किल ही होता है। आप जानते हैं कि पक्षी को

में वापसी की खुशबू थी। चुपचाप मैंने उसकी ओर अपने हाथ बढ़ा दिए। उसने उन्हें अपने मजबूत गर्म हाथों में ले लिया।

“आप सिनक्लेयर हैं। मैं आपको देखते ही पहचान गई थी। आपका स्वागत है !”

उसकी आवाज गहरी और गर्मजोश थी। मैं उसे मीठी शराब की भाँति पी गया। अब मैंने नजर उठाकर उसके शांत चेहरे की ओर देखा, उसकी आँखों की ओर देखा जिन्हें समझना मुश्किल था। उसके ताजगी से भरे परिपक्व मुँह की ओर देखा, उसके साफ-चौड़े माथे की ओर देखा। जहाँ निशान था।

“कितना खुश हूँ मैं !” मैंने कहा और उसके हाथ चूमे, “मुझे लगता है कि मैं सारा जीवन एक यात्रा पर रहा हूँ—और अब घर आ गया हूँ।”

वह मातृत्व भाव से मुस्करा दी।

“व्यक्ति कभी घर नहीं पहुँचता।” उसने प्रेम से कहा, “जहाँ भी जाने-पहचाने रास्ते एक-दूसरे से मिलते हैं, कुछ देर के लिए सारी दुनिया ही अपना घर नजर आने लगती है।”

वह उसी भाव को अभिव्यक्ति दे रही थी जो उसके पास आते हुए मेरे मन में था। उसकी आवाज, उसके शब्द उसके वेटे से मिलते थे फिर भी अलग थे। हर बात अधिक परिपक्व, अधिक ऊष्मा लिये और विलकुल साफ थी। किंतु जिस प्रकार मैक्स कभी लड़का नहीं लगा उसी तरह उसकी माँ ऐसी स्त्री नहीं लगी जिसका वेटा जवान हो चुका हो। उसका चेहरा और बाल कितनी ताजगी लिये थे। कितनी कसी और साफ थी उसकी त्वचा ! कितना साफ था उसका चेहरा ! मेरे सपनों से भी साफ। और वह मेरे सामने खड़ी थी। उसकी समीपता प्रेम की खुशी थी। उसकी दृष्टि में तृप्ति थी।

तो यह था वह रूप जिसमें मेरी नियति खुद को दरशा रही थी। अब वह कठोर न थी, न ही मुझे कष्ट दे रही थी, बल्कि ताजा और खुश ! मैंने कोई निर्णय न लिये, कोई शपथ न ली—मैं एक लक्ष्य पर आ चुका था, जहाँ से आगे का रास्ता दूर-दूर तक साफ दिखाई दे रहा था, इच्छित देशों

की ओर से जाता हुआ, आह्लाद के पलों के तनों की छाया से ढाया, गूँगी के बर्गाचों में घोंसल। अब चाहे जो हो, मैं हर्षातिरेक में मग्न था कि यह स्त्री विश्व में है, कि मैं उसका स्वर जी सकता हूँ, कि मैं उसी उदास्यति की गर्मियों में मग्न हूँ। कुछ अन्तर नहीं पड़ता, यदि वह माँ बने, प्रेमिका बने या देवी — सिर्फ वह यही रहे ! और मेरी राह उसके करीब ।

उसने चित्र की ओर इशारा किया ।

“आपने इस चित्र से अधिक गूँगी हमारे मैक्स को कभी नहीं दी होगी ।” उसने मोचने हुए कहा, “और मुझे भी । हम आपकी प्रतिष्ठा कर रहे थे, और जब यह चित्र आया तब हम समझ गए कि आप हमारी ओर आने वाली राह पर ही हैं । जब आप बच्चे थे, सितबनेयर, उन दिनों एक दिन मेरा बेटा स्कूल में आया और बोला : स्कूल में एक लड़का है, उसके माँ पर निशान है, उमे मेरा मित्र बनना होगा । आप ही थे वह । आपकी राह आसान नहीं थी । परन्तु हमें आप पर भरोसा था । जब आप छुट्टियों में आए थे, तो मैक्स ने मिले थे, नायद आप लगभग सोलह वर्ष के थे । मैक्स ने मुझे यह सब बताया था —”

मैंने टोका, “अरे ! उसने वह भी आपको बता दिया ! वह मेरा सबसे बुरा गमय था !”

“हाँ, मैक्स ने मुझे बताया था : अब सितबनेयर के सामने मुश्किलें आ रही हैं । वह फिर भीड़ की ओर पलायन का प्रयास कर रहा है, वह नरावधाने भी जाने लगा है, किंतु यह सफल न होगा । उसका निशान छिपा है किंतु उसे गुप्त रूप में जलाता रहता है । — क्या ऐसा ही नहीं था ?”

“हाँ, ठीक ऐसा ही था । फिर मुझे बेपाट्रिस मिली और अंत में मुझे एक पथ प्रदर्शक मिला । उसका नाम पिस्टोरिउस था । तभी मुझे पता लगा कि मेरे बचपन का मारा गमय मैक्स से क्यों जुड़ा रहा, क्यों मैं उससे नहीं बच पाया । फाउं... माँ, मैंने उन दिनों अबसर सोचा कि आत्महत्या कर लूँ । क्या सभी का रास्ता इतना ही मुश्किल होता है ?”

उसने मेरे बानों पर अपना हाथ फेरा, हल्के-से हवा की भाँति ।

“जन्म लेना हमेशा मुश्किल ही होता है । आप जानते हैं कि पक्षी को



में वापसी की खुशबू थी। चुपचाप मैंने उसकी ओर अपने हाथ बढ़ा दिए। उसने उन्हें अपने मजबूत गर्म हाथों में ले लिया।

“आप सिनक्लेयर हैं। मैं आपको देखते ही पहचान गई थी। आपका स्वागत है!”

उसकी आवाज गहरी और गर्मजोश थी। मैं उसे मीठी शराब की भाँति पी गया। अब मैंने नजर उठाकर उसके शांत चेहरे की ओर देखा, उसकी आँखों की ओर देखा जिन्हें समझना मुश्किल था। उसके ताजगी से भरे परिपक्व मुँह की ओर देखा, उसके साफ-चौड़े माथे की ओर देखा। जहाँ निशान था।

“कितना खुश हूँ मैं!” मैंने कहा और उसके हाथ चूमे, “मुझे लगता है कि मैं सारा जीवन एक यात्रा पर रहा हूँ—और अब घर आ गया हूँ।”

वह मातृत्व भाव से मुस्करा दी।

“व्यक्ति कभी घर नहीं पहुँचता।” उसने प्रेम से कहा, “जहाँ भी जाने-पहचाने रास्ते एक-दूसरे से मिलते हैं, कुछ देर के लिए सारी दुनिया ही अपना घर नजर आने लगती है।”

वह उसी भाव को अभिव्यक्ति दे रही थी जो उसके पास आते हुए मेरे मन में था। उसकी आवाज, उसके शब्द उसके वेष्टे से मिलते थे फिर भी अलग थे। हर बात अधिक परिपक्व, अधिक ऊष्मा लिये और बिल्कुल साफ थी। किंतु जिस प्रकार मैक्स कभी लड़का नहीं लगा उसी तरह उसकी माँ ऐसी स्त्री नहीं लगी जिसका घेरा जवान हो चुका हो। उसका चेहरा और बाल कितनी ताजगी लिये थे। कितनी कसी और साफ थी उसकी त्वचा! कितना साफ था उसका चेहरा! मेरे सपनों से भी साफ। और वह मेरे सामने खड़ी थी। उसकी समीपता प्रेम की खुशी थी। उसकी दृष्टि में तृप्ति थी।

तो यह था वह रूप जिसमें मेरी नियति खुद को दर्शा रही थी। अब वह कठोर न थी, न ही मुझे कण्ट दे रही थी, बल्कि ताजा और खुश! मैंने कोई निर्णय न लिये, कोई शपथ न ली—मैं एक लक्ष्य पर आ चुका था, जहाँ से आगे का रास्ता दूर-दूर तक साफ दिखाई दे रहा था, इच्छित देशों

है। एक दिन वह आपकी हो जाएगी, ठीक उसी तरह जैसे आज आप उमको स्वप्न में देखते हैं। वस, उस पर भरोसा रखें।”

मैंने स्वयं को नियंत्रित कर लिया था और फिर मैं उसकी ओर मुड़ गया। उसने मेरी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

“मेरे कुछ मित्र हैं,” उसने मुरकुराते हुए कहा, “कुछ बहुत नजदीकी मित्र, जो मुझे फ्राउ एवा कहते हैं। आप उनमें से एक होंगे, यदि आप चाहें।”

उसने मेरे लिए दरवाजा खोला और बाग की ओर इशारा किया, “मैंक्स आपको वहीं मिलेगा।”

मैं बेहोश, बदहवास ऊँचे पेड़ों के नीचे पड़ा था, नहीं जानता था कि पहले से अधिक जाग गया हूँ या अधिक स्वप्न में ही हूँ। पेड़ों की डालों में बरसात टपक रही थी। मैं धीरे-धीरे बाग के अंदर चला गया, जहाँ नदी के किनारे-किनारे दूर तक फैला था। अंत में मुझे डेमिअन दिखाई पड़ गया। वह शरीर के ऊपरी हिस्से में बिना कोई कपड़ा पहने, गमियों के लिए बनाए गए घुले स्थान पर रेत की टेंगी बोरी पर मुक्केबाजी का अभ्यास कर रहा था।

मैं चकित पड़ा देखता रह गया। डेमिअन बहुत सुंदर लग रहा था—चौड़ी छाती, मजबूत, मर्दाना शरीर, उसके उठे हाथ और कठोर मांसपेशियाँ मजबूत और कार्यकुशल लग रही थी। चपलता उसके कूल्हों-कन्धों और हथेलियों से संचालन करने की भाँति, प्राकृतिक रूप में फूटी पड़ रही थी।

“डेमिअन!” मैंने पुकारा, “क्या कर रहे हो तुम यहाँ?”

वह प्रसन्न होकर हँस दिया।

“अभ्यास कर हूँ। मैंने उस जापानी से एक मुक्केबाजी के मैच का वादा किया है। यह लड़का बिल्ली की तरह चपल है। उसी की तरह घालाक भी है। मगर वह मुझे नहीं हरा सकेगा। मुझे एक छोटी-सी बेइज्जती का उमने बदला लेना है।”

उमने अपनी कमोज और कोट पहन लिया।

“क्या तुम अभी मेरी माँ के साथ थे?” उसने पूछा।

अंडे से निकलने के लिए कितना कष्ट उठाना पड़ता है। दोबारा सोचो और पूछो : क्या वाकई रास्ता उतना कठिन था ? सिर्फ कठिन ? क्या वह सुंदर न था ? क्या आप इससे सुंदर और आसान रास्ता चाहते ?”

मैंने इन्कार में सिर हिलाया।

“यह कठिन था,” मैंने जैसे नींद में कहा, “वह समय स्वप्न के न आने तक बहुत मुश्किल था।”

उसने सिर हिलाया और अपनी नजर से भेद दिया।

“हाँ, आपको अपने सपने को पाना ही चाहिए, फिर रास्ता आसान हो जाता है। किंतु कोई भी सपना हमेशा नहीं रहता, एक के बाद दूसरा सपना आ जाता है। व्यक्ति को किसी एक सपने के पीछे नहीं भागना चाहिए।”

मैं डर गया। क्या यह एक चेतावनी थी ? अभी से बचाव के लिए हथियार था ? मगर उससे फर्क नहीं पड़ता था, मैं उसके मार्गदर्शन के लिए तैयार था, बिना लक्ष्य जाने।

“मैं नहीं जानता,” मैंने कहा, “कि मेरे सपने की अवधि कितनी होनी चाहिए। आशा करता हूँ कि अमर रहे। चित्र के नीचे मेरी नियति ने मेरा स्वागत किया है, माँ की भाँति, मेरी प्रेमिका की भाँति। मैं उसी का हूँ और किसी का नहीं।”

“जब तक वह स्वप्न आपकी नियति है, तब तक आपको उसके प्रति श्रद्धा होनी चाहिए,” उसने गम्भीरता से कहा।

मैं उदासी और इस स्वर्णिम पल में मर जाने की इच्छा से घिर गया। मुझे लगा कि आँसू आने को हैं—कितने लम्बे समय से मैं नहीं रोया था, फूट-फूट कर !—और इस इच्छा से मैं घिर गया। मैं झटके से दूसरी ओर मुड़ गया, खिड़की की ओर बढ़ा और दूर कहीं देखने लगा, हालाँकि मेरी आँखों को कुछ नजर नहीं आ रहा था।

मैं पीछे से उसकी आवाज सुन रहा था, उसकी आवाज शांति और मिठास से इतनी भरी थी जैसे मीठी शराब से ऊपर तक भरा हुआ वर्तन।

“सिनक्लेयर, आप अभी बच्चे हैं ! आपकी नियति आपसे प्रेम करती

है। एक दिन वह आपकी हो जाएगी, ठीक उसी तरह जैसे आज आप उसको स्वप्न में देखते हैं। वस, उस पर भरोसा रखें।”

मैंने स्वयं को नियंत्रित कर लिया था और फिर से उसकी ओर मुड़ गया। उसने मेरी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

“मेरे कुछ मित्र हैं,” उसने मुस्कराते हुए कहा, “कुछ बहुत नजदीकी मित्र, जो मुझे फाउ एवा कहते हैं। आप उनमें से एक होंगे, यदि आप चाहें।”

उसने मेरे लिए दरवाजा खोला और बाग की ओर इशारा किया, “मैंका आपको वहीं मिलेगा।”

मैं बेहोश, बदहवास ऊँचे पेड़ों के नीचे पड़ा था, नहीं जानता था कि पहले से अधिक जाग गया हूँ या अधिक स्वप्न में ही हूँ। पेड़ों की डालों में बरसात टपक रही थी। मैं धीरे-धीरे बाग के अंदर चला गया, जो नदी के किनारे-किनारे दूर तक फैला था। अंत में मुझे डेमिआन दिखाई पड़ गया। वह शरीर के ऊपरी हिस्से में बिना कोई कपड़ा पहने, गर्मियों के लिए बनाए गए घुले स्नान पर रेत की टैंगी बोरी पर मुक्केबाजी का अभ्यास कर रहा था।

मैं चकित पड़ा देखता रह गया। डेमिआन बहुत सुंदर लग रहा था—चोटी छाती, मजबूत, मर्दाना शरीर, उसके उठे हाथ और कठोर मांसपेशियाँ मजबूत और कार्यकुशल लग रही थी। चपलता उसके बूल्हों-कन्धों और हथेलियों से संचालन करने की भाँति, प्राकृतिक रूप में फूटी पड़ रही थी।

“डेमिआन !” मैंने पुकारा, “क्या कर रहे हो तुम यहाँ ?”

वह प्रगन्न होकर हँस दिया।

“अभ्यास कर हूँ। मैंने उस जापानी से एक मुक्केबाजी के मैच का वादा किया है। वह लड़का बिल्ली की तरह चपल है। उसी की तरह चालाक भी है। मगर वह मुझे नहीं हरा सकेगा। मुझे एक छोटी-सी बेइज्जती का उममे बदला लेना है।”

उसने अपनी कमीज और कोट पहन लिया।

“क्या तुम अभी मेरी माँ के साथ थे ?” उसने पूछा।

“हाँ, डेमिआन, कितनी अच्छी माँ है तुम्हारी ! फाउ एवा ! यह नाम उन्हें खूब जमता है, वह हर चीज की जन्मनी लगती हैं।”

“तुम्हें उनका नाम भी मालूम हो गया ? तुम स्वयं पर गर्व कर सकते हो, प्यारे ! तुम पहले व्यक्ति हो जिसे पहली ही मुलाकात में उनका नाम लेने का अवसर मिला है।”

उस दिन से मैं वहाँ कुछ इस तरह आने-जाने लगा जैसे मैं वेटा या भाई होऊँ, किंतु किसी प्रेमी की भाँति भी। जैसे ही अंदर आकर दरवाजा बंद करता, वाग में लम्बे-लम्बे पेड़ों को देखता, मैं समृद्ध और खुश हो उठता। ‘वास्तविकता’ बाहर थी, सड़कें, घर, लोग, संस्थाएँ, पुस्तकालय और भाषण-कक्ष बाहर थे—यहाँ अंदर तो प्रेम और आत्मा थी, यहाँ अद्भुत कहानी और स्वप्न रहते थे। किंतु फिर भी हम बाहरी दुनिया से अलग-थलग नहीं रह रहे थे। हम विचारों और वार्ताओं के मध्य में मात्र एक अलग स्तर पर रहते थे। हमारे और बहुसंख्यकों के बीच कोई सीमा रेखा न थी बल्कि हमारा देखने का तरीका भिन्न था, जहाँ कम से कम विभिन्न शैलियों का सहअस्तित्व सम्भव हो। हमारा कार्य था विश्व में एक ऐसे टापू का निर्माण जो आदर्श हो। मैं, जो इतने दिनों तक अकेला रहा था, अब यह तथ्य समझ चुका था कि ऐसे नितांत अकेलेपन का स्वाद चख चुके लोगों के बीच एक दूसरे के साथ रहने की सम्भावना थी। खुशी के लिए लोगों के आस-पास रहने की मेरी कभी इच्छा न हुई, दूसरों को सामुदायिक रूप से खुश देख कर मुझे कभी ईर्ष्या या दुख न हुआ। धीरे-धीरे मैं उन लोगों की गिनती में शामिल हो गया जिन पर एक चिह्न होता है।

हम चिह्न वाले लोगों को दुनिया में औरों से भिन्न कहना ठीक ही है : यहाँ तक कि पागल या खतरनाक कहना भी। हम जाग्रत थे या जाग्रत होने की अवस्था में थे और हम अपनी जागरूकता को लगातार बढ़ाने का प्रयास करते रहते थे, जबकि दूसरे लोगों का प्रयास अपने विचारों, आदर्शों, कर्तव्यों, अपने जीवन और भविष्य को समुदाय के साथ जोड़ने का था। उसमें भी इच्छाएँ थीं, उसमें भी शक्ति थी, महानताएँ थीं। लेकिन चिह्न वाले लोग प्रकृति की व्यक्ति के भविष्य के लिए कुछ नया करने की इच्छा के चिह्न थे—जबकि दूसरे यथास्थिति को बनाए रखना चाहते थे।



को गौर से सुनते किंतु उन्हें सूक्तियों से अधिक कुछ नहीं मानते। हम चिह्नित लोगों को भविष्य के रूप की कोई चिंता न थी। हर जानकारी, हर शिक्षा हमें पहले से मुर्दा और बेकार लगती। सिर्फ एक ही बात हमें कर्तव्य और अपनी नियति लगती : कि हममें से हर एक पूरी तरह अपना 'स्व' ही बने, खुद से पनपता प्रकृति का बीज बने और प्रकृति की इच्छा को इस तरह जिए कि अज्ञात भविष्य हमें हर उस बात के लिए तैयार पाए जो वह अपने साथ लाना चाहता है।

कहे और बिना कहे हमें एक बात भली भाँति मालूम थी कि वर्तमान का विघटन व पुनर्जन्म नजदीक ही है और महसूस किया जा सकता है। डेमिआन कभी-कभी मुझसे कहता था : "जो होना है, वह सोचा नहीं जा सकता। यूरोप की आत्मा एक पशु है जो बहुत लम्बे समय तक बँधा रहा है। जब वह आजाद होगा, तो उसकी पहली प्रतिक्रियाएँ भली नहीं होंगी। किंतु रास्ते और तरीके उस समय महत्त्वपूर्ण नहीं होते, जबकि सवाल आत्मा की सच्ची जरूरत का हो, जिसे व्यक्ति लम्बे समय तक छिपाता और धोखा देता रहता है। तब हमारा दिन आएगा, तब लोगों को हमारी जरूरत होगी, किसी नायक या नियम बनाने वाले के रूप में नहीं—अब हमें और नए नियम नहीं मिलेंगे—बल्कि ऐसे लोगों के रूप में, जो राजी हैं, तैयार हैं उस तरफ चलने और रुकने के लिए, जहाँ उनकी नियति उन्हें बुला रही है। देखो, सभी लोग कुछ आश्वस्तिकार करने को तैयार हो जाते हैं जब उनके आदर्श खतरे में पड़ते हैं। मगर उस समय कोई नहीं होता, जब एक नया आदर्श, एक नई और शायद खतरनाक और भिन्न प्रकार की विकास-भावना दस्तक देती है। वे थोड़े से लोग जो उस समय भी होंगे और साथ चलेंगे वे हम होंगे। इसीलिए हम चिह्नित हैं—ठीक केन की भाँति जो भय और घृणा पैदा करने और उस समय की मानवता को आदर्शों के सँकरेपन से भयावह दूरियों तक फैलाने के लिए चिह्नित था।

"किसी अपवाद के बिना वे सभी व्यक्ति, जिन्होंने मानव इतिहास पर अपनी छाप छोड़ी है, इसीलिए योग्य और प्रभावशाली थे क्योंकि वे नियति को स्वीकार करने के लिए तैयार थे। भूसा, बुद्ध, नेपोलियन और विस्मार्क

सभी पर यही बात लागू होनी है। किम तरंग में वह जा रहा है, वहाँ में निर्देश आ रहे हैं, ये ऐसी बातें हैं जो व्यक्ति के चुनाव में परे हैं। यदि विरमाक ने समाजवादी मोक्षतंत्रीय दल के लोगों की बात मानकर उनमें समझौता कर लिया होता तो वह गिहें एक चतुर व्यक्ति ही होता, न कि नियति का नायक। नेरोनिचन, सीडर, मोयोना, सभी के साथ यही बात थी। व्यक्ति को सदा जैविक और विकास के इतिहास को मद्देनजर रखकर मोचना चाहिए। जब घरनों की सतही उपलब्धता में समुद्र के जीव-जंतुओं को जमीन पर और जमीन के जीवों को समुद्र में फेंक दिया तो भिन्न-भिन्न जैविक जातियों में से मात्र वे ही अपनी जातियों को समूल नाश में बचा सके जो नवीनता और अभूतपूर्व को जीवन में डाल सके। हमें यह बिलकुल भी नहीं मालूम कि क्या वे बंदी थे, जो अपनी जानियों में अपनी पहचान अलग बनाए हुए थे, विचित्र या शक्तिशाली थे। वे तैयार थे और इसीलिए अपनी जाति को बचा सके, यह हम जरूर जानते हैं। इसीलिए हमें तैयार रहना चाहिए।”

ऐसी बातचीत के दौरान फाउ एवा अक्सर हमारे बीच होती, हालांकि वे बातचीत में इन हद तक हिम्मा नहीं लेती थी। हम में से विचार मामने रखने वाले हर एक व्यक्ति के लिए वे श्रोता थी, प्रतिध्वनि थी, विज्ञापन से भरी, समझ लिये, ऐसा लगता था जैसे हर विचार उनमें निबन उन्हीं के पास वापस जा रहा हो। उनके नजदीक बैठना, कभी-कभी उनकी आवाज सुनना, उनके आगमन के सम्मान और आतिथ्य यातावरण में हिस्सेदारी मेरे लिए नवीन की बात थी।

मेरे आंतरिक परिवर्तनों का, किसी भी दुःख या नए विभाग का पता उन्हें तुरंत ही लग जाता था। मुझे तब ऐसा भी लगता था कि मेरी रातों के सपने भी उन्हीं में प्रेरित थे। मैं इन सपनों को अक्सर उन्हें सुनाता और वे उन्हें समझ सकने वाले और सही पाती। उनमें ऐसा कुछ भी अलग न था, जो वे न समझ पाती। कुछ दिन मुझे ऐसे सपने आते रहे जो हमारी दिन की बातचीत की ही दिखाने थे। मैं देखता कि सारी दुनिया में उपलब्धता मधी हुई है और मैं अकेला या फिर डेमिआन के साथ बड़े ध्यान में नियति की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। यह नियति अभी परे में थी कि फिर भी



यह फ्राँज एवा से मिलती-जुलती थी : उनके द्वारा चुना या नकारा जाना —यही नियति थी ।

कभी-कभी वे मुझसे मुस्कराकर कहतीं, “आपका सपना पूरा नहीं है, सिनक्लेयर, आप सबसे बेहतरीन चीज भूल रहे हैं।” और तब मुझे वह याद आता और मैं नहीं समझ पाता कि आखिर वह कैसे भूल सकता हूँ ।

कभी-कभी मैं असंतोष और चाह की पीड़ा से भर जाता । मुझे लगता कि मैं उन्हें बाँहों में लिये वगैर नहीं रह सकता । उन्हें भी इस बात का पता तुरंत लग गया । एक बार जब मैं कई दिन तक दूर-दूर रहा और फिर परेशान वापस आया तो वे मुझे अलग ले जाकर बोलीं : “आपको उन इच्छाओं के सामने झुकना नहीं चाहिए, जिन पर आपका विश्वास नहीं है । मैं जानती हूँ कि आप क्या चाहते हैं । आपको ये इच्छाएँ छोड़ देनी चाहिए या फिर भली भाँति इनकी इच्छा करनी चाहिए । जब आप अपनी इच्छा इस प्रकार प्रकट कर सकें कि आपको उसकी पूर्ति का भी यकीन हो तो उसकी पूर्ति भी होगी । किंतु आप इच्छा करते हैं फिर उस पर शोक करते हैं और साथ ही डरते हैं । इस सबको जीतना होगा । मैं आपको एक कहानी सुनाती हूँ ।”

और फिर उन्होंने मुझे एक ऐसे लड़के की कहानी सुनाई जो एक तारे से प्रेम करता था । समुद्र के किनारे खड़ा, वह हाथ फैलाकर सितारे की प्रार्थना करता, उसके सपने देखता और अपने विचारों को उसी पर केंद्रित करता । मगर वह जानता था, या उसे लगता था कि वह जानता है, कि एक सितारे को आदमी अपने आलिंगन में नहीं ले सकता । वह एक नक्षत्र से सफलता की किसी उम्मीद के बिना प्रेम करने को नियति मानता था और इसी विचार के माध्यम में उसने अपने लिए संयम और शांत सहनशीलता के जीवन-दर्शन का निर्माण किया जो उसे उन्नत और शुद्ध कर सके । साथ ही उसके सभी सपने उस तारे तक पहुँचते रहें । एक बार जब वह फिर से रात में समुद्र के किनारे ऊँची चोटी पर खड़ा, उस तारे की ओर देखता प्रेम की आग में जल रहा था, उस समय अपनी उत्कंठा के चरम बिंदु पर उसने उस तारे की ओर शून्य से छलांग लगा दी, किंतु ठीक छलांग लगाते हुए उसके दिमाग में विचार कौँघा कि यह तो असम्भव है ।

यह समुद्र के बिनारे पड़ा हुआ था, उसके परमधे उड़े हुए। उसे प्रेम करना नहीं आता था। यदि छत्रांग सगने समय उसे अपने प्रेम के फनीपून होने का पूरा विश्वास होता तो वह ऊँचाइयों में उड़कर उत तारे में एकाका हो जाता।

“प्रेम को मनुहार नहीं करनी चाहिए।” उन्होंने कहा, “अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए। प्रेम में इतनी कठिनाई होनी चाहिए कि वह अपने भीतर आत्मविश्वास लाए। ऐसे में वह आकर्षित होता छोड़कर आकर्षित करना शुरू कर देता है। जैसे ही वह मुझे आकर्षित करना शुरू करेगा, मैं भाऊँगी। मैं उपहारस्वरूप नहीं जाना चाहती, बल्कि विनित होकर जाना चाहती हूँ।”

एक-दूसरे मोके पर उन्होंने मुझ एक और बड़ा मुनाई, एक ऐसे प्रेमी की बसा, जो नाउम्मीदी में प्रेम करता था। वह स्वयं को अपनी आत्मा से अलग कर लेता और मानता कि वह प्रेम की आग में जल रहा है। उसके लिए सारी दुनिया छो जाती। नीला भागमान और हरे जगमग उसे नहीं दिखाई देते। नदी की बगकल उसे नहीं मुनाई देती, हाथ का मंगीत उसे नहीं मुनाई पहना था। उसके लिए सब डूब चुका था। वह गरीब और दयनीय हो चुका था। किन्तु उसका प्रेम बढ़ता रहा, वह अपनी गुंथगुंथ प्रेमिका को जाने की इच्छा छोड़ने की अपेक्षा करना या अपनी घरवादी पसंद करता। तब उसे लगा कि उसके प्रेम ने उसके भीतर का सब कुछ जला डाला है और उसके प्रेम की ताकत कुछ यूँ बढ़ती जा रही थी कि उसकी सुंदर प्रेमिका को उसके पास आना ही था। वह आई। वह उसे अपने में समेट लेने के लिए बाँहें फैलाए खड़ा था। जब वह उसके सामने आ खड़ी हुई, तो उसका रूप बदल चुका था। एक झुरझुरी के साथ उसने महसूस किया कि उसकी वो चुंबी दुनिया वापस आ गई थी। वह उसके पास आई और उसने आत्मसमर्पण कर दिया। आकाश, जगमग और नदी सभी कुछ गए, ताजे और धूलनुमा रंगों में उसकी तरफ आने लगे, उसी के हो गए, उसी की भाषा बोलने लगे। और एक स्त्री मात्र के स्थान पर उसने सारी दुनिया को अपने आनिर्गन में ले लिया। आकाश का हर तारा उसके धंदर चमक रहा था और उसकी आत्मा में धुंधी का प्रकाश

फँसा रहा था। उसने प्रेम किया था और स्वयं को पाया था। किंतु अधिकतर लोग खुद को खोना पसंद करते हैं।

फ्राउ एवा के प्रति मेरा प्रेम मुझे अपने जीवन का एकमात्र तत्त्व लग रहा था, किंतु हर दिन वे भिन्न लगतीं। कभी-कभी मुझे यकीन हो जाता कि मेरा अस्तित्व उनके व्यक्तित्व की ओर आकर्षित नहीं है, बल्कि वे मेरे अंतर्मन का चित्र हैं, जो मुझे मेरी गहराइयों में ले जाना चाहता है। अक्सर उनके जब्द मेरे ज्वलंत प्रश्नों के मेरे ही मन से आते उत्तर से प्रतीत होते। ऐसे भी पल होते, जब मैं उनके पास बैठकर उनको पाने की चाहत में जलता और वे सभी चीजें चूमता, जिन्हें वह छू लेती थीं। धीरे-धीरे शारीरिक और आत्मिक, वास्तविकता और आभास सब आपस में घुल-मिल जाते। तब, जबकि मैं अपने घर के कमरे के आत्मीय माहौल में उन्हें याद करता, तो मुझे उनका हाथ अपने हाथ में, उनके होंठ अपने होंठों पर महसूस होते। या फिर मैं उनके घर में होता, उनका चेहरा देखता, उनसे बातें करता, उनका आवाज सुनता और फिर भी नहीं जानता था कि वह सच्चाई है, सपना नहीं। मैं समझने लगा कि व्यक्ति किस प्रकार अपने प्रेम को लगातार और हमेशा के लिए बनाए रख सकता है। किसी किताब को पढ़ते हुए मुझे एक बोध होता और वह वैसा ही होता, जैसे फ्राउ एवा का चुम्बन। वह मेरे बालों में हाथ फेरतीं और मेरी ओर देखकर प्यार में मुस्करा देतीं, यह कुछ वैसा ही अनुभव था, जैसे अपने ही अंदर एक कदम आगे बढ़ना, वह सब जो मेरे लिए महत्वपूर्ण और नियति का अपना आकार ले लेता। वह मेरे किसी भी विचार का रूप ले सकती थीं और मेरे विचार उनका रूप ले सकते थे।

अपने माता-पिता के घर में बिताई गई किसमस की छुट्टियों के प्रति मैं कुछ नशंकित था कि किस तरह पूरे सप्ताह फ्राउ एवा से दूर रहकर जी सकूंगा, किंतु यह कोई दिक्कत की बात न हुई। घर पर रहकर भी उनकी याद करना बड़ा ही सुखकर था। जब मैं वापस "ह" आ गया तो दो दिन तक उनके घर से दूर-दूर ही रहा ताकि उनकी शारीरिक उपस्थिति से सुरक्षा और स्वतंत्रता का आनंद ले सकूँ। मुझे ऐसे सपने भी आए, जिनमें मेरा उनसे एकाकार होना नए संकेतों के द्वारा प्रकट हो रहा था। वह एक समुद्र

थी, जिममें मैं बड़ा रहा था। बड़ा हुए तारा थी और मैं भी एक तारे के रूप में उनकी ओर बढ़ रहा था, एक-दूसरे के चारों ओर घूमने हुए। मैंने उन्हें पहली बार मिलने पर बड़ा सपना यह सुनाया। "सपना तो बहुत सुन्दर है," उन्होंने ज्ञानि में कहा, "इसे सच करो।"

समय में पहने के दिनों में एक ऐसा दिन आया, जिसे मैं अभी नहीं भूल सता। मैं होल में घुसा, एक पिटकी गुनी थी, मेज हवा के झोंके दिखा-दिखायी महक में होल को भर रहे थे। कोई भी डिगार्ड नहीं पर रहा था, मैं मैक्स डेमिआन के पदार्थ के कमरे की ओर बढ़ा। हमेशा की तरह दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक देकर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए मैं अंदर चला गया।

कमरे में अँधेरा था, पर्दे बंद थे। पास के छोटे में कमरे का दरवाजा खुला पड़ा था। इस कमरे में मैक्स ने एक रागायनिक प्रयोगशाला बना रखी थी। वहीं से समय के गूरज की समबद्धार रोज़नी बरसाती बाइलों को पीरकर आ रही थी। मुझे लगा, यहाँ कोई नहीं है और एक पर्दे की घोल दिया। तभी मैंने डेमिआन को पर्दे लगी एक पिटकी के पास स्टून पर बैठा देखा, विपित्र तरह से बदन हुआ। तभी मेरे दिमाग में बीधा सुमने यह पहलें भी अनुभव दिया है, उनके बाजू बैठे हुए से सटकर थे, हाथ उसकी गोद में थे, उसका चेहरा कुछ सांग की ओर मुड़ा हुआ था, उनकी आँखें खुली होने के बावजूद देख नहीं रही थी, निर्वीच थी। उसकी आँख के बिंदु में रोज़नी यूँ समक रही थी, जैसे दीपों के एक टुकड़े पर। उसका पीला चेहरा स्वयं में डूबा हुआ था, यह अपनी जबरदस्त बटोरना के अन्धाका बिलकुल भाव-रूप्य था। यह किसी मंदिर के मुन्दर-द्वार पर सगे सदियों पुराने पत्थु के चेहरे में मिलता-जुलता लग रहा था। वह गीम लगा नहीं लग रहा था।

साद ने मुझे बैठा दिया—ऐसे ही, टीक ऐसे ही मैंने उसे पहने भी एक बार देखा था, सालों पहने, जब मैं बचपा था। इसी तरह उसकी आँखें भीतर की ओर देख रही थी, इसी तरह उसके हाथ निर्वीच पाग-पाग रहे हुए थे, एक मक्खी उसके चेहरे पर घूमकर बसती गई थी। उस समय, लगभग छः साल पहले भी, वह इसी तरह, इतना ही बड़ा, समय और आयु

की सीमा से परे नजर आ रहा था। उसके चेहरे की कोई भी शिकन उस दिन से अलग न थी।

भयभीत हो मैं चुपचाप कमरे ने बाहर जाकर सीढ़ियों से नीचे उतर आया। हॉल में मुझे फाउ एवा मिली। वे थकान से पीली लग रही थीं, उनकी यह थकी हुई तसवीर मैं पहले नहीं जानता था। ठीक तभी खिड़की पर से एक छाया गुजर गई। सूरज की चमकदार सफेद रोशनी अचानक गायब हो गई।

“मैं मैक्स के पास गया था,” मैंने जल्दी से फुसफुसाकर कहा। “क्या उसे कुछ हो गया है? वह सो रहा है या समाधि में डूबा हुआ है, मैं नहीं जानता, मैंने उसे पहले भी एक बार ऐसे ही देखा है।”

“आपने उसे जगाया तो नहीं है न?” उन्होंने जल्दी से पूछा।

“नहीं, उसने मेरे आने की आवाज नहीं सुनी। मैं तुरंत ही कमरे से बाहर चला आया। फाउ एवा, बताइये मुझे, क्या हुआ है उसे?” उन्होंने अपने माथे पर हथेली फेरी।

“शांत हो जाइए, सिनक्लेयर, उसे कुछ नहीं होगा। उसने खुद को अपने में समेट लिया है। यह हालत देर तक नहीं रहेगी।”

वे उठीं और बाहर बगीचे में चली गईं, हालांकि तभी बरसात शुरू हो रही थी। मुझे लगा, जैसे मुझे साथ नहीं जाना चाहिए। इसलिए मैं हॉल के ही चक्कर लगाता रहा, हियार्सिथ की तीखी महक लेता रहा, दरवाजे के ऊपर लगे अपने पक्षी के चित्र को निहारता रहा, बेचैनी के साथ उस अद्भुत छाया को सांसों में लेता रहा, जिससे उस दिन वह घर भरा हुआ था। क्या थी यह? क्या हो गया था?

फाउ एवा जल्दी ही वापस आ गई। बरसात की बूंदें उनके काले बालों में अटकी थीं। वे अपनी आरामकुर्सी में बैठ गईं। बहुत थकी लग रही थीं। मैं उनके पास गया, झुका और उनके बालों पर लगी बूंदें चूम लीं। उनकी आंखें चमकदार और स्थिर थीं, किंतु बूंदों का स्वाद मुझे आंसुओं-सा लगा।

“क्या मैं उसे देखकर आऊँ?” मैंने फुसफुसाकर पूछा। वे हल्के से मुस्करा दीं।

“बच्चों-सी बातें नहीं करो, सिनब्लेयर !” उन्होंने मुझे जोर से झिटका, जैसे अपने ही अंदर किसी मायाजाल को तोड़ रही हों। “अभी आप जाइए और फिर बाद में आइए। मैं अभी आपसे बात नहीं कर सकती।”

मैं घर और शहर से दूर पहाड़ों की तरफ लगभग भागता घना गया। हल्की तिरछी बरसात मुझ पर पड़ती रही। बादल इतना नीचे होकर उड़ रहे थे कि लगता था, जैसे भय के बोझ से दबे जा रहे हों। जमीन पर नाम की भी हवा नहीं थी किंतु ऊपर तूफान उमट रहा था। कुछ पलों के लिए बीच-बीच में सूरज सलेटी बादलों के बीच से कमजोर-सी चमक फैला जाता था। तभी आसमान पर पीले रंग का बादल का एक टुकड़ा उड़ता आया और दूसरे रंग वाले दूसरे बादलों के झुंड से आ टकराया, फिर हवा ने कुछ ही पलों में उस पीले और नीले रंगों से एक चित्र बना डाला, एक विनायकाय पक्षी, जिसने छुद को इस नीले बादलों के झुरमुट से अलग किया और पंखों से तेज उड़ान भरता आसमान में धो गया। इसके बाद तूफान मुनाई देने लगा, बरसात ओलों के साथ तेजी से पड़ने लगी। थोड़ी देर के लिए कैपा देने वाली भयंकर आवाज में, बरसात से सघपस मारे इलाके के ऊपर बिजली कौंधी और उसके ठीक बाद सूरज की रोगनी फैल गई। आसपास के धूरे जंगलों के पीछे के पहाड़ों की चमकती बर्फ बहुत फीकी और अवास्तविक लग रही थी।

घंटों बाद जब मैं सघपस और बदरंग हो वापस आया, तो हेमिथान ने ही दरवाजा खोला।

मुझे अपने साथ वह ऊपर अपने कमरे में ले गया। प्रयोगशाला में गैस का सैम्प जल रहा था, आसपास कागज पड़े थे, ज़ाहिर था कि वह काम कर रहा था।

“बैठो,” उसने आमंत्रित किया, “तुम बहुत थक गए होंगे, बहुत ही घराब मौसम था आज। तुम्हें देगुकर साफ पता लगता है कि तुम ऐसे मौसम में बाहर रहे हो, चाय बस अभी आ रही है।”

“आज कुछ ग्रास बात है,” मैंने हिचकिचाकर बोनता शुरू किया, “यह गिफ़ तूफानी मौसम की ही बात नहीं है।”

उसने मुझे धीरे-धीरे नजर से देखा।

“क्या तुमने कुछ देखा है ?”

“हाँ, बादलों में पल-भर के लिए मैंने विलकुल साफ-साफ एक तसवीर देखी।”

“कैसी तसवीर ?”

“एक पक्षी की।”

“वाज पक्षी ? क्या वही था ? तुम्हारे सपनों का पक्षी ?”

“हाँ, मेरे वाज की ही तसवीर थी। यह पीले रंग का था और बहुत बड़ा था, और नीले-काले बादलों में उड़ गया।”

डेमिबान ने गहरी साँस ली।

दरवाजे पर दस्तक हुई। बूढ़ी नौकरानी चाय लेकर आ गई थी।

“चाय पियो, सिनक्लेयर,—मुझे नहीं लगता तुम्हारा पक्षी को देखना कोई संयोग-भर है।”

“संयोग ? क्या कोई ऐसी चीजें संयोगवश देखता है ?”

“ठीक है, माना कि नहीं देखता। इसका कुछ अर्थ है। जानते हो क्या ?”

“नहीं। हाँ, मुझे लगता जरूर है कि यह किसी कम्पन का संकेत है, नियति की राह पर एक और कदम। मुझे लगता है कि हम सबका इससे संबंध है।”

वह तेजी से इधर-उधर चल रहा था।

“नियति की राह पर एक और कदम।” उसने जोर से कहा, “यही सपना आज रात मैंने भी देखा है और कल मेरी माँ को भी ऐसा ही खयाल आया था, वे भी यही कह रही थीं—मैंने सपने में देखा कि मैं एक सीढ़ी से चढ़ रहा हूँ, किसी पेड़ के तने या किसी मीनार पर। जब मैं ऊपर पहुँचा तो मुझे पूरा इलाका, दूर-दूर तक सभी शहर और गाँव जलते दिखाई दिए। मैं आगे अधिक कुछ नहीं बता सकता हूँ, मुझे ठीक से याद नहीं है।”

“क्या तुम्हें लगता है कि इस सपने का तुमसे व्यक्तिगत सम्बन्ध है ?” मैंने पूछा।

“मुझसे ? जरूर। बिना सम्बन्ध के कोई सपना नहीं देखता। मगर

इसका सम्बन्ध निकल मुझसे ही नहीं है, तुम्हारी यह बात सही है। मैं दोनों प्रकार के सपनों को बहुत अच्छी तरह अलग-अलग पहचानता हूँ, एक जो मेरी आत्मा की गति को दिखाते हैं, तो दूसरे जो पूरी मानवता के लिए सचेत होते हैं। ऐसे सपने मुझे कम ही आते हैं और ऐसा कोई सपना मुझे कभी नहीं आया जिसके बारे में मैं कह सकूँ यह एक दैवी भविष्यवाणी थी, जो गह गहवित हुई। अर्थ बहुत ही अनिश्चित है। मगर यह मैं जरूर जानता हूँ कि मैंने एक सपना देखा है जिसका सम्बन्ध निकल मुझसे ही नहीं है। यह सपना उन सपनों की श्रृंखला की है जो मैंने अब तक देखे हैं। वे वे सपने हैं, गिनबनेपर, जिनका मुझे पूर्वाभास हुआ है और जिनके बारे में तुमने पहले भी बात कर चुका है। हम सब जानते हैं कि हमारी दुनिया खोखली है, कि तुम्हें हमारे बिना या ऐसी ही किसी भविष्यवाणी के कारण नहीं हो सकता। मैं सालों से ऐसे सपने देखता हूँ, जिनके बारे में समझता हूँ या मुझे तुम्हारी ही तरह लगता है कि पुराने विश्व का पतन नजदीक आ रहा है। शुरू में ये पूर्वाभास मद्धिम और दूर-दूर थे, किंतु वे लगातार साफ और तेज होते गए हैं। मैं हमने अधिक अब भी कुछ नहीं जानता कि कुछ बहुत बड़ा और भयानक होने वाला है जिसका सम्बन्ध मुझसे भी है। गिनबनेपर, तुम्हें उसका अनुभव होगा जिसके बारे में हम बातें करने रहे हैं। यह विश्व नया रूप लेगा। हमसे से मौत की महक आ रही है। मौत के बिना कुछ नया नहीं होगा। मेरी उम्मीद में यह कहीं अधिक भयानक होगा।" भयभीत मैं उगे देखा रहा।

"क्या तुम मुझे अपना बाकी सपना नहीं सुना सकते?" मैंने जिज्ञासुता से पूछा।

उमने गिर हिना दिया।

"नहीं।"

दरवाजा खुला और घाउ एका भीतर आई।

"तो यही बैठे हो तुम दोनों। बच्चों, तुम परेमान तो नहीं हो रहे हो?"

अब वह धृग और बिलकुल भी धकी नहीं नजर आ रही थी। बेमिआन उन्हें देखकर मुस्करा दिया। वे हमारी ओर घूँ आईं, जैसे कोई



माँ अपने डरे हुए वच्चों के पास आती है ।

“यूँ हम दुखी तो नहीं हैं, माँ, हम लोग बस इस नए संकेत पर कुछ पहेलियाँ बुझा रहे थे । परंतु इससे कुछ होने वाला नहीं । जो होना है वह अचानक ही हो जाएगा और तब जो हमें जानने की जरूरत है, उसे हम अनुभव करेंगे ।”

मेरी हिम्मत जवाब दे रही थी और जब मैंने जाने के लिए बिदां ला और अकेला हॉल में से गुजरा तो हियांसिय की महक फीकी, नीरस और निर्जीव लगी । हमारे ऊपर एक छाया आ गिरी थी ।

## अंत का आरम्भ

मैंने अपने घर वालों को इस बात के लिए राजी कर लिया था कि वे मुझे गर्मियों के मंत्र में भी 'ह' में रहने दें। हमारा अधिकतर समय घर के बजाय नदी के किनारे बाग में गुजरता। वह जापानी जिसे मुबोबाजी के मैच में बुरी तरह हराया जा चुका था, अब घना गया था। तोल्स्तोय का सम्पर्क अब न था। डेमिआन ने एक थोड़ा ले लिया था और हर रोज देर तक उम पर घूमने जाता था। अक्सर ही मैं उमकी माँ के साथ अकेला होता।

जब तब मैं यह सोचकर हैरान होता कि मेरे जीवन में कितनी शांति थी। मैं अब तक अकेला रहने का, आत्मसंयम का, अपनी परेशानियों से छुट जूझने का इतना आदी हो चुका था कि 'ह' में बिताए गए ये महीने मुझे सपनीने टापू में लगते थे जिसमें चारों तरफ बम जादुई आराम, सुंदर आरामदायक चीजें और भावनाएँ थी। मुझे यह पूर्वाभास था कि यह एक नए, ऊँचे समाज की आरम्भिक स्थिति थी, जिसके बारे में हम बात करने रहते थे। हमें तो ही इस गृही के साथ एक दुःख भी मुझे जकड़ता गया क्योंकि मैं बगूबी जानता था कि यह गृही देर तक नहीं चलेगी। यह मेरे नसीब में न था कि मैं पूर्णता और आनन्द की माँग लूँ। मुझे दुःख और शीघ्रता एक साथ चाहिए थी। मुझे लगता था—एक दिन मैं इन प्रेम-चित्रों में जागूंगा और मैं फिर अकेला खड़ा हो जाऊँगा, बिल्कुल अकेला, गैरों की ठंढी दुनिया में, जहाँ मेरे लिए सिर्फ अकेलापन और सपर्ध ही होगा, न शांति होगी, न सामूहिक जीवन।

ऐसे पलों में मैं दोगुनी आत्मीयता से फ्राउ एवा के नजदीक रहता, इस बात पर खुश होता कि नियति अब भी ऐसे सुंदर इन में है।

गर्मियों के सप्ताह जल्दी और आसानी से बीत गए। सत्र समाप्त होने को था, जल्दी ही मेरी विदा का समय आने वाला था। मेरी यह सोचने की हिम्मत नहीं पड़ती थी जो मैंने इस बारे में सोचा भी नहीं। मैं तो उन अच्छे दिनों में यूँ विपका रहा, जैसे किसी शहद के फूल से कोई तितली विपकी हो। यह मेरा सबसे अच्छा समय था, जब मेरे जीवन में पहली बार इच्छा-पूर्ति हुई, मुझे इन चुने लोगों में स्वीकार कर लिया गया—अब क्या होने वाला था? मुझे एक बार फिर संघर्ष करना था, उत्कंठाओं को सहना था, सपने देखने थे, अकेला होना था।

एक दिन यह पूर्वाभास इस तेजी से मेरे अंदर उठा कि फ्राउ एवा के प्रति मेरा प्रेम अचानक ही दर्दनाक ढंग से ज्वलंत हो उठा। हे भगवान! जल्दी ही मैं उन्हें कभी नहीं देख सकूंगा। घर में उनके स्थिर, नजद्वत कदमों की आहट नहीं सुन सकूंगा। अपनी मेज पर उनके फूल नहीं देख सकूंगा, और क्या पाया या मैंने? मैं सपने देखता रहा था, सपनों की खुशी में खोता रहा था वजाय इसके कि फ्राउ एवा को जीतता और वजाय इसके कि उन्हें पाने के लिए संघर्ष करता और उन्हें हमेशा के लिए अपनी बांहों में ले लेता! सच्चे प्रेम के बारे में जो कुछ उन्होंने बताया था वह सब मुझे याद आ रहा था, सैकड़ों हल्की झिड़कियाँ, गायद उतने ही आक्रामक वादे—क्या किया था मैंने उनका? कुछ नहीं! कुछ नहीं!

मैं कमरे के बीचों-बीच खड़ा अपनी सारी चेतना को समेट एकाग्रचित्त हो फ्राउ एवा का ध्यान कर रहा था। मैं अपनी आत्मा की सभी शक्ति एकत्र करना चाहता था ताकि वे मेरे प्रेम को महसूस कर सकें, ताकि उन्हें अपनी ओर खींच सकूँ। उन्हें जाना ही होगा उन्हें मेरे आलिगन की इच्छा करनी ही होगी। मेरे अक्षीर कांपते हाँठों को उनके परिपक्व हाँठों का चुम्बन पाना ही होगा। खड़े-खड़े मैं तब तक एकाग्र हो ध्यान करता रहा जब तक कि मेरी उँगलियाँ और पैर ठंडे पड़ने लगे। मुझे लगा, मेरी ताकत मुझसे दूर जा रही है। कुछ पल तक मेरे मन में कुछ सिकुड़ता-सिमटता रहा, कुछ चमकीला और ठंडा, मुझे ऐसे लगा जैसे मेरे दिल में दिल्लीरी जाँगा

हो और मैं जानता था कि यह मेरा अहं था। मेरी छाती की ठंडक बढ़ती गई।

जब मैं इस तनाव में जागा, तो मुझे लगा कि कुछ होने वाला है। मैं भवान के मारे मृत-भा था, किंतु एषा को कमरे में आता देखने के लिए बिनकुन तैयार था, ऊर्जा में भरा, प्रगल्भचित।

मटक की तरफ में घोड़े की टापो की आवाजें नजदीक आ रही थी। मैं गिरफ्तारी की तरफ गया। नीचे डेमिआन घोड़े में उतर रहा था। मैं नीचे की ओर दौड़ा।

“क्या घात है, डेमिआन? तुम्हारी मौ को तो कुछ नहीं हुआ?”

उमने मेरे गन्धों की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया। यह बिनकुन पीना था और गाम पमीने में तरबतर थे। बगीचे के छूट में धके घोड़े को बांधने के बाद मेरा हाथ पकड़कर यह मटक पर चप दिया।

“तुमने उग घारे में कुछ गुना?”

मैंने कुछ नहीं गुना था।

डेमिआन ने मेरी बांह दबाई और मेरी ओर बेहरा घुमाया। उनकी आँखों में गहरा महानुभूति का भाव था।

“हाँ, मेरे भाई, गुरुआत हो रही है। रंग के गाय तनाव की बात तो तुम जानते ही हो—”

“क्या? क्या लड़ाई छिड़ गई? मुझे इसका कभी यकीन न था?” यह बहुत धीरे में बोला, हालाँकि हमारे आपस में कोई भी नहीं था।

“धर्म इसकी घोषणा नहीं हुई है। मगर सच्चाई जरूर होगी। मेरी बात पर यकीन रखो। मैं तुम्हें परेगान नहीं करता किंतु तब से अब तक मैं तीन मरने और देख चुका हूँ। कोई विनाश नहीं होगा, कोई भूचाल नहीं आएगा, कोई प्राणि नहीं आएगी। मुट्ट होगा। तुम देखोगे कि चारों तरफ पैंगी उत्तेजना फैलेगी। लोगों को बड़ा आनंद आएगा। अभी भी लोग मुश्किल में ही मार-काट शुरू होने का इंतजार कर रहे हैं। उनकी जिदगी में इसकी अग्रिम नीरमता आ चुकी है।—मगर मिनबनेयर, तुम देखोगे कि यह मिफं गुरुआत है। शायद यह लड़ाई और बढ़ी हो जाए, बहुत बड़ी लड़ाई। किंतु यह भी गुरुआत हो होगी। नई दुनिया का आरम्भ हो रहा है और यह उनके लिए बहुत भयानक होगी, जो पुरानी दुनिया में चिरके

रहेंगे। तुम क्या करोगे ?”

मैं कुछ समझ नहीं पा रहा था, मुझे अभी तक सब कुछ अविश्वसनीय, अवास्तविक लग रहा था।

“मैं नहीं जानता—और तुम ?”

उत्तने कंधे उचका दिए।

“जैसे ही चलने का हुक्म आएगा, मैं चल दूंगा। मैं सेना में लेफ्टिनेंट जो हूँ।”

“तुम ? मुझे तो इस बारे में कुछ भी नहीं मालूम।”

“हां, मेरे समझौता करने का एक तरीका था। तुम तो जानते हो कि मैं अपनी ओर किसी को आकर्षित करने में यकीन नहीं रखता और इसी-लिए अक्सर सही बात सामने रखने के लिए कुछ ज्यादा ही कर गुजरता हूँ। मैं समझता हूँ कि एक हफ्ते के अंदर ही मैं लड़ाई के मैदान में जाऊंगा।”

“हे भगवान !”

“देखो, भावुक होने की जरूरत नहीं है। जिदा लोगों पर गोली चलाने का हुक्म देने में मुझे कुछ मजा नहीं आएगा किंतु वो बड़ी बात नहीं है। इस चक्रव्यूह में हममें से हर एक फँसेगा, तुम भी चुने जाओगे, यकीन रखो।”

“और तुम्हारी माँ, डेमिआन ?”

ऐन इसी वक्त मुझे एक बार फिर वह याद आया जो पौना घंटा पहले हो चुका था। किस तरह विश्व अपना रूप बदल रहा था। विश्व की उस सबसे मोहक छवि के लिए मैंने सारी शक्ति समेट रखी थी और अब नियति बड़े ही डरावने मुखौटे में से देख रही थी।

“मेरी माँ ? अरे, हमें उनकी चिंता करने की जरूरत नहीं है। वे सुरक्षित हैं, घरती पर आज किसी की भी तुलना में कहीं अधिक सुरक्षित। —तुम तो उन्हें बहुत प्यार करते हो ?”

“तुम जानते हो, डेमिआन ?” वह जोर से खुलकर हँसा।

“और नहीं तो क्या ! आज तक किसी ने भी मेरी माँ को बिना चाहे फाउ एवा नहीं कहा। दूसरे, ऐसी क्या बात है, क्या तुमने आज उन्हें या मुझे पुकारा था ?”

“हां, मैंने पुकारा था...मैंने फाउ एवा को पुकारा था।”

“उन्हें अहसास हो गया था। अचानक ही उन्होंने मुझे यह कहकर दूर भेज दिया था कि उन्हें तुम्हारे पास जाना है। उस समय मैंने उन्हें रुस के बारे में खबरें बम मुनाई ही थी।”

हम मुठे और फिर ज्यादा बातचीत न हुई। हमने अपना थोड़ा गोलो और चढ़कर चम दिया।

ऊपर अपने कमरे में जाकर मुझे अहसास हुआ कि मैं डेमिआन की खबर और उम्मे भी कही अधिक पहने के तनाव से कितना थक गया हूँ। किन्तु फाउ एवा ने मुझे मुन लिया था। मैं अपने विचारों के साथ उनके हृदय में पहुँच गया था। ये स्वयं आ गई होती, अगर ऐसा न होता—कितना विचित्र था और कितना सुंदर! अब युद्ध होना था। अब उसकी शुरुआत होने की थी जिम्मे की बातें हमने अक्सर ही की थी। डेमिआन उसके बारे में पहने में ही कितना जानता है। कितना विचित्र था, कि दुनिया का नूफान अब हमारे पास में नहीं गुजरते वाला था—कि अब वह हमारे दिनों के बीच में गुजरने को था, कि रोमाच और स्वयं को बदलने के लिए हमारी जरूरत थी। डेमिआन ठीक ही कहता है, यह बात भावुकता से सेने की नहीं है। गारे विश्व के साथ अनुभव करूँगा। चलो ठीक ही है।

मैं स्वयंत्र था। शाम को जब मैं शहर में घूम रहा था तो हर कोने में उत्तेजना का नूफान उठ रहा था। हर तरफ वही शब्द था, ‘युद्ध!’

मैं फाउ एवा के घर गया। शाम को बगीचे में बने छोटे में घर में हमने पाना प्याया। मैं वही अकेला मेहमान था। युद्ध के बारे में कोई एक शब्द भी न बोला। मिर्क वाद में, मेरे जाने में कुछ पहले फाउ एवा ने कहा—“गिनवनेयर, आपने आज मुझे पुकारा था। आप जानते हैं कि मैं छुद क्यों नहीं आई। मगर भूलना नहीं, आप अब पुकारना जानते हैं, और जब भी आप किसी ऐसे व्यक्ति को पुकारना चाहें, जिम पर चिह्न लगा हो, तो दोबारा पुकारिएगा।”

यह उठी और बगीचे के धुंधलक में चल दी। लम्बे और तेज कदमों से वे जात हो रहे पेठों के बीच में जा रही थी। उनके ऊपर कितने ही छोटे-छोटे मिनारे मृदुता में टिमटिमा रहे थे।

मैं अपनी कहानी के अंत में हूँ। यहाँ में घटनाक्रम तेजी में चला। जल्दी

ही युद्ध शुरू हुआ। डेमिआन आश्चर्यजनक रूप से खूबसूरत अपनी वर्दी और भूरा कोट पहन चला गया। मैं उसकी नाँ को वापस घर लाया। जल्दी ही मैंने भी उनसे विदा ली। उन्होंने मेरे मुँह पर चूमा। एक पल के लिए मुझे सीने से लगाया, उनकी बड़ी-बड़ी आँखें मेरी आँखों के नजदीक जल रही थीं।

सभी लोग जैसे भाईचारे की डोर में बँध गए थे। मातृभूमि और गौरव की उनमें धुन थी। मगर वह नियति थी, पल-भर के लिए जिसके चेहरे को वे बिना पर्दे के देख पा रहे थे। बैरकों से कितने ही जवान आते; रेलों में चढ़ जाते, कितने ही चेहरों पर मैंने निशान देखा—हमारा निशान नहीं—एक सुंदर, आदर योग्य निशान, जिसका अर्थ प्रेम और मर्ति था। मुझे भी गले लगाया गया, जो मैंने कभी नहीं देखा था, मैंने इसे समझा, वैसा ही मैंने भी बदले में किया। एक नशा था, जिसमें वे यह सब कर रहे थे, यह नियति की इच्छा न थी, किंतु यह नशा पवित्र था, इसीलिए यह बात छू जाती थी कि वे यह सारी हड़बड़ी नियति की निगाहों के सामने कर रहे थे।

जब मैं लड़ाई के मैदान में आया तो सर्दों आ चुकी थी।

शुरु में गोलाबारी के रोमांच के बावजूद मैं हर बात से निराश था। पहले मैं बक्सर सांचता था कि व्यक्ति क्योंकर एक आदर्श के लिए इतना कम जी पाता है। अब मैंने देखा, हर व्यक्ति एक आदर्श के लिए अपनी जान दे सकता है। यह आदर्श सिर्फ व्यक्तिगत, स्वतंत्र, चुना हुआ आदर्श नहीं होना चाहिए बल्कि सामूहिक और स्वीकृत होना चाहिए।

मगर समय के साथ मुझे लगा कि मैंने लोगों को कितना कम करके आँका था। कर्तव्य और खतरे ने उन्हें इतना एकजुट कर दिया था कि मैंने कितने जीते और मरते लोगों को गर्व से नियति की इच्छा के नजदीक जाते देखा। लोगों की, बहुत से लोगों का नजर सिर्फ आक्रमण के समय ही नहीं, हर समय कड़ी, दूर देखती कुछ उन्मादी-सी नहीं थी, जिसे अपने उद्देश्यों के बारे में कुछ पता नहीं था और जो पूरे समर्पण के साथ उस चमत्कार का अर्थ दर्शाती थी। वे लोग उसी पर यकीन रखना चाहते हैं, जिसे उन्होंने हमेशा चाहा है—वे तैयार थे, वे उपयोग में लाए जा सकते थे, इन्हीं के द्वारा भविष्य रूप लेगा। जितनी कड़ाई से विश्व युद्ध, वहादुरी, मर्यादा और

दूगरे पुराने आदमों में छिपटा दिग्राई दे रहा था, मानवता की हर आवाज साफ-साफ दूर होती जा रही थी। यह मारी बातें सतही थी। लडार्ड के दूगरे राजनीतिक उद्देश्यों की बात भी सतही ही बनी रही। गहराई में कुछ और होने जाना था। कुछ बिनकृत नई मानवता जैसा, क्योंकि मैं बहुतों को देख पा रहा था और कुछ मेरी ही तरफ के लोग मर गए—उन लोगों को भावनात्मक रूप से यह ज्ञान हो गया था कि धूना, प्रोध, हत्या और विनाश चीजों से नहीं जुड़े हैं। नहीं, चीजें और उद्देश्य बम संयोगवश ही थे। भावनाएँ, चाहे ये उन्मादी ही थी, मिफं दुश्मनों की ओर ही निर्देशित नहीं हैं, उनका यह बतनेआम तो उस अतमेंन को चमकाने के लिए है, जो अपने में बटी-भटी आत्मा के चौयडे उठाकर, मारकर, उमका नाश करने के बाद मर जाना चाहता था, ताकि पुनर्जन्म ले सके। एक बहुत बड़ा पक्षी अडे से निकलने के लिए मघपं कर रहा था, यह अडा विश्व था, विश्व को टुकड़े-टुकड़े होना था।

एक फार्मन्हाउस पर, जिसे हमने कब्जे में ले लिया था, मैं चौकमी के लिए तैनात था। धीमी-धीमी बयार के मस्त झोके आममान पर ऊँचे बादलों की सेनाओं पर चढ़कर आ रहे थे, उनके पीछे कहीं हल्का-सा आभास चाँद का भी मिलता था। गारे दिन मैं बेचैन रहा था। कोई दुष्ट मुझे परेशान कर रहा था। इस समय, अपनी अँधेरी चोरी में खड़ा मैं बड़े मन से अपने जीवन की अब तक की तमवीरो के बारे में सोचने लगा, फाउ एवा के, डेमिआन के बारे में। मैं एक घने पेड़ के सहारे खड़ा हुआ था और हिनते-हुनते आकाश को देख रहा था जिसकी रहस्यमयी रूप से चमकती रोजनियाँ जल्दी ही तमवीरो की एव शृंगला बन गईं। मुझे अपनी अजीब तरह से कमजोर पड़ती अपनी नाटी का अहसास हुआ, अपनी त्वचा के हवा और घरगत के प्रति कोई प्रतिप्रिया न करने का अहसास हुआ, टिमटिमाती अँदरूनी जागरूकता ने मेरे आमनाम एक नायक की उपस्थिति का आभास दिया।

बादलों में एक बड़ा गहर दिग्राई दे रहा था, जहाँ मैं लाखों लोग निबल कर आमनाम के मँदानों में फँस रहे थे। ऊँची के बीचोबीच एक शक्तिशाली दैवी चेहरा आया, वानों में चमकते मिनारे, किसी पहाड़ की



तरह विशालकाय, फाउ एवा की जुवान वाला। लोगों की भीड़ उसी में समा रही थी जैसे वह कोई गुफा हो, और उसमें गायब हो रही थी। देवी जमीन पर बैठकर कौर चबा रही थी, उसके माथे का निशान चमक रहा था। ऐसा लगा जैसे एक सपने की तरह हिंसा की भावना उसके ऊपर से गुजर गई। उसने आँखें बंद कीं और दुख से उसका चेहरा भर गया। अचानक वह जोर से चिल्लाई और उसके माथे से सितारे झरने लगे, कितने ही हजारों चमकते सितारे धनुषाकार में या फिर अर्द्धवृत्ताकार में काले आसमान में घूमने लगे।

उनमें से एक तारा बड़ी तेजी से तेज टंकार के साथ मेरी तरफ आने लगा, मुझे ढूँढ़ता-सा प्रतीत हुआ—तभी वह हजारों रोजनियों में बँट गया। इसने मुझे उछाल दिया और जमीन पर आ गिरा, एक गर्जना के साथ सारी दुनिया टुकड़े-टुकड़े हो मेरे ऊपर गिर पड़ी।

मैं एक घने वृक्ष के पास पड़ा पाया गया, मिट्टी से सना, बहुत से घावों के साथ।

मैं एक बड़े कमरे में पड़ा था। आसपास से गोलियों की आवाजें आ रही थीं। मैं एक गाड़ी में लेटा था और खाली, ऊबड़-खाबड़ मैदानों पर से गुजर रहा था। ज्यादातर समय मैं सोता रहा या फिर बेहोश था मगर मैं जितना गहरा सोचता मुझे उतना ही तेज अहसास होता कि कुछ मुझे खींच रहा है, कि एक ताकत पीछे-पीछे आ रही है जिसका मुझ पर नियंत्रण है।

मैं एक अस्तबल में लेटा था और किसी का पैर मेरे हाथ पर पड़ गया था, किंतु मेरा मन आगे जाना चाहता था, तेजों से मैं खिंचा जा रहा था। एक बार फिर मैं एक गाड़ी में था और उसके बाद किसी स्ट्रेचर या सीढ़ी पर। हमेशा मुझे ये तेज अहसास था, जैसे मुझे कहीं जाने का हुक्म दिया गया हो, मुझे वहाँ पहुँचने के अलावा और कोई जरूरत नहीं महसूस हो रही थी।

मैं अपने ठिकाने पर पहुँच गया। रात का समय था। मैं अपने पूरे होशो-हवास में था और अपने में प्रेरणा और जरूरत को महसूस कर रहा था। अब मैं एक हॉल में था, विस्तर पर लेटा और लग रहा था कि मैं ठीक वहीं हूँ, जहाँ मुझे बुलाया गया था। मैंने अपने आसपास देखा। मेरे विस्तर से

था, दर्द कर रहा था। मगर जब भी मुझे कुंजी मिलती है और मैं अपने स्व में विलकुल नीचे उतर जाता हूँ, जहाँ नियति की तसवीरें अँधेरे दर्पण में ऊँघती हैं, तब मुझे सिर्फ अपने को इस अँधेरे दर्पण पर झुकाना भर होता है और मुझे अपनी ही तसवीर नजर आती है, जो उसके जैसी है, उसी के, मेरे दोस्त, मेरे नायक जैसी।





